गुरुओं के गुरु

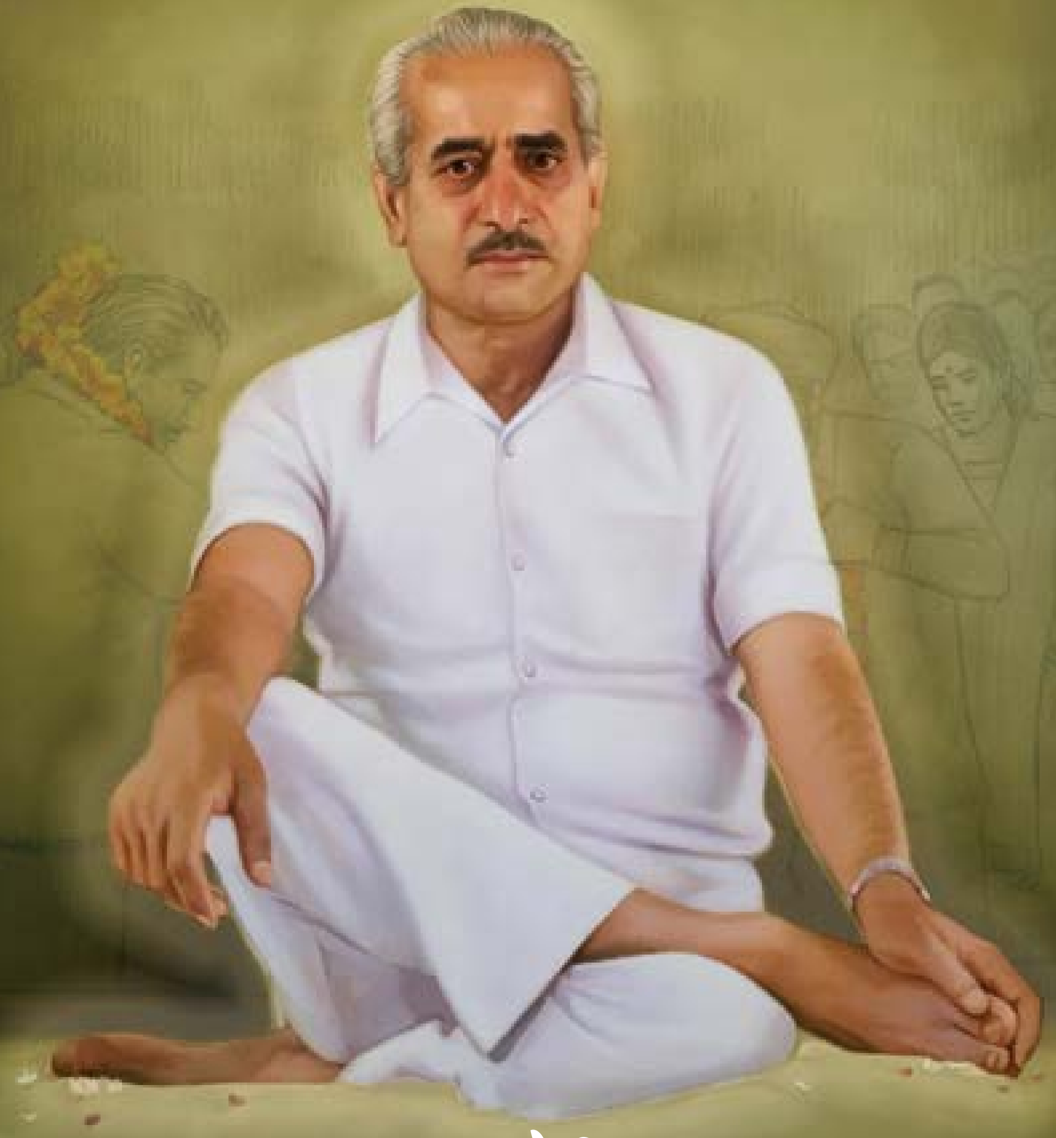

हिंगोरी

गुरुओं के गुरु

गुरुओं के गुरु

हिंगोरी द्वारा रचित

www.gurudevonline.com
answers@gurudevonline.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस किताब में दी गई सामग्री को किसी भी मुद्रित रूप (इलेक्ट्रॉनिक, फोटोकॉपी अथवा अन्य सभी रूप) में पुनः प्रकाशित, संग्रहित या कॉपी करके नहीं रखा जा सकता। समीक्षा के लिए उपयोग किए गए किताब के अंश को छोड़कर, इसके समस्त उपयोग के अधिकार सुरक्षित हैं।

अस्वीकरण

इस किताब में व्यक्त किए गए विचार लेखक के अपने हैं, और इसमें दिए गए तथ्य उन्हीं के द्वारा रिपोर्ट किए गए हैं जिसे हर संभव तरीके से परखा गया है। इसके लिए प्रकाशक किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं है।

**ये उपहार उनके लिए,
जो इसके हकदार हैं।**

विषय सामग्री

1
अवलोकन

7
उनका जीवन

8 शुरुआती साल
9 राजाओं के राजा का जन्म
15 आध्यात्मिक शुरुआत
19 गहरी दोस्ती

30 गृहस्थ आश्रम
31 शिव और शक्ति का मिलन
39 एक पिता
45 एक पुत्र
49 एक भाई

56 रहस्यमयी शख्स
57 रहस्यमयी मार्गदर्शक
63 औघड़ की यशोगाथा

70 महागुरु
71 जागृत हुए महागुरु
75 प्रथम शिष्य
81 आध्यात्मिक वृक्ष का बीजारोपण
87 जड़ पकड़ता आध्यात्मिक वृक्ष
93 चमत्कारों का कारवां
99 असाधारण उपचारक
107 सेवा लेने वाले नहीं, सेवा करने वाले
113 एक कर्मयोगी
117 एक परिवर्तनकारी
121 एक आध्यात्मिक महाशक्ति
127 आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक
143 महागुरु की स्वलोक में वापसी
147 जारी है सफर

150

असाधारण उद्यमी

154 वित्तीय प्रबंधन
155 समय प्रबंधन
158 नियुक्तियां
160 जन प्रबंधन
165 कार्यक्षेत्र
166 कार्यकारी प्रशिक्षण
169 संगठन प्रबंधन
172 मुश्किलों भरी डगर

174

दर्शन एवं अभ्यास

177 एक से अनेक, अनेक से एक

181 आध्यात्मिक परिवर्तन के चरण
182 श्रद्धा
183 विश्वास
185 सेवा
188 ज्ञान
189 भक्ति
191 दिव्य ज्ञान

195 आध्यात्मिक परिवर्तन के उपकरण
196 गुण
199 मंत्र
207 सेवा

211 इंद्रियों से परे
213 इंद्रियों का प्रबंधन
220 मस्तिष्क का लचीलापन
221 मस्तिष्क
224 संक्षेप में

225 सतत चेतना
230 सचेत जागरुकता
234 ओम एवं आज्ञा चक्र
237 कल्पना की अभिव्यक्ति

239 महत्वपूर्ण दिन
239 बड़ा गुरुवार
240 सोमवार का व्रत
241 विशेष उपवास
245 दशहरा, धनतेरस और दिवाली
246 अन्य महत्वपूर्ण दिन

247
स्वच्छता

249 सामाजिक स्वच्छता
249 आभार एवं उपकार
252 समाज-केंद्रित मान्यताएं

255 आर्थिक स्वच्छता

263 मानसिक स्वच्छता

269 आध्यात्मिक स्वच्छता
270 तांबे का कड़ा
271 भोजन, पेय एवं कपड़े
272 गुरुवार के नियम
273 आपकी आभा एवं आप
274 अंतिम स्थिति

276
उपचार
279 नकारात्मक ऊर्जा का चुंबकीयकरण
281 उपचार के प्रति दृष्टिकोण
283 कष्ट से मुक्ति
287 उपचार के साधन

292
अलौकिक
295 विभिन्न स्वरूप
299 शक्ति के प्रतीक चिह्न
304 तात्विक तालमेल
308 मन और शरीर से परे
310 आध्यात्मिक प्रभुत्व
313 अनावरण

315
व्यक्ति विशेष

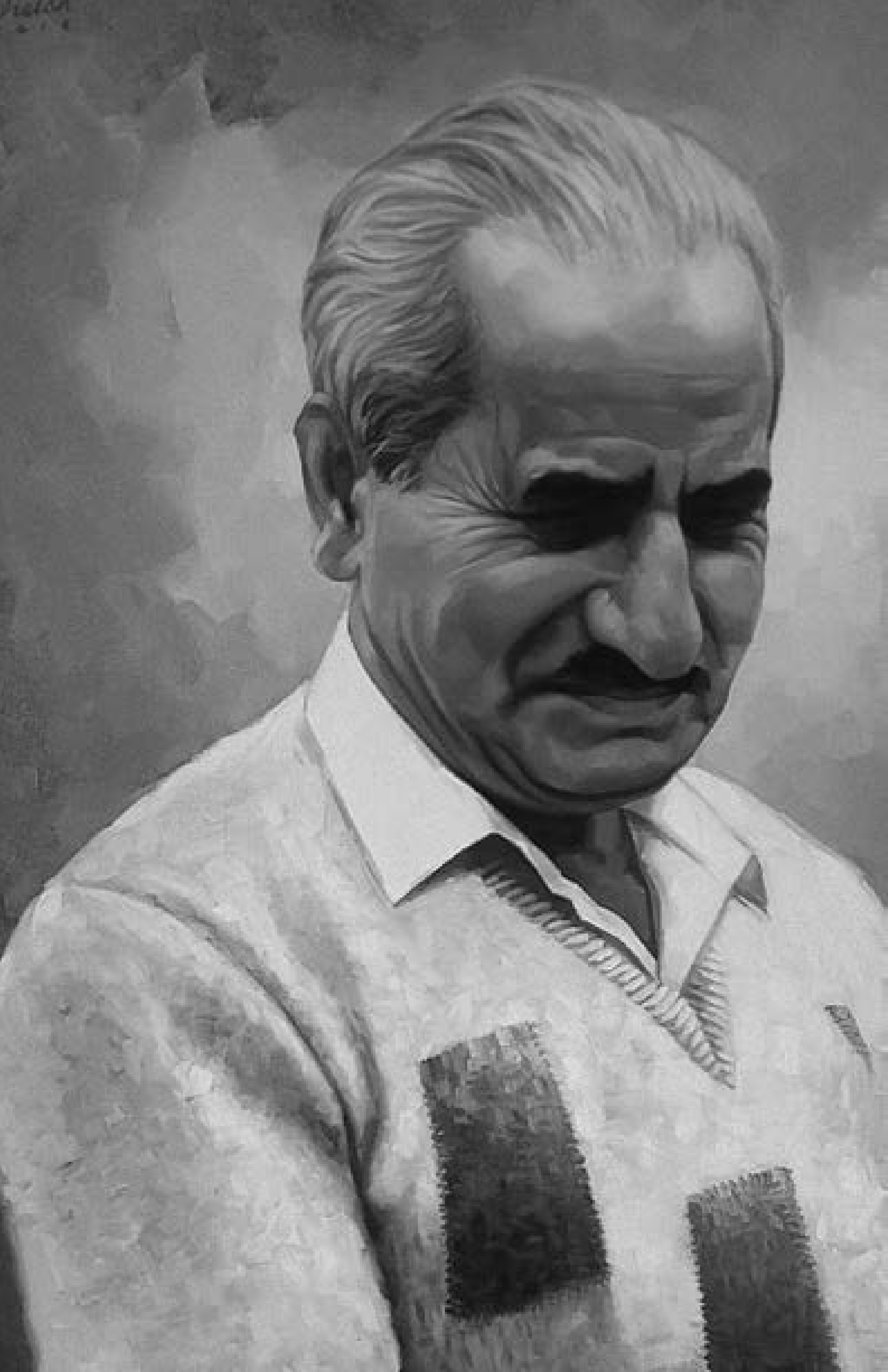

01

अवलोकन

सागर-सी गहराई हदों में नहीं सिमट सकती,
लेकिन जरूरी है उन अनमोल पलों की अभिव्यक्ति,
आइए लौटते हैं महागुरु की कोमल स्मृतियों की ओर,
हमारे अन्तर्मन में जिसका नहीं कोई छोर ।

एक ऐसे महागुरु की जीवनी लिखना लगभग असंभव है, जिनकी उपस्थिति और दर्शन ने कई जीवन बदल दिए। आज कई दशक बाद जब मैं उनके बारे में लिख रहा हूं तो मेरी कलम ये अंतर नहीं कर पा रही कि वे वास्तव में क्या थे और हमने उन्हें किस स्वरूप में देखा। इस जन्म में गुरुदेव के साथ मेरा नाता वर्ष 1977 में शुरू हो गया था, लेकिन मैंने वर्ष 2009 से गुरुदेव के जीवन पर शोध करना शुरू किया। इस जीवनी को लिखने में ग्यारह साल लग गए। इस दौरान उनके कई शिष्य दुनिया छोड़ गए और पीछे छोड़ गए कुछ कही-अनकही कहानियां। महागुरु स्वयं के प्रचार-प्रसार से सदैव दूर रहते थे। इसलिए, उनके बारे में सारी जानकारियां या तो मेरी अपनी हैं या उनके शिष्यों, भक्तों और परिवार से प्राप्त हुई हैं।

वक्त के तेज बहाव में कई यादें धुंधली हो जाती हैं। हम अक्सर बड़ी उपलब्धियों को याद रखते हैं और उन छोटी-छोटी बातों को भूल जाते हैं, जिनसे ये कहानी पूरी होती है। भले ही यह सच है कि मेरे पास

गुरुदेव की ऐसी कई वास्तविक कहानियों का भंडार है जो कल्पनाओं से भी अद्भुत है, लेकिन मैं उन्हें जानबूझकर आपके साथ साझा नहीं कर रहा हूं क्योंकि अविश्वसनीय रूप से सच होने के बावजूद आप उन्हें काल्पनिक मान सकते हैं।

समय के साथ कहानी की कल्पना भी नए सिरे से होने लगती है, जिसमें कुछ सामयिक बदलाव भी आ जाते हैं। रोजमर्रा की कहानियों में आने वाले अल्पविराम अक्सर आश्चर्य पैदा कर देते हैं। इसीलिए उन छोटे-छोटे किस्सों का इस जीवनी में उल्लेख नहीं किया गया है, जिन्हें हम पूरी तरह से समझा नहीं सकते हैं। बाकी कहानियां कई खंडों में प्रस्तुत की गई हैं, जिनमें उनकी जीवन-यात्रा और विचारधारा से लेकर उनके रहस्यों, महानायकों और उनकी महाशक्तियों का वर्णन किया गया है।

हंसमुख और सादगी पसंद व्यक्ति को सजावटी भाषा में प्रस्तुत किया जाना उचित नहीं है। आध्यात्मिकता के शिखर तक पहुंचने के लिए उन्होंने जो कठिनाइयां झेलीं, उसको भावपूर्ण या मुहावरेदार भाषा में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। इस किताब में दी गई सामग्री सत्यापित जानकारियों पर आधारित है। इस तरह की प्रामाणिकता उनके सर्वज्ञान के प्रति आम धारणा को सीमित कर सकती है।

एक व्यक्ति के रूप में
उनका जीवन बेहद नपा-तुला था,
लेकिन महागुरु के रूप में
उनकी थाह लेना असंभव है।

इस जीवनी का उद्देश्य इस आध्यात्मिक महागुरु का ऐसा स्वरूप प्रस्तुत करना है जिसमें उनका महिमामंडन ना हो, बल्कि ये हमें महागुरु के

समान उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए प्रेरित करे। प्रेरणा की कोई भी कहानी तब तक अधूरी है जब तक वो लोगों को प्रेरित नहीं करती। उनके दर्शन और उनकी कृपा के प्रति पूर्ण समर्पण करने की क्षमता उन लोगों के लिए कारगर रहेगी जो मोक्ष या मुक्ति चाहते हैं।

किस्मत के इस खेल में मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

Hingori

हमने उन्हें एक उन्नत आत्मा वाले इंसान के रूप में देखा, ना कि मानवीय अवतार में किसी उन्नत आध्यात्मिक को। वे अक्सर यह दावा करते थे कि हम कभी यह नहीं जान पाएंगे कि वे वास्तव में कौन हैं। और उनकी कही हुई यह बात उनकी हर बात जितनी ही सच है!

02

उनका जीवन

शुरुआती साल

'शुरुआती साल' पॉडकास्ट में महागुरु के बचपन से लेकर जवानी तक की जिंदगी का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह वर्णन किया गया है कि किस तरह उनके शुरुआती वर्षों की कहानी में शिव के सर्वव्यापी स्वरूप की जड़ें थीं। इस पॉडकास्ट को सुनिए www.gurudevonline.com पर

शुरुआती साल

जन्म राजाओं के राजा का

वो दिन था बरसात का जब जन्म हुआ एक संत का,
जब कड़कड़ाती ठंड के बाद आया मौसम बसंत का,
अपने नाम के अनुरूप सार्थक हुआ चरितार्थ ,
और बन गए वे राजाओं के राजा।

गुरुदेव का जन्म वर्ष 1938 में वसंत ऋतु के शुरुआती दिनों में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ। परिवार में माता-पिता के अलावा बड़ी बहन और नाना-नानी थे। उनके पिता भगत राम जी, जो पेशे से रसायन व्यापारी थे, और मां राम प्यारी जी बड़े सादगी पसंद और दयालु लोग थे।

उनका जन्म स्थान हरिआना भारत के पंजाब प्रांत के होशियारपुर ज़िले में स्थित था। हिंदुओं और मुसलमानों की यह छोटी-सी बस्ती सांप्रदायिक सद्भाव और एकजुटता का एक प्रतिमान थी। गुरुदेव के जन्म से कुछ समय पहले, गुरुदेव का परिवार पंजाब के अमृतसर शहर में रहता था। चूंकि गुरुदेव की मां अपने पहले बच्चे, बेटी बिमला, के जन्म के बाद गर्भ धारण करने में असमर्थ थीं, इसलिए गुरुदेव के दादाजी ने स्वर्ण मंदिर के एक संत से सम्पर्क किया और ईश्वरीय अनुकंपा का अनुरोध किया। संत ने गुरुदेव की मां को पवित्र जल दिया और उनसे कहा कि उन्हें यह जल चालीस दिनों तक लगातार पीना है। इसके तुरंत बाद,

गुरुदेव की मां गर्भवती हो गईं। संत ने गुरुदेव के माता-पिता को अपने अजन्मे बच्चे का नाम संत प्रकाश रखने के लिए कहा, जिसका अर्थ है प्रबुद्ध संत। हालांकि, उनके जन्म के तुरंत बाद जब मूसलाधार बारिश होने लगी, तो उनकी दादी ने इसे एक अच्छे शगुन के रूप में देखा। अपने पोते को इन्द्र(हिंदू पौराणिक कथाओं में बारिश के देवता) का आशीर्वाद मानते हुए उन्होंने ज़ोर दिया कि बच्चे के नाम में 'इंद्र' शमिल हो। उनकी इच्छा का सम्मान करने के लिए गुरुदेव के माता-पिता ने अपने नवजात बेटे का नाम राजिंदर रखा, जिसका अर्थ है राजाओं का राजा, और दशकों बाद, गुरुदेव ने बारिश और प्रकृति के कई अन्य तत्वों को नियंत्रित करने की क्षमता प्राप्त की।

हिंदू धर्म के सात महान संतों में से एक थे ऋषि भृगु, जिन्होंने लगभग 5,000 वर्ष पूर्व भृगु संहिता लिखी थी। ऋषि भृगु को पता था कि इस पवित्र आत्मा को राजिंदर नाम दिया जाएगा न कि संत प्रकाश। संहिता का गुरुदेव के बारे में कहना था, 'शिव का एक अंश हरिआना नामक एक गांव में जन्म लेगा और उसका नाम 'राज' से शुरू होगा'।

गुरुदेव के असाधारण भविष्य का पहला संकेत उनके जन्म लेने के कुछ सप्ताह बाद ही प्राप्त हो गया था। गुरुदेव के पिता के एक मुसलमान मित्र ने बच्चे के जन्म पर परिवार को हाथ से बना लकड़ी का पालना उपहार में दिया था। वसंत की एक सुबह, गुरुदेव की मां ने अपने नवजात बेटे को अपने घर की छत पर पालने में लिटा दिया। कुछ समय बाद जब वे वापस लौटीं, तो उन्हें वहां फन फैलाए एक काला नाग पालने पर बैठा मिला। वे डर के मारे सुन्न पड़ गईं और इसी बीच वो नाग रेंगता हुआ दीवार की एक दरार से निकल गया। नाग के दर्शन का अर्थ जानने के लिए गुरुदेव के माता-पिता ने एक पंडित से सलाह ली, जिन्होंने उन्हें

बताया कि यह उनके पुत्र के असाधारण भविष्य का बहुत शुभ संकेत है। ऐसी ही भविष्यवाणी एक अन्य साधु ने भी की थी, जो कुछ वर्ष पश्चात गुरुदेव के घर आए थे। उन्होंने गुरुदेव की मां को बताया था कि 35 वर्ष की आयु में उनका पुत्र 'शिव जैसा' शक्तिशाली संत बनेगा।

शिव एक शक्ति है जो सर्वोच्च चेतना के अनुरूप एक मिश्रित गुणों का समूह है। एक व्यक्ति जो आध्यात्मिक रूप से इतना विकसित हो जाए कि वो मुक्ति (जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्त) पाने में समर्थ हो, उसे शिव के अवतार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। ऐसा जीव या तो मानव या मायावी के रूप में हो सकता है। मानव रूप में शिव की कुछ अभिव्यक्तियां हैं - हनुमान, परशुराम, गुरुदेव, बुड्ढे बाबा, गोरक्षनाथ, यीशु मसीह, गुरु नानक, गुरु गोबिंद सिंह,आदि।

छोटे से बच्चे के भविष्य को लेकर की गई भविष्यवाणियों के बावजूद, गुरुदेव का प्रारंभिक जीवन सामान्य था। जब वे लगभग पांच साल के थे, तो उनका दाखिला हरिआना में डीएवी मॉडर्न स्कूल में करवा दिया गया, जहां उन्होंने हिंदी, उर्दू और फ़ारसी जैसे विषयों का अध्ययन किया। उनके सहपाठी उन्हें एक सामान्य लड़के के रूप में याद करते थे, जिसने पढ़ाई से ज्यादा शरारतों को प्राथमिकता दी और जो आसानी से दोस्त बना लेता था।

वर्ष 1948 में गुरुदेव अपने एक परिचित द्वारा दिया गया भोजन करने के बाद बीमार पड़ गए और बहुत कमज़ोर हो गए। वैद्यकीय सहायता के बावजूद, उन्हें कोई राहत नहीं मिली और उन्होंने बिस्तर पकड़ लिया। अपने पुत्र के इलाज के लिए परेशान, गुरुदेव की मां ने उन्हें उपचार के लिए हरिआना से लगभग 100 किलोमीटर दूर, हिमाचल प्रदेश के

खेतों से फल तोड़ने पर गुरुदेव एवं उनके मित्र सुभाष को किसानों का गुस्सा झेलना पड़ा

हमीरपुर में स्थित, बाबा बालक नाथ के प्रसिद्ध मंदिर में ले जाने पर ज़ोर दिया। गुरुदेव के माता-पिता ने चलने-फिरने में अशक्त अपने पुत्र को मंदिर तक ले जाने के लिए कई किलोमीटर लंबी मुश्किल पहाड़ी यात्रा की। वहां पहुंचने पर, बाबा बालक नाथ के एक शिष्य ने गुरुदेव को पीने के लिए जल दिया और इसे पीने पर गुरुदेव ने छाछ और मसान की उल्टी की। माताजी (गुरुदेव की पत्नी) का मानना था कि चमत्कारिक रूप से स्वस्थ होने की घटना ने गुरुदेव पर एक अमिट छाप छोड़ी और इसी ने शायद उनकी आध्यात्मिक ज्ञान की खोज के लिए एक प्रेरणा का काम किया।

स्वस्थ और चलने-फिरने योग्य होने पर, गुरुदेव अपनी पुरानी शरारतों पर लौट आए। उनके स्कूल के साथी, सुभाष सभरवाल बताते हैं कि वे स्कूल से लौटते समय रास्ते में खेतों से फल तोड़ा करते थे। नाराज़ किसान की शिकायत पर गुरुदेव के पिता जी उन्हें चेतावनी देते कि अगर उन्होंने अपने तौर-तरीके नहीं सुधारे तो उन्हें इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे, लेकिन गुरुदेव पर इस बात का कोई असर नहीं पड़ता था।

इसी तरह एक बार जब वे और सुभाष जी बेर तोड़ने के लिए एक दरगाह में गए, तो दरगाह के फकीर ने उन्हें रंगे हाथों पकड़ लिया। उसने लड़कों से कहा कि वे इस गलती के प्रायश्चित के लिए दरगाह पर सिर झुकाएं। उन्होंने फकीर के निर्देशों का पालन किया। इसके पश्चात, गुरुदेव फकीर के साथ समय बिताने के लिए नियमित रूप से दरगाह जाने लगे। परन्तु इस बार उनके दिल में आध्यात्मिक ज्ञान का फल पाने की चाहत थी। ▪

शुरुआती साल

आध्यात्मिक शुरुआत

***कही-सुनी गई बातों का सच जानने की चाहत में,
उन्होंने लंबा समय बिताया विद्वानों की संगत में,
ताकि ग्रहण कर सकें वो सबकुछ
उनके इस आध्यात्मिक जगत से।***

आध्यात्मिकता में गुरुदेव की रुचि के कारण, वे अपने घर से थोड़ी दूर स्थित शीतला माता के मंदिर में आने वाले साधुओं, फकीरों और गूढ़ ज्ञान रखने वालों के साथ समय बिताने के लिए स्कूल से भाग आते थे। इस दौरान वे जिन लोगों से मिले, उनमें से एक दसुआ के सीताराम जी थे, जो उनके प्रारंभिक आध्यात्मिक उपदेशक बने।

गुरुदेव ने दसुआ के सीताराम जी के मार्गदर्शन में कई सिद्धियां प्राप्त कीं, जिससे उनमें उन आध्यात्मिक कार्यों को करने की क्षमता आ गई जिसे अन्य आध्यात्मिक गुरु कर सकते थे। हालांकि, ये क्षमताएं एक महागुरु के रूप में उन्हें प्राप्त शक्तियों की तुलना में औसत दर्जे की थीं, लेकिन इससे उन्हें आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली और उनके आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त हुआ। संयोग से, उन्होंने महागुरु बनने से पहले इन सभी सिद्धियों को त्याग दिया था।

एक युवा अध्यात्मवादी के रूप में, गुरुदेव हर गुरुवार को गांव के बाहरी

घुटनों तक गहरे पानी से होकर दरगाह
पर चिराग रोशन करने जाते गुरुदेव

इलाके में स्थित सादक शाह वली की दरगाह पर चिराग जलाते थे। इस क्षेत्र में भारी वर्षा एक सामान्य घटना थी और गांव में बाढ़ से आम जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता था। एक गुरुवार को, जब बारिश के चलते उनका गांव बाढ़ से प्रभावित था, गुरुदेव दरगाह पर चिराग जलाने के लिए घुटने भर पानी से होकर गए। चिराग को लगातार बारिश और तेज हवाओं से बुझने से बचाने के लिए उन्होंने अपने शरीर को ढाल बना दिया। बहुत कम उम्र में ही उनमें आध्यात्मिक अनुशासन आने लगा था।

अपने शुरुआती वर्षों में ही गुरुदेव में प्राणी मात्र के लिए करुणा की भावना आ गई थी। उनके पिता जी उन्हें जेब खर्च के लिए कुछ पैसे देते थे। उसमें से वे पशु-पक्षियों और मछलियों के लिए भोजन खरीदा करते थे। हरिआना के मोहन सिंह चीरा, जो बाद में गुरुदेव के भक्त बने, याद करते हैं कि गुरुदेव जेब खर्च का बाकी हिस्सा अपने दोस्तों को खिलाने-पिलाने पर खर्च कर दिया करते थे। उन्होंने शायद ही कभी खुद पर पैसा खर्च किया हो। किशोर अवस्था में भी गुरुदेव बहुत बड़े दिल के मालिक थे!

बाद के वर्षों में, अपने से ज्यादा दूसरों को अहमियत देने की यह आदत उनके व्यक्तित्व की एक प्रभावशाली विशेषता बन गई।

गुरुदेव को अपनी आध्यात्मिक खोज का मूल्य अपनी पढ़ाई से चुकाना पड़ा। उनके माता-पिता को हमेशा उनकी स्कूल के शिक्षकों से पढ़ाई में उनकी अरूचि की शिकायतें मिलती थीं। गुरुदेव का पढ़ाई में ध्यान लगाने के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। गुरुदेव के माता-पिता को उस समय आश्चर्य और राहत की एक अजीब

अनुभूति हुई, जब गुरुदेव स्कूल में औसत अंकों से पास हुए। इसके बाद उन्होंने गुरुदेव को दिल्ली भेजने का निर्णय लिया, जहां पेशेवर अवसर उपलब्ध थे और जहां किसी तरह की आध्यात्मिक बाधा नहीं थी।

दिल्ली में न केवल एक पेशेवर के तौर पर गुरुदेव के जीवन की शुरुआत हुई, बल्कि उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा में भी प्रगति की और अध्यात्म के शिखर पर पहुंच गए। ▪

शुरुआती साल

गहरी दोस्ती

दुनिया के शोरगुल में बने कुछ नए दोस्त,
जिन्हें लगता था बड़ा मज़ाकिया है वो शख्स,
पर उन्हें क्या खबर थी कि जब गुजरेंगे साल,
तो वो दोस्त बन जाएगा उन्नत और बेमिसाल।

वर्ष 1955 में गुरुदेव शाहदरा, पुरानी दिल्ली, में अपने ताया जी के घर रहने चले गए। वे अपने ताया जी पर बोझ नहीं बनना चाहते थे, इसलिए आत्मनिर्भर होने के लिए उन्होंने पेन और टॉफियां बेचीं और यहां तक कि बस कंडक्टर के रूप में भी काम किया। ताया जी के परिवार के आभारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए गुरुदेव खुद ही उनके घरेलू काम कर दिया करते थे। अक्सर, वह पन्द्रह-बीस किलो वजन की अनाज की बोरियों को अपनी पीठ पर लादकर पिसाने के लिए चक्की पर ले जाते और यह दूरी वह मंत्रों का जाप करते हुए पूरी करते।

एक सुबह, जब गुरुदेव पड़ोस में टहल रहे थे, तब उन्होंने देखा कि एक बुजुर्ग महिला अपनी गाय का दूध निकालने की असफल कोशिश कर रही थीं। गुरुदेव ने मदद की पेशकश की। उन्होंने गाय को कई बार प्यार से थपथपाया, तो उसने दूध देना शुरू कर दिया। इसके बाद से, बुजुर्ग महिला के लिए वे भाग्यशाली साबित हो गए। जब भी गाय का दूध निकालना होता, तो वह गुरुदेव की मदद लेतीं। एक दिन बातचीत के दौरान, महिला ने गुरुदेव से पूछा कि वे कहां पढ़ रहे हैं। उन्होंने उसे बताया कि वे इस शहर में नए हैं और वे ऐसे किसी भी व्यक्ति को

नहीं जानते, जो पढ़ाई में उनका मार्गदर्शन कर सके। इसलिए, वे बस यूं ही खाली बैठे समय बिता रहे हैं। यह सुनकर, बुजुर्ग महिला ने उन्हें मार्गदर्शन के लिए अपने पति से मिलने के लिए कहा। उनके पति पूसा (PUSA) संस्थान के प्रमुख थे, और गुरुदेव ने उनके सुझाव पर भारत सरकार द्वारा स्थापित एक विकास एजेंसी भारत सेवक समाज (बीएसएस) में दो साल के तकनीकी पाठ्यक्रम में दाखिला ले लिया। कोर्स पूरा करने पर, गुरुदेव वर्ष 1958 में मृदा-सर्वेक्षणकर्ता के रूप में, कृषि मंत्रालय के तहत, अखिल भारतीय मृदा और भूमि उपयोग सर्वेक्षण, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), पूसा, में शामिल हुए। बीस साल की उम्र में उन्हें 150 रुपए का अपना पहला वेतन मिला।

काम के दौरान गुरुदेव से मित्रता करने वाले पहले लोगों में से एक किशनलाल नागपाल थे, जिन्हें गुरुदेव नागा कहकर बुलाते थे। यह नियति का खेल था कि अनजाने में हुई एक गलती के कारण, नागपाल जी की नियुक्ति गुरुदेव के विभाग में हो गई। नागपाल जी ने नौकरी का आवेदन-पत्र 'के.एल. नागपाल' के नाम से किया था। उन्हें नहीं पता था कि एक प्रभावशाली राजनेता का बेटा जिसका नाम भी 'के.एल. नागपाल' था, ने भी उसी नौकरी के लिए आवेदन-पत्र दिया था। नौकरी देने का निर्णय लेते समय विभाग के अधिकारियों ने अनजाने में यह मान लिया कि नागपाल जी राजनेता के बेटे हैं और उन्हें नौकरी दे दी, जिससे नागपाल जी का परिचय उस व्यक्ति से हुआ जो उनके जीवन की दिशा बदलने वाला था। ये बातें उन चंद इत्तेफाक में शामिल हैं जो गुरुदेव नाम की इस पहेली के संपर्क में आने के लिए नियति ने तय करीं थीं।

जब गुरुदेव को ठहरने के लिए जगह की आवश्यकता थी, तो उन्होंने नागपाल जी से पूछा कि क्या वे उनके साथ रह सकते हैं। नागपाल जी अपने मित्र एवं मकान मालिक, द्वारकानाथ जी के साथ दिल्ली में

पहाड़गंज के भीड़-भाड़ भरे इलाके में स्थित 120 वर्ग फुट के एक छोटे-से कमरे में रहते थे। द्वारकानाथ जी केन्द्रीय निर्माण विभाग (CWD) में काम करते थे। द्वारकानाथ जी ने गुरुदेव से मिलने पर ज़ोर दिया और कहा कि अगर गुरुदेव उन्हें ठीक लगे तो वे उन्हें अपना रूममेट बना लेंगे। कुछ मिनटों की मुलाकात में, द्वारकनाथ जी को अपने सामने बैठे युवक के साथ एक जुड़ाव महसूस हुआ। उन्होंने बताया, "जब मैंने पहली बार गुरुदेव से बात करना शुरू की, तो मैं बहुत प्रभावित हुआ। वे बुद्धिमान थे और सब कुछ समझते थे। उनका बात करने का तरीका अद्भुत था, और मुझे लगा कि हमारी अच्छी निभेगी। इसलिए मैं सहमत हो गया और हम साथ रहने लगे।" एक व्यवस्था की गई जिसके तहत भोजन के लिए प्रत्येक रूममेट को हर महीना एक मासिक मैस फंड में 30 रुपए देना था। वे सभी अपनी सीमित कमाई के हिसाब से जीवन बिताते थे। तीनों दोस्त नाश्ते और दोपहर के भोजन में सादे पराठे खाते थे। कभी-कभी वे अपने अपार्टमेंट के पास के ढाबे से पकौड़े का लुत्फ भी उठा लेते थे। हालांकि रात के खाने में ज्यादातर दाल, दही और चावल के साथ-साथ पिछली रात का बचा हुआ खाना होता था।

गुरुदेव छोटी-छोटी चीजों में खुशियां ढूंढ लेते थे। हर सप्ताहांत, वे अपने साथियों के साथ दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में घूमने की योजना बनाते थे। सिनेमा प्रेमी होने के नाते उन्हें थिएटर में लगने वालीं नई-नई फिल्में देखने में बहुत मज़ा आता था। गुरुदेव की तरह नागपाल जी को भी फिल्में पसंद थीं, लेकिन द्वारकानाथ जी को उन्हें जबर्दस्ती अपने साथ ले जाना पड़ता था। द्वारकानाथ जी को सुबह जल्दी उठने की आदत थी, इसलिए वे देर रात वाले शो में अक्सर सो जाते थे। इस उलझन को सुलझाने के लिए गुरुदेव ने एक अनोखा तरीका अपनाया। द्वारकानाथ जी को गुरुदेव और नागपाल जी के बीच बैठाया जाता था ताकि नींद लगने पर उन्हें दोनों तरफ से जगाया जा सके!

कुतुबमीनार पर गुरदेव (दाएं), नागपाल जी
(बाएं) और द्वारकानाथ जी (बीच में)

लोगों को जगाए रखने के अनोखे तरीकों का आविष्कार करने के अलावा, गुरुदेव की खुशमिज़ाजी सभी को आनंदित करती थी। वे अपने दोस्तों को लोगों की नकल उतार के बहुत हंसाते और सब को उनका साथ बहुत पसंद था। द्वारकानाथ जी के बड़े भाई तो यह तक कहते थे कि वे गुरुदेव की उपस्थिति में ही अपने छोटे भाई से मिलने आएंगे। गुरुदेव, द्वारकानाथ जी और नागपाल जी की गहरी मित्रता संक्रामक थी। जल्द ही, एक सहकर्मी जैन साहब और उनके पड़ोसी कुंदनलाल साहनी भी इस टोली में शामिल हो गए। पांचों दोस्त द्वारकानाथ जी के छोटे से कमरे में पकौड़े खाते और हंसी-मज़ाक में अपना समय बिताया करते थे। जब कभी उनका मन लता मंगेशकर, मुकेश और मुहम्मद रफी की भावपूर्ण आवाजें सुनने का होता, तो गुरुदेव का जादुई स्पर्श ही काम आता। द्वारकानाथ जी के पास एक पुराना रेडियो था जिसके अस्थि-पिंजर ढीले पड़ गए थे। लेकिन जब गुरुदेव उसे थपाथपाते, तो वह उनके दोस्तों के मनोरंजन के लिए बजना शुरू हो जाता था!

गुरुदेव सभी से बड़ा मेल-जोल रखते थे और इसी वजह से कुंदनलाल जी और द्वारकानाथ जी उनके साथ समय बिताने के लिए ऑफिस से छुट्टी लेकर हिमाचल प्रदेश में उनके शिविरों में चले जाया करते थे। एक मेजबान के रूप में गुरुदेव इस बात का खास ध्यान रखते थे कि उनके मेहमानों को किसी प्रकार की तकलीफ न हो। शिविर में मन बहलाने के लिए वे सब शतरंज या ताश खेलते थे, जिसमें गुरुदेव हमेशा जीतते थे। यह देखकर कि गुरुदेव का भाग्य हमेशा उनका साथ देता है, उनके मित्र और सहकर्मी उनसे अपनी ओर से खेलने का अनुरोध करते। गुरुदेव उनके पक्ष में खेलते और उन्हें जीत दिलाते। हालांकि, महागुरु बनने के बाद, गुरुदेव जुए और सट्टेबाजी के सख्त विरुद्ध थे।

अत्यन्त उदार व्यक्ति होने के नाते, गुरुदेव लोगों की मदद करने से पहले

ज्यादा सोच-विचार नहीं करते थे। हालांकि, अक्सर उनकी दयालुता का फायदा उठाया जाता था। द्वारकानाथ जी ने जब इस ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया, तो गुरुदेव ने कहा, "मैं जानता हूं। लेकिन जब कोई मुझसे मदद मांगता है, तो मैं उनके इरादों को जानते हुए भी उनकी मदद से इंकार नहीं कर सकता।"

गुरुदेव के प्रफुल्लित व्यक्तित्व के बावजूद, उनके रूममेट गुरुदेव के आध्यात्मिक झुकाव से अनजान नहीं थे, क्योंकि जब कभी मध्यरात्रि में उनकी नींद खुल जाती तो वे पाते कि गुरुदेव कंबल लपेटे ध्यान मुद्रा में लीन हैं। द्वारकानाथ जी ने ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया, जो गुरुदेव के असाधारण व्यक्तित्व की पुष्टि करती हैं। द्वारकानाथ जी और नागपाल जी शिव भक्त थे। वे गुरुदेव को अपने साथ अपने कमरे के पास स्थित शिव मंदिर चलने को कहते थे। जब उनके दोस्त भक्ति भाव से मंदिर में प्रवेश करते, तो गुरुदेव मंदिर के बाहर खड़े रहकर उनका इंतजार करने पर ज़ोर देते। उनके रूममेट्स को यह अजीब लगता क्योंकि वे जानते थे कि गुरुदेव शिव-मंत्रों का जाप करते हैं।

अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर मैं यह जान सका कि गुरुदेव ने कभी मंदिरों में प्रवेश क्यों नहीं किया। एक बार जब गुरुदेव और मैं दिल्ली आने के लिए मध्य प्रदेश के बीना स्टेशन पर गाड़ी का इंतजार कर रहे थे। भले ही गुरुदेव मेरे बगल में बैठे थे पर अति आध्यात्मिकता से प्रेरित होकर मैंने सड़क किनारे स्थित एक पेड़ के नीचे बने छोटे से मंदिर में दीया जलाने का फैसला किया। जैसे ही मैंने ज्योति जलाई, मेरे शरीर में ऐंठन हुई क्योंकि मैंने अनजाने में अपने अंदर उस मंदिर की शक्ति को आकर्षित कर लिया था। अगर यह एक बड़ा मंदिर होता, तो भगवान जाने क्या होता! संभवतः गुरुदेव ने शिव मंदिरों पर स्वामित्व की भावना महसूस की और शायद मंदिरों में इसलिए नहीं गए क्योंकि वे उन मंदिरों की ऊर्जा का संतुलन नहीं बिगाड़ना चाहते थे।

द्वारकानाथ जी ने यह भी देखा कि गुरुदेव की भविष्यवाणी सच होती थीं। एक बार उन्होंने और नागपाल जी ने एक दिन के लिए आगरा जाने का फैसला किया। जाने से एक दिन पहले, उन्होंने गुरुदेव को इसके बारे में सूचित किया। उनको छोड़कर जाने की बात ने गुरुदेव को परेशान कर दिया। उन्होंने एक दम ही कह दिया कि उनके बिना वो दोनों आगरा नहीं जा पाएंगे। चूंकि यात्रा की तैयारियां पूरी हो चुकी थीं, यहां तक कि बर्थ के आरक्षण की भी पुष्टि हो गई थी, इसलिए द्वारकानाथ जी ने यह सोचकर गुरुदेव के शब्दों को अनसुना कर दिया कि शायद वे उन्हें छोड़कर जाने पर गुस्सा होंगे।

अगली सुबह दोनों समय पर स्टेशन पहुंच गए, लेकिन वहां जाकर पता चला कि गाड़ी पांच घंटे विलम्ब से आएगी। द्वारकानाथ जी और नागपाल जी को पता था कि वे अगले दिन काम पर नहीं लौट पाएंगे, इसलिए वे वापस घर लौट आए। द्वारकानाथ जी को याद है कि गुरुदेव ने उनका स्वागत मुस्कराहट और अपनी पसंदीदा पंजाबी गालियों के साथ किया था!

इन अजीब घटनाओं के बावजूद, गुरुदेव के दोस्तों को एक हंसमुख और सिगरेट पीने वाले दोस्त को गंभीर अध्यात्मवादी के रूप में स्वीकारने में दिक्कत हो रही थी। वास्तव में, जब गुरुदेव ने जैन साहब को सूचित किया कि गुरुदेव भविष्य में कई लोगों के गुरु बनेंगे, तो संभावित स्थिति की कल्पना करके जैन साहब काफी हंसे। परिचय के पर्दे के कारण, जैन साहब सत्य को स्वीकार नहीं कर पाए। पर विधि का विधान कुछ और ही था। वर्षों बाद, गुरुदेव के महागुरु बनने के बाद, द्वारकानाथ जी और नागपाल जी अपने पूर्व मित्र के भक्त बन गए, जबकि जैन साहब उनके सबसे प्रभावशाली शिष्यों में से एक बने।

गुरुदेव का जादुई स्पर्श, गायों को दूध देने, रेडियो को बजाने एवं भविष्य में हमारे कान खींचकर हमें अपनी उंगलियों पर नचाने में बहुत काम आया! ▪

परिवार के साथ (बाएं से दाएं) – रेणु, ईला, गुरुदेव, पुनीत, परवेश, माताजी और अल्का

गृहस्थ आश्रम

इन पन्नों से आगे जानने के लिए सुनिए
पॉडकास्ट '**द फैमिली मैन**'
www.gurudevonline.com पर।

गृहस्थ आश्रम

शिव का शक्ति से मिलन

जिस नारी से हुआ विवाह,
बनीं वो उनकी शक्ति का आधार,
और उस शिव की शक्ति ने
मातृ भाव से संभाली घराने की बागडोर,
जीवन भर थामे रखी रिश्तों की हर डोर।

जैसे ही गुरुदेव की नौकरी लग गई और वे अपने जीवन में व्यवस्थित हो गए तो उनके माता-पिता ने अपने बेटे के लिए योग्य वधू की तलाश शुरू कर दी। उनकी खोज वर्ष 1960 में तब समाप्त हुई जब गुरुदेव ने 20 वर्षीय सुदेश शर्मा जी से शादी की, जो पंजाब के लुधियाना में रहने वाले एक सम्मानित परिवार से थीं। वर्षों बाद, सब ने श्रद्धापूर्वक उन्हें मां का दर्जा दिया और वे 'माताजी' के रूप में जानी जाने लगीं।

माताजी के पिता एक कोयला व्यापारी थे, जिनकी मृत्यु तभी हो गई थी जब वे छोटी थीं। सात भाई-बहनों में माताजी सबसे छोटी थीं। उनके सबसे बड़े भाई प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे, जबकि एक अन्य भाई, रुद्र जी, एक शिक्षक थे।

माताजी ने अपनी मृत्यु से कुछ वर्ष पूर्व मुझे दिए गए एक इंटरव्यू में बताया था कि विवाह के समय उन्हें गुरुदेव के आध्यात्मिक रुझान का

अंदाजा नहीं था। शादी के एक हफ्ते बाद ही उन्हें इस बात का पता चला, जब उन्होंने गुरुदेव को बिस्तर पर अचेतन अवस्था में लेटा हुआ पाया। किसी अनहोनी की आशंका से वे मदद के लिए चिल्लाते हुए अपनी ननद के कमरे की ओर भागीं। गुरुदेव की बहन ने उन्हें सूचित किया कि पाठ (ध्यान अवस्था) के दौरान गुरुदेव अचेतन अवस्था में चले जाते हैं इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है। गुरुदेव के आध्यात्मिक पहलू से अपना पहला सामना याद करते हुए माताजी हंस पड़ी थीं।

अधिकांश शादियों की तरह, उनकी भी कुछ शुरुआती समस्याएं थीं। शादी के कुछ हफ्तों में, गुरुदेव ने समकालीन तरीके से संन्यास लेने का फैसला ले लिया। उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए गृह त्याग कर दिया। पांच साल बाद, अमृतसर में गुरुद्वारा श्री संतोकसर साहेब में ध्यान करते हुए, गुरुदेव को एक आवाज़ सुनाई दी कि उनको अंतिम आध्यात्मिक उपलब्धि तभी होगी जब वे पति के रूप में अपने कर्तव्यों को पूरा करेंगे। वह जल्द ही माताजी के पास लौट आए और गृहस्थ के जीवन को अपनाया। वर्षों बाद, उन्होंने अपने शिष्यों में भी गृहस्थ आश्रम की इस अवधारणा को विकसित किया।

गुरुदेव अपनी पत्नी, जो एक स्कूल शिक्षिका थीं, को प्यार से 'मास्टर' कहा करते थे। वे बड़े विनम्र और सजग पति थे और अपने मज़ाकिया स्वभाव से माताजी को खूब हंसाते थे। गुरुदेव के महागुरु के रूप में अवतरित होने से पूर्व माताजी का जीवन साधारण सुखों से भरपूर था, जैसे कि गुरुदेव के साथ साइकिल या स्कूटर पर सवारी करना और देर रात के सिनेमा शो देखना। जब एक बार गुरुदेव ने माताजी से कहा, "मास्टर, देखना 35 वर्ष की उम्र में मैं क्या बन जाऊंगा!" माताजी ने सहज रूप से उसे काम पर पदोन्नति और वेतन में वृद्धि से संबंधित भविष्यवाणी मान लिया। वे यह नहीं जानती थीं कि गुरुदेव उस उम्र

का जिक्र कर रहे हैं, जहां वो एक गृहस्थ और आध्यात्मिक साधक से महागुरु बन जाएंगे। माताजी ने बड़े मज़े से इस कहानी को याद किया और अपने गलत अनुमान को लेकर हंस पड़ीं।

माताजी, शिक्षिका के रूप में, अपने वेतन और गुरुदेव के दिए पैसों से घर का खर्च चलाया करती थीं। भले ही उन्होंने कभी शिकायत ना की हो, लेकिन छोटे बच्चों की परवरिश करते हुए, कम पैसों में घर चलाना आसान नहीं था।

गुरुदेव की आध्यात्मिक यात्रा में माताजी एक सहयोगी और सूत्रधार बनीं। वह गुरुदेव की शक्ति थीं, जिसने घर की देखभाल की जिम्मेदारी ली, जबकि गुरुदेव ने सेवा पर ध्यान केंद्रित किया।

गुरुदेव की आध्यात्मिक समझ अक्सर माताजी को हैरान कर देती। वे उनके ज्ञान के स्रोत का अंदाजा ही ना लगा सकीं जो कि प्राचीन काल के महान गुरुओं और संतों की बराबारी का था। वे उन्हें केवल उर्दू अख़बार या कर्नल विनोद जैसे जासूसी उपन्यास पढ़ते हुए देखती थीं। अपने वैवाहिक जीवन के शुरुआती वर्षों में, माता जी गुरुदेव की तीसरी आंख खुलने के विचार और उनके उद्देश्य में छिपी शक्ति को समझने के लिहाज से काफी मासूम थीं।

गुरुदेव ने अपनी पत्नी पर अपनी मान्यताओं को कभी नहीं थोपा। वे व्यावहारिक थे और अक्सर माताजी को अपनी आध्यात्मिक और धार्मिक आस्थाओं का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करते थे। एक बार गुरुदेव ने माताजी से कहा था कि यदि वह मंत्र जाप न भी करें तो भी गुरुदेव की निःस्वार्थ सेवा और पाठ के लाभ का आधा हिस्सा उनको मिलेगा ही। कई वर्षों बाद गुरुदेव ने माताजी को प्रभावशाली महागायत्री

DOST

स्कूटर पर सवार होकर फिल्म
देखने जाते गुरुदेव एवं माताजी

मंत्र दिया। माताजी ने एक मज़ेदार प्रसंग याद किया जब गुरुदेव ने उनसे मज़ाक में कहा था कि वे मंत्रों का जाप बंद कर दें, नहीं तो वे गुरुदेव से ज्यादा शक्तिशाली बन जाएंगी। एक-दूसरे से भली-भांति परिचित, गुरुदेव और माता जी की आपसी चुहलबाजी देखने में हमें बहुत मज़ा आता था। वैसे देखा जाए तो भला ऐसे पति कहां मिलेंगे जो नारीत्व के निशाने से बच सके हों!

गुरुदेव एक सख्त शिक्षक थे, जो अक्सर अपने शिष्यों की अग्नि परीक्षा लेते थे। हमारे लिए उन्होंने जो उच्च मानक निर्धारित किए थे, हम हरदम उन पर खरे नहीं उतर पाए और हमें नियमित रूप से उनकी फटकार सुननी पड़ी। तब माताजी हमारी अधिवक्ता के रूप में, जज साहब यानी गुरुदेव के सामने पूरे साहस के साथ हमारे मामलों की पैरवी करती थीं, जबकि हम उनकी आड़ में अपना बचाव करते थे।

माताजी हमारे साथ अपने बच्चों जैसा ही व्यवहार करती थीं। वे हमारी तरफदारी करतीं, हमारी देखभाल करतीं और गुरुवाद के सांप-सीढ़ी के खेल में वे हमारा मनोबल बढ़ातीं। माताजी न केवल अपने पति की सहायक थीं, बल्कि उनके शिष्यों की मां और स्वयं में एक आध्यात्मिक शक्ति भी थीं।

जब एक शिष्य ने अपनी बेटी की सगाई का समारोह आयोजित किया, तो वह आमंत्रित मेहमानों से ज्यादा मेहमानों को देखकर परेशान हो गया। वह भोजन कम पड़ जाने की आशंका से चिंतित था। जब माताजी कार्यक्रम स्थल पर पहुंचीं, तो शिष्य ने उन्हें अपनी आशंका से अवगत कराया। माताजी ने उसे उन्हें रसोई में ले चलने के लिए कहा। फिर उन्होंने उन बर्तनों के अंदर झांककर देखा जिनमें भोजन रखा था और भोजन को ढक्कन से ढक दिया। उन्होंने वहां उपस्थित लोगों से कहा कि

वे भोजन परोसते समय बर्तनों के अंदर ना झांकें। जो भोजन 150 लोगों के लिए तैयार किया गया था, 250 लोगों के लिए पर्याप्त हो गया। जब शिष्य ने गुरुदेव को पूरी बात से अवगत कराया तो गुरुदेव ने टिप्पणी की, "आपकी माता अन्नपूर्णा (भोजन और पोषण की दाता) हैं।"

जब एक वाहन दुर्घटना में एक शिष्य के बेटे के सिर में कई फ्रैक्चर हो गए, तो उसके माता-पिता ने स्थान (मदद एवं उपचार के लिए केंद्र) से मदद मांगी। माताजी अगले दिन अस्पताल पहुंचीं और उन्होंने लड़के के सिर पर हाथ रखा और चिंतित माता-पिता को हिम्मत देकर वापस लौट गईं। एक हफ्ते बाद जब अगला एमआरआई स्कैन किया गया, तो सिर पर केवल एक माइक्रोफ्रैक्चर दिखाई दे रहा था!

गुरुदेव के निधन के बाद, माताजी ने एकचित्त होकर निस्वार्थ सेवा की विरासत को आगे बढ़ाया। उनकी यह प्रतिबद्धता अपने पति और उनके निस्वार्थ काम के प्रति उनके गहरे और अटूट विश्वास को दर्शाती है।

माताजी का निधन मई 2014 में हुआ। ज्योतिषीय दृष्टि से देखा जाए तो उनकी शरीर त्यागने की घड़ी में तारों का शुभ संयोग था। ऐसे शुभ मुहूर्त बहुत कम लोगों को नसीब होते हैं, जो उनकी उच्च आध्यात्मिक स्थिति का सूचक था।

इस जीवनकाल में गुरुदेव और माताजी का रिश्ता एक विवाहित जोड़े का रहा होगा, लेकिन वास्तव में यह एक असाधारण शक्तिशाली आध्यात्मिक गठबंधन था। ▪

गली क्रिकेट खेलते गुरुदेव

गृहस्थ आश्रम

एक पिता

हर तूफां में डटे रहे,
हर स्थिति को किया स्वीकार
न आडंबर, ना कोई प्रवचन,
बस जिया अपना जीवन
और सिखाया जीवन दर्शन।

एक पिता के रूप में, गुरुदेव अपने स्नेह का अत्यधिक प्रदर्शन नहीं करते थे। अपने बच्चों के लिए उनका प्यार कभी-कभी लाड़-दुलार और अधिकतर उनके द्वारा साझा किए गए ज्ञान में अभिव्यक्त होता था।

जब एक लोकप्रिय भारतीय अभिनेता एक फिल्म की शूटिंग के दौरान गंभीर रूप से घायल हो गए, तो गुरुदेव की बेटी रेणु जी और बेटे परवेश जी ने अपने पिता से उस अभिनेता की मदद का अनुरोध किया। उन्हें विश्वास था कि उनके पिता के हस्तक्षेप से अभिनेता को जीवन दान मिल जाएगा। दोनों बच्चों की आंखों में आंसू देखकर, गुरुदेव ने रिआयतपूर्वक उन्हें अभिनेता की तस्वीर के साथ कागज पर अपना अनुरोध लिखकर स्थान पर रखने के लिए कहा। जैसा कि विधि का विधान था, वह अभिनेता बच गया और बच्चों की भी ख्वाहिश पूरी हो गई।

भले ही गुरुदेव का अधिकांश खाली समय दूसरों की सेवा में बीतता था, लेकिन वह हमेशा अपने पिता होने के कर्तव्यों के प्रति सचेत रहते थे। जब उनकी बेटियां उनसे सलाह मांगती थीं, तो गुरुदेव उनकी बात

ध्यान से सुनते और उन्हें समाधान देते थे। बसंत पंचमी पर वे अपने बेटों के लिए पतंग बनाते थे और उन्हें पतंगबाजी के गुर सिखाते थे। हर साल जब स्कूल में गर्मियों की छुट्टियां होतीं, गुरुदेव का परिवार उनके मृदा-सर्वेक्षण शिविर में शामिल हो जाता। गुरुदेव जानते थे कि उनके छोटे बच्चे बहुत जल्दी ऊब जाते हैं, और इसीलिए वे इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि इस तरह की यात्राओं के दौरान बच्चों का मन भी लगा रहे। चूंकि रात में शिविरों में ज्यादा कुछ करने को नहीं होता था, इसलिए वह बहुत-से वीडियो टेप्स के साथ एक वीसीआर ले जाते, ताकि परिवार फिल्म देखकर अपना समय बिता सके। कभी-कभी, वो सभी के लिए पोहा और उपमा जैसे साधारण व्यंजन भी बनाते थे। भोजन साधारण हो सकता था, लेकिन भोजन पकाने वाले हाथ साधारण नहीं थे, ना ही साधारण थी उनकी वो ऊर्जा जो उनकी आंखों के माध्यम से खाने में प्रवाहित होती थी।

रेणु जी ने स्वीकार किया कि एक युवा लड़की के रूप में वह उम्मीद करती थी कि गुरुदेव उन आगंतुकों के साथ, जो मदद और उपचार के लिए उनके घर आते थे, कम समय बिताएं और उनके और उनके भाई-बहनों को अधिक समय दें। जब उन्होंने इस बात को लेकर अपनी मां से अपनी निराशा व्यक्त की, तो माताजी ने कहा, "बेटा, अगर आपके पिता के कुछ मिनट किसी को दर्द से राहत दे सकते हैं, तो क्या हमें इसको प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए?" इसके बाद रेणु जी ने कभी शिकायत नहीं की। वास्तव में, गुरुदेव की समानुभूति ने रेणुजी को गरीबों के बच्चों को भोजन कराने और प्रवासी मजदूरों के बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जो उनके घर के नजदीक ही काम किया करते थे।

रेणु जी गुरुदेव के सांगठनिक कौशल से भी प्रभावित थीं। गुरुदेव अक्सर बड़ी संख्या में लोगों के साथ यात्राएं करते थे, बिना कोई पूर्व योजना

(प्री-प्लानिंग)या बजट के। रेणुजी ने उत्तराखंड के एक मनोरम हिल-स्टेशन मसूरी की एक ऐसी यात्रा की, जहां पर उन्होंने एक अमूल्य पाठ सीखा।

एक दिन, गुरुदेव ने इंदु शर्मा नामक एक शिष्या को निर्देश दिया कि वे माताजी सहित सभी को यह बता दें कि बाहर सैर पर जाने से पहले सभी लोग दोपहर का भोजन कर लें। चूंकि इंदु जी रसोई की प्रभारी थीं, उन्होंने लगभग तीस-पैंतीस लोगों के लिए रोटियों के साथ आलू और शिमला मिर्च की सब्जी तैयार की। जब इंदु जी को छोड़कर सबने खाना खा लिया, तो उन्होंने रेणु जी से कहा कि वे गुरुदेव से भी पूछे कि क्या उनके लिए भी भोजन परोस दिया जाए। रेणु जी ने जब गुरुदेव को संदेश दिया, तो वे रसोईघर में गये। उन्हें देखते ही इंदु जी हैरान रह गईं। बहुत अनुरोध करने के बावजूद भी गुरुदेव ने इन्दु जी को अपने कमरे में भोजन परोसने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उन्हें वहीं भोजन परोसा जाए। झिझकते हुए, इंदु जी ने कढ़ाई से ढक्कन हटाया, जिसमें मात्र थोड़ी-सी सब्जी बची थी। उन्होंने एक थाली में दो रोटियों के साथ सब्जी रखी और उसे गुरुदेव को दे दिया। बदले में, गुरुदेव ने एक और प्लेट उठाई, सब्जी और रोटियों को दो भागों में विभाजित किया, और एक प्लेट इंदु जी को देते हुए उनसे अनुरोध किया कि वह भी भोजन ग्रहण करें। रेणु जी ने देखा कि खाना खाते समय गुरुदेव के चेहरे पर मुस्कान थी। भोजन समाप्त करने के बाद वे उनकी तरफ मुड़े और कहा, "पुत्त जेनु खेलान चे मज़ा आग्या ना, ओनु खाणे दा मज़ा नहीं रेहन्दा।" पंजाबी से हिन्दी में इसका अनुवाद कुछ इस प्रकार है-

"

जिसे दूसरों को खिलाने में मजा आने लगे,
वह खुद के खाने की परवाह नहीं करता।

गुरुदेव बहुत अच्छे मेज़बान थे। वे अपने मेहमानों का स्वागत सादे और स्वादिष्ट भोजन से किया करते थे। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ जब गुरुदेव के लिए कुछ खास पकाया गया हो। जो भी भोजन पकाया जाता वह कृतज्ञतापूर्वक, बिना कुछ कहे खा लेते थे।

गुरुदेव ने उच्च उद्देश्य का जीवन जीया और बदले में अपने बच्चों को प्रेरित किया। वे उदाहरण देकर उन्हें समझाते, उन्हें अपनी सोच को ऊंचा करने के लिए प्रोत्साहित करते और उन्हें अपने जीवन में समानुभूति और करुणा को स्थान देने की सलाह देते।

गुरुदेव के बेटे परवेश जी और पुनीत जी सेवा में शामिल हैं, जबकि उनकी तीन बेटियाँ रेणु जी, इला जी और अल्का जी विवाहित हैं और भारत के अलग-अलग शहरों में रहती हैं। गुरुदेव की ज्ञानपूर्ण सलाहें उनका मार्गदर्शन करने में अब तक कामयाब रही हैं।

गुरुदेव न सिर्फ अपने जैविक (बायोलॉजिकल) बच्चों के पिता थे, बल्कि बहुत-से अन्य लोगों के लिए भी एक पिता की भूमिका निभाते थे। गुड़गांव स्थान के चार मस्तीखोर - निक्कू, पप्पू, बिट्टू और गग्गू - इसी श्रेणी के थे। इन चारों का गुरुदेव के साथ अद्‌भुत रिश्ता था। वे उनकी रोजमर्रा की आवश्यकताओं का ध्यान रखते, स्थान पर आए आगंतुकों के रोस्टर का निरीक्षण करते, और ऐसे अनेक आवश्यक कार्य करते जो इस तरह के संस्थान को चलाने के लिए बहुत जरूरी होते थे। गुरुदेव के प्रति उनका लगाव कुछ इस तरह का था कि समय पर भोजन न करने या अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करने पर वह गुरुदेव को खरी खोटी सुना देते थे। जिस तरह घरेलू मोर्चे पर यह चौकड़ी महागुरु पर हावी होती थी, वे दृश्य अद्‌भुत होते थे। इन चारों की उपस्थिति में गुरुदेव जिस तरह एक अधीन पिता की भूमिका निभाते, वह निश्चित रूप से ऑस्कर विनिंग प्रदर्शन होता था।

बिट्टू जी ने ऐसी ही एक दिलचस्प घटना के बारे में बताया जो गुरुदेव के व्यक्तित्व के इस पहलू पर प्रकाश डालती है। एक दिन गुरुदेव बिट्टू जी और उनके दोस्तों के साथ गली क्रिकेट खेल रहे थे। क्रीज पर बल्लेबाजी करते हुए गुरुदेव ने एक शॉट लगाने का प्रयास किया और चूक गए। क्रिकेट की गेंद उनकी लुंगी में उलझ गई। गेंदबाज ने ज़ोरदार अपील की क्योंकि गुरुदेव निश्चित रूप से एलबीडब्ल्यू हो गये थे। लेकिन गुरुदेव ने अपने खिलाफ की गई अपील को दृढ़ता से ठुकराते हुए स्वयं को "नॉट आउट" घोषित कर क्रीज़ छोड़ने से मना कर दिया। लुंगी के कारण स्वयं को नॉट आउट घोषित करना सभी के लिए हंसी का सबब था। यह इस बात का सटीक उदाहरण था कि उन्होंने एक महागुरु होने के बावजूद अन्य सभी भूमिकाओं को निभाया, जिनकी अपेक्षा उनसे की जाती थी। अपने जीवनकाल में उन्होंने एक गुरु, पति, पिता, पुत्र, भाई एवं मित्र जैसी बहुत-सी जज़्बाती भूमिकाएं निभाईं, लेकिन हर भूमिका को वे भावनारहित होकर निभाते थे।

गुरुदेव में परिस्थितियों के अनुसार
अपनी भूमिका निभाने की अद्भुत कला थी,
जिसने उन्हें सबका प्रिय बना दिया था।

गुरुदेव क्रिकेटर नहीं थे, लेकिन उन्होंने आध्यात्मिक लाइन और लेंथ को बखूबी समझा। उनके कई सबक उनके शिष्यों के लिए बाउंसर थे। लेकिन एक महागुरु की आध्यात्मिक संतान होने के नाते, हमने न केवल आध्यात्मिक टॉस जीतना सीखा, बल्कि वक्त के साथ हमारा खेल कौशल काबिले तारीफ बन गया! ▪

अपनी माता राम प्यारी जी
के साथ गुरुदेव

गृहस्थ आश्रम

एक पुत्र

एक नन्हा शरारती बच्चा,
देखते ही देखते बड़ा हो गया,
पर ना भूला वो मां का प्यार और उनका त्याग,
भले ही अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

गुरुदेव हरदम कहते थे कि हर व्यक्ति के तीन गुरु होते हैं - उनके माता-पिता, उनके शिक्षक और सबसे महत्वपूर्ण, उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक।

वे जानते थे कि एक व्यक्ति पर अपने माता-पिता के बहुत ऋण होते हैं। वे अपने अनुयायियों, भक्तों और शिष्यों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करते थे कि वे अपने माता-पिता की देख-भाल करें और उन्हें वह सम्मान दें जिसके वे हकदार हैं।

गुरुदेव अपने माता-पिता, खासकर अपनी मां, के बहुत करीब थे। उनकी मां की लगन और निष्ठा ने निश्चित ही गुरुदेव में आभार का भाव जगाया। जब वे छोटे थे, तो उनका पीछा करते हुए उनकी मां थक जाती थी, यहां तक कि उनके पैरों में छाले पड़ जाते थे। वो चाहती थीं कि उनका बेटा आसपास के इलाकों में भटकना छोड़कर, अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे। इस उम्मीद में मां तो भाग-दौड़ में निपुण हो गईं, पर बेटे की शरारतों में कोई कमी नहीं आई!

उम्र बढ़ने के साथ, गुरुदेव की अध्यात्म में रुचि बढ़ती गई। ऐसी दुनिया में जहां अभी मोबाइल फोन का आविष्कार होना बाकी था, गुरुदेव का आध्यात्मिक उत्साह उनकी मां के लिए निरंतर तनाव का कारण बना रहा। साधुओं और फकीरों की संगति में आध्यात्मिक ज्ञान पाने के लिए वे कभी-कभी घंटों और कभी-कभी दिनों तक गायब रहते थे।

स्कूल की पढ़ाई के बाद, गुरुदेव का चयन सैन्य सेवा के लिए हो गया। उनकी मां अपने सबसे बड़े बेटे को फौज में नहीं भेजना चाहती थीं और उनके आग्रह पर, गुरुदेव ने भारतीय सशस्त्र बलों में अपना करियर बनाने के अपने निर्णय को त्याग दिया। फिल्मों के शौकीन होने के नाते, उन्होंने फिर अभिनेता बनने के बारे में सोचा। हालांकि उन लाखों लोगों के सौभाग्य से, जिनकी वे भविष्य में सेवा करने वाले थे, फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई), पुणे, ने उनके आवेदन को अस्वीकार कर दिया। भले ही भाग्य से गुरुदेव के फिल्मी सपने खिलने से पहले मुरझा गए, लेकिन भूमिका निभाने की कला उन्हें कहीं बेहतर आती थी। एक बार मैंने स्वयं गुड़गांव के खांडसा के फार्महाउस में उनके इस अभिनय कौशल को देखा था।

गुरुदेव के भक्त बिल्लू जी को अपने जिगर से ज्यादा शराब पसंद थी। उनका और गुरुदेव का रिश्ता हैरान कर देने वाला था।

गुरुदेव ने बिल्लू जी को शराब छोड़ने को कहा।
हमेशा की तरह बिल्लू जी ने वादा कर दिया।
बिल्लू जी अपने वादे से मुकर गए।
वह सुनते थे, समझते थे और फिर अपने मन की करते थे।

एक शाम जब गुरुदेव खांडसा की गौशाला में बैठे मुझे आध्यात्मिक

अवधारणाएं समझा रहे थे, उस समय बिल्लू जी अपना वादा तोड़ते हुए, शराब के नशे में झूमते हुए, वहां आए। मैंने देखा कि उन्हें देखते ही गुरुदेव की भाव-भंगिमा एकदम बदल गई। जब बिल्लू जी ने शराब न छोड़ पाने पर अपनी लाचारी ज़ाहिर की, तो गुरुदेव का धैर्य जवाब दे गया। वे बिल्लू जी पर एकदम भड़क गए। मैंने गुरुदेव को पहले कभी उस रूप में नहीं देखा था। जैसे ही उन्होंने बिल्लू जी पर नाराज़ होना शुरू किया, बिल्लू जी और मैं डर के मारे कांप उठे। उनकी कठोरता देखकर, बिल्लू जी दुम दबाकर गौशाला से फरार हो गए। जैसे ही वह नज़रों से ओझल हुए, गुरुदेव मेरी ओर मुड़े, मुस्कुराए और कहा, "बरखुरदार, कैसा लगा हमारा अभिनय?"। मैं अवाक था और हक्का बक्का होकर देखता रह गया।

गुरुदेव ने रोल-प्ले (भूमिकाएं निभाने) को एक प्रभावी उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया। जब उन्होंने पिता की भूमिका निभाई, तो वे सख्त या विनम्र थे। एक मित्र के रूप में, अपने चुटकुलों से उन्होंने हमें खूब हंसाया, लेकिन एक महागुरु के रूप में, वे अत्यन्त तीव्र और औपचारिक थे, जिससे दिल में हैरानी और सम्मान दोनों पैदा होते थे। गुरुदेव अपने किरदारों को जिस कुशलता से जीते थे, उससे मुझे और अन्य कई लोगों को अपनी भूमिकाएं निभाने का कौशल सुधारने में मदद मिली।

गुरुदेव के अभिनेता बनने के सपने का समय से पहले अंत हो जाना नियति थी, क्योंकि उन्हें एक ऐसा आध्यात्मिक नायक बनना था, जैसा दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा। ▪

गृहस्थ आश्रम

एक भाई

प्रलोभन में फंसकर उन्होंने दिया उनका साथ,
पिन्नी के बदले में मानी उनकी हर बात,
ऐसा था भाई-बहनों का प्यार,
थोड़ी हंसी-खुशी, थोड़ा चमत्कार।

गुरुदेव के छह भाई-बहन थे। इनमें सबसे बड़ी थी गुरुदेव की बहन बिमला, जबकि उनके भाई सतीश और बहनें सुदेश, रमेश, प्रेमलता और इंदिरा उनसे छोटे थे।

सतीश जी, जिन्हें हम प्यार से चाचा कहते थे, अपने बड़े भाई का बहुत सम्मान करते थे। जब वे छोटे थे, तो उनकी मां गुरुदेव को उनकी शरारतों पर सज़ा के रूप में खाना नहीं देती थीं। तब चाचा अपने भोजन से कुछ गुड़ और रोटी बचाकर अपने बड़े भाई, जिन्हें वे श्रद्धा से पापाजी कहते थे, को देते ताकि उन्हें भूखा न सोना पड़े।

बड़े होकर चाचा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक बने, जिनकी आंखों में शरारत झलकती थी। गुरुदेव ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियां अपने छोटे भाई को प्रदान की और उन्हें हरिआना में सेवा करने और गुड़गांव के खांडसा में खेतों की देखभाल करने का निर्देश दिया था।

भले ही चाचा बहुत शक्तिशाली अध्यात्मवादी थे, लेकिन उन्हें एक बेफिक्र इंसान के रूप में देखा जा सकता था। उन्होंने अपनी आध्यात्मिक

शक्तियों से अनगिनत लोगों का इलाज किया और उन्हें स्वस्थ किया। वे कई गुप्त उपचारात्मक उपाय जानते थे, जिनमें एक ऐसा भी था जो बालों का रंग बनाने वाली कंपनियों को व्यवसाय से बाहर कर सकता था। लेकिन इन कंपनियों का सौभाग्य था कि सफेद बालों को काला करने का नुस्खा चाचा के साथ ही चला गया।

चाचा की बेपरवाही का आलम यह था कि लोग अक्सर उनकी आध्यात्मिक क्षमताओं को कमतर आंकने लगते थे। हरिआना में उनका पड़ोसी एक तांत्रिक था जिसके पास एक ऐसी सिद्धि थी जिससे वो आत्माओं को अपने वश में कर सकता था। चूंकि वो अपनी आजीविका कमाने के लिए इन आत्माओं का इस्तेमाल करता था, इसलिए जब उसने चाचा को निस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करते देखा, तो उसे चाचा अपने लिए खतरा लगे। गुस्से में तांत्रिक ने चाचा और उनके परिवार को चोट पहुंचाने के लिए अपने वश में की हुई आत्माओं को भेजा, लेकिन वे आत्माएं उन्हें चोट नहीं पहुंचा सकीं।

कुछ दिनों बाद, तांत्रिक ने जिन दो बोतलों में आत्माओं को बंदी बनाकर रखा था, वो बोतलें टूट गईं। इस घटना के बाद, तांत्रिक के छोटे बच्चे घर की छत पर खेलते हुए गिर गए और उनकी मृत्यु हो गई। तांत्रिक को यकीन हो गया कि उसकी कैद से मुक्त हुई आत्माओं का प्रतिशोध उसके वंश की समाप्ति का कारण बना। अपने भी ऐसे ही अंत के भय से घबराया हुआ वह तांत्रिक चाचा की शरण में गया और उनसे क्षमा याचना करने लगा। चाचा ने न सिर्फ उसे माफ कर दिया बल्कि उसके ही बनाए गए राक्षसों से उसे सुरक्षा प्रदान की और उसे जीवन का एक नया मार्ग दिखाया। तांत्रिक ने पैसे कमाने के लिए अपनी सिद्धि का इस्तेमाल करना बंद कर दिया और अधिक सात्विक गुणों पर ध्यान केंद्रित किया।

एक अन्य तांत्रिक चाचा के मस्तमौला मिज़ाज को उनकी आध्यात्मिक कमज़ोरी समझ बैठा, लेकिन चाचा ने उसे ऐसा सबक सिखाया जिसे वह कभी नहीं भूलेगा। इस तांत्रिक ने खांडसा के फार्म में सिंचाई करने वाले पानी के पंप पर जादू कर दिया, जिससे उसमें खराबी आ गई। जब उसने मखौल उड़ाते हुए चाचा को चुनौती दी कि वह अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का उपयोग करके पंप को ठीक करके दिखाए, तो चाचा ने पंप पर जल छिड़का और पंप आवाज करता हुआ चलने लगा। तांत्रिक कुएं की दीवार पर बैठा यह सब देख रहा था और वह पलटकर कुएं में गिर गया। आध्यात्मिक रूप से पराजित होने के बाद, रेंगते हुए वह कुएं से बाहर आया और उसने चाचा के पैरों में गिरकर दया की भीख मांगी। अपने मस्त मिज़ाज के अनुसार चाचा ने भी बड़े सहज रूप से उसे माफ कर दिया।

भले ही चाचा गुरुदेव के भाई थे, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने रिश्ते को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल नहीं किया। उनकी विनम्रता और उनके मस्तमौला स्वभाव ने उनकी योग्यता को बढ़ाया। अपने बड़े भाई के गुस्से के अलावा उन्हें और कोई भी बात बेचैन नहीं करती थी।

जब चाचा बहुत बीमार थे, तो उन्हें पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (PGI), चंडीगढ़, में भर्ती कराया गया था। गुरुदेव अपने छोटे भाई की देखभाल के लिए उनके साथ वहां मौजूद थे। उन्होंने बारहवें दिन चंडीगढ़ छोड़ा क्योंकि उन्हें गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुड़गांव में उपस्थित रहना था। अपने प्रिय भाई से विदा लेते हुए गुरुदेव ने धीरे से कहा, "गुरु पूर्णिमा से पहले मत जाना।" चाचा ने गुरु पूर्णिमा के ठीक दो दिन बाद, 2 अगस्त वर्ष 1988 को इस दुनिया को अलविदा कहा, जिससे उनके बड़े भाई की सेवा बाधित नहीं हुई। वे अपने पीछे पत्नी स्नेहलता और दो बेटों को छोड़ गए।

गुरुदेव की बहनों के पास बताने के लिए अपनी कहानियां हैं।

वे बताती हैं कि गुरुदेव जब बच्चे थे तो घर में एक गणपति की प्रतिमा के साथ उनका अनोखा रिश्ता था। कभी-कभी वे विनम्रता से मूर्ति की मदद मांगते और यदि उनका कार्य पूरा नहीं होता तो वे उसे नष्ट करने की चेतावनी देते। शुरुआत में उनके परिवार ने गुरुदेव की बातों को उनकी अति-कल्पनाशीलता मानते हुए खारिज कर दिया, लेकिन समय के साथ यह स्पष्ट हो गया कि जो उन्हें नज़र आ रहा था, बात वहीं तक सीमित नहीं थी और उस रिश्ते की बुनियाद कहीं ज्यादा गहरी थी। एक बार जब भाई-बहनों के बीच आपसी नोक-झोंक हो गई, तब गुरुदेव ने गणपति की प्रतिमा से आने वाली परीक्षा में उनकी बड़ी बहन बिमला की असफलता सुनिश्चित करने के लिए कहा। उन्होंने यह भी घोषित किया कि अगर उनकी इच्छा पूरी हुई तो वे मिठाई बांटेंगे। बिमला जी, जो रात-रात भर जागकर परीक्षा की तैयारी कर रही थीं, ने अपने पिता से शिकायत की, जिन्होंने गुरुदेव को इस तरह की बातें करने के लिए फटकार लगाई। हालांकि, जब परिणाम घोषित हुआ, तो बिमला जी परीक्षा में फेल हो गई थीं। रोते हुए उन्होंने अपनी असफलता के लिए गुरुदेव को दोषी ठहराया। फिर क्या था, पिता ने छड़ी से गुरुदेव की पिटाई कर दी!

कुछ वर्षों बाद, एक अन्य प्रसंग में भी गणपति गुरुदेव के सहायक बने। पढ़ाई के प्रति अपने बेटे के उदासीन रवैये के कारण गुरुदेव के माता-पिता ने चचेरी बहन के पति, जो एक शिक्षक थे, से उनके बेटे की पढ़ाई में मदद करने का अनुरोध किया। वो शख्स एक सख्त मिज़ाज इंसान थे, जो पढ़ाई में दिलचस्पी न लेने वालों के साथ सख्ती से पेश आते थे। उन्होंने गुरुदेव को सीधा करने का काम संभाला, लेकिन जल्द ही उन्हें पता चल गया कि उनका नया छात्र अपने तरीके बदलने के

लिए तैयार नहीं है। गुरुदेव के हठ से नाराज़ और अपनी विफलता से परेशान होकर, चचेरी बहन के पति ने नाराज़गी जताते हुए घोषणा की कि आगामी परीक्षा में गुरुदेव सफल नहीं हो सकेंगे। उन्हें अपनी बात पर इतना विश्वास था कि उन्होंने यह भी कह दिया कि अगर गुरुदेव पास हो गए, तो पंजाब विश्वविद्यालय हमेशा के लिए बंद हो जाएगा। यह सुनकर, गुरुदेव गणपति की मूर्ति के पास गए और परीक्षा में असफल होने पर उसे तोड़ देने की धमकी दी। धमकी काम आ गई। गुरुदेव औसत अंकों के साथ परीक्षा में पास हो गए और इस तरह एक मैट्रिक पास का जन्म हुआ।

गुरुदेव की छोटी बहनें उन्हें प्यारे खुशमिज़ाज बड़े भाई के रूप में याद करती हैं जिनका व्यवहार उनके साथ बहुत अच्छा और विनोदी था। उनकी शक्तियां जो अभी परिपक्व नहीं हुई थीं ने उनकी बहनों को ज़रा भी प्रभावित नहीं किया। जहां तक उनका सवाल था, तो उनके लिए उनके भाई का हर कारनामा एक 'मीठे' फल का ज़रिया था।

उत्तर भारत की लोकप्रिय मिठाई पिन्नी है, जिसे खाने से आपका मोटापा जरूर बढ़ जाता है लेकिन उम्र के साल घट सकते हैं। अधिकांश पंजाबियों की तरह, गुरुदेव की छोटी बहनें भी इस स्वादिष्ट मिठाई को पसंद करती थीं। गुरुदेव उनकी इसी कमज़ोरी का फायदा उठाते थे और पिन्नियों के बदले उनसे अपनी पीठ खुजाने को कहते थे। बहनें भी पिन्नियों के बदले खुशी-खुशी उनका कहा मान लेती थीं!

पिन्नियों के लिए अपने बच्चों का इतना ज्यादा लगाव देखकर गुरुदेव की मां घर की बनी इन मिठाइयों को अलमारी में छुपाकर रखती और इसकी चाबी हरदम अपने साथ रखतीं थीं। हालांकि, आश्चर्यजनक रूप से गुरुदेव बिना चाबी लगाए ही इन पिन्नियों को अलमारी से बाहर

निकाल लेते! और मां जब भी अलमारी खोलती, तो उनकी बेटियां ये देखकर हैरान रह जातीं थीं कि अलमारी से ठीक उतनी ही पिन्नियां गायब हैं, जो वे खा चुकी होती थीं। इसके बावजूद वे बंद अलमारी से पिन्नियों को बाहर निकालने के गुरुदेव के इस हुनर को अपने बड़े भाई का एक और कारनामा समझकर नज़रअंदाज़ कर देती थीं।

उम्र के उस पड़ाव पर गुरुदेव को अभी अपने अंदर की दिव्यता को पहचानना बाकी था। फिर भी, ये उनकी कुछ आध्यात्मिक क्षमताओं की झलकियां थीं जिनका उपयोग भविष्य में अनगिनत लोगों को आध्यात्मिक परिवर्तन के मार्ग पर ले जाने के लिए किया गया।

गुरुदेव अपने अलौकिक गुणों को राज़ रखना ही पसंद करते थे। उन्होंने अपने आध्यात्मिक परिवर्तन की बात अपने परिवार को भी नहीं बताई। वर्षों बाद उनकी बहनों को अचानक ही पता चला कि उनके भाई गुरु बन गए हैं। चूंकि गुरुदेव की नौकरी में आधिकारिक दौरे होते थे जो महीनों तक चलते थे, वह अपनी बहनों को अपने ठिकाने की सूचना देते हुए पत्र लिखते थे। वर्ष 1976 की गर्मियों में गुरुदेव की बहन को अपने भाई से एक पत्र मिला जिसमें गुरुदेव ने बताया था कि वे हिमाचल प्रदेश के कथोग में हैं। गुरुदेव की बहन ने कथोग के बारे में कभी नहीं सुना था, तो उन्होंने अपने एक सहपाठी दिलबाग से उस जगह के बारे में पूछा जो ज्वालाजी से आया था। दिलबाग ने उन्हें बताया कि कथोग में आए 'ओम वाले बाबा' के कारण उस जगह को हाल ही में प्रसिद्धि मिली है, और वह बाबा वहां चिकित्सा के अविश्वसनीय चमत्कार कर रहे हैं। जब गुरुदेव गुड़गांव लौटते हुए हरिआना में थोड़ी देर के लिए रुके, तो उनकी बहन ने उनसे पूछा कि क्या वे 'ओम वाले बाबा' से मिले हैं। इसके बाद ही गुरुदेव ने खुलासा किया कि वे स्वयं ही 'ओम वाले बाबा' हैं।

गुरुदेव अपने भाई-बहनों के जीवन का आधार थे। एक ऐसे शख्स जिन्होंने उनका पालन-पोषण किया, उनके सुख-दुख का ख्याल रखा और उनकी सुरक्षा की। उनके भाई और बहनें इस अविश्वसनीय यात्रा के साक्षी थे, जिसने हरिआना के नन्हें करिश्मे करने वाले बच्चे को अकल्पनीय शक्तियों वाला महागुरु बना दिया। ▪

रहस्यमयी शख्स

पॉडकास्ट **'बुड्ढे बाबा का रहस्यमयी दौरा'**
ताज्जुब से भरा एक सबक है। सुनिए कि
बुड्ढे बाबा को लेकर लोगों ने क्या सोचा था।
www.gurudevonline.com पर

रहस्यमयी मार्गदर्शक

शिक्षक का एक शिक्षक था,
सच्चा, ज्ञानी और सयाना,
नाम था उनका बुड्ढे बाबा,
जाने क्या था उनका ठिकाना,
खोजा बहुत उन्हें मगर,
समझ ना सके उनका अफसाना ।

रहस्यमयी बुड्ढे बाबा, जिन्हें गुरुदेव ने अपने और हमारे जीवन का एक सर्वव्यापी हिस्सा बताया है, के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। गुरुदेव हमेशा कहते थे कि वे कर्ता नहीं हैं और सेवा का श्रेय उनके आध्यात्मिक गुरु को जाता है। कभी-कभी, जब हम पेचीदा सवाल पूछते थे, तो वह कहते कि उत्तर देने से पहले वह बुड्ढे बाबा से उसकी पुष्टि करेंगे।

गुरुदेव के एक शिष्य याद करते हैं कि महाशिवरात्रि और गुरु पूर्णिमा जैसे पर्वों पर, दर्शन करने वाले भक्त दो मालाएं चढ़ाते थे, एक स्थान पर और दूसरी गुरुदेव को। एक महाशिवरात्रि पर, शिष्यों को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि गुरुदेव ने कुछ लोगों को उन्हें माला पहनाने की अनुमति दी, जबकि कुछ को नहीं दी। चूंकि गुरुदेव ने कभी भेदभाव नहीं किया था, इसलिए शिष्यों ने गुरुदेव से उनके ऐसा करने का कारण पूछा। महागुरु ने जवाब दिया, "मैं नहीं चाहता कि मेरे गले में अपने गुरु की तुलना में अधिक मालाएं हों।"

ऐसा माना जाता है कि वर्ष 1970 में, अपनी सिद्धियां त्यागने से पूर्व, गुरुदेव बुड्ढे बाबा से मिले थे, जिन्हें उन्होंने अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शक और गुरु के रूप में स्वीकारा।

ये वाकया कुछ यूं हुआ। गुरुदेव और उनकी टीम ने मध्य प्रदेश में एक दूरदराज के गांव में शिविर लगाया था। एक दिन, जब गुरुदेव अपने मंत्रों का जाप करते हुए शिविर के पास जंगल में घूम रहे थे, तो एक सुनसान मंदिर में उनकी मुलाकात एक बुजुर्ग संत से हुई। चूंकि गुरुदेव तम्बाकू खा रहे थे, तो संत ने उनसे तम्बाकू मांगा। बदले में उन्होंने गुरुदेव को बताया कि वे जिस मंत्र का जाप कर रहे हैं, वह अधूरा है। उन्होंने आठ शब्द जोड़ने का सुझाव दिया और घोषित किया कि इससे गुरुदेव की आध्यात्मिक यात्रा की दिशा बदल जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि गुरुदेव को अगली सुबह अपने तकिए के नीचे एक स्टील का कड़ा मिलेगा। गुरुदेव ने उसी रात से विस्तारित मंत्र का जाप शुरू कर दिया। अगली सुबह जब उन्होंने अपने तकिए के नीचे स्टील का कड़ा देखा, जिस पर संस्कृत के अक्षर अंकित थे, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना ना रहा। पिछले दिन मिले संत से दोबारा मिलने को उत्सुक, गुरुदेव पुनः मंदिर गए, लेकिन संत कहीं नहीं मिले। जब उन्होंने वहां बैठे एक बुजुर्ग व्यक्ति से संत के बारे में जानकारी ली, तो उन्हें बताया गया कि मंदिर में बहुत लंबे समय से कोई नहीं आया है।

इसके बाद गुरुदेव शिविर में लौट आए और फिर से मंत्र का जाप करने लगे। इस बार, उन्हें एक वाणी सुनाई दी कि वह जिसे ढूंढ रहे हैं वह पहले से ही उनके भीतर है, और उनके लिए निस्वार्थ भाव से लोगों का उपचार शुरू करने का समय आ गया है। जब गुरुदेव ने कहा कि वह नहीं जानते कि लोगों को कैसे स्वस्थ करना है, तो उस वाणी ने उन्हें बताया कि वह जिसका भी स्पर्श करेंगे, वह स्वस्थ हो जाएगा। उस

आवाज ने गुरुदेव को यह भी आश्वासन दिया कि जब भी उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी, संत उन्हें रास्ता दिखा देंगे। इस घटना से एक ऐसे रिश्ते की शुरुआत या पुनः जागरण हुआ, जिसे गुरुदेव अत्यंत पवित्र मानते थे। गुरुदेव ने कभी बुड्ढे बाबा की पहचान का खुलासा नहीं किया, और इसे उन्होंने लोगों के अनुमान पर छोड़ दिया।

गुरुदेव के रहस्यमय आध्यात्मिक मार्गदर्शक से मिलने का दावा करने वाले कुछ लोगों में एक गुरुदेव की छोटी बहन भी थीं। वह गुड़गांव में गुरुदेव के घर में थी, जब उन्होंने अपने भाई को अपने शिष्यों से यह कहते हुए सुना कि निकट भविष्य में जब वे यहां नहीं होंगे, तभी उन्हें उनकी शिक्षाओं का अर्थ समझ में आएगा। उस एक वाक्य को एक पूर्व संकेत मानते हुए, गुरुदेव की बहन भावुक हो गईं। गुरुदेव के बिना जीवन की कल्पना करके, वह अपने भाई के खाली बेडरूम की फर्श पर लेटकर रोने लगीं। तभी उन्होंने कमरे की एक दीवार पर लाल-प्रकाश को आते देखा। फिर उन्होंने उस प्रकाश से सुसज्जित लंबे भूरे बालों और हल्की दाढ़ी वाले बुजुर्ग संत का एक उज्ज्वल चेहरा देखा, जिसने श्वेत वस्त्र धारण किए हुए थे।

गुरुदेव की बहन चौंककर बैठ गईं। बुजुर्ग संत ने उनसे पूछा कि वह परेशान क्यों है। सुबकते हुए उन्होंने अपने भाई के शब्दों को दोहराया जो उन्होंने अपने शिष्यों से कहे थे। प्रकाश में लिपटे व्यक्ति ने उसे बताया कि गुरुदेव को एक अधिकारिक शिविर के लिए जाना है और वे कुछ महीनों में वापस आ जाएंगे। यह सुनकर, गुरुदेव की बहन को राहत महसूस हुई। आश्वस्त करने के तुरंत बाद, प्रकाश से दमकता वो शख्स गायब हो गया। जब गुरुदेव की बहन ने गुरुदेव को अपना अनुभव बताया, तो उन्होंने कहा कि उन्हें बुड्ढे बाबा के दर्शन हुए हैं।

एक वीरान मंदिर में बुड्ढे बाबा से पहली बार मिले गुरुदेव

माताजी ने भी ऐसी ही एक दिलचस्प मुलाकात की चर्चा की, जिसमें उनके पति के रहस्यमय गुरु शामिल थे। एक रात उनकी नींद खुल गई तो उन्होंने देखा कि गुरुदेव बिस्तर पर बैठे किसी से बात कर रहे हैं। वह उन्हें बाबा कहकर संबोधित कर रहे थे। किसी कारण से उन्होंने बातचीत अचानक समाप्त कर दी। सुबह गुरुदेव ने खुलासा किया कि उन्हें बुड्ढे बाबा के साथ अपनी बातचीत समाप्त करनी पड़ी जब बुड्ढे बाबा ने उन्हें बताया कि माताजी उन्हें सुन रही हैं।

गुरुदेव के परिवार की एक अन्य सदस्य जिन्होंने बुड्ढे बाबा को देखा, वो थीं उनकी बेटी रेणु जी। एक दिन, बुखार होने पर वह स्कूल नहीं गई

थीं। घर में कोई नहीं था और वे बिस्तर पर चुपचाप लेटी हुईं थीं, तभी उन्होंने सफेद कपड़े पहने भूरे बालों वाले एक आदमी को अपने कमरे के सामने बने गोदाम से निकलकर नज़रों से ओझल होते देखा। रेणु जी ने डर के मारे अपने चेहरे को कंबल से ढक लिया ताकि उन पर उस बुजुर्ग अजनबी का ध्यान न जाए। माताजी जब कुछ घंटे बाद काम से लौटीं, तभी रेणु जी ने अपने चेहरे से कंबल हटाया। उन्होंने जो देखा था उसे मां को बताया, तो माताजी ने उन्हें कहा कि उन्होंने जिस आदमी को देखा था वो बुड्ढे बाबा हो सकते हैं।

गुरुदेव के कई शिष्यों और भक्तों ने स्वप्न में बुड्ढे बाबा को देखने का दावा किया है। पूरन जी ने सपने में बुड्ढे बाबा के दर्शन किए थे जिसमें उन्होंने बुड्ढे बाबा को जरूरतमंदों को अन्न वितरित करते हुए देखा। एक अन्य भक्त, रूपल जी ने स्वप्नावस्था में बुड्ढे बाबा की तस्वीर को एक स्थान की दीवार पर लगे हुए देखा था। दिलचस्प बात यह है कि भले ही पूरन जी और रूपल जी की मुलाकात कभी नहीं हुई, लेकिन दोनों ने ही इस मायावी आकृति के भौतिक स्वरूप का एक-सा विवरण साझा किया। कुछ का मानना है कि बुड्ढे बाबा शिव का साकार रूप हैं, जबकि अन्य लोगों का मानना है कि वे बनारस के सीताराम जी हैं, जो दसुआ के सीताराम जी के गुरु थे। भ्रम इस तथ्य से उपजा है कि बनारस के सीताराम जी एक महान संत थे, जो यीशु और गुरु नानक की तरह सह शरीर गए थे।

इस संसार को सह शरीर त्यागना, शरीर की परमाणु संरचना के पुनर्विन्यास (रीकॉन्फ़िगरेशन) के माध्यम से विलीन हो जाने की क्षमता है। ये काबिलियत इतिहास में बहुत कम आध्यात्मवादियों ने हासिल की है।

बनारस के सीताराम जी अध्यात्मिक रूप से इतने विकसित हो गए थे कि वह निश्चित रूप से शिव कहलाने के योग्य थे। इसलिए, बुड्ढे बाबा के शिव होने पर गुरुदेव के संकेत केवल भ्रम को बढ़ाते हैं। चूंकि गुरुदेव ने कभी बुड्ढे बाबा की पहचान का खुलासा नहीं किया, इसलिए हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं लेकिन कभी भी निश्चित मत नहीं हो सकते। ▪

रहस्यमयी शख्स

औघड़ की यशोगाथा

मानव वेश में एक पवित्र आत्मा,
जिनकी इच्छाशक्ति प्रचंड,
आंखें जिनकी माणिक-सी उज्ज्वल,
चाल है जिनकी मोहक और चंचल,
मर्जी से हो जाते प्रकट, प्रभाव सदा रहता प्रबल ।

एक अन्य व्यक्ति जिसका ज़िक्र गुरुदेव की कहानियों में बार-बार मिलता है, उनका रहस्यमयी शिष्य, औघड़ है। औघड़ अघोरी संप्रदाय का प्रमुख है, जिसके बारे में माना जाता है कि उनका हरिद्वार, उत्तराखंड, और उसके आस-पास के क्षेत्रों में प्रभुत्व है।

अघोर एक ऐसी चेतना है जो विरोधाभास या भेदभाव से रहित है। आम तौर पर अघोर विद्या को तांत्रिक पूजा का निम्नतम स्तर माना जाता है। हालांकि अघोरियों की कुछ तांत्रिक साधनाओं जैसे शव एवं मल खाना, स्वच्छता पर ध्यान न देना और श्मशान भूमि पर ध्यान करना आदि कारणों से ये गलतफहमी बढ़ गई है। चूंकि अघोर का विचार अद्वैत की प्राप्ति करना है, ये अजीब प्रथाएं अघोरियों को उस स्थिति तक पहुंचा देती हैं जहां दुर्गंध और अन्य संवेदी उत्तेजनाओं का एहसास खत्म हो जाता है। भले ही उनकी प्रथाओं को अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता, लेकिन अघोरी दर्शन बहुत विकसित है। अद्वैत का अभ्यास करके अघोरी माया के जाल से बाहर निकलने की इच्छा रखता है।

औघड़ शक्ति(नारी ऊर्जा) के बिना शिव के विलक्षण स्वरूप की अभिव्यक्ति है। उनके पास कई स्थानों पर अलग-अलग मानव रूपों में प्रकट होने की शक्ति है, और वह दूरसंवेदन(टेलीपैथिक रूप) के ज़रिए संवाद बनाने में सक्षम है। हालांकि, औघड़ गुरुदेव के शिष्य थे, परंतु उनके अनुयायी गुरुदेव के शिष्य नहीं हैं।

गुरुदेव के शिष्य रवि त्रेहन जी के अनुसार, गुरुदेव औघड़ का हवाला अपने शिष्यों के 'बड़े भाई' के रूप में देते थे, और एक ऐसा व्यक्ति जिससे आध्यात्मिक मामलों में मदद की गुहार लगाई जा सकती थी। गुरुदेव के कई शिष्यों ने अपने इस गुरु-भाई को मदद के लिए जब भी पुकारा, उन्हें उनसे मदद मिली, जबकि कुछ जैसे सुरेंद्र तनेजा नाम के शिष्य की पत्नी शोभा जी सांसारिक जरूरतों की पूर्ति के लिए औघड़ को व्यक्तिगत जिन्न के रूप में इस्तेमाल करती थीं। हालांकि, अधिकांश शिष्य औघड़ की निराकारता के साथ जुड़ने में असमर्थ थे, और इसलिए वे उनकी आध्यात्मिक शक्ति का लाभ नहीं उठा सके।

जब औघड़ मानवीय रूप में थे तब गुरुदेव हरिद्वार, उत्तराखंड, की अपनी यात्राओं के दौरान औघड़ से मिलते थे। एक शाम हर की पौड़ी में जब गुरुदेव और उनके शिष्य आरती के समय भीड़ में खड़े थे, तब गुरुदेव ने अपने शिष्यों को कुछ दूरी पर जाकर खड़े होने का निर्देश दिया। फिर उन्होंने माताजी से अनुरोध किया कि आरती को अच्छे से देखने के लिए वे नदी के तट के करीब जाएं। माताजी समझ गईं कि उनके पति औघड़ के साथ एक संभावित मुलाकात की चाह में उनसे एकांत चाहते हैं। उस रहस्यमय शिष्य को देखने के लिए उत्सुक माताजी ने वहीं रहने पर ज़ोर दिया। हालांकि, जैसे ही आरती शुरू हुई, शंख, घड़ियालों और मंत्रों की गूंज ने उनका ध्यान भंग कर दिया। जब माताजी कुछ मिनट बाद गुरुदेव की ओर मुड़ीं, तो उन्होंने सफेद सूती कुर्ता-

पायजामा और पगड़ी पहने एक व्यक्ति को देखा, जो गुरुदेव के पैर छूने के लिए झुका हुआ था। इससे पहले कि वे समझ पातीं कि क्या चल रहा है, वह आदमी मुड़ा और गुरुदेव के साथ चला गया। कुछ ही पलों में, वे दोनों भीड़ में लुप्त हो गए।

गुरुदेव की अनुपस्थिति का पता चलते ही, शिष्य दौड़कर माताजी के पास आए और गुरुदेव के बारे में पूछताछ करने लगे। माता जी ने उन्हें पूरी घटना बता दी। बहुत भागदौड़ के बाद भी, शिष्य गुरुदेव का पता नहीं लगा पाए। जब गुरुदेव कुछ समय बाद लौटे, तो उन्होंने पुष्टि की कि वे जिस व्यक्ति के साथ थे, वह औघड़ था। गुरुदेव ने अपनी पत्नी को यह भी बताया कि औघड़ ने सम्मानस्वरूप उनके पैर भी छुए थे, लेकिन माताजी को कुछ भी याद नहीं था।

माताजी ने औघड़ के साथ एक और मुलाकात को याद करते हुए बताया कि कई वर्षों के बाद जब वह गुरुदेव के साथ उत्तराखंड के ऋषिकेश गईं, तो उस यात्रा में अनेक शिष्य और उनके परिवार भी उनके साथ थे।

उनकी टोली ने लक्ष्मण झूला पार किया, और घाट के निकट एक स्थान पर विश्राम करने के लिए रुक गए। वहां साधुओं की एक टोली भी आराम कर रही थी और एक आदमी सफेद चादर ओढ़े, एक लंबी बेंच पर लेटा हुआ था। गुरुदेव चादर ओढ़े हुए व्यक्ति के पैरों के पास बेंच पर बैठ गए। इसके बाद उन्होंने अपने समूह के पुरुषों से गंगा में डुबकी लगाने को कहा और माताजी सहित समूह की सभी महिलाओं को तैयार होने के लिए महिलाओं के स्नान क्षेत्र की ओर भेज दिया।

शोभा जी ने स्नान के लिए जाने से पहले गुरुदेव से उनकी बगल में अपने बेटे को लेटाने की अनुमति मांगी। जब शोभा जी अपने बेटे को लेटा रही

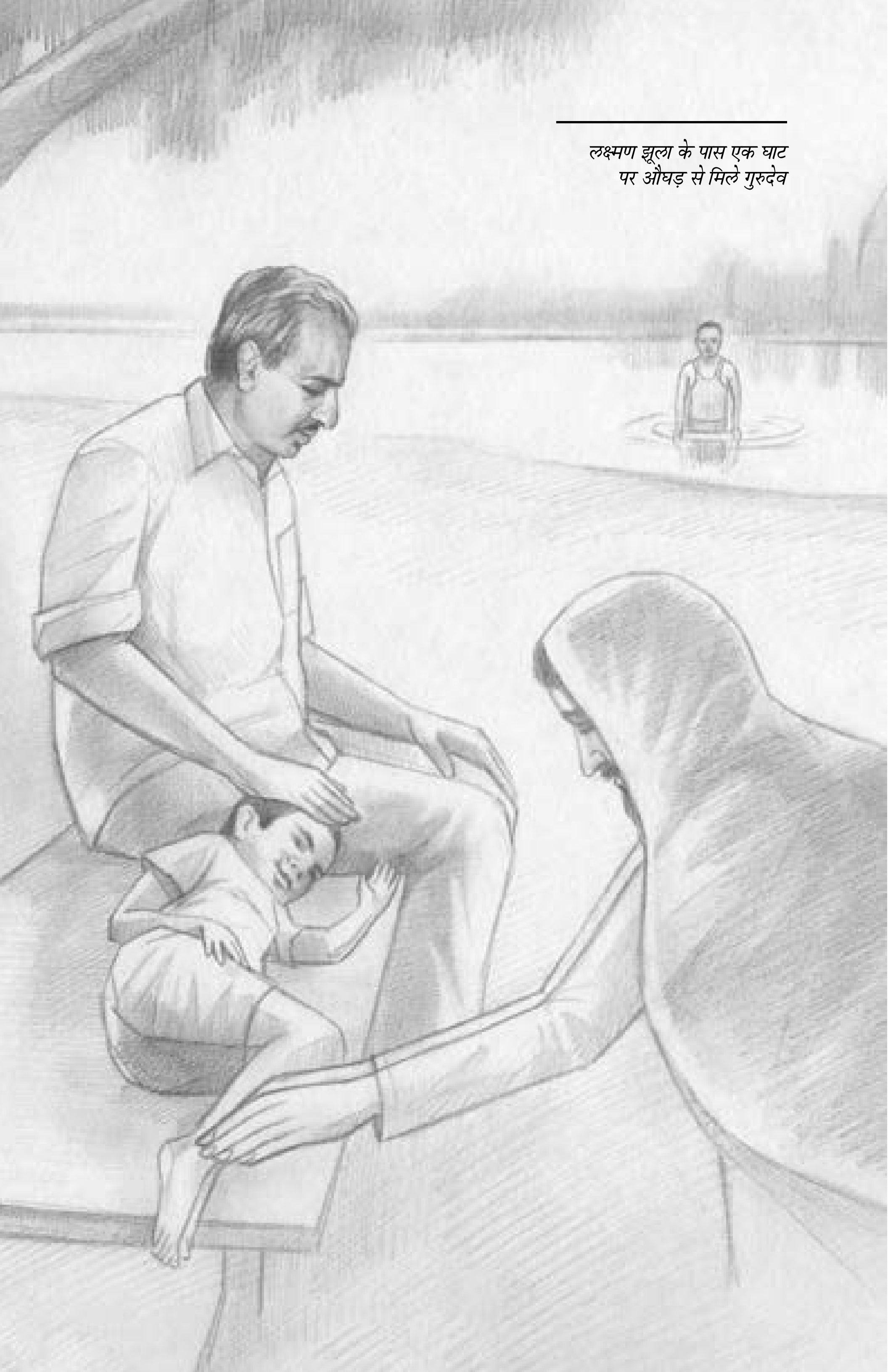

लक्ष्मण झूला के पास एक घाट
पर औघड़ से मिले गुरुदेव

थीं, तभी उन्होंने देखा कि चादर में लिपटा वो आदमी अपनी बड़ी-बड़ी लाल आंखों से उन्हें घूर रहा है और यह देखकर उनकी चीख निकल पड़ी। गुरुदेव ने तुरंत उनसे अपने बेटे को उनकी देखरेख में छोड़कर अन्य महिलाओं के पास जाने के लिए कहा। शोभा जी के पति सुरेंद्र जी, जो गंगा में डुबकी लगाने ही वाले थे, ने देखा कि एक बुजुर्ग व्यक्ति ने उनके बेटे के पैरों पर अपने हाथ रखे हैं जबकि गुरुदेव के हाथ उनके बेटे के सिर पर हैं। जब वह एक या दो सेकंड बाद नदी से बाहर निकले, तो उन्हें वो बुजुर्ग व्यक्ति कहीं दिखाई नहीं दिया। सुरेंद्र जी समेत बाकी के शिष्य तुरंत समझ गए कि वो व्यक्ति कोई और नहीं उनके रहस्यमय गुरु भाई औघड़ थे। वे गुरुदेव के पास गए और उनसे पूछा, "गुरुजी, क्या वो औघड़ थे?" गुरुदेव ने हामी भरते हुए सिर हिला दिया।

मैं पहली बार औघड़ से तब मिला जब गुरुदेव ने सुभाष सभरवाल और मुझे माताजी के साथ उनके गृहनगर जाने का निर्देश दिया। लुधियाना में माताजी के मायके पहुंचने के बाद, सुभाष और मैं तंबाकू खरीदने के लिए पास की एक पान की दुकान पर गए। जब हम दुकान की ओर जा रहे थे, हमने देखा कि शराब के नशे में धुत, मैले-कुचेले हुलिए में एक आदमी हमारी ओर बढ़ रहा है। वो अपनी साइकिल घसीटते हुए हमारी ओर आ रहा था। जब हम वापस घर लौटने लगे तो वो हमारा रास्ता रोककर खड़ा हो गया। उसने हमें भेदती हुई नज़रों से देखा और एक मंत्र का जाप करने लगा। मैं यह सुनकर हैरान रह गया कि वो उसी मंत्र का जाप कर रहा है जो मैं उस वक्त मन में कर रहा था! मुझे लगा कि इस आदमी के साथ उलझना नहीं चाहिए, इसलिए सुभाष और मैं तुरंत वहां से चले गए।

मैंने देखा कि वो शख्स सारी रात साइकिल पर माताजी के घर के चक्कर काटता रहा। सुबह होने पर वो चला गया। मुझे याद नहीं है कि गुरुदेव

ने कभी इस बात की पुष्टि की कि वह आदमी औघड़ था या फिर मैं खुद ही इस नतीजे पर पहुंच गया था, लेकिन मैं निश्चित रूप से जानता हूं कि औघड़ ने पूरी रात अपने गुरु की पत्नी के निवास-स्थान की रक्षा करने में बिताई थी।

औघड़ से मेरी अगली मुलाकात कुछ साल पहले हुई थी जब मैंने देहरादून, उत्तराखंड, के एक सुरम्य गांव अस्थल में सेवा शुरू करने का फैसला किया था। यह इलाका औघड़ के अधिकार क्षेत्र में आता था। मैंने उन्हें स्थान की यात्रा के लिए 'मानसिक निमंत्रण' दिया। सेवा के पहले कुछ दिनों में मैंने आत्मविश्वास से भरे लेकिन नशे में धुत्त एक आदमी को उस कमरे के बाहर खड़ा देखा जहां मैं इलाज के लिए आए लोगों की सेवा कर रहा था। उसने एक जानी-पहचानी मुस्कान के साथ भेदती नज़रों से मुझे देखा। जब एक सेवादार ने उसे आगंतुकों को परोसे जाने वाले जलपान में हिस्सा लेने के लिए कहा, तो उसने कहा कि वह एक आमंत्रण का सम्मान करने के लिए वहां आया है। तब तक मैंने केवल एक ही व्यक्ति को अस्थल में आमंत्रित किया था, जिससे इस बात की पुष्टि हो गई, जो मुझे पहले से ही पता थी - गुरुदेव का रहस्यमय शिष्य, औघड़, हमारे बीच था। कुछ युवा शिष्य उनके पीछे गेट तक गए, जहां उन्होंने उस शख्स को नदारद पाया और वो कहीं नहीं मिले।

एक और मौके पर जब गुरुदेव के प्रिय शिष्यों में से एक राजी शर्मा गुरुदेव से मिलने देर रात गुड़गांव पहुंचे, तो मुझे उनके लिए चाय बनाने के लिए कहा गया। निश्चित रूप से यह ऐसे व्यक्ति के लिए बहुत बड़ा काम था जिसने अपने जीवन में कभी चाय नहीं बनाई थी! मैं मदद की उम्मीद से उस कमरे की ओर गया, जहां गग्गू, बिट्टू, पप्पू और निक्कू गहरी नींद में सो रहे थे। जब मैं इस चौकड़ी के एक भी सदस्य को जगा नहीं सका, तो मजबूरन मुझे खुद ही चाय बनानी पड़ी।

मैंने स्टोव जलाया और पानी के एक बर्तन को चाय की पत्तियों के साथ उस पर चढ़ा दिया। फिर मैंने अपने बड़े भाई औघड़ से अनुरोध किया कि वह मुझे एक कप अच्छी-सी चाय बनाने में मदद करें, और अचानक ही एक विचार-तरंग के रूप में मुझे पहला निर्देश मिला जो यह था कि मुझे आधा बर्तन खाली करके उसमें ताजा पानी डालना चाहिए। फिर मुझे बताया गया कि चाय मसाला कहां रखा है और यह ठीक उसी जगह पर था जहां संकेत दिया गया था। मुझे आगे के निर्देश मिले कि कितनी मात्रा में चीनी और दूध मिलाना है, और इसे कितनी देर उबालना है। जब चाय तैयार हो गई, तो मैंने केतली से उसे दो कपों में डाला और गुरुदेव के कमरे की तरफ चल पड़ा। चाय देने के बाद, मैंने गुरुदेव और राजी जी को बातचीत जारी रखने के लिए कमरे में छोड़ दिया। एक या दो मिनट के बाद, मैंने गुरुदेव को यह कहते हुए सुना, "ओय, चाय बहुत बढ़िया बनाई है।" मैंने उनसे पूछा कि क्या वह एक और कप चाय लेना पसंद करेंगे और गुरुदेव ने हां में जवाब दिया।

पाठकों, मैं आपको गारंटी देता हूं कि अब मैं अपने मायावी गुरु-भाई के बताए गए नुस्खे से अधिकांश लोगों से बेहतर चाय बना सकता हूं और इसके लिए उनका कोटि-कोटि धन्यवाद! ▪

महागुरु

जागृत हुए महागुरु

जब उन्होंने सबकुछ त्याग दिया,
मानो जैसे सबकुछ पा लिया,
यही है आध्यात्मिक विरोधाभास मेरे दोस्त,
उन्हें पता था, संपत्ति से नहीं कहलाते धनवान,
अमीर वही जो मुक्ति का मार्ग दिखाकर
करे सबका कल्याण।

ऐसा माना जाता है कि वर्ष 1970 के आस-पास बुड्ढे बाबा ने गुरुदेव को हर की पौड़ी में गंगा के किनारे पर अपनी सभी सिद्धियों को त्यागने का निर्देश दिया था। ये वे सिद्धियां थीं जिन्हें गुरुदेव ने दसुआ के सीताराम जी के मार्गदर्शन में हासिल की थीं।

अपनी आध्यात्मिक सिद्धियों से मुक्त होने के लिए जब गुरुदेव ने अपने हाथ गंगा के पानी में डाले, तो उनमें से एक सिद्धि ने उनसे उसे न त्यागने का अनुरोध करते हुए कहा कि इसके बदले में वे उससे इच्छित वरदान मांग सकते हैं। परन्तु इस प्रलोभन से अप्रभावित, गुरुदेव ने दृढ़तापूर्वक बुड्ढे बाबा के आदेश का पालन किया और वर्षों में हासिल की गई सभी सिद्धियों को गंगा को अर्पित करके तट पर आ गए। इन सिद्धियों का त्याग करते ही महागुरु के रूप में उनकी यात्रा प्रारम्भ हो गई।

बुड्ढे बाबा के आदेश पर हर की पौड़ी में
अपनी सिद्धियों का त्याग करते गुरुदेव

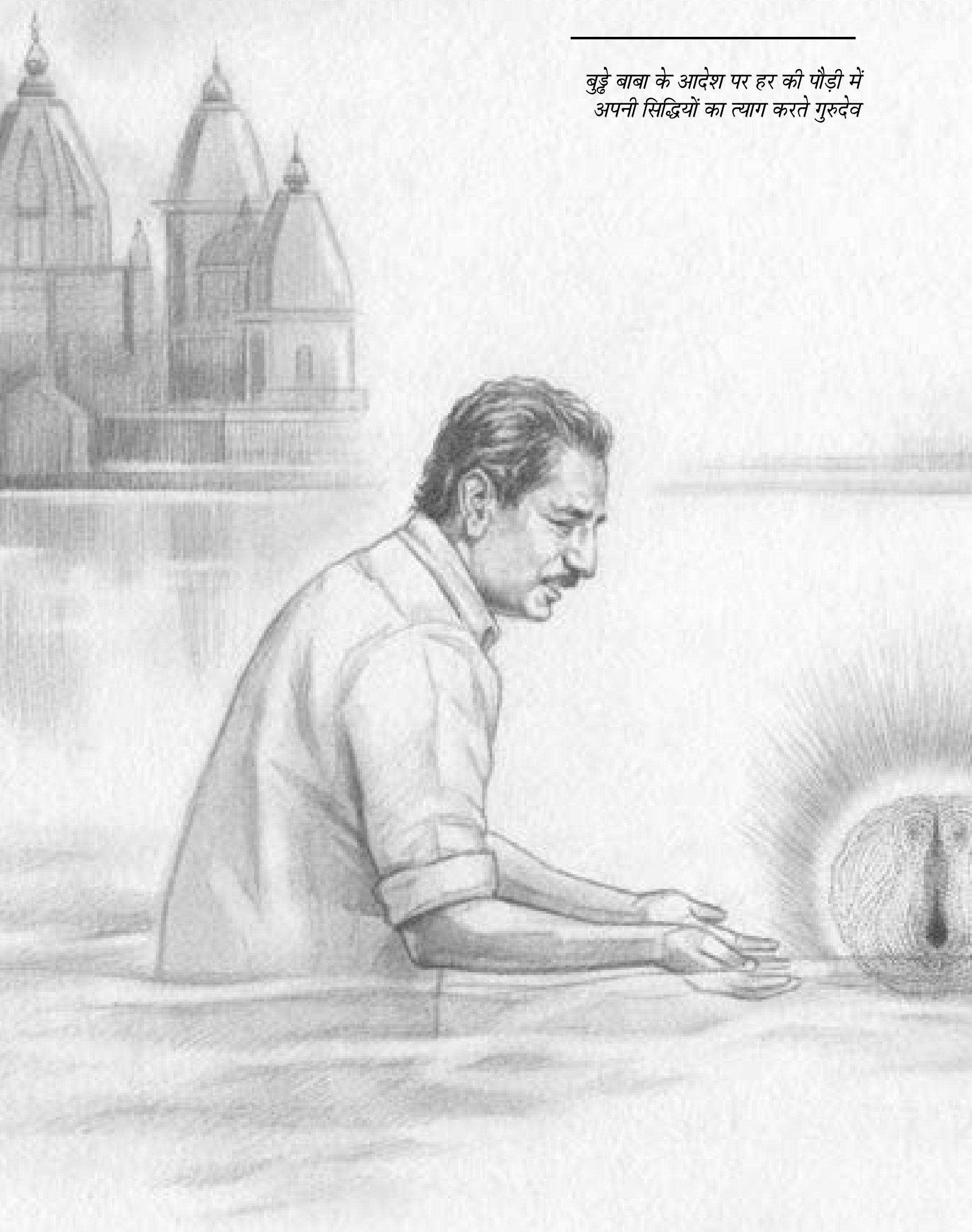

वर्ष 1973 में गुरुदेव और उनकी टीम ने मध्य प्रदेश के छोटे से शहर कुरवाई में शिविर लगाया। यात्रा में गुरुदेव के साथ गए नागपाल जी बताते हैं कि धन्ना, जिसकी जमीन पर टीम ने अपना शिविर लगाया था, को तेज़ बुखार था। उसने चार दिन बाद गुरुदेव से अपनी बीमारी का ज़िक्र किया। गुरुदेव ने उस पर जल छिड़का, उसके माथे पर हाथ रखा और एक ही मिनट में धन्ना बेहतर महसूस करने लगा।

अगले दिन, एक और व्यक्ति धन्ना के कहने पर गुरुदेव के पास आया। उसके पेट में बहुत दर्द था। गुरुदेव ने उस व्यक्ति के पेट को अपने हाथों से सहलाया और दर्द कम हो गया। इसके बाद, बहुत-से लोग गुरुदेव के पास अपनी समस्याओं से मुक्ति की प्रार्थना लेकर आने लगे, जिनसे वे पीड़ित थे।

कुछ दिनों बाद, टीम कुरवाई से 70 किलोमीटर दूर अशोक नगर चली गई। गुरुदेव के चमत्कारी स्पर्श की बात फैलते ही, लोगों से भरी बैलगाड़ियां शिविर में आने लगीं। शारीरिक और मानसिक समस्याओं से पीड़ित लोग आंशिक या पूर्ण रूप से ठीक होकर ही शिविर से निकलते थे।

कई वर्षों बाद, कुछ शिष्यों के साथ बातचीत के दौरान, गुरुदेव ने बताया कि कुरवाई में सार्वजनिक उपचार बुड्ढे बाबा के आदेश पर किया गया था। बुड्ढे

बाबा ने उन्हें निस्वार्थ सेवा करने का निर्देश दिया था। शुरू में गुरुदेव कुछ लोगों की मदद और चिकित्सा करने में हिचकिचा रहे थे, क्योंकि वह जानते थे कि उन लोगों ने अतीत में कई गलतियां की हैं। लेकिन बुड्ढे बाबा ने उनसे बिना भेदभाव के निस्वार्थ सेवा करने के लिए कहा, और उसके बाद गुरुदेव ने वैसा ही किया।

दिलचस्प बात यह है कि जब गुरुदेव ने कुरवाई में पहला सार्वजनिक उपचार किया, उस समय उनकी उम्र 35 वर्ष थी। 'शिव जैसे शक्तिशाली संत' के रूप में उनके उद्भव की भविष्यवाणी सत्य हुई। ऐसा माना जाता है कि इस घटना से पहले 'ओम' और 'ज्योत' के चिन्ह, जो उन्हें प्राप्त आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतीक थे, उनकी हथेलियों पर दिखाई देने लगे थे और इस दौरान 'ओम' के चिन्ह उनकी पीठ और छाती पर भी दिखाई देने लगे।

***कई शक्तियों के प्रकट होने से
गुरुदेव एक देवस्थान बन गए।
उनकी पूजा करना एक चलते-फिरते
शिवालय की पूजा करने समान था।***

गुरुदेव की पूजा करके, अनगिनत लोगों ने उनके भीतर समाहित आध्यात्मिक ऊर्जाओं के प्रति सम्मान व्यक्त किया। कई बार, गुरुदेव ने इन ऊर्जाओं और उनके साथ आने वाले प्रतीकों को अपने शिष्यों और भक्तों को भी दिया। महागुरु के जागृत होने के बाद, इन शक्तियों के द्वारा गुरुदेव ने लाखों लोगों की सेवा की। ▪

महागुरु

प्रथम शिष्य

एक सॉइल सर्वेयर होने के नाते गुरुदेव को महीनों तक, अपने परिवार से अलग, दूरदराज के इलाकों में मुकाम करना होता था और इसलिए गुरुदेव वानप्रस्थ आश्रम का अभ्यास कर पाए। उनकी 5-6 सदस्यों की टीम कभी पंचायत भवन में, तो कभी गेस्ट हाउस में शिविर लगाती थी। दूर-दराज के क्षेत्रों में, जहां आवास आसानी से उपलब्ध नहीं होता, वहां वे टेंट में डेरा डालते थे।

वर्ष 1963 में हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश के संयुक्त दौरे पर गुरुदेव की अपने एक सहकर्मी श्री आर. सी. मल्होत्रा से मित्रता हो गई। मल्होत्रा जी गुरुदेव की सादगी, ईमानदारी और आध्यात्मिक रुझान से प्रभावित हो गए। समय के साथ, उन्होंने देखा कि गुरुदेव को धन या भौतिक साधनों से कोई लगाव नहीं है। अगर किसी सहकर्मी के पास किराए का भुगतान करने के लिए पैसे नहीं होते, तो गुरुदेव उसे किराया अदा करने के लिए कुछ पैसे दे देते, अगर एक चपरासी के पास अपनी बेटी की शादी समारोह के लिए पैसे नहीं होते, तो गुरुदेव मासिक वेतन का एक हिस्सा उसे दे देते। मल्होत्रा जी ने गुरुदेव की उदारता के ऐसे अनगिनत उदाहरण देखे।

मल्होत्रा जी गुरुदेव के आध्यात्मिक प्रशिक्षु बन गए और धीरे-धीरे वे अध्यात्म की दुनिया में लीन होते चले गए। वर्ष 1971 में, गंगा के पवित्र जल में गुरुदेव के चरणों में वंदना करते हुए, उन्हें महागुरु के पहले शिष्य बनने का गौरव हासिल हुआ।

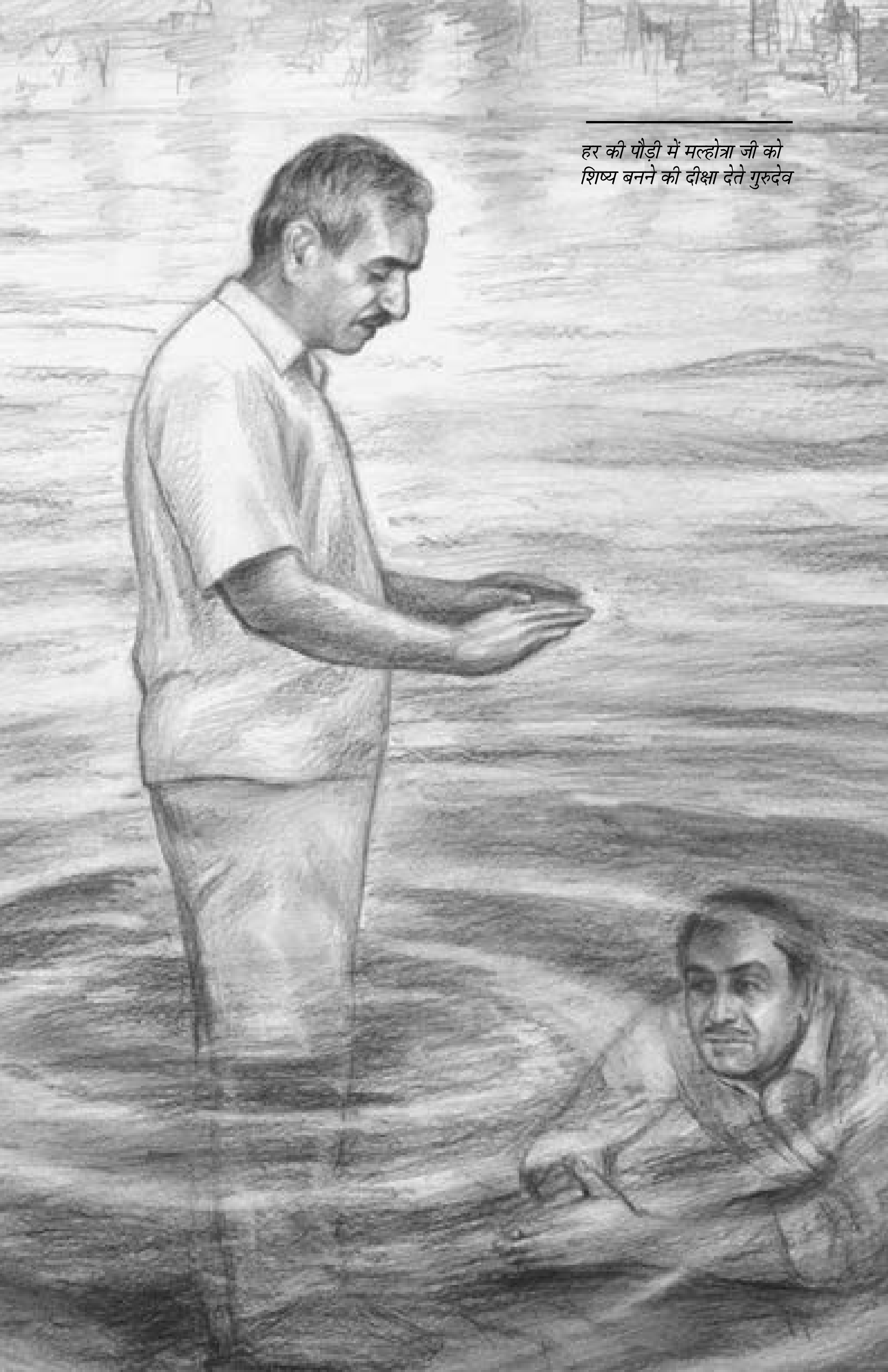

हर की पौड़ी में मल्होत्रा जी को
शिष्य बनने की दीक्षा देते गुरुदेव

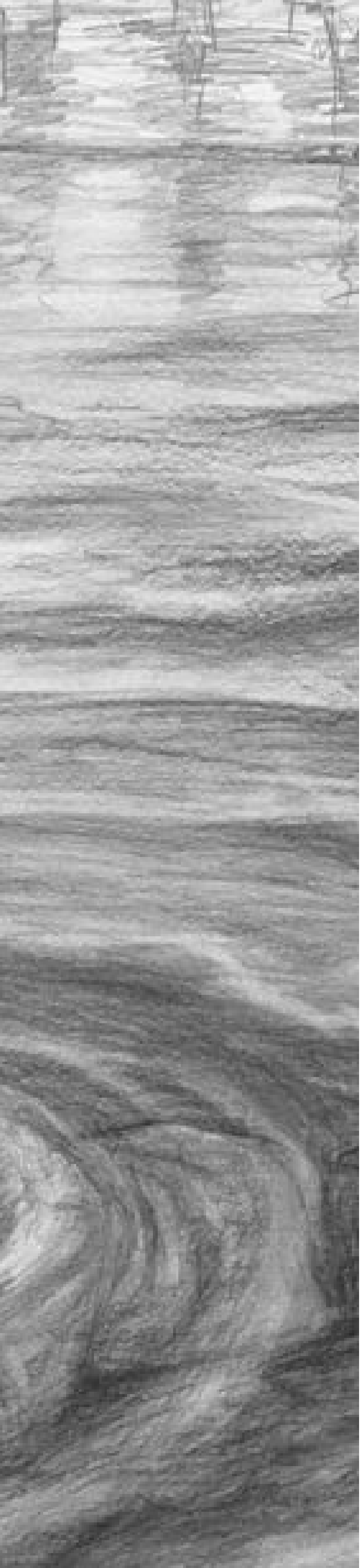

दीक्षा संस्कार के दौरान, गुरुदेव ने मल्होत्रा जी को पानी के नीचे दंडवत प्रणाम करने का निर्देश दिया। मल्होत्रा जी याद करते हैं, "मैं हिचकिचा रहा था क्योंकि पानी का बहाव बहुत तेज था और मुझे तैरना नहीं आता था। उस समय, गुरुदेव ने मुझे उनके निर्देशों का पालन करने को कहा, और मैं आश्चर्यचकित हो गया जब गंगा का पानी स्थिर हो गया। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया और दीक्षा समारोह सम्पूर्ण हो गया।" जब स्तब्ध मल्होत्रा जी ने गुरुदेव से पूछा कि नदी यकायक कैसे ठहर गई, तो गुरुदेव ने अत्यन्त शांत भाव से कहा कि प्रकृति के तत्व उनके नियंत्रण में हैं।

मित्र से शिष्य बनना मल्होत्रा जी के लिए आसान नहीं था। वो अक्सर उन कठिनाइयों के बारे में बात करते थे जो शुरू में एक दोस्त को गुरु के रूप में स्वीकार करने में आती हैं। उन्होंने न केवल गुरुदेव को गुरु के रूप में स्वीकार किया बल्कि भविष्य में महागुरु के सबसे कुशल शिष्यों में से एक बन गए!

मल्होत्रा जी गुरुदेव के 'निस्वार्थ सेवा' के दर्शन के पारंगत समर्थक बन गए।

उन्होंने बाकी शिष्यों को प्रशिक्षण और बढ़ावा देने में भी महागुरु की सहायता की और स्वयं सेवा पाने वाले की बजाय सेवा करने वाले बने। गुरुदेव के निर्देश पर मल्होत्रा जी ने मुझे स्वप्नावस्था में गतिशील सूक्ष्म यात्रा की तकनीक सिखाई थी।

मल्होत्रा जी का दयाभाव स्वप्नावस्था तक सीमित नहीं था। ऐसे कई उदाहरण हैं, जब उन्होंने गुरुदेव के सामने अपने गुरु-भाइयों की बातों का समर्थन किया। हालांकि, ऐसे भी अनेक अवसर आए, जब हम मल्होत्रा जी की शरारतों का शिकार बने। उनकी इन मासूम शरारतों का उद्देश्य महागुरु को नाराज़ करना होता था क्योंकि वह जानते थे कि गुरुदेव की नाराज़गी में भी उनका आशीर्वाद छिपा था।

एक दिन, गुरुदेव का एक नया शिष्य, जो भविष्य में कुशल और विकसित अध्यात्मवादी बना, मल्होत्रा जी की शरारतों का शिकार हो गया। मल्होत्रा जी ने नए शिष्य को यह कहकर गुमराह किया कि महामृत्युंजय मंत्र का जाप करने का सही तरीका है भैंस की पीठ पर पद्मासन की मुद्रा में उसकी पूंछ की तरफ मुंह करके बैठना। बताए गए अनुष्ठान की विचित्रता से आश्चर्यचकित इस शिष्य ने गुरुदेव से इस बात की पुष्टि की कि क्या वास्तव में यही सही विधि है जिसे उसे अपनाना चाहिए। मुस्कराते हुए गुरुदेव ने शिष्य से पूछा कि उसे यह सब किसने बताया है, जिसके कारण मल्होत्रा जी को गुरुदेव के कमरे में बुलाया गया। गुरु की भूमिका निभाते हुए गुरुदेव ने मल्होत्रा जी को हल्की फटकार लगाई, जिसे उन्होंने मुस्कराते हुए स्वीकार कर लिया। इसे भैंस का दुर्भाग्य ही कहेंगे कि वह एक प्रभावशाली आध्यात्मिक के उसकी पीठ पर बैठने के सम्मान से वंचित रह गई।

गुरुदेव के सेवा के मिशन में अपना जीवन समर्पित करने के बाद, मल्होत्रा

जी ने अप्रैल 2019 में अपना शरीर त्याग दिया। उन्होंने मरणोपरांत भी अपनी सेवा जारी रखी है। ▪

व्यापक रूप से यह माना जाता है कि गुरुदेव के 11 शिष्य थे, जिन्हें वे अपने अतीत से इस जन्म में लेकर आए। हालांकि, इस जीवनकाल में, गुरुदेव ने कई नए शिष्य बनाए और उन शिष्यों के भी कई शिष्य बनाए, जिसके परिणामस्वरूप एक बहुस्तरीय आध्यात्मिक पिरामिड का निर्माण हुआ। इसके अलावा, उन्होंने कई गण भी बनाए। गण एक आध्यात्मिक उत्तराधिकारी होता है, जिसमें अपने गुरु के स्तर तक विकसित होने की क्षमता होती है।

गुप्ता जी के चाय एवं जूस स्टॉल पर अपने भक्तों के साथ गुरुदेव

महागुरु

आध्यात्मिक वृक्ष का बीजारोपण

बीज जो बोये गए थे,
एक दिन बन गए वृक्षों से भरे वन,
जिन पौधों को प्यार से पाला था,
वो आगे चलकर बने उनकी
आध्यात्मिक विरासत के कल।

भाग्य ने गुरुदेव के मिशन को सुगम बनाया। उनकी आध्यात्मिक कहानी में उनके शुरुआती शिष्यों ने उनके साथ ही इस पृथ्वी पर जन्म लिया। मल्होत्रा जी, एफसी शर्मा जी, डॉ. शंकरनारायण जी, आर.पी.शर्मा जी, जैन साहब, आर.के. शर्मा जी और सूरज शर्मा जी उसी विभाग का हिस्सा बने जहां गुरुदेव काम करते थे, जिससे उन्हें आपस में मिलने में आसानी हुई। अपने कार्यस्थल पर ही गुरुदेव ने अपने आध्यात्मिक परिवार के बीजारोपण की प्रक्रिया प्रारंभ की।

जब आपसी बातचीत में सहकर्मी अपने जीवन की परेशानियों का जिक्र करते, तो गुरुदेव मदद की पेशकश करते। जल्द ही उनके सेहत बख्शने और भविष्यवाणी की शक्ति की बातें कार्यालय में फैलने लगी और कार्यालय के लोग समस्याओं के समाधान के लिए उनसे संपर्क करने लगे। उनमें से एक थीं श्रीमती सुशीला चौधरी।

चार साल की बच्ची की मां सुशीला जी को उनके डॉक्टरों ने बताया था कि वह फिर कभी गर्भधारण नहीं कर सकतीं। निराशा में डूबी, सुशीला जी ने गुरुदेव से संपर्क किया, जिन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि वह चार बच्चों की मां बनेंगी और भविष्य में तीन बेटों को जन्म देंगी। इस बातचीत के एक साल बाद, सुशीला जी ने एक बेटे को जन्म दिया। तीन साल बाद, उन्होंने एक और बेटे को जन्म दिया।

जब सुशीला जी अपने दूसरे बेटे (तीसरे बच्चे) के जन्म के कुछ महीने बाद गुरुदेव से मिलीं, तो गुरुदेव ने उन्हें बताया कि तीसरे बेटे के गर्भ धारण करने का समय निकट है। सुशीला जी ने सम्मानपूर्वक मना कर दिया और तीन स्वस्थ बच्चों के आशीर्वाद के लिए उनका शुक्रिया अदा किया। जब गुरुदेव ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि तीसरा बेटा उनके भाग्य का हिस्सा है, तो उन्होंने उनसे अनुरोध किया कि वह उस संतान का आशीष किसी और को दे दें, क्योंकि वह अब कोई और बच्चा नहीं चाहती हैं।

कुछ साल बाद, जब सुशीला जी ने अपनी पारिवारिक समस्याओं का समाधान करने के अनुरोध के साथ गुरुदेव से सम्पर्क किया, तो महागुरु ने कहा, "मैं जिस विकसित आत्मा को आपके घर बेटे के रूप में भेजना चाहता था, वह आत्मा आपके स्वर्गवासी पिता की थी। हालांकि एक और बच्चे को जन्म देने की आपकी अनिच्छा के कारण, मुझे उस आत्मा को दूसरे परिवार में जन्म देना पड़ा। यदि आप उस बच्चे को जन्म देने के लिए सहमत हो जातीं, तो वह आत्मा आपकी सभी समस्याओं का निवारण कर देती।" सुशीला जी ने महसूस किया कि उन्होंने अपने गुरु की बात न मानकर गलती की थी।

दिलचस्प बात यह है कि सुशीला जी की बेटा पाने की तीव्र इच्छा उनके

पति के आध्यात्मिक विकास का माध्यम बनी। गुरुदेव ने न केवल उन्हें दो स्वस्थ बेटों का आशीर्वाद दिया, बल्कि उन्होंने चौधरी साहब को नई दिल्ली के पटेल नगर में स्थान संभालने की जिम्मेदारी सौंपकर उनके परिवार को अपनी आध्यात्मिक छत्र-छाया में भी ले लिया।

एक अन्य व्यक्ति जिनके जीवन में गुरुदेव से मिलने के बाद क्रांतिकारी परिवर्तन आया, वे थे उनके वरिष्ठ सहयोगी डॉ. शंकरनारायण जी। गुरुदेव से मिलने से पहले, डॉ. शंकरनारायण का परिवार कई तरह की समस्याओं से जूझ रहा था। चिंता का सबसे बड़ा कारण उनकी युवा बेटी वैशाली का स्वास्थ्य था, जिसे लगातार बुखार आता था और कभी-कभार दौरे पड़ते थे। जब शंकरनारायण जी ने गुरुदेव को अपनी बेटी के स्वास्थ्य के बारे में बताया, तो महागुरु मुस्कुरा दिए।

वक्त के साथ शंकरनारायण जी को गुरुदेव की आध्यात्मिक शक्तियों पर गहरा विश्वास हो गया। उनका अपने सहयोगी पर विश्वास ऐसा था कि उन्होंने अपनी बेटी की दवाइयों को फेंक दिया, क्योंकि उन्हें यकीन था कि अब उनकी बेटी को उन दवाइयों की जरूरत नहीं है। इसके बाद वैशाली की हालत लगातार सुधरने लगी और वो पूरी तरह स्वस्थ हो गई। डॉ. शंकरनारायण पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अपनी बेटी को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करने वाले को गुरुजी कहकर संबोधित किया। गुरुदेव ने उन्हें जल्द ही अपना शिष्य बना लिया।

काम के दौरान, गुरुदेव हरिबाबू गुप्ता की चाय और जूस की दुकान पर अपने कुछ शिष्यों से बातचीत किया करते थे। यह स्टॉल नई दिल्ली के कनॉटप्लेस में कर्ज़न रोड पर गुरुदेव के कार्यालय के सामने स्थित था। जब गुप्ता जी ने पहली बार लोगों को गुरुदेव के पैर छूते देखा, तो उन्हें लगा कि गुरुदेव किसी महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत, कोई प्रभावशाली

व्यक्ति हैं। कुछ समय बाद उन्हें पता चला कि गुरुदेव का सम्मान उनके पद के कारण नहीं बल्कि उनकी आध्यात्मिकता और व्यक्तित्व के कारण था। परिणामस्वरूप, गुप्ता जी भी भक्त बन गए, और उनका स्टॉल गुरुदेव की सहायता के इच्छुक लोगों के मिलने का केंद्र बन गया।

जब कभी गुप्ता जी के स्टॉल पर गुरुदेव अपनी तकलीफ लेकर आने वाले लोगों से मिलते तो वे वहां उपस्थित अपने सहयोगियों के लिए भी चाय की पेशकश करते थे। कई लोग उनकी दयालुता का फायदा उठाते हुए मुफ्त में चाय पी जाते। जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने लोगों को इतनी आसानी से खुद का फायदा उठाने की इजाजत क्यों दी, तो गुरुदेव ने कहा,

"

ये कल भी पीते थे, हम कल भी पिलाते थे।
ये आज भी पीते हैं, हम आज भी पिलाते हैं।
ये कल भी पिएंगे, हम कल भी पिलाएंगे।

उनके शब्दों का तात्पर्य यह था कि उनके मुकद्दर में दूसरों की सेवा लिखी है और उनकी जिम्मेदारी है कि वो बदले में बिना कोई उम्मीद किए इसे करें!

गुरुदेव ने न केवल अपने ऑफिस में लोगों की सेवा की, बल्कि कई बार वह लंच के समय पास ही रहने वाली अपनी बहन के घर जाकर भी लोगों की सेवा करते थे। उनके सह-कार्यकर्ता आनंद प्रकाश पाराशर याद करते हुए कहते हैं, "गुरुदेव लंच के समय कार्यालय के बाहर उनका इंतजार कर रहे लोगों से मिलते थे। उन्होंने कभी किसी के बीच अंतर नहीं किया और ना ही कभी किसी की मदद से इंकार किया।"

हालांकि गुरुदेव जरूरतमंदों की मदद के लिए हमेशा मौजूद रहते थे,

लेकिन कार्यस्थल पर मिले अचानक ध्यानाकर्षण ने उन्हें असहज कर दिया था क्योंकि उन्होंने न तो कभी प्रसिद्धि की कामना की और न ही वैभव की। गुरुदेव बहुत प्रयास करते कि वह लोगों की चर्चा का केन्द्र न बनें, लेकिन इसके बावजूद उनके चमत्कारों के किस्से उनके कार्यालय की दीवारें लांघकर बाहर तक फैल गए। गुप्ता जी गुरुदेव को याद करते हुए कहते हैं कि लोग कार्यालय की अवधि के दौरान उनकी एक झलक पाने या उनसे छोटी-सी बातचीत की उम्मीद में ऑफिस के सभी आठ दरवाजों पर खड़े रहते थे। ऐसे समय में गुरुदेव जादूगर हूडिनी की तरह गुप्ताजी के स्कूटर पर पीछे बैठकर, हेलमेट से चेहरा छुपाकर, निकल जाते थे!

शिष्यों और भक्तों की संख्या लगातार बढ़ती रही, साथ ही गुरुदेव की विनम्रता भी बरकरार रही। वह कार्यालय में अपने वरिष्ठ अधिकारियों को पूरा सम्मान देते, हमेशा उन्हें 'सर' कहकर ही सम्बोधित करते, और उनकी अनुमति लिए बिना कभी भी उनके कक्ष में प्रवेश नहीं करते।

गुरुदेव के बॉस प्रताप सिंह जी ने उन्हें एक खुशमिज़ाज इंसान बताया, जो बेहद विनम्र स्वभाव के थे। गुरुदेव की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि अपने सेवाभाव को उन्होंने अपने पेशेवर कर्तव्यों के निर्वहन में कभी बाधा नहीं बनने दिया। उनके शब्दों में, "उनके शिष्य और अन्य लोग जो उनसे मदद चाहते थे, वे हमेशा हमारे कार्यालय के आस-पास घूमते रहते। मैं इसमें ढल गया, क्योंकि मैंने देखा कि वे लोगों की मदद करने और उनके दुखों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करते थे। मैं ऐसे व्यक्ति का समर्थन कैसे नहीं करता, जो लोगों के कल्याण के लिए इतना कुछ कर रहा था। जबकि मुझे नहीं लगता कि मैं हर समय उनके प्रति उदार होता था। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि उन्होंने कभी भी उनके प्रति मेरे व्यवहार का अनुचित लाभ नहीं उठाया। वास्तव

में, जब मैं निरीक्षण के लिए उनके शिविरों में जाता था, तो वह मेरे लिए खाना बनाते थे। वह मेरा बहुत सम्मान करते थे।"

गुरुदेव दूसरों की अपेक्षा कड़ी मेहनत करते थे। ऑफिस का समय समाप्त होने के घंटों बाद भी वे काम किया करते थे। व्यक्तिगत रूप से जमीन और मिट्टी की जांच किये बिना वह कभी किसी सरकारी रिपोर्ट पर हस्ताक्षर नहीं करते थे। वास्तव में यात्रा चाहे कितनी भी कठिन हो, वे काम के लिए दूर-दराज के दुर्गम स्थानों पर जाने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। एक बार उन्होंने बिट्टू जी से कहा था, "मैं भारत सरकार से वेतन लेता हूं, अतः मैं अपने व्यावसायिक कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से करने के लिए वचनबद्ध हूं। मैं इसमें कभी समझौता नहीं कर सकता।"

आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए, अपने पेशे के प्रति गुरुदेव का समर्पण उनके शिष्यों, भक्तों और अनुयायियों के लिए एक मिसाल है। ▪

महागुरु

जड़ पकड़ता आध्यात्मिक वृक्ष

सैकड़ों संतों को देकर शक्ति का वरदान
उनके घर बना दिए मंदिर समान
उनके तत्वज्ञान की जड़ें फैलीं हर गांव, हर शहर
जहां लेकर उनका नाम, लोग करते सेवा हर पहर।

जैसे-जैसे गुरुदेव का आध्यात्मिक परिवार बढ़ने लगा, वे अपने शिष्यों के घरों में सहायता और उपचार के लिए स्थान स्थापित करने की एक नई अवधारणा के साथ आए।

वर्ष 1973 में, गुरुदेव ने दिल्ली के शादीपुर इलाके में मल्होत्रा जी के निवास पर सेवा शुरू की। एक साल बाद, सेवा को गुड़गांव के शिवपुरी इलाके में गुरुदेव के घर में स्थानांतरित कर दिया गया। उस वर्ष, रोहतक, हरियाणा, की दो महिलाएं गुरुदेव के शिवपुरी निवास पर उनका नाम पूछते हुए पहुंची। उन्होंने गुरुदेव को सूचित किया कि वे गुरुवार को चमत्कार करने वाले गुरु से मिलने आई हैं। गुरुदेव ने जवाब दिया कि वही वह व्यक्ति हैं जिसे वे मिलना चाहती हैं लेकिन वह कोई चमत्कार नहीं करते। महिलाएं चली गईं और कुछ दिनों बाद एक बार फिर अपनी मदद के अनुरोध के साथ वापस आईं। इस बार, गुरुदेव ने उन्हें चालीस दिन बाद आने वाले पहले गुरुवार को स्थान पर आने के लिए कहा।

महिला गुरुदेव के निर्देशों की अवहेलना करती है और गर्भपात का शिकार होती है

चालीस दिनों के बाद जब वे वापस आईं, तो उन महिलाओं में से एक ने गुरुदेव से कहा कि उसके गुरु ने उसे जो शाप दिया है उससे मुक्त होने में वो उनकी मदद चाहती है। उसने बताया कि जब वह चार महीने की गर्भवती थी, तो उसके गुरु उसके घर आए। उसके पति का यह मानना था कि गुरु की कृपा से उसकी पत्नी गर्भवती हैं, और उसने अपनी पत्नी से अपने गुरु का आभार व्यक्त करने के लिए कहा। जब उसने गुरु से पूछा कि वह उनके लिए क्या कर सकती है, तो उसके गुरु ने जवाब दिया कि चूंकि उनकी कोई सांसारिक इच्छाएं नहीं हैं, इसलिए वह उन्हें उनके अगले पड़ाव के लिए बस का किराया दे सकती हैं। किसी अंजान कारण से उस महिला ने पैसे नहीं दिए। क्रोधित गुरु ने उसे शाप दिया, "तुम हमेशा वैसी ही रहोगी जैसी तुम हो!" कुछ ही समय बाद उसका गर्भपात हो गया।

अभिशाप बहुत प्रभावी साबित हुआ। हर साल, महिला गर्भवती होती, लेकिन चौथे महीने में उसका गर्भपात हो जाता था। जिस साल वह गुरुदेव के पास आई, वह फिर से गर्भवती थी, वह उनका संरक्षण चाहती थी ताकि अजन्मा शिशु बच जाए। जब वह अपनी कहानी सुना रही थी, उसी समय उसके गुरु की आत्मा ने स्थान में प्रवेश किया और स्थान के एक हिस्से में आग लगा दी। गुरुदेव द्वारा आग की लपटों को बुझाने के बाद, महिला के गुरु की आत्मा ने उन्हें शाप को न तोड़ने के लिए कहा। गुरुदेव ने उस आत्मा से कहा कि वो महिला अपनी इच्छा से स्थान पर आई है, और ऐसे में वे उसे मना नहीं कर सकते थे। उस आत्मा ने गुरुदेव से कहा कि वे उस महिला को उनके (महिला के गुरु के) आश्रम में जाकर क्षमा मांगने के लिए कहें। गुरुदेव ने यह संदेश उसे दे दिया, लेकिन साथ ही सावधान भी किया कि जब वह अपने किए की माफी मांगने के लिए वहां जाए तो आश्रम में किसी से कुछ भी स्वीकार न करे। जब महिला अपने गुरु के आश्रम में गई, तो उसने गुरुदेव के निर्देश की

अवहेलना करते हुए वहां उसे दिए गए तावीज को पहन लिया। जल्द ही उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की मृत्यु हो गई।

सिद्ध गुरु के वचन अमूल्य होते हैं!

इस घटना के बाद गुरुदेव ने शिवपुरी में सेवा शुरू कर दी। शुरुआत में लोग अपनी परेशानियों से राहत पाने के लिए सप्ताह के सभी दिनों में आते थे। जब भीड़ बढ़ी, तो गुरुदेव ने फैसला किया कि हर महीने की अमावस्या के बाद का पहला गुरुवार, पूरी तरह से सेवा के लिए समर्पित होगा। इस दिन को बड़ा गुरुवार के नाम से जाना जाता है। बड़ा गुरुवार पर, दुनिया भर में कई स्थानों में सेवा की जाती है। बहुत-से स्थानों ने मरीजों की जरूरतों और सुविधा के हिसाब से सेवा का दिन निर्धारित किया है। कुछ स्थानों पर शनिवार को सेवा की जाती है, जबकि कुछ अन्य में रविवार को।

स्थानों के बढ़ने के साथ ही गुरुदेव के आध्यात्मिक उपक्रम शहरों, कस्बों, देश और दुनिया के कई स्थानों में जड़ें जमाने लगे। घरों में स्थापित होने वाले स्थानों ने सेवा के लिए किसी अतिरिक्त आधारभूत ढांचे पर होने वाले खर्च की जरूरत को भी समाप्त कर दिया। महागुरु और उनके शिष्यों द्वारा स्थापित अधिकांश स्थानों में सेवा के बदले धन या कोई अन्य चीज ग्रहण करना सख्त मना है।

गुरुदेव ने अपने कुछ शिष्यों को गुरु के रूप में नियुक्त करके और उन्हें अपनी शक्तियां देकर अपने आध्यात्मिक उपक्रम का विस्तार करना शुरू किया। कई अन्य लोग उनके शिष्यों के शिष्य बन गए। उन्होंने एक बहुस्तरीय आध्यात्मिक संरचना का निर्माण किया लेकिन कभी भी सटीक संबंध का वर्णन नहीं किया जो उनके मन में था। वे परिश्रम,

अभ्यास और बुड्ढे बाबा के मार्गदर्शन के माध्यम से एक गुरु से एक महागुरु बन गए। आखिरकार, एक वृक्ष कई वृक्षों के बाग में विकसित हुआ, जिनमें से प्रत्येक आत्मनिर्भरता के लिए सक्षम था।

कैसे अध्यात्म का एक पेड़ एक संपूर्ण बगीचे में तब्दील हो गया? जानने के लिए सुनिए पॉडकास्ट '**कलेक्शन सेंटर**', www.gurudevonline.com पर।

*यह नक्शा केवल प्रतीकात्मक चित्रण के लिए है।

महागुरु

चमत्कारों का कारवां

उत्तर भारत के प्राचीन पहाड़ी शहर में,
लाखों लोगों की मदद की घर-घर में
जो थे लाइलाज उनका कर दिया इलाज
झुकी हुई कमर सीधी कर दी,
दूर की रोगियों की पीड़ा, सेहत में वृद्धि कर दी।

हिमाचल प्रदेश अपने शक्ति मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें नैना देवी, ज्वालामुखी, चिंतपूर्णी, चामुंडा देवी और ब्रजेश्वरी देवी सबसे ज्यादा सिद्ध मंदिर माने जाते हैं।

कथोग हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा ज़िले में स्थित एक कम आबादी वाला शहर है। वर्ष 1976 में, गुरुदेव और उनकी मृदा सर्वेक्षण टीम ने कथोग में शिविर स्थापित किया। इस दौरान उनका आवास स्कूल के सामने एक शिक्षक के निवास में था। उसी साल, मई में, गुरुदेव ने वहां सेवा शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने अपने दिल्ली के कुछ शिष्यों को कथोग आने का निर्देश दिया। सभी को आश्चर्यचकित करते हुए सेवा के पहले कुछ दिनों में आसपास के क्षेत्रों से हज़ारों लोग गुरुदेव की मदद, चिकित्सा और आशीर्वाद पाने के लिए पहुंचे।

थापा नाम का एक तांत्रिक, जो शिक्षक निवास से थोड़ी दूर झोपड़ी में रहता था, सावधानी और अविश्वास से वहां हो रहे घटनाक्रमों को देखता

था। उसे यकीन था कि यह आदमी कथोग के लोगों को अपनी हथेली पर एक ओम और त्रिशूल दिखाकर भ्रमित कर रहा है। एक रात, थापा ने फैसला किया कि यह इस 'भ्रम' के खुलासे का समय है। उसने गुरुदेव में भगवान का भय पैदा करने के लिए एक शक्तिशाली आत्मा को भेजा, जो उसके नियंत्रण में थी। फिर थापा उस आत्मा के लौटने का इंतजार करने लगा। जैसे-जैसे वक्त सेकंडों से मिनटों और मिनटों से घंटों में बदलता गया, उसकी उत्सुकता बढ़ती गई।

जब भोर हुई, तो वह स्थिति का पता लगाने शिक्षक निवास गया। जैसे ही उसने अधखुले दरवाजे से झांका, गुरुदेव ने उसे अंदर आने के लिए कहा। जब थापा सावधानीपूर्वक अंदर गया, तो गुरुदेव ने हंसते हुए कहा, "आपको ये मूर्खतापूर्ण परीक्षण करने की आवश्यकता नहीं है" थापा को तत्काल समझ में आ गया कि गुरुदेव कोई भ्रम नहीं हैं। उसने संदेह को परे हटाकर भक्तिभाव से गुरुदेव से क्षमा मांग ली।

स्कूल के शिक्षक सुरेश कोहली को गुरुदेव के बारे में सबसे पहले थापा से पता चला। सुरेश जी ने थापा की बातों को खारिज कर दिया क्योंकि उन्हें लगा कि यह थापा नहीं बल्कि यह वह शराब बोल रही है जो थापा नियमित रूप से पीता है। हालांकि, जिज्ञासावश वे भी, उस व्यक्ति से मिलने चल पड़े जिसके चमत्कारों ने कथोग जैसे छोटे शहर में हलचल मचा दी थी।

गुरुदेव ने खुले दिल से उनका स्वागत किया और उन्हें चाय पेश की। बातचीत के दौरान, सुरेश जी ने गुरुदेव से पूछा कि क्या वे उन्हें ईश्वर से मिला सकते हैं। गुरुदेव ने उन्हें रात में अपनी बगल में एक पानी का गिलास रखकर ध्यान करने को कहा। सुरेश जी याद करते हैं कि जब वे ध्यान अवस्था में थे, तो उन्हें अपने घर के मंदिर में गुरुदेव के सात रातों

तक लगातार दर्शन हुए। हालांकि, आठवीं रात को कुछ भी नहीं हुआ। जब नौवें दिन सुरेश जी महागुरु से मिलने आए, तो गुरुदेव ने उनका स्वागत करते हुए कहा, "हुण मैनु एस तेरह वेख्या मास्टरजी, ते समजना रब नुं पा लिता! (अब से आप जब भी अपनी ध्यान अवस्था में मुझे देखें तो समझ लें कि आप परम शक्ति से मिले हैं)" सुरेश जी समझ गए थे कि गुरुदेव एक संत से कहीं ज्यादा हैं और वो उनके कदमों में नतमस्तक हो गए।

जैसे ही कथोग की भीड़ बढ़ी, गुरुदेव ने स्कूल परिसर में सेवा का काम प्रारंभ कर दिया ताकि बड़ी संख्या में आने वाले लोगों को तकलीफ न हो। जब उन्हें ज्यादा लोगों की जरूरत पड़ी तो उन्होंने उसी स्कूल के कई शिक्षकों, जैसे सुरेश जी, शंभू जी और संतोष जी को अपना पीया हुआ जल पिलाया और उन्हें उपचार और सेवा में लगा दिया। इस जन्म में अध्यात्मवाद का किसी भी प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान न रखने वाले पुरुष, अगले कुछ दिनों में आध्यात्मिक उपचारक बन गए।

गुरुदेव ने कथोग में कुछ असाधारण आध्यात्मिक चमत्कार दिखाए। वह बड़े जन-समूहों पर जल छिड़कते, जिससे बीमार को तुरन्त आराम मिल जाता। एक दिन, उन्होंने अपने हाथ एक आदमी की झुकी हुई पीठ पर रख दिए, और कुछ ही मिनटों में वह सीधा खड़ा हो गया।

उनके शिष्य, राजी शर्मा जी, कथोग को गुरुदेव की आध्यात्मिक यात्रा का ऐसा बिंदु मानते हैं जहां से वो अध्यात्म के शिखर पर पहुंच गए। यह माना जाता है कि गुरुदेव ने इस छोटे शहर में हज़ारों लोगों की मदद की, उनका उपचार किया और उसके बाद वे 'ओम वाले बाबा' के नाम से पहचाने जाने लगे। ▪

कथोग में झुकी हुई रीढ़ से ग्रस्त एक व्यक्ति का उपचार करते गुरुदेव

गुरुदेव ने कई महीने कृषि मंत्रालय द्वारा संचालित सॉइल सर्वे कैंप्स में बिताए। वहां हज़ारों लोग उनकी मदद और उनका आशीर्वाद लेने आते थे। सुनिए पॉडकास्ट **'कैंप'** www.gurudevonline.com पर।

महागुरु

असाधारण उपचारक

मानव जाति की सेवा के लिए
बना एक अविनाशी के साथ बंधन,
अब भी जारी है इनका सहयोग,
दूर करने तन और मन के रोग।

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के एक छोटे से शहर रेणुका को परशुराम जी के आध्यात्मिक क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, जो देवी रेणुका और सप्तऋषि जमदग्नि के अमर पुत्र हैं।

वर्ष 1980 में यहीं पर गुरुदेव ने स्थानीय राजनीतिज्ञ श्री चंद्रमणि वशिष्ठ के प्लॉट पर शिविर लगाया। व्यवस्थित होने के बाद, गुरुदेव ने बिट्टू जी को शिविर के पास बने एक शिवलिंग की साफ-सफाई और रंगाई-पुताई करने को कहा। एक-दो सप्ताह बाद, वशिष्ठ जी प्रार्थना करने शिवलिंग पर पहुंचे। वो गुरुदेव से मिलने की ज़िद पर अड़े हुए थे। चूंकि गुरुदेव उस समय दिल्ली में थे, उन्होंने बिट्टू जी से पूछा कि क्या गुरुदेव चश्मा पहनते हैं। यह बताने पर कि वह चश्मा नहीं पहनते, वशिष्ठ जी के चेहरे पर असमंजस के भाव थे। कुछ दिनों बाद गुरुदेव रेणुका लौटे, तो वशिष्ठ जी ने उनसे भी वही प्रश्न किया। गुरुदेव ने हंसते हुए कहा, "मैं जवान हूं। मुझे अभी तक चश्मे की आवश्यकता नहीं है।"

वशिष्ठ जी को एक कप चाय देने के बाद, गुरुदेव ने उन्हें अपनी हथेली

पर ओम दिखाया। चमकदार प्रतीक को देखकर वशिष्ठ जी ने गुरुदेव के चरणों में प्रणाम किया। उन्होंने स्वीकार किया कि ध्यान के दौरान, वे एक के बाद एक कई देवताओं की छवियों को देखते थे। ध्यान का यह स्लाइड शो, हमेशा पैंट और शर्ट पहने एक चश्मे वाले व्यक्ति की छवि के साथ समाप्त होता था, जो दिखने में बिल्कुल गुरुदेव जैसे थे। यह सुनकर गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा, "बेटा, मैं वर्ष 1970 में यहां आने वाला था, लेकिन वर्ष 1980 में आया हूं। तुम 10 साल से मेरी प्रतीक्षा कर रहे हो!"

इसके तुरंत बाद, गुरुदेव ने रेणुका में सेवा शुरू करने का फैसला किया। उन्होंने कुछ शिष्यों को रेणुका आने का आदेश दिया, और साथ में उन्हें एक निर्देश भी दिया कि उन्हें गुरुदेव की पहचान गुप्त रखनी होगी और सेवा का चेहरा बनना होगा। चूंकि उस समय रेणुका की आबादी बहुत कम थी, इसलिए शिष्यों को उम्मीद नहीं थी कि ज्यादा लोग आएंगे। हालांकि, जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, आस-पास के इलाकों से अनगिनत लोग उस सुदूर स्थान पर आते गए।

उस दिन जब सेवा समाप्त हुई, तो गुरुदेव ने उपस्थित शिष्यों और कुछ अन्य लोगों को अगले गुरुवार रेणुका वापस आने को कहा। गुरुदेव ने उन्हें सूचित किया कि उनकी आवाज पहाड़ों से बहुत आगे तक चली गई है और उन्हें उम्मीद है कि बहुत लोग आएंगे। उन्होंने शिष्यों को सेवा के निर्धारित दिन से एक रात पहले पहुंचने की भी सलाह दी। बुधवार रात जब 10-11 शिष्यों की टीम कैंपसाइट पहुंची तो उनके आगमन की प्रतीक्षा में लगभग 2 किलोमीटर लंबी कतार लगी हुई थी। गुरुदेव ने तुरंत उन्हें लोगों की सेवा करने का निर्देश दिया।

रात को शुरू हुआ सेवा का यह सिलसिला अगले दिन भी जारी रहा।

रेणुका में मौजूद एक शिष्य बताते हैं कि 17 घंटे तक लगातार सेवा करने के बाद वह लोगों को ठीक करने के लिए हाथ नहीं उठा पा रहे थे। शिष्य की शारीरिक परेशानी को भांपते हुए, गुरुदेव ने उन्हें पीने के लिए एक गिलास जल दिया, जिससे उनमें पुनः शक्ति का संचार हो गया।

सेवा के तीन दिनों के दौरान, दूर-दूर से लोग रेणुका आए। सेवा स्थल पर कुछ लोग पैदल पहुंचे, जबकि कुछ निजी वाहनों में पहुंचे। हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान राज्यों की बसें हर कुछ घंटों के बाद कैंपसाइट के पास लोगों को उतार देती। वास्तव में, हरियाणा और पंजाब रोडवेज ने अप्रत्याशित मांग को पूरा करने के लिए कुछ बसों का रुख रेणुका की ओर कर दिया था।

उन तीन दिनों की सेवा के दौरान रेणुका आने वाले कई लोगों में एक युवा लड़की भी थी जो खड़ी नहीं हो सकती थी। उसके माता-पिता, जो हिमाचल के एक दूरदराज के गांव में रहते थे, पैरों से चलने में असमर्थ बेटी को अपनी पीठ पर लादकर रेणुका पहुंचे थे। जैसे ही वे गुरुदेव के शिष्य सीताराम ताखी जी के पास पहुंचे, जो उस कतार में शामिल लोगों का इलाज कर रहे थे, उन्होंने उनसे अपनी बच्ची को ठीक करने का अनुरोध किया। सीता राम ताखी जी ने गुरुदेव से मार्गदर्शन मांगा कि क्या किया जाना चाहिए। महागुरु के निर्देश पर सीताराम जी, लड़की के पैर की उंगलियों पर खड़े हुए और एक अन्य शिष्य आर.पी. शर्मा जी ने उस लड़की का हाथ पकड़कर उसे ज़ोर से उठाया। इसके बाद वो लड़की खड़ी हो गई और पहली बार छोटे-छोटे कदमों से चलने लगी, जिसे देखकर हर कोई अवाक रह गया। उसके माता-पिता ने नम आंखों से कृतज्ञता के साथ सीता राम ताखी जी और आर.पी. शर्मा जी को धन्यवाद देते हुए कहा, "आप का भला हो!"

आध्यात्मिक गठबंधन करने के
लिए परशुराम जी से मिले गुरुदेव

रेणुका में घटित इन चमत्कारों की चर्चा फैलते ही, हिमाचल सरकार ने अपने कुछ अधिकारियों को यह देखने के लिए भेजा कि आखिर वहां हो क्या रहा है। वे पास की ही एक प्रयोगशाला में जल का नमूना जांचने के लिए ले गए पर जल एकदम शुद्ध निकला। द ट्रिब्यून जैसे समाचार पत्रों के संपादकों ने अपने पत्रकारों को रेणुका में होने वाली चमत्कारिक घटनाओं को कवर करने के लिए भेजा।

रेणुका का शिविर न केवल गुरुदेव की अकल्पनीय आध्यात्मिक शक्तियों का प्रदर्शन था, बल्कि एक ताकीद भी थी कि सेवा के लिए सुखों को त्यागने की जरूरत होती है। सेवा स्थल पर मौजूद शिष्यों ने निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा की।

गुरुदेव के आध्यात्मिक दर्शन की आधारशिला निस्वार्थ सेवा थी, है और रहेगी।

कहा जाता है कि गुरुदेव ने रेणुका में सेवा शुरू करने से पहले परशुराम जी के साथ आध्यात्मिक बैठकें की थीं। उन्होंने उनके साथ एक गठबंधन किया, जिसके तहत वर्ष 1980 में स्थान की स्थापना की गई, और उसकी बागडोर वशिष्ठ जी को सौंप दी गई, जो गुरुदेव और परशुराम जी, दोनों, के भक्त थे। अपनी मृत्यु से पहले, वशिष्ठ जी ने एक शिष्य, दिनेश जी को सेवा का कार्य आगे बढ़ाने के लिए नियुक्त किया। माना जाता है कि परशुराम जी आज भी स्थान की गतिविधियों पर नज़र रखने वहां आते हैं।

गुरुदेव ने रेणुका और कथोग जैसे कई स्थानों पर शिविर स्थापित किए, जहां उन्होंने उन देवताओं के साथ गठबंधन किए जो वहां प्रभुत्व रखते थे। परशुराम जी, देवी रेणुका जी और हिमाचल की देवियों के अलावा,

गुरुदेव ने सेवा प्रदान करने के लिए कई अन्य संतों के साथ आध्यात्मिक गठबंधन किए। इनमें ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, श्री मारकंडेश्वर, बाबा बालक नाथ, गणपति, सिख गुरु - गुरु नानक देव, गुरु गोबिंद सिंह और गुरु अंगद देव, हनुमान, अश्विन कुमार, दत्तात्रेय, शिर्डी के साईं बाबा, इंद्र और संभवतः कई अन्य देवता शामिल हैं। ▪

एक मिनट के लिए सोचकर देखिए - परशुराम जी जैसे आध्यात्मिक महासितारे को सेवा के लिए स्थान की स्थापना में सहयोग देना उचित लगा, और उन्होंने इसको चलाने में भी अपना योगदान दिया। अगर सेवा उनके जैसे अमर, महान, आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए प्रोत्साहन के रूप में कार्य कर सकती है, तो शायद सभी को निस्वार्थ सेवा के विचार और अभ्यास पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

एक सड़क यात्रा के दौरान अपने
शिष्यों को पेय पदार्थ देते गुरुदेव

महागुरु

सेवा लेने वाले नहीं, सेवा करने वाले

जब हम चल नहीं सकते थे, तब उन्होंने हमें पंख लगाए,
उनसे ही हमने उड़ने के हौसले पाए,
फिर भर ली हमने एक अनजान आध्यात्मिक उड़ान,
इस सफर में हर पल साथ रहा उनका साया महान।

एक बार, ध्यान अवस्था में मैंने स्वयं को गुरुदेव और उनके कुछ शिष्यों के साथ बैठे देखा। हम सौ से ज्यादा विकसित आत्माओं को पृथ्वी पर अवतरित होते देख रहे थे। उन सभी आत्माओं के सिर पर बाल नहीं थे और सभी ने भूरे रंग का चोला पहना हुआ था। मुझे पता था कि मेरे गुरु मेरे सामने अपने मिशन का खुलासा कर रहे थे।

कई सपने और दृश्य अतीत या भविष्य की घटनाओं के संकेत होते हैं। हालांकि मेरा यह एक दृश्य मेरे जन्म से पहले की घटना का था, मैंने स्वयं को अपने वर्तमान शारीरिक स्वरूप में देखा। गुरुदेव ने रवि जी को उनके पिछले जीवन का दृश्य दिखाया जिसमें रवि जी और गुरुदेव दोनों अपने वर्तमान अवतारों से मिलते-जुलते दिखे। इससे अतीत से नाता समझना संभव हो सका।

कुछ साल बाद, गुरुदेव ने बताया कि अपने शिष्यों को इकट्ठा करने में उन्होंने पिछले 500 साल बिताए हैं, तब मुझे उस दृश्य का मतलब

समझ में आया। गुरुदेव ने अपने अस्तित्व से मेल खाने के लिए पृथ्वी पर हमारे अस्तित्व को संरेखित किया, ताकि हम उनके मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के मिशन में भाग ले सकें।

गुरुदेव के द्वार पर हर तरह के शिष्यों ने दस्तक दी। कुछ मरीज़ बनकर आए, तो कुछ सहकर्मियों के रूप में पहुंचे। कुछ लोग अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए आए, जबकि अन्य को स्वप्न अवस्था में अपने भविष्य के गुरु के बारे में संदेश मिले। गुरुदेव ने अत्यन्त उदारतापूर्वक विभिन्न आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों को अपनी शरण में ले लिया। उन्होंने हमारे तब तक के लिखे-पढ़े को साफ किया, और हमारे जीवन की कहानियों को दोबारा लिखा। आध्यात्मिकता के बारे में इस जीवनकाल में बहुत कम या कोई ज्ञान न रखने वाले हम जैसे व्यक्ति, उनकी चौकस निगरानी में आध्यात्मिक चिकित्सकों में बदल गए।

गुरुदेव का हमारी आध्यात्मिक यात्रा में बहुत गहरा निवेश था। उन्होंने हमारा हाथ पकड़कर हमें आध्यात्मिक मार्ग पर तब तक आगे बढ़ाया जब तक कि हम खुद संभलने लायक नहीं हो गए। उन्होंने हमारी उड़ान को चेतना के उच्च स्तर पर पहुंचाया, और हमारे लिए कामना की कि हम उनसे भी आगे जाएं। जब हम असफल हुए तो उन्होंने हमें प्रेरित किया और जब हम में आत्मविश्वास की कमी हुई तो उन्होंने हम पर विश्वास जताया। उन्होंने हमारे भ्रमों को समाप्त कर दिया, और हमें उन अध्यात्मवादियों में बदल दिया जो आज हम हैं। समय के साथ, हमने अपनी स्वयं की दिव्यता को पहचाना, और बदले में दूसरों को उनकी दिव्य पहचान कराने में मदद की।

मेरे एक गुरु भाई, गुरुदेव का उल्लेख 'उल्टा गुरु' (अनूठा गुरु) के रूप में करते हैं। यह शब्द उन्होंने परंपरा के विपरीत चलने की गुरुदेव

की प्रवृत्ति के प्रति अपना आदर व्यक्त करने के लिए बनाया था। जहां परंपरा यह बताती है कि शिष्य वह है जो अपने गुरु की सेवा करता है, लेकिन गुरुदेव अपने शिष्यों की भी उतनी ही सेवा करते थे जितनी अन्य लोगों की। उन्होंने पदवियों को त्यागकर अध्यात्म के अनूठे रूप को लोकप्रिय बनाया।

एक बहुत उच्च आध्यात्मिक महागुरु होने के बावजूद, उन्होंने कभी किसी के साथ हीन व्यवहार नहीं किया। उन्होंने ना सिर्फ आत्मिक समानता का प्रचार किया, बल्कि इसका अभ्यास भी किया। कभी-कभी, वह फर्श पर बैठकर हमारे साथ भोजन करते और उन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि लोग उन्हें दूसरों से श्रेष्ठ मानें। वास्तव में, जब उनकी अपेक्षा उनके शिष्यों को प्राथमिकता दी जाती तो वे इसकी सराहना करते। अपने शिष्यों की आध्यात्मिक विकास यात्रा के दौरान वे सभी को समान लेकिन विभिन्न चरणों में देखते थे।

उन्होंने अपने आध्यात्मिक गुरु बुड्ढे बाबा की सलाह पर उन सभी लोगों को 'पुत्त' कहकर संबोधित करना शुरू किया जो उनका आशीर्वाद लेने आते थे। अपने शिष्यों को आध्यात्मिक ऊंचाइयों पर ले जाने की प्रक्रिया में, गुरुदेव ने गुरु-शिष्य संबंधों को एक दिलचस्प मोड़ दिया जब वे स्वेच्छा से सेवक बने, ना कि सेवा लेने वाले।

जब गुरुदेव शिवपुरी के एक छोटे, दो कमरों वाले घर से निकलकर गुड़गांव में थोड़े बड़े घर में रहने के लिए गए तो उन्होंने अपने नए घर के दरवाजे हमारे लिए खोल दिए। उन दिनों जब उनका घर उनके शिष्यों और उनके परिवारों से भरा होता था, तो वह एक छोटे से स्टोर रूम में, एक पुरानी खाट पर सोते थे। एक बार उन्होंने कहा था, "मुझे भले ही असुविधा हो जाए, पर मेरे शिष्यों को असुविधा नहीं होनी चाहिए।"

महाशिवरात्रि जैसे अवसरों पर जब दुनिया के विभिन्न हिस्सों से भक्तों के दल गुड़गांव पहुंचते, तो वे सभी लोगों की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखते। एक महाशिवरात्रि पर उन्होंने अपने हाथों से अपने शिष्यों के लिए आलू और गोभी की सब्जी बनाई और उन सबके खाने के बाद ही स्वयं खाना खाया।

हिमाचल प्रदेश के परवानू के एक शिष्य गुप्ता जी याद करते हुए कहते हैं कि जब भी वह गुरुदेव के साथ सड़क यात्राओं पर जाते थे, तो गुरुदेव सड़क किनारे ढाबों के पास गाड़ी रोककर अपने शिष्यों के लिए जलपान खरीदते थे। कार में आराम से बैठकर शिष्यों से सेवा लेने की बजाय गुरुदेव हमेशा शिष्यों की जरूरतों को प्राथमिकता देते थे।

एक बार एक शिष्य ने गुड़गांव के स्थान के लंगर में परोसे जाने वाले भोजन के बारे में शिकायत की। उन्होंने दाल में घी और सरसों के साग में मक्खन की मांग की। जब शिष्य की अनुचित मांग गुरुदेव तक पहुंची, तो नाराज़ होने के बजाय, उन्होंने सेवादार को शिष्य का भोजन उसी तरीके से बनाने के लिए कहा, जिस तरह वह चाहता था।

हालांकि कई बार वे हमें झकझोरकर हमारे कर्तव्यों की याद दिलाते। रेणुका के शिविर में आगमन के कुछ दिन बाद तक, गुरुदेव रोज सुबह 3 बजे बिट्टू जी को जगाते ताकि वे बिट्टू जी को एक कप गर्म चाय पिला सकें। अपने गुरु द्वारा बनाई गई सुबह की चाय का आनंद लेने के बाद, बिट्टू जी कप वहीं रखकर सो जाते थे। तीन दिनों तक, बिट्टू जी ने अपने गुरु की सेवा का आनंद लिया, लेकिन चौथे दिन गुरुदेव ने बिट्टू जी को अपने कर्तव्यों का पालन न करने के लिए ज़ोरदार फटकार लगाई। फटकार के बाद, बिट्टू जी ने अपना आलस्य त्याग दिया, और फिर उन्होंने न केवल चाय बनाई, बल्कि कप भी धोए!

हमारी आध्यात्मिक यात्रा में तेजी लाने के लिए, गुरुदेव ने अपनी शक्तियां हमें प्रदान की। उन्होंने हमें अपने वर्षों के प्रयास और संकल्प से प्राप्त मंत्र दिए। अक्सर जब हम आलसी हो जाते थे तो वे हमारे आध्यात्मिक विकास में तेजी लाने के लिए स्वयं की मंत्र गणना का एक हिस्सा हमें दे दिया करते थे।

एक दिन उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाया और एक लौंग निगलने को कहा। फिर उन्होंने घोषणा की कि मैं एक विशेष मंत्र में सिद्ध हो चुका हूं। मैं हैरान था क्योंकि मैं उस मंत्र का एक शब्द भी नहीं जानता था। मैं इस बारे में गुरुदेव से कुछ भी नहीं पूछ पाया, क्योंकि अक्सर गुरुदेव की उपस्थिति में मैं कुछ बोल नहीं पाता था। कुछ दिनों बाद जब मैंने गुरुदेव से उस सिद्ध मंत्र के शब्द पूछे, तो उन्होंने मुझे फोन पर वो शब्द बता दिए।

रवि त्रेहन जी याद करते हैं, "गुरुदेव ने मुझे हर रात 11 बजे से 2 बजे तक अपना पाठ करने के लिए कहा। फिर उन्होंने कहा कि वो रोज प्रातः 2 से 5 बजे तक मेरे लिए पाठ करेंगे और उसका लाभ मुझे दे देंगे। उनकी महानता और निःस्वार्थता कल्पना से कहीं परे थी!"

ये उन अनगिनत उदाहरणों में से कुछ उदाहरण हैं कि कैसे उन्होंने हमें अपनी शक्तियां प्रदान कीं ताकि हम तेज़ी से बढ़ सकें और अधिक आध्यात्मिक रूप प्राप्त कर सकें। उन्होंने कई उन्नत मंत्रों को बदला, अपना कुछ विशेष जोड़कर उसे नया स्वरूप दिया और हमें भेंट कर दिया। मेरा मानना है कि ऐसा करने में उनकी मंशा उन मंत्रों को अधिक प्रभावी बनाने की थी।

समय-समय पर, गुरुदेव की उदारता ने हम में से कुछ लोगों को

लापरवाह बना दिया था। गुरुदेव ने बिट्टू जी और पप्पू जी को मंत्रों का जाप करने में अधिक समय बिताने की सलाह दी, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया। एक दिन गुरुदेव ने कहा, "यदि आप स्वयं के कुछ आध्यात्मिक बिंदुओं को अर्जित करने का प्रयास नहीं करते हैं, तो मैं अपनी मंत्र गणना का एक हिस्सा आपको नहीं दे सकता!"

गुरुदेव ने अपनी तपस्या के फल पूरी उदारता से हमें दिए, जिनसे हमारे विकास को गति मिली। हमारे लिए काम करके, उन्होंने सुनिश्चित किया कि हम दूसरों के लिए काम कर सकें। बदले में, हम उनके कपड़ों को इस्त्री करने, उन्हें कार्यालय से लाने और उनके लिए भोजन पकाने जैसे रोज के काम कर देते थे। कृतज्ञता और भक्ति के ये छोटे-छोटे कार्य, हमारे लिए किए गए उनके त्याग और निःस्वार्थ भाव की तुलना में कुछ भी नहीं थे।

अपने मार्गदर्शन और कृपा से गुरुदेव ने मेरे जीवन को सार्थक बनाया और उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण, उन्होंने मेरी भावी मृत्यु को अर्थ दिया। ▪

पॉडकास्ट **अतुलनीय मार्गदर्शक** गुरुदेव के अद्‌भुत मार्गदर्शन को बयां करती है। इस पॉडकास्ट का लुत्फ उठाइए www.gurudevonline.com पर।

महागुरु

एक कर्मयोगी

होना है अगर जीवन और मृत्यु के चक्र से आज़ाद,
तो मिटा दें अपने अंतर्मन में बसी हर छाप,
और कर्मों के निर्मम भार से भी पा लें निजात।

गुरुदेव ने कर्मयोग में प्रवीनता हासिल कर ली थी। वो प्रकृति के लेन-देन को ज्यादातर लोगों से कहीं बेहतर समझते थे। उन्होंने अपने कार्मिक ऋणों को समाप्त करने के लिए निष्ठापूर्वक कार्य किया और काफी समय प्रकृति की सेवा करने में बिताया। गुड़गांव के खांडसा में गुरुदेव का खेत ना सिर्फ एक उपवन बन गया, जहां उन्होंने प्रकृति को संवारा, बल्कि वह हमारी हरी-भरी शाला भी बन गई, जहां हम सूट पहनकर सीखने जाते और जब घर लौटते तो हमारे जूते मिट्टी से लथपथ होते।

गुरुदेव ने फार्म पर मवेशियों के नाम देवताओं के नाम पर रखे हुए थे, जो उनकी अतुलनीय शैली में आत्मिक समानता की याद दिलाती थी। जब भी गुरुदेव गायों और भैंसों को उनका नाम लेकर पुकारते, तो वे उनकी पुकार का जवाब देतीं। वास्तव में, गुरुदेव के आने की आहट उनके फार्म के गेट में प्रवेश करने से कुछ मिनट पहले ही उन्हें महसूस हो जाती थी। उनकी प्रसन्न आवाजें इस बात का संकेत होतीं कि बस अभी गुरुदेव फार्म में पहुंचने ही वाले हैं। हालांकि फार्म के सभी जानवरों का व्यवहार उत्कृष्ट श्रेणी का नहीं था। इनमें गुरुदेव का एक पालतू बंदर बजरंग था। महाराष्ट्र का उपहार, बजरंग फार्म का सबसे शैतान जानवर था। अपने नटखट व्यवहार के कारण उसने सबकी नाक में

खांडसा स्थित अपने फार्म पर काम करते गुरुदेव

दम कर रखा था। परन्तु, गुरुदेव के आगमन पर वह जादुई रूप से संत बजरंग बन जाता था।

एक दोपहर जब गुरुदेव और उनके शिष्य गिरि जी खेत पर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि बजरंग एक कोने में उदास बैठा है। जब गुरुदेव ने प्यार से पूछा, "ओए बजरंग, कैसा है?" बंदर ने अपनी नाराज़गी जाहिर करते हुए अपना चेहरा दूसरी तरफ घुमा लिया। गुरुदेव ने मज़ाकिया लहजे में उससे पूछा कि हुआ क्या है। बजरंग ने अपनी भाषा में जवाब दिया। गुरुदेव ने सब समझते हुए अपना सिर हिलाया और कहा, "तेरा काम हो जाएगा"। गिरि जी अपने सामने हो रही बातचीत को बहुत ध्यान से सुन रहे थे। गुरुदेव के आश्वासन के बाद, बजरंग अपने संत स्वरूप में लौट आया। गिरि जी ये देखकर आश्चर्यचकित रह गए।

अगली दोपहर, जैसे ही गुरुदेव और गिरि जी फार्म पर लौटे, उन्होंने बजरंग को बहुत खुश देखा। गुरुदेव ने बजरंग के पास जाकर कहा, "अब खुश है?" गुरुदेव का सवाल सुनकर बजरंग खुशी से नाच उठा। गिरि जी की उलझन को भांपते हुए, गुरुदेव ने दीवार पर बैठी बंदरिया की ओर इशारा किया। जैसे ही गिरि जी को इस बात का एहसास हुआ कि गुरुदेव ने बजरंग के लिए जोड़ी मिलाने वाले की भूमिका निभाई है, वह हंस पड़े। ऐसा व्यक्ति जो ये दावा करे कि वो किसी का नहीं, उसका अपने बंदर के लिए व्यवहार वैसा ही था जैसा एक पिता का एक पुत्र के प्रति होता है!

गुरुदेव खेतों में बहुत समय बिताते थे। वह अपने ट्रैक्टर से खेत की जुताई करते, सब्जियां तोड़ते और गायों का दूध दुहते। गाय का दूध दुहते समय यदि आस-पास उसका बछड़ा होता, तो वह मां के थन से दूध की धार बछड़े के मुंह में डाल देते। फसल कटाई के मौसम में, वह अनाज से भूसा अलग करने में भी मदद करते।

बिट्टू जी याद करते हैं कि भले ही खेत में काम करना शारीरिक रूप से थका देता था और काम करने की स्थितियां भी अनुकूल नहीं थी, लेकिन गुरुदेव ने कभी कोई शिकायत नहीं की। कभी-कभी, भारी बोझ उठाने से उनके हाथों में छाले पड़ जाते। एक दिन जब बिट्टू जी ने गुरुदेव से खेतों पर मज़दूरों की तरह काम करने का विषय उठाया, तो गुरुदेव ने कहा, "मेरे पास सीमित साधन हैं। लोगों की आर्थिक रूप से मदद करने की मेरी क्षमता सीमित है। इसलिए मैं स्वयं काम करूंगा, भले ही वो काम कठिन क्यों न हो। मैं यहां उगाई गई सब्जियां खाता हूं और यहां रहने वाली गायों का दूध पीता हूं, इसलिए मुझे इनकी देखभाल और सेवा करनी ही होगी।"

वर्ष 1988 में, गिरी जी ने गुड़गांव के मुहम्मदपुर गांव में एक छोटा-सा जमीन का टुकड़ा खरीदा। उस समय, क्षेत्र की अधिकांश भूमि बंजर थी। वास्तव में, इलाके में रहने वाले कई किसान बंजर जमीन और उपज की कमी के कारण वो जगह छोड़ चुके थे। गुरुदेव ने व्यक्तिगत रूप से इस भूखंड को हरा-भरा करने और उसकी देखभाल करने में योगदान दिया। उन्होंने मिट्टी खोदी, जमीन की जुताई की, बीज बोए और पेड़ लगाए। जल्द ही, जमीन खेती योग्य हो गई, जिससे अन्य किसान भी अपनी भूमि पर फिर से खेती करने के लिए प्रेरित होने लगे। आखिरकार, गुरुदेव की पहल से छोटा-सा गांव हरा-भरा हो गया।

अपने कार्यों के माध्यम से गुरुदेव ने हमें एक ज्यादा विकसित और कर्मों के बोझ से मुक्त अस्तित्व का मार्ग दिखाया। उनके मार्गदर्शन में हम अपने व्यवहार और अपने कर्मों के प्रति सचेत हो गए, जिससे हमारा कर्मों का लेखा-जोखा प्रभावित हुआ। आखिरकार हमने कर्ता भाव त्यागना, और मोह-माया से दूर रहकर आत्म-अवलोकन का जीवन जीना सीखा। ▪

महागुरु

एक परिवर्तनकारी

पूर्णता की हद तक, वे हमें तराशते रहे,
हमें गढ़ते रहे और चमकाते रहे ,
जब तक हमने नए जीवन में नहीं रखा कदम,
तब तक हाथ पकड़कर उस पथ पर चलाते रहे।

गुरुदेव ने न केवल स्वयं के दृष्टिकोण और गुणों के सुधार पर ध्यान केंद्रित किया, बल्कि अपने शिष्यों के बदलाव पर भी काम किया।

एक शिष्य अशोक भल्ला जी अपने परिवर्तन की कहानी कुछ इस तरह सुनाते हैं। गर्म मिजाज़ होने के कारण वो अक्सर अपने कर्मचारियों से बुरा बर्ताव करते थे। गुरुदेव की सलाह के बावजूद, वह अपने गुस्से पर काबू नहीं कर पा रहे थे। जब भी गुरुदेव उनसे पूछते थे, "बेटा, गुस्सा कम हुआ?" वह शर्मिंदगी के कारण कोई जवाब नहीं दे पाते थे। अपने गुरु की सलाह पर अमल न कर पाने के कारण खुद से नाराज़ अशोक जी ने अपने गुस्से को नियंत्रित करने का संकल्प लिया। तीन महीने तक वो न तो किसी से लड़े ना ही उन्होंने अपना आपा खोया। उनके मन में बस यही उम्मीद होती थी कि गुरुदेव उनसे इस बारे में पूछेंगे, लेकिन गुरुदेव ने ऐसा नहीं किया।

तीन महीने तक गुस्से पर संयम के बाद, अशोक जी का संकल्प टूट गया जब उनके कारखाने के एक कर्मचारी को नकदी चोरी करते पकड़ा गया। अपने अपराध को स्वीकार करने और चुराए हुए रुपए वापस

कर देने के बार-बार अनुरोध के बावजूद, कर्मचारी ने गलती मानने से इनकार कर दिया। अशोक जी को बहुत गुस्सा आ गया। जब उन्होंने एक वस्तु उठाकर कर्मचारी पर फेंकने का प्रयास किया, तो उन्हें लगा कि एक अदृश्य शक्ति उन्हें यह हरकत करने से रोक रही है।

जब कुछ दिनों बाद अशोक जी गुड़गांव आए, तो गुरुदेव ने उनसे पूछा, "बेटा, गुस्सा कम हुआ?" वह गलती कबूल करने के इरादे से गुरुदेव के पास गए, लेकिन महागुरु ने अपने होंठों पर उंगली रखकर इशारे से अशोक जी को चुप रहने को कहा। कमरे में मौजूद लोगों के चले जाने के बाद, गुरुदेव ने कहा, "भले ही आपको इस बात का विश्वास हो कि किसी ने आपके बक्से से पैसे निकाले हैं, परंतु यदि वह स्वयं को निर्दोष बता रहा हो तो आपको उसका विश्वास करना चाहिए।" सर्वव्यापी महागुरु को पहले से ही पता था कि उनके शिष्य ने क्या किया है! अपनी गलतियों को महसूस करते हुए, अशोक जी ने बेहतरी के लिए अपना दृष्टिकोण बदल लिया। अब वह आलोचना से परेशान नहीं होते और न ही दूसरों की अशिष्टता से उनका मिज़ाज प्रभावित होता है।

जहां गुरुदेव ने अशोक जी को भावनाओं पर नियंत्रण रखना सिखाने के लिए अपने सौम्य स्पर्श का प्रयोग किया, वहीं गिरी जी के लिए यह इतना आसान नहीं था। गिरि जी मुंबई के बाहरी इलाके में एक कारखाना चलाते थे। उन्होंने अपने एक कर्मचारी को थप्पड़ मार दिया था, जिसने कार्यालय के कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार किया था। उस शाम जब गिरी जी घर पहुंचे, तो उनकी बहन ने घर का दरवाजा खोलते हुए कहा, "गुरुदेव फोन पर हैं और वह आपसे बात करना चाहते हैं।" गुरुदेव ने उनके हिंसक व्यवहार के लिए उन्हें डांटा और चेतावनी दी कि वह उस हाथ को तोड़ देंगे जिससे उन्होंने कर्मचारी को थप्पड़ मारा था। गिरि जी को पता था कि ऐसा होकर रहेगा।

अनहोनी के डर से, गिरि जी तीन दिनों तक अपने घर से बाहर नहीं निकले। चौथी सुबह, उनके पिता ने उनसे कहा कि वो काम से भागना छोड़कर अपने पेशेवर कर्तव्यों का पालन करे। गिरि जी काफी सतर्क थे। उन्होंने गुरुदेव की चेतावनी के संभावित प्रभाव से बचने के लिए अपने पिता और चाचा के साथ कार में पीछे, बीच वाली सीट पर बैठने पर ज़ोर दिया। सुरक्षित रूप से फैक्टरी पहुंचने पर, उन्होंने राहत की सांस ली। शाम को गिरि जी के पिता ने उन्हें किसी काम के लिए बगल के कारखाने में जाने के लिए कहा। यह दूरी महज़ 3 मिनट की थी। गिरि जी ने स्कूटर से जाने का फैसला किया, जिसे उन्होंने बहुत धीमी गति से चलाया। जैसे ही वह पार्किंग में पहुंचे, तभी अचानक एक मोटर साइकिल ने उन्हें टक्कर मार दी। फलस्वरूप वही हाथ टूट गया जिससे उन्होंने कर्मचारी को थप्पड़ मारा था। ये घटना गिरी जी के लिए बहुत बड़ा सबक साबित हुआ। उन्होंने अपनी हड्डी जरूर तुड़वाई लेकिन उन्हें ये माया भी समझ आ गई!

गुड़गांव में मेरी आध्यात्मिक यात्रा के शुरुआती दिनों में, मोहन सिंह चीरा नाम के एक शख्स मुझे धमकाते रहते थे। मैं प्रोटोकॉल नहीं जानता था और ना ही तमाशा बनाना चाहता था, इसलिए मैं खामोश रहता था और उन्हें वो सब करने देता था। भले ही चीरा के इरादे सही थे, लेकिन उनके अक्खड़ तरीके ने मेरे आत्मविश्वास को खत्म कर दिया था। एक दिन, जब चीरा मुझे आदेश दे रहे थे, गुरुदेव ने मुझे अपने कमरे में बुलाया। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा कि मुझे किसी को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए। मुझे निर्देश दिया गया कि मुझे किसी भी आदमी या आध्यात्मिक शक्ति के आगे कभी भी झुकना नहीं चाहिए। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं एक ऐसे मुकाम पर पहुंच गया हूं, जहां मुझे खुद का उतना ही सम्मान करना चाहिए जितना कि मैं दूसरों का सम्मान करता हूं। गुरुदेव के शब्दों ने मुझमें दोबारा आत्मविश्वास जगा दिया और एक

भीगी बिल्ली ने शेर का रूप ले लिया! जब मैं उस कमरे में गया जहां चीरा बैठे थे, तो वह अपने धमकाने के पुराने तरीकों पर लौट आए। लेकिन इस बार उनकी उम्मीद के विपरीत मैंने उनकी आक्रामकता का जवाब आक्रामकता से दिया। तब से वह मुझसे खौफ खाते हैं!

गुरुदेव सर्वव्यापी थे और हमारे व्यक्तित्व के हर पहलू से परिचित थे। वे हमारे अंदर के बदलाव की हर जरूरत को जानते थे। हमारी कुछ आदतों और नज़रियों को झाड़-बुहारकर, उन्होंने हमारे उद्भव की नींव रखी क्योंकि वे स्वयं विकसित थे और इस नाते से उन्हें पता था कि हम भी अंततः विकसित हो जाएंगे। ∎

'पारस' में महागुरु की परिवर्तनकारी योग्यता का वर्णन किया गया है।
इस पॉडकास्ट को सुनिए
www.gurudevonline.com पर।

महागुरु

एक आध्यात्मिक महाशक्ति

था बादलों पर उनका वश,
बारिश को दे सकते थे फरमान,
बस छूकर ही कर लेते थे हर दर्द की पहचान,
अनजान आसमानों में भराते थे हमें उड़ान,
थे शक्तिशाली बहुत, मगर करुणा थी उनकी महान।

कहते हैं, "विश्वास आपको अदृश्य को देखने की ताकत देता है। यह आपको अविश्वसनीय का एहसास कराता है, और वह हासिल कराता है जो नामुमकिन है।" गुरुदेव ने अपनी शक्तियों के प्रदर्शन और इस्तेमाल के ज़रिए से एक ऐसी दुनिया बनाई, जिसमें विश्वास और चमत्कारों का एक सुरुचिपूर्ण संगम था। वे मृत्यु का समय स्थगित कर सकते थे, लोगों के असाध्य रोगों को ठीक कर सकते थे, और अपने शिष्यों और भक्तों को अविश्वसनीय अनुभव कराने और असंभव को प्राप्त करने में मदद करते थे।

एक शिष्य, संतलाल जी ने एक रहस्यमय घटना के बारे में बताया जो हिमाचल प्रदेश में कुल्लू के निकट मणिकरण के एक सुदूर पहाड़ी क्षेत्र में हुई थी। संतलाल जी और गुरुदेव एक पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, जो आगे जाकर संकरी होकर एक गलियारे में खत्म हो गई। यह गलियारा पहाड़ों और झरने के बीच स्थित था। गलियारे के अंतिम छोर पर एक

बड़ी-सी पहाड़ी चट्टान थी। संतलाल जी ने गुरुदेव को पत्थर पर ध्यान लगाते हुआ देखा और वे उस समय आश्चर्यचकित रह गए जब चट्टान का कुछ हिस्सा खिसका और एक गुफा का प्रवेश द्वार प्रकट हुआ। एक बुजुर्ग संत, जिनकी झुर्रीदार चमड़ी और काफी बड़ी हुई भौंहें थीं, गुरुदेव के स्वागत के लिए वहां खड़े थे। उनके अंदर जाने के बाद, वह गुरुदेव के साथ मंत्रणा में व्यस्त हो गए, जबकि संतलाल जी चुपचाप थोड़ी दूर खड़े रहे।

पांच मिनट बाद गुरुदेव और बुजुर्ग संत गुफा के मुहाने पर वापस आए। गुरुदेव ने मन ही मन मंत्र का जाप किया और फिर वह दरवाज़ा खुल गया। गुरुदेव और संतलाल जी वापस मणिकरण की ओर चल पड़े। महागुरु ने उन्हें बताया कि संत लगभग पिछली पांच सदियों से उनके शिष्य थे। क्योंकि इस शिष्य को हठ योग में विशेषज्ञता हासिल थी, वह लगभग 500 सालों से उसी शरीर में थे। चूंकि वह गुफा से बाहर नहीं आ सकते थे इसलिए गुरुदेव हर पांच साल में उनसे वहां मिलने जाते थे!

हठ योग का अभ्यास करने वालों के अनुसार, सिर के एक सूक्ष्म केंद्र में जीवन को ऊर्जा देने वाला अमृत मौजूद होता है। यह अमृत धीरे-धीरे पेट और ग्रहणी में मौजूद जठराग्नि या जैव-ऊर्जा में रिसता रहता है। जब यह समाप्त हो जाता है, तो जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक ईंधन नहीं बचता, जिसके परिणामस्वरूप जीवन का अंत हो जाता है। योगी विभिन्न उपायों से इस जीवन शक्ति को संरक्षित करने का प्रयास करते हैं, जिनमें से एक जलंधर बंध है। इसके अभ्यास से रीढ़ एवं चक्र एक सीध में रहते हैं और नाड़ियों को भी स्वच्छ रखते हैं। माना जाता है कि कई उन्नत योगियों ने इस योग अभ्यास के माध्यम से आठ सिद्धियां भी प्राप्त की हैं।

एक अन्य आश्चर्यजनक घटना मुंबई में गुरुदेव के पूर्व वरिष्ठतम शिष्य कुलबीर सेठी जी द्वारा चलाए जा रहे स्थान पर हुई थी। कैप्टन शर्मा

स्थान पर एक सेवादार थे। एक गुरुवार को सेवा के दौरान, एक लौ खिड़की से अंदर आई और कैप्टन शर्मा के बाएं हाथ में विलीन हो गई। वो एक अद्‌भुत दृश्य था!

अपने शुरुआती वर्षों में, एक उत्साही अध्यात्मवादी के रूप में, मैं आध्यात्मिक ज्ञान एकत्रित करने के लिए किताबी कीड़ा बन गया था। समय के साथ, मैं प्रामाणिक तथ्यों का कोष बन गया। यहां तक कि मैं एक डायरी भी अपने पास रखता था, जिसमें मैं अपने गुरु भाइयों द्वारा रोगियों को दी जाने वाली आयुर्वेदिक दवाओं के बारे में लिखता था। एक दिन जब एक रोगी ने दर्द की शिकायत की तो मैं डायरी लाने के लिए अपनी कार की तरफ भागा ताकि मैं उसे एक उपयुक्त आयुर्वेदिक नुस्खा दे सकूं जो उसे ठीक कर दे। जब गुरुदेव को पता चला, तो उन्होंने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कहा, "तू डॉक्टर क्यों बन रहा है? मैंने तुझे गुरु बनाया है। तू कागज़ भी माथे से लगाकर उसको दे देगा, तो वो ठीक हो जाएगा।" गुरुदेव के शब्दों ने मुझे महसूस कराया कि यह गुरु के इरादे की शक्ति है जो उपचार करती है, बाकी सब तो संयोग है!

गुरुदेव की तीव्र इच्छा शक्ति ने अभूतपूर्व चमत्कार और असाधारण अनुभव कराए। इनमें से कुछ को समझना मुश्किल है, और समझाना तो और भी मुश्किल। फिर भी वे महागुरु की विस्तृत शक्तियों के प्रभावशाली साक्षी हैं।

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया था, गुरुदेव में प्रकृति के तत्वों को नियंत्रित करने की क्षमता थी। इसे मेरे अलावा कई शिष्यों ने देखा है। एक बार परवानू में सेवा वाले दिन वर्षा के देवता इन्द्र कुछ ज्यादा ही मेहरबान थे। तेज बारिश के कारण सेवा बाधित हो रही थी। गुरुदेव ने आकाश की ओर देखा और एक या दो सेकंड में बारिश की तीव्रता कम हो गई और फिर पूरी तरह से रुक गई। इसके बाद, सेवा लगातार जारी

रही। यह माना जाता है कि उस दिन के बाद से, सेवा के लिए तय किए गए दिन पर स्थान और आसपास के क्षेत्र में बारिश नहीं हुई है।

एक बार गुरुदेव ने मुझे मध्य प्रदेश के मुंगावली में अपने शिविर में आमंत्रित किया। एक सुबह मैं गुरुदेव के साथ उनके टेंट में बैठा था, और हल्की फुहारें पड़ने लगीं। गुरुदेव उद्देश्यपूर्ण ढंग से बाहर निकले और आसमान की ओर देखा। जब वह अपनी जगह वापस आए, तो बारिश तेज़ हो गई। मैंने उनके चेहरे पर एक उत्तेजना देखी। उस समय भले ही वह मुझसे बात कर रहे थे, पर मुझे पता था कि उनका दिमाग कहीं और था। कुछ मिनटों के बाद, वह अपनी जगह से उठे, उन्होंने तम्बू के पाल खोल दिए और आकाश की तरफ देखते हुए कुछ कठोर शब्द कहे। तुरंत बारिश कम हो गई और काले बादल छंटने लगे!

प्रकृति पर नियंत्रण का अभ्यास करने के अलावा, गुरुदेव एक दक्ष सूक्ष्म यात्री थे। वह अपनी इच्छा से शरीर से बाहर यात्राएं कर सकते थे और उनके कुछ शिष्य उनकी सूक्ष्म शारीरिक यात्राओं के साक्षी और साथी थे। हालांकि, हर शिष्य के लिए गुरुदेव के सूक्ष्म यात्री होने का अनुभव सहज नहीं था।

वर्ष 1970 के दशक में, सीता राम ताखी जी गुरुदेव के साथ हरिद्वार, उत्तराखंड गए थे। एक रात, गुरुदेव ने उनसे अपने पैर दबाने के लिए कहा। उन्होंने सीता राम ताखी जी को निर्देश दिया कि जब वे अपने शरीर से बाहर निकलेंगे, तो सीता राम जी उनको पकड़कर रखे और उनके साथ ग्रहों की सूक्ष्म शारीरिक यात्रा पर चलें।

कुछ मिनटों के बाद, गुरुदेव ने अपने आप को एक चादर से ढक लिया और अपना पाठ शुरू किया। आगे जो घटना घटी उसने सीता राम ताखी

जी में भगवान का डर पैदा कर दिया। उन्होंने देखा कि गुरुदेव चादर में लिपटे हुए कुर्सी पर बैठे थे और उनका एक रूप उनके शरीर से निकलकर कमरे से बाहर चला गया। सीता राम ताखी जी ने जो कुछ देखा, उससे वह इतना डर गए कि उनकी पैंट गीली हो गई! लंबे समय तक डर से सुन्न रहने के बाद, उन्होंने देखा कि गुरुदेव का सूक्ष्म-शरीर कमरे में वापस आया और कुर्सी पर बैठे शरीर में समा गया!

कुछ वर्षों बाद, सीता राम ताखी जी को हरिआना में गुरुदेव के घर पर एक और सूक्ष्म शारीरिक यात्रा का दिलचस्प अनुभव हुआ। एक रात गुरुदेव और उनके कुछ शिष्य, जिनमें सीता राम जी भी शामिल थे, ने सरसों का साग और मक्की की रोटी का भोजन किया। अचानक एक झटके में गुरुदेव का सिर पीछे की ओर लटक गया। न तो उनकी नाड़ी महसूस हो रही थी और न ही सांस चल रही थी। शिष्यों को लगा कि उनके गुरु का निधन हो गया है। कमरे में दहशत फैल गई। उन्होंने गुरुदेव के बेजान शरीर को पुनर्जीवित करने की आस में, उस पर मालिश करने में देसी घी का एक जार खाली कर दिया, लेकिन महागुरु के शरीर में जीवन का कोई संकेत नहीं दिखा।

जैसे ही शिष्य गुरुदेव के परिवार को सूचित करने के लिए कमरे से बाहर जाने लगे, सीता राम जी को याद आया कि गुरुदेव ने एक बार उन्हें बताया था कि वे ब्रह्म मुहूर्त में बुड्ढे बाबा के साथ सूक्ष्म बैठकों के लिए जाते हैं, लेकिन हमेशा सुबह के 3.30 बजे तक लौट आते हैं। अतः उन्होंने अपने गुरु भाइयों से तब तक प्रतीक्षा करने का अनुरोध किया। सुबह 3.30 बजे के कुछ मिनटों बाद गुरुदेव अपने शरीर में वापस लौट आए और सभी शिष्यों ने राहत की सांस ली। गुरुदेव उठे, अपनी चप्पल पहनी और बाथरूम चले गए, जैसे कुछ हुआ ही न हो। एक मिनट बाद जब वह लौटे, तो उन्होंने पूछा कि, "तुम लोगों ने मेरे साथ क्या किया

है? मेरे शरीर में बहुत चिकनाई है, और मैं सभी जगह फिसल रहा हूं!"

एक शिष्य ने झेंपते हुए उन्हें पूरी घटना बताई। उसे सुनते ही, महागुरु ज़ोरदार ठहाका लगाकर हंस पड़े, और उनके मुंह से उनके कुछ पसंदीदा पंजाबी शब्दों की झड़ी लग गई, जिनमें कुछ खट्टे-मीठे और कुछ अनोखे शब्द शामिल थे! ▪

जो बात हमारे लिए असंभव, दुर्गम, अथाह
और पहुंच से बाहर होती थी, वो उनके
लिए बस एक चुटकी का काम था।
सुनिए '**असंभव भी संभव है!**'
www.gurudevonline.com पर।

महागुरु

आध्यात्मिक पथ प्रदर्शक

आध्यात्मिक रहबर थे वो,
खुद को रख चकाचौंध से दूर,
बनाते रहे दूसरों के लिए नित नए मुकाम।
जिस राह चले थे वो,
उस पर चल लाखों ने पाएं अपने आयाम।

ग्रामीण भारत में पले-बढ़े होने के बावजूद, गुरुदेव ने समकालीन जीवन जिया। उन्होंने जीवन का एक ऐसा तरीका अपनाया, जो प्रगतिशील और आध्यात्मिकता का एक अनोखा संगम था।

सम्मान

गुरुदेव दहेज प्रथा के सख्त विरोधी थे। वह शानो-शौकत वाली शादियों पर किए जाने वाले खर्च के खिलाफ थे क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि दुल्हन के परिवार पर किसी भी तरह का बोझ डाला जाए। वह अक्सर अपने कुछ शिष्यों और भक्तों के लिए स्थान में साधारण विवाह समारोह आयोजित करते थे, जहां लंगर का खाना शाही भोज में तब्दील हो जाता था। उन्होंने एक बार बिट्टू जी से कहा था, "पुत्त, हमें समाज में एक मिसाल कायम करनी होगी, ताकि कोई लड़कियों को बोझ न समझे।" वे कन्यादान की रस्म को बहुत ही उच्च सेवा मानते थे।

कन्यादान को दुल्हन के माता-पिता के पक्ष में दूल्हे द्वारा लिया गया एक बड़ा ऋण माना जाता है, क्योंकि उन्होंने बेटी को जन्म देकर उसकी परवरिश और पालन-पोषण किया होता है।

एक भाई के रूप में, गुरुदेव ने अपनी बहनों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने उनसे कहा कि जब वह गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने की इच्छा व्यक्त करेंगी तभी वे उनका विवाह कराएंगे। उनकी बेटी, रेणु जी अपने पिता के शब्दों को याद करते हुए कहती हैं, "यदि भावी वर अपनी भावी वधू का चुनाव यह सोचकर करता है कि क्या वह एक अच्छी पत्नी बनेगी, तो विवाह नहीं होगा।" पहले तो रेणु जी को गुरुदेव की बात का मतलब समझ नहीं आया, लेकिन आत्मनिरीक्षण करने पर उन्हें एहसास हुआ कि उनके पिता शादी पर उनके विचारों से सहमत थे। विवाह सिर्फ इस बारे में नहीं है कि कोई कैसा दिखता है और कितना योग्य है। यह बहुत गहरा रिश्ता है, क्योंकि यह शिव और शक्ति के मिलन को दर्शाता है।

गुरुदेव की दुनिया में हर महिला शक्ति का रूप थी और सम्माननीय थी। वास्तव में, एक निश्चित अवधि के दौरान, उन्होंने अपने शिष्यों को मानसिक रूप से अपनी पत्नियों का चरण स्पर्श करने और उन्हें उच्च स्थान देने का निर्देश दिया था।

विनम्रता

गुरुदेव ने अपनी आध्यात्मिक महानता को अपने गले में पदक की तरह पहनने से इनकार कर दिया। उन्होंने अपनी अलग अहमियत बनाने की बजाय घुलना-मिलना पसंद किया।

राजी जी याद करते हैं कि कथोग में अपने शिष्यों को सेवाकार्य देने के बाद, गुरुदेव पेड़ की छाया तले खड़े होकर वहां चल रहीं गतिविधियों की देखरेख करते रहते। एक दिन, जब महिलाओं के एक समूह ने उनसे पूछा कि "गुरुजी कहां हैं?", तो उन्होंने सेवा कर रहे एक शिष्य की ओर इशारा करते हुए कहा, "वह वहां हैं।"

गुरुदेव ने प्रसिद्धि से दूर रहते हुए शांतिपूर्वक सेवा का कार्य किया। एक गुरु पूर्णिमा पर, कुछ शिष्यों ने गुड़गांव के पास एक चौराहे पर उनकी तस्वीर वाला एक बैनर लगाया। जब गुरुदेव को इस बारे में पता चला, तो वे उस जगह गए जहां यह बैनर लगा हुआ था और कुछ बुदबुदाए। फिर उन्होंने अपने शिष्यों को डांटा और उन्हें चेतावनी दी कि वे इस तरह के प्रचार में न उलझें।

जब लोग उनकी अनुमति के बिना उनकी तस्वीर लेते, तो धुलने के बाद रील खाली निकलती। कई बार, गुरुदेव की तस्वीर खींचते समय कैमरा खराब हो जाता और गुरुदेव के फ्रेम से बाहर होते ही काम करना शुरू कर देता। जब पत्रकार गुड़गांव के स्थान पर उनका साक्षात्कार लेने आते, तो वे अपने शिष्यों से सम्मानपूर्वक उन्हें जाने का अनुरोध करने के लिए कहते। उन्होंने गुमनामी का जीवन पसंद किया।

एक वरिष्ठ शिष्य, एफसी शर्मा जी बताते हैं कि डॉ. शंकरनारायण जी ने एक बार कार्य से संबंधित एक महत्वपूर्ण काम में गुरुदेव को उनका साथ देने का अनुरोध किया। भले ही गुरुदेव उनके अनुरोध से सहमत थे लेकिन उनकी व्यस्तता के कारण योजना हर बार धरी रह जाती।

एक सुबह, शंकरनारायण जी गुड़गांव पहुंचे और गुरुदेव से पुनः आग्रह किया। गुरुदेव ने उनसे एक कैमरा लाने और उनकी तस्वीर खींचने

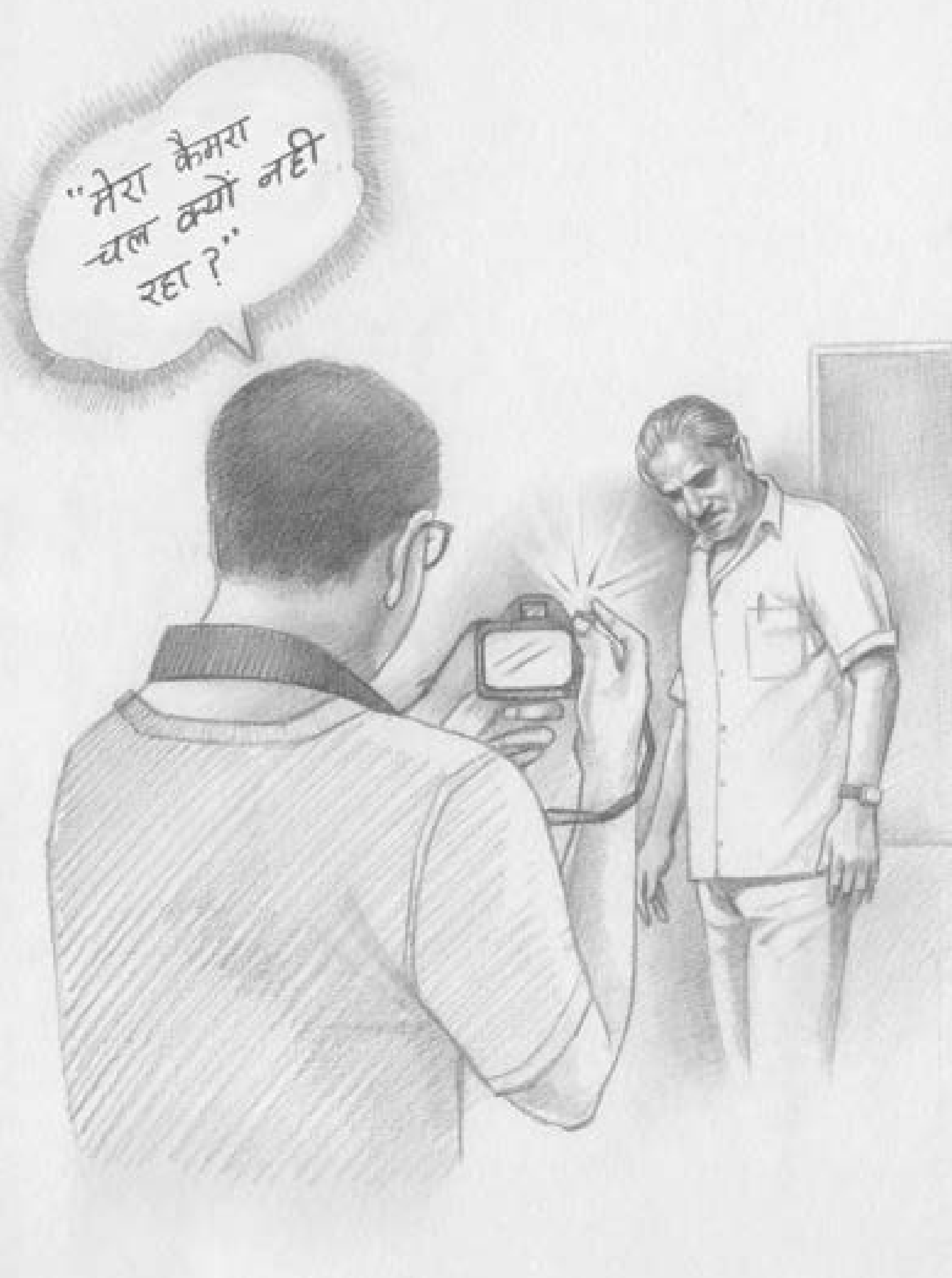
"मेरा कैमरा चल क्यों नहीं रहा ?"

जब गुरुदेव की अनुमति के बिना एक
फोटोग्राफर ने उनकी तस्वीर खींचने की
कोशिश की तो कैमरा खराब हो गया

के लिए कहा। उन्होंने शंकरनारायण जी को निर्देश दिया कि जब वे महत्वपूर्ण कार्य के लिए जाएं तो उनकी फोटो अपनी कमीज़ की जेब में रख लें। महागुरु बनने के बाद यह पहला अवसर था जब गुरुदेव ने अपनी तस्वीर खींचने की अनुमति दी।

एक तस्वीर, व्यक्ति का 2-डी स्वरूप है जिसका उपयोग आध्यात्मिक संपर्क स्थापित करने के लिए किया जाता है। शंकरनारायण जी को अपनी तस्वीर ले जाने का निर्देश देकर, गुरुदेव इस संपर्क को बढ़ा रहे थे। मैंने देखा है कि जब गुरुदेव आध्यात्मिक रूप से मुश्किल मामलों में भाग लेने जाते तो अपने सफारी सूट की जेब में अपनी तस्वीर रख लेते। वे ऐसा इसलिए करते थे, ताकि वे अपनी शक्ति का विस्तार अपने गुरु रूप से जुड़कर करें, जो उनके छायाचित्र में समाया था।

एक शिष्य, सुरेश प्रभु याद करते हुए कहते हैं, "गुरुदेव ने कभी खुद की ओर ध्यान आकर्षित करने की जरूरत नहीं समझी। उन्होंने कभी भी तथाकथित गॉड-मैन कहे जाने वाले लोगों की तरह व्यवहार नहीं किया। वह बहुत ही साधारण, बेफिक्र और अप्रत्यक्ष थे।"

गुरुदेव का मानना था कि आध्यात्मिकता आत्म-प्रचार के लिए नहीं है, बल्कि आत्म-विघटन (स्वयं के विस्तार) के बारे में है, यह 'मैं ' से निकलकर 'अनेकों ' से जुड़ने के बारे में है। वे एक से अनेक, अनेक से एक के विचार में विश्वास रखते थे।

दया

एक दोपहर, गुरुदेव ने बिट्टू जी को फार्म में काम करने वाले लोगों के लिए एक वैन में लंगर का खाना रखने और दोपहर के भोजन के बाद

खांडसा फार्म जाने के लिए तैयार रहने को कहा। जब बिट्टू जी गुरुदेव के कमरे में यह बताने के लिए गए कि वे फार्म पर चलने के लिए तैयार हैं, तो उन्होंने पाया कि गुरुदेव गहरी ध्यानावस्था में बिस्तर पर बैठे हैं। यह देखकर, उन्होंने दरवाज़ा बंद कर दिया और पास वाले कमरे में बैठकर धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने लगे। आधे घंटे के बाद, गुरुदेव ने बिट्टू जी से कहा, "चलो, अब चलते हैं।"

किसी अनजानी वजह से गुरुदेव जो हमेशा आगे की सीट पर बैठते थे, वैन की पिछली सीट पर बैठ गए। कुछ दूर चलने के बाद, गुरुदेव ने बिट्टू जी से चिलचिलाती धूप में सड़क के किनारे से जा रहे बुजुर्ग दंपति को वैन में बैठाने के लिए कहा। बिट्टू जी ने खिड़की का शीशा नीचे किया और उन्हें उनकी मंज़िल तक छोड़ने की पेशकश की। दंपति ने पहले थोड़ा सोचा और फिर बिट्टू जी के बार-बार अनुरोध करने पर वैन में बैठ गए। वे अपने विचारों में इतने खोए हुए थे कि उन्हें अपने बगल में बैठे गुरुदेव की उपस्थिति का भी आभास नहीं हुआ। यात्रा के दौरान, उन्होंने बताया कि वे गुरुदेव से मिलने के लिए गुड़गांव आए थे। हालांकि बड़ी उम्मीदें लेकर जब वह स्थान पर पहुंचे, तो एक सेवादार का व्यवहार बहुत खराब और निराशाजनक था। अपनी कहानी बताते हुए उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े। बिट्टू जी से उनकी हालत देखी ना गई और उन्होंने उनसे कहा, "अपनी बाईं ओर देखिए। गुरुदेव आपके बगल में बैठे हैं"।

वे गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक हो गए, गुरुदेव ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए उठाया और उनको अपनी सीट पर बैठने के लिए कहा। दंपति की आंखों में कृतज्ञता के आंसू छलक पड़े जब गुरुदेव ने कहा, "आपका काम हो गया है"। चूंकि दंपति ने कुछ दिनों से खाना नहीं खाया था, इसलिए गुरुदेव ने बिट्टू जी को निर्देश दिया कि वे वैन को छाया में रोकें

और उन्हें लंगर खिलाएं। उनके भोजन समाप्त कर लेने के बाद, गुरुदेव ने उन्हें कुछ पैसे दिए और कहा कि वे अपने घर के लिए थोड़ा राशन खरीदें।

बिट्टू जी द्वारा दंपति को बस-स्टॉप पर उतारने के बाद, गुरुदेव ने बिट्टू जी से कहा, "पुत्त, दंपति को उनके बेटे ने घर से निकाल दिया है। चूंकि उनके पास खाने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए वे मदद के लिए स्थान पर आए थे। स्थान पर सेवादार के बुरे व्यवहार से दुखी और निराश होकर, उन्होंने खुदकुशी का फैसला कर लिया था। जब हमने उन्हें अपनी वैन में बैठाया, तब वे पटरियों पर खुदकुशी करने के इरादे से रेलवे स्टेशन जा रहे थे।" यह सुनकर बिट्टू जी ने महसूस किया कि जब गुरुदेव अपने कमरे में ध्यानमग्न बैठे थे, तो न केवल वह कुछ कमरों की दूरी पर वृद्ध दंपति के साथ अपने शिष्य की बातचीत सुन रहे थे, बल्कि उनकी प्रार्थना का जवाब देकर, उनके विश्वास को पुरस्कृत कर रहे थे। गुरुदेव ने सदैव प्रार्थना के पीछे के भाव को महत्व दिया और उसे अपनी कृपा से नवाज़ा।

गुरुदेव ने स्वयं के परे सोचने और परोपकार का दायरा बढ़ाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, "प्रार्थनाएं और अनुष्ठान मर्यादाओं से बंधे होते हैं। दूसरी ओर निःस्वार्थ सेवा की कोई सीमा नहीं है। आप जितनी अधिक सेवा करते हैं, उतना ही आप सर्वोच्च चेतना से जुड़ते हैं। यदि आप दूसरों की सहायता करते हैं, तो आप अपने भीतर और अपने बाहर के सर्वोच्च की सेवा करते हैं।"

गुरुदेव सेवा के प्रति इतने समर्पित थे कि वे रात में मुश्किल से 3 से 4 घंटे सोते थे। उनके दिन की शुरुआत जल्दी होती थी ताकि वे ऑफिस जाने से पहले मरीज़ों से मिल सकें। शाम को ऑफिस से आने के बाद भी

वह उनसे मिलते थे, जिन्हें उनकी मदद की जरूरत होती थी। हम में से कुछ उनके साथ ज्यादा समय बिताने के लिए हर मुमकिन कोशिश करते थे। इस दौरान, हम उनसे कई प्रश्न पूछते और अपने आध्यात्मिक भ्रम को दूर करने का अनुरोध करते थे। हमारी सभी समस्याओं का समाधान करने के बाद ही वे रात का खाना खाते थे।

जो कुछ भी पकाया जाता था, गुरुदेव खा लेते थे क्योंकि उन्होंने अपनी इन्द्रियों पर काबू पा लिया था। उन्हें भोजन की बर्बादी पसंद नहीं थी। भले ही उनके लिए ताजा भोजन तैयार किया जाता था, लेकिन वे अक्सर एक दिन पहले का बचा हुआ खाना खाते थे। हर महीने 4-5 बार ऐसा होता था, जब गुरुदेव खाने का एक निवाला तक लेने से इंकार कर देते थे। एक बार जब गुरुदेव ने लगातार दो रातें खाना खाने से मना कर दिया, तो बिट्टू जी ने उनसे शिकायत की कि वे अपनी सेहत की उपेक्षा कर रहे हैं। गुरुदेव ने बिट्टू जी को बैठाया और कहा, "पुत्त, तुम रोज मुझसे पूछते हो कि मैं तुम्हारे द्वारा परोसे गए खाने को खाने से क्यों मना कर देता हूं। भौतिक रूप से मैं गुड़गांव में मौजूद हो सकता हूं, लेकिन अगर दुनिया में कहीं भी मेरे आध्यात्मिक परिवार का कोई भी सदस्य भूखा सोता है, तो मैं उस रात खाना नहीं खाता!"

सादगी

किसी ने सच ही कहा है,"एक महान व्यक्ति कभी भी अपनी महानता का बखान नहीं करता है", और गुरुदेव पर यह कथन पूरी तरह से लागू होता है। आध्यात्मिक रूप से महान होने के बावजूद, गुरुदेव की सरलता और विनम्रता बेमिसाल थी। वह एक असाधारण गुरु होने के बावजूद एक साधारण व्यक्ति की तरह व्यवहार करते थे। आमतौर पर, गुरुदेव की सादगी के कारण लोग उनकी अद्भुत सच्चाई नहीं जान पाते थे।

जब गुरुदेव विवाह योग्य आयु के थे, तो एक सफाईकर्मी ने उनके लिए एक उपयुक्त दुल्हन ढूंढ़ने की पेशकश की। सफाईकर्मी का मानना था कि गुरुदेव इतने मासूम हैं कि अपनी दुल्हन की तलाश खुद नहीं कर सकेंगे! इसी तरह, गुरुदेव के मित्र भी यह सोच नहीं सकते थे कि उनके जैसा साधारण व्यक्ति एक दिन बहुतों के लिए आध्यात्मिक गुरु बन सकता है।

मेरे शिष्यत्व के कुछ साल में, मुझे एहसास हुआ कि उनकी सादगी हालांकि स्वाभाविक थी परन्तु समय के साथ यह अनावश्यक ध्यान हटाने का एक प्रभावी उपकरण बन गई। एक बार जब गुरुदेव और मैं लखनऊ में एक फिल्म थिएटर के पास टैक्सी का इंतजार कर रहे थे, तो एक आदमी गुरुदेव के पास आया और बोला, "भाई साहब कितना बजा है?" मैंने देखा कि वह आदमी स्थान पर आने वाले शिष्यों और भक्तों को पहनाया जाने वाला तांबे का कड़ा पहने हुए है। मैं समझ गया कि इस आदमी ने गुरुदेव को नहीं पहचाना है। जैसे ही मैंने उस व्यक्ति को यह बताना चाहा कि वह इस वक्त किसके साथ खड़ा है, गुरुदेव ने मेरी कलाई को हल्के से छूकर मुझे चुप रहने के लिए कहा। अपनी घड़ी मिलाने के बाद, आदमी ने गुरुदेव को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चला गया।

गुरुदेव अपनी शक्तियों का उपयोग करके, एक आलीशान ज़िंदगी जी सकते थे, लेकिन उन्होंने सादगी और मितव्ययता को प्राथमिकता दी। उन्होंने ऐसी परिस्थितियां चुनीं जिनके साथ गुज़ारा कर पाना हम में से अधिकांश के लिए मुश्किल होता। वर्ष 1980 के दशक के मध्य तक, वे दर्जनों लोगों के साथ एक ही शौचालय का इस्तेमाल करते रहे। 250 वर्ग फुट का घर और जरूरत की एक फिएट कार उनकी सबसे कीमती संपत्ति थीं।

वर्ष 1980 के मध्य में, जब गुरुदेव मुंबई के आधिकारिक दौरे पर आए, तब उनके शिष्यों, भक्तों और अनुयायियों की संख्या तेज़ी से बढ़ चुकी थी। हवाई अड्डे से उन्हें ले जाने के लिए कारों का लंबा काफिला इंतज़ार कर रहा था। हवाई अड्डे से बाहर निकलने पर, गुरुदेव उन लोगों से गर्मजोशी से मिले, जो उनका स्वागत करने के लिए आए थे। लेकिन हवाई अड्डे से अपनी मंज़िल तक जाने के लिए उन्होंने आरामदायक कार की बजाय अपने शिष्य, मुंबई के एक होनहार पुलिस अधिकारी, उद्धव कीर्तिकर की मोटरसाइकिल को चुना। एक और अवसर पर, जब एक अमीर भक्त ने गुरुदेव से उपहार के रूप में एक बीएमडब्ल्यू कार स्वीकार करने पर ज़ोर दिया, तो गुरुदेव ने इसे स्वीकार कर लिया लेकिन कुछ मिनट बाद उसी भक्त को यह कार वापस भेंट कर दी!

समानता

गुरुदेव का व्यवहार सभी के प्रति सम्मानपूर्ण था। उनकी मदद और मार्गदर्शन की अभिलाषा से स्थान पर आने वाले लोगों के प्रति वह विनम्र, धैर्यवान और दयालु थे। वास्तव में, वह इतने दयालु और स्नेही थे कि हर किसी को लगता था कि दूसरों की अपेक्षा वह उसकी अधिक परवाह करते हैं।

स्थान पर आने वाले लोगों की धार्मिक आस्थाओं के प्रति गुरुदेव सदैव सचेत रहते थे। उनकी करुणा और विनम्रता ने उनके संपर्क में आने वाले सभी लोगों पर एक अमिट छाप छोड़ी।

एक बार गुरुदेव ने एक शिष्य से कहा था, "यह मेरा कर्तव्य है कि मैं हर उस व्यक्ति की सेवा करूं जो स्थान पर आता है। मुझे इससे फर्क नहीं पड़ता कि वे मेरे बारे में क्या महसूस करता है अथवा मेरे साथ कैसा व्यवहार करता है।"

पुलिसकर्मी उद्धव कीर्तिकर के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर मुंबई एयरपोर्ट से बाहर जाते गुरुदेव

वास्तव में, यदि कभी कोई गुरुदेव के प्रति असभ्य या कठोर व्यवहार करता, तो भी वह अपना शांत भाव कभी नहीं त्यागते थे। निक्कू जी कहते हैं, "गुरुदेव अत्यन्त क्षमाशील थे। मैंने कभी नहीं देखा कि उन्होंने कभी क्षमादान न किया हो। यदि नकारात्मक भावनाओं वाला व्यक्ति उनसे मिलने आता, तो वह कभी भेदभाव नहीं करते। वह उसी प्यार और करुणा से उस व्यक्ति की समस्याओं का भी समाधान करते। मुझे लगता है कि यह सबसे मुश्किल काम है। यदि कोई हमें गाली देता है, तो हम उसी पल उस व्यक्ति से लड़ने को तैयार हो जाते हैं। लेकिन गुरुदेव ऐसे नहीं थे। उनके लिए हर व्यक्ति समान था।"

ये उनके अनुयायियों और भक्तों के लिए एक बड़ा उदाहरण होना चाहिए। इसे सिर्फ एक ख्याल समझकर भूल जाने की बजाय अपने ज़ेहन में बसा लेने की जरूरत है।

वैराग्य और रोल प्ले

गुरुदेव न केवल आत्मिक समानता में विश्वास रखते थे, बल्कि उन्होंने अपना सेवा कार्य भी वैराग्य भाव से किया। उनकी कुछ पसंदीदा लाइनें थीं,

"

मैं सबका हूं और सब मेरे हैं,
लेकिन मैं किसी का नहीं और मेरा कोई नहीं।

गुरुदेव ने अपनी भूमिकाएं पूर्णता के साथ निभाईं। उन्होंने हमें विश्वास दिलाया कि वह हमें दूसरों से ज्यादा प्यार करते थे पर सच्चाई यह है कि वह भावहीन होकर सभी से समान रूप से प्यार करते थे। उन्हें देखकर मैंने सीखा कि हमें अपने रिश्तों को कर्तव्यों के आधार पर निभाना

चाहिए, और यह बहुत बड़ी सीख थी! मोह माया से दूर रहने के अभ्यास के परिणामस्वरूप सेवाकार्य एक आदत बन गई। इसका मतलब है कि सेवा कार्य करते हुए हम भावनाओं से परे जा चुके थे। इसके करने में न कोई दर्द था और न ही कोई खुशी। यह तो एक कर्तव्य था जिसे बिना भावना के और अत्यंत विनम्रता के साथ निभाना था।

एक अनूठे गुरु होने के नाते, गुरुदेव ने हमें स्थान पर मदद की उम्मीद में आए लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने की सलाह दी। उनके अनुसार, इन असंख्य स्त्रियों और पुरुषों ने हमें सेवा करने का अवसर प्रदान किया, जिससे हमें अपने आध्यात्मिक विकास में मदद मिली।

एक महागुरु के रूप में उन्होंने हमारी गलतियों एवं हमारे अतीत की त्रुटियों को भी स्वीकारा। कभी-कभी उन्होंने मुखर होकर अपनी नाराज़गी व्यक्त की और कभी-कभी शांतिपूर्वक हमारे व्यवहार को ठीक किया। वह हर रात क्षमादान करते थे और स्वीकृति हर दिन आती थी। हालांकि, इस नियम के अपवाद भी थे। कभी-कभी हमें सीधा करने के लिए वे हमारे कान भी खींचते थे पर ऐसा बहुत कम होता था। वे उन लोगों को सज़ा देते थे जिन्हें वे अपना मानते थे। मल्होत्रा जी, राजपाल जी, संतलाल जी, गिरि जी और मुझे इस विशेषाधिकार समुदाय का सदस्य होने का गौरव हासिल है। मुझे यकीन है कि कई और लोग भी होंगे जिन्होंने शायद इस तरह के अपने अनुभव मेरे साथ साझा न किए हों।

गुरुदेव सादे जीवन और उच्च विचार के अग्रणी थे। उन्होंने वही जीवन जीया जिसका वे उपदेश देते थे। उनका दर्शन और कर्म उन लोगों के लिए एक आध्यात्मिक पथप्रदर्शक रहेगा जिन्हें स्वयं की तलाश है। ▪

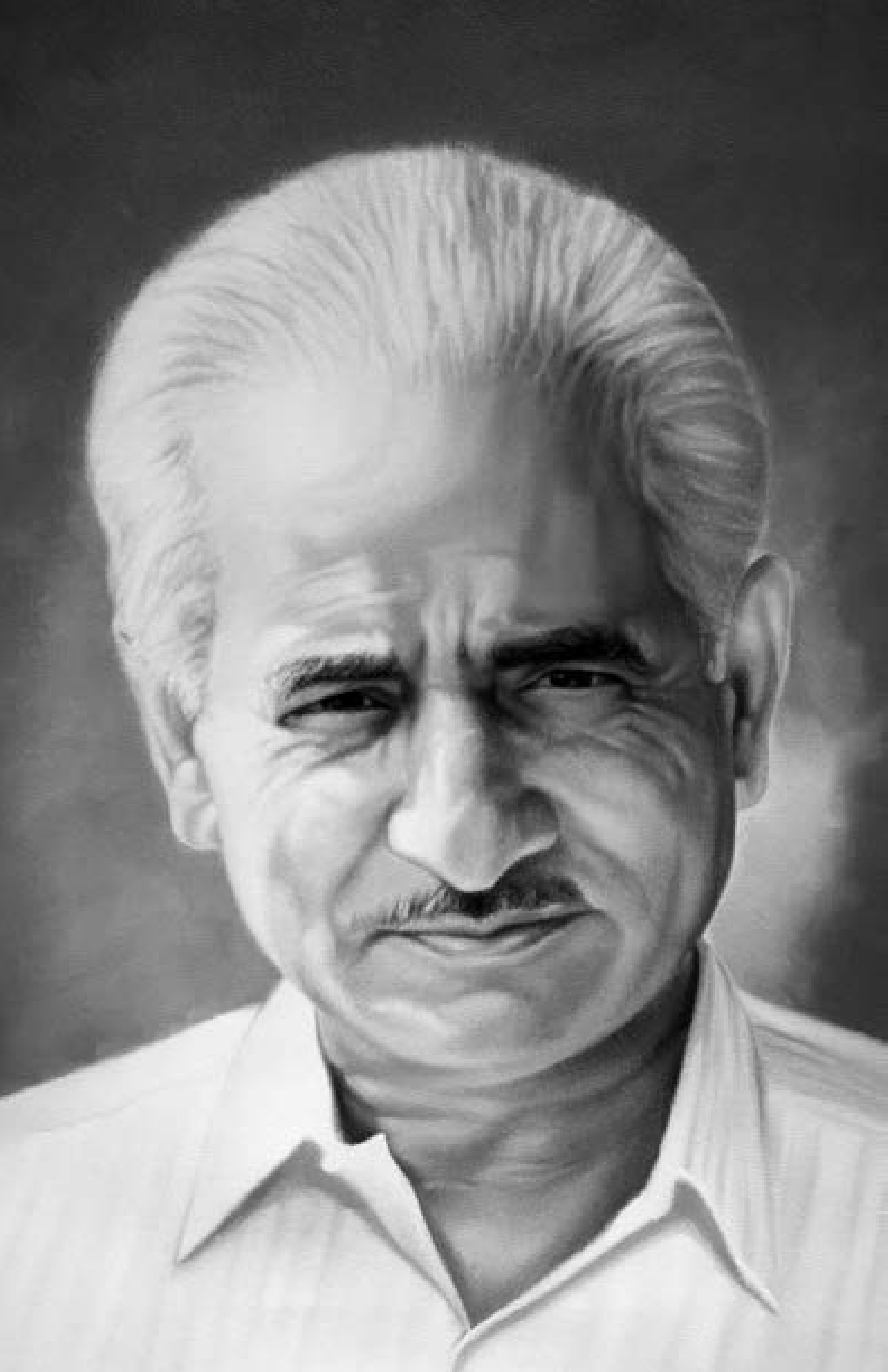

महागुरु की स्वलोक में वापसी

पूरा करके मकसद वो लौटे अपने परम जहान,
जिस लोक से आए थे वो लोक था महान,
फल-फूल रही उनकी आध्यात्मिक विरासत,
उनके नाम के साए में सेवा हो रही सतत।

वर्ष 1991 में, 53 वर्ष की आयु में, गुरुदेव ने अपने भौतिक शरीर को त्यागने का फैसला किया। ब्रह्मलीन होने के लिए उन्होंने 28 जुलाई का दिन चुना। उनके पार्थिव शरीर को नई दिल्ली के नजफगढ़ स्थित नीलकंठ धाम में उनकी समाधि पर विश्राम के लिए रख दिया गया।

गुरुदेव ने स्वयं अपनी देखरेख में अपने अंतिम विश्राम स्थल का निर्माण कराया था और भविष्यवाणी की थी कि जो लोग उनकी समाधि पर आएंगे, उन्हें अपने कष्टों से मुक्ति मिलेगी। उन्होंने सच ही कहा था, नीलकंठ धाम एक आध्यात्मिक रूप से जीवंत स्थान है, जहां लोगों की मदद की जाती है और उन्हें स्वास्थ्य लाभ प्रदान किया जाता है। वास्तव में, कई लोग दावा करते हैं कि उन्होंने गुरुदेव के शरीर त्यागने के दशकों बाद भी यहां उनके दर्शन किए हैं।

गुरुदेव के बारे में भृगु महाराज की वाणी जानने के लिए, अगस्त वर्ष

1991 में, गुरुदेव के तीन भक्त-नरिंदर जी, वरिंदर जी और सरोज जी भृगु संहिता के संरक्षकों से मिलने सहारनपुर गए थे। आश्चर्यजनक रूप से ऋषि भृगु ने हज़ारों साल पहले उनके आगमन की भविष्यवाणी कर दी थी!

भृगु संहिता के अनुसार, "शिव लोक नामक आध्यात्मिक आयाम में, बर्फ से ढकी कैलाश पर्वत की ऊंची-ऊंची चोटियों पर, सैंकड़ों उच्च विकसित प्राणी हैं जो शिव के गण हैं। ये गण गोपनीय कार्यों को पूरा करने के लिए इस दुनिया में आते हैं। पृथ्वी पर अपने विचरण के दौरान, वे अपनी पहचान और उद्देश्य गुप्त रखते हैं। जब पृथ्वी पर उनका काम पूरा हो जाता है, तो वे अपने आध्यात्मिक आवास में लौट जाते हैं।"

गुरुदेव को ऋषि भृगु ने एक दिव्यात्मा के रूप में वर्णित किया है, जो एक आध्यात्मिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर आए थे। उन्होंने एक साधारण व्यक्ति का जीवन जिया, जिसने कभी भी किसी को अपनी असली पहचान या उद्देश्य नहीं बताया। इस जीवन में उन्हें कई श्रद्धेय नाम दिए गए थे, लेकिन कभी कोई उनके शिव स्वरूप को नहीं जान पाया।

भृगु संहिता में आगे वर्णन किया गया है कि "अश्विन कुमार, जो देवताओं के चिकित्सकों के रूप में जाने जाते हैं, ने विशेष उपचार में गुरुदेव की सहायता की। शिव लोक में वापसी के बाद, गुरुदेव ने अपनी विरासत को आगे बढ़ाने के लिए ग्यारह शिष्यों के अलावा पांच गणों को नियुक्त किया। हालांकि वह हर दिन हस्तिनापुर के उत्तर में अपने शिव धाम लौटते हैं ताकि लोगों को आध्यात्मिक रूप में सेवा दे सकें"। रोचक तथ्य यह है कि ऋषि भृगु द्वारा संदर्भित हस्तिनापुर की बड़ी सीमा में आधुनिक नजफगढ़ भी शामिल है।

रहस्यमय व्यक्ति होने के नाते, गुरुदेव ने कभी नहीं बताया कि उनके चुने हुए ग्यारह शिष्य और पांच गण कौन थे। वास्तव में, वह इतने रहस्यमयी थे कि ऋषि भृगु भी उनकी पहचान से अनजान थे!

शरीर त्यागने से पूर्व, गुरुदेव ने लगभग सौ शिष्यों को आध्यात्मिक शक्ति देकर अपना पूर्व निर्धारित लक्ष्य पूरा कर लिया। वे हमारे व्यक्तित्व, विशेषताओं और आकांक्षाओं को बदलकर, हमें सांसारिक से आध्यात्मिक यात्रा पर ले गए। उन्होंने अपने आचरण और दर्शन से अनगिनत लोगों को आध्यात्मिक विकास का मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित किया।

गुरुदेव की सेवा अब भी उन स्थानों में जारी है, जो उन्होंने और उनके शिष्यों ने दुनिया भर के शहरों में स्थापित किए हैं। वर्तमान समय में, लगभग 30-40 स्थान हैं, जो उसी तरह कार्य करते हैं जैसे गुरुदेव के शारीरिक अवतरण में रहते हुए किया करते थे। उनके द्वारा प्रशिक्षित शिष्यों ने दशकों का अनुभव प्राप्त किया है और स्वतंत्र रूप से बहुत-सी जिम्मेदारियां संभाल रहे हैं। बदले में, वे युवा पीढ़ी को आध्यात्मिक प्रशिक्षण दे रहे हैं। उनके शिष्य अब आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण हो गए हैं!

आज भी गुरुदेव लोगों के सपनों में आते हैं और उन्हें बीमारियों से ठीक करते हैं, उन्हें परिवर्तन के लिए प्रोत्साहित करते हैं और स्वयं की दिव्यता से जुड़ने की प्रेरणा देते हैं। ▪

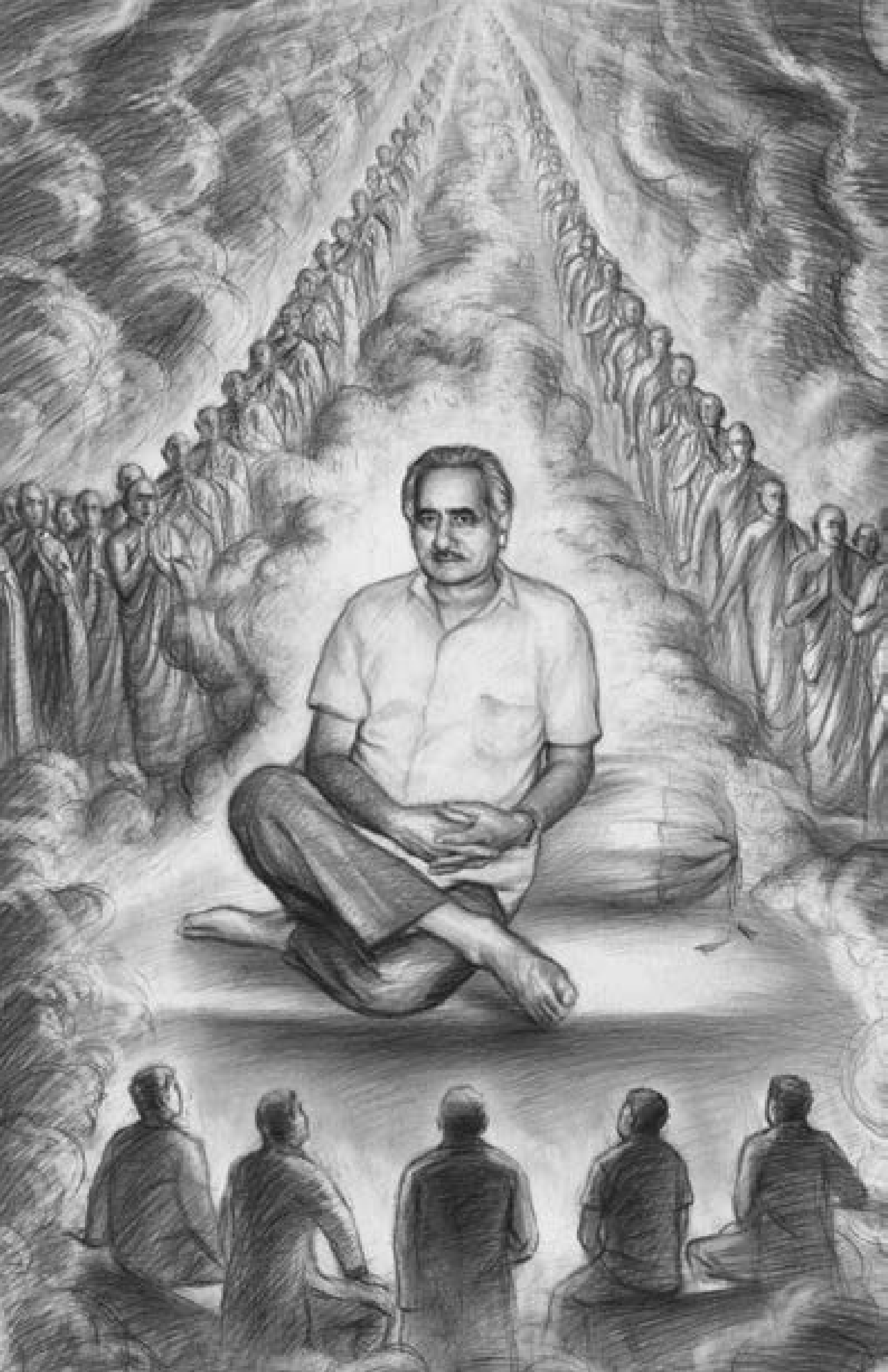

महागुरु

जारी है सफर

अगर जूल्स वर्ने गुरुदेव से मिलते, तो वह अपनी पुस्तक को नया नाम देते, 'अराउंड द वर्ल्ड इन एट मिनट्स'। असल में, इतने ही समय में महागुरु अपने सूक्ष्म शरीर में पूरी पृथ्वी का चक्कर लगा लिया करते थे।

गुरुदेव विभिन्न लोकों तक तत्काल पहुंचने का मार्ग जानते थे। उन्होंने हमें भी इन लोकों की सैर कराई। हमने गुरुदेव द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलते हुए, इस नए माध्यम का इस्तेमाल किया। समय के साथ, मैंने और मेरे कुछ गुरु भाइयों ने सूक्ष्म शारीरिक यात्रा का अनुभव किया और हमने कई रहस्य जानें, जिसने जीवन और मृत्यु के प्रति हमारा रवैया और हमारी सोच बदल दी।

अपने शरीर से बाहर यात्रा करने के अनुभवों में, मैंने गुरुदेव के साथ फ्रांस की यात्रा की, जहां हम सीन नदी पर बने एक पुराने पुल पर पहुंचे। एक अन्य अवसर पर, मैं गुरुदेव के साथ एक अन्य नदी पर गया, जहां लट्ठों के बेड़ों पर नौकायन करते हुए उन्होंने मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिलवाया, जिसका वे बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने मेरे एक गुरु भाई राजी शर्मा को भी शरीर से बाहर यात्रा का अनुभव कराया, जिसमें राजी जी ने ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के प्रत्यक्ष दर्शन किए।

एक छोटे से गांव के एक साधारण व्यक्ति को इतनी आध्यात्मिक शक्ति कैसे प्राप्त हुई कि वह अपनी मर्ज़ी से सूक्ष्म शारीरिक यात्राएं करने लगे?

गुरुदेव ने कभी भी अध्यात्म की विधिवत शिक्षा नहीं ली थी। वह पढ़ाई में कमज़ोर थे और अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए उन्हें हरदम संघर्ष करना पड़ता था। माताजी बताती हैं कि उन्होंने गुरुदेव को जासूसी उपन्यास के अलावा कुछ और पढ़ते नहीं देखा। फिर भी उन्हें ब्रह्मांडीय ज्ञान हुआ और उन्होंने सरल शब्दों में आत्मबोध का मार्ग स्पष्ट किया। इस विषय को कोई उनसे बेहतर नहीं जानता था। उनका ज्ञान धर्मग्रंथों पर नहीं, बल्कि सहज ज्ञान पर आधारित था।

गुरुदेव का प्रशिक्षण व्यावहारिक था। उन्होंने हमारे सामने आध्यात्मिकता के रहस्यों का खुलासा किया, लेकिन कुछ रहस्यों को अपने भीतर ही रखा। उन्होंने हमें सहारा दिया लेकिन मार्ग खुद तय करने को कहा। उन्होंने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर आध्यात्मिक खोज करने में हमारी बहुत सहायता की। उनके छोटे-छोटे वाक्यों में दिए गए ज्ञान का खुलासा हमें दशकों बाद हुआ। वे जानते थे कि एक दिन अगली पीढ़ी इसे समझने में सफल होगी।

उन्होंने विलासिता की अपेक्षा कठिनाई का जीवन चुना, क्योंकि वो यह रहस्य जानते थे जो आज मैं आपके साथ साझा कर रहा हूं - विलासिता, आध्यात्मिकता की पूंजी को कम करती है। गुरुदेव का एकमात्र उद्देश्य अपनी ऊर्जा का संरक्षण करना था, ताकि इसका उपयोग अन्य प्राणियों के जीवन को बेहतर और समृद्ध बनाने के लिए किया जा सके। हम भी उनकी बचत के लाभार्थी बन गए और हमने उनके नाम और उनकी कृपा से हज़ारों लोगों की सेवा की। गुरुदेव की आध्यात्मिक बचत ने उन्हें पृथ्वी और पृथ्वी से ऊंचे अनेक लोकों के सबसे धनी व्यक्तियों से भी अधिक धनी बना दिया।

यह तर्क दिया जा सकता है कि गुरुदेव की इस आध्यात्मिक महासफलता

में सहायता करने के लिए भाग्य ने एक अद्भुत पटकथा लेखक की भूमिका निभाई। महागुरु के पास एक मिशन था और भाग्य ने उसे पूरा करने में उनकी पूरी मदद की। हालांकि, इस प्रश्न का सटीक उत्तर है - उन्होंने अपने अन्तर्मन में झांका। उन्होंने एक बार एक शिष्य से कहा, "जब कोई अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए मंदिर जाता है, तो वह मंदिर की ऊर्जा नहीं होती जो उसकी मनोकामना पूरी करती है। असल में, यह उसके भीतर मौजूद सर्वोच्च चेतना अर्थात आत्मा का अंश है, जो उस इच्छा को पूरा करता है।"

मैं हमेशा मानता हूं कि उनका असली उद्देश्य हमें याद दिलाना था कि हम वास्तव में कौन हैं। अपनी तरफ से, उन्होंने हमारे भीतर छिपी दिव्यता को तब तक हवा दी जब तक कि हमें अपने दिव्य होने का एहसास नहीं हो गया। उन्होंने हमें निर्देश दिया कि किसी भी देवता के सामने कभी न झुकें। हम उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित कर सकते हैं, लेकिन खुद को उनके प्रति कभी हीन नहीं देख सकते। हमने दर्पण में जो देखा वह समय के साथ अपूर्ण प्रतिबिंब से बदलकर दिव्य हो गया।

गुरुदेव ने हम सभी में गुरु तत्व को जागृत किया। उसके बाद उन्होंने कई और लोगों में उस तत्व को जगाने के लिए हमें माध्यम बनाया। ▪

03

असाधारण उद्यमी!

मैं उन्हें अपने कंधों पर बिठाता हूं
ताकि जितना मैं देख सकता हूं
वे उससे कहीं अधिक देख सकें।

गुरुदेव

एक प्रसिद्ध स्कॉटिश-अमरीकी समाजसेवी ने एक बार कहा था कि जो पुरुष सफल होते हैं, वे एक रास्ता चुनते हैं और उस पर अडिग रहते हैं। गुरुदेव ने आध्यात्मिक पथ चुना, और ताउम्र उस पर चलते रहे। इस थका देने वाले पथ पर, सेवा साधना बन गई, जिसके साथ उन्होंने अपने लक्ष्यों के ताने-बाने बुने।

उन्होंने हमें बताया कि उन्हें अपने शिष्यों को इकट्ठा करने में लगभग 500 साल लग गए ताकि वे समान रूप से उन्नति कर सकें और दूसरों के उत्थान में सहायता कर सकें। महान पैगंबरों की भांति, जो दुनिया की स्थिति में सुधार करने और आध्यात्मिकता को जनता में पुनः स्थापित करने के लिए पृथ्वी पर आए थे, गुरुदेव ने भी मुश्किल हालातों और कठिन परिस्थितियों में सधे हुए निशानेबाज की तरह सामूहिक विकास मॉडेल की नींव रखी।

वर्ष 1970 के दशक की शुरुआत में, उनकी बड़ी बेटी रेणु उनके साथ बाजार गई और उसने हलवाई की दुकान से दो गिलास दूध पिया। दूध पीते समय रेणु जी के चेहरे पर तृप्ति का भाव देखकर, घर लौटने पर गुरुदेव ने माताजी से जानना चाहा कि क्या उनके घर पर दूध की कमी थी या बच्चों को घर में दूध नहीं मिल रहा था। माताजी के जवाब ने उन्हें स्तब्ध कर दिया। माताजी ने बताया कि बच्चों के खाने-पीने की आवश्यक चीजें खरीदने के लिए घर में पर्याप्त पैसा नहीं था। गुरुदेव ने वो पूरी रात यह सोचते हुए गुजार दी कि अपने परिवार के भौतिक सुख-सुविधा की कीमत पर आध्यात्मिकता को आगे बढ़ाने का उन्होंने जो कदम उठाया है, क्या वह सही है? हालांकि अगली सुबह, वह अपने संकल्प में पहले से कहीं ज्यादा मजबूत थे और 'स्वयं से पहले सेवा' उनके आध्यात्मिक उद्यम की रीढ़ बन गई।

वित्तीय प्रबंधन

उनका वेतन बहुत कम था, और जो भी वे कमाते, उसका कुछ हिस्सा आमतौर पर वेतन के दिन ही सार्वजनिक सेवा में खत्म हो जाता था। उनके तौर-तरीकों से वाकिफ, उनके सहकर्मी से शिष्य बने नागपाल जी ने माताजी के घरेलू खर्च के लिए गुरुदेव के वेतन का एक हिस्सा निकालकर माताजी को देना शुरू कर दिया, जिससे उनके बच्चों और शिष्यों की देखभाल हो सकती थी। अधिक आय न होने के बावजूद, महागुरु ने कभी किसी से कुछ नहीं स्वीकारा। अतिरिक्त धनराशि की तो बात छोड़िए, उनके पास घर खर्च के लिए पर्याप्त पैसे भी नहीं होते थे। आखिरकार, महीने का अंत आते-आते, बैंक में भी पैसे खत्म हो जाते थे।

अपने शिष्यों के घरों में स्थान खोलकर, उन्होंने एक तीर से दो निशाने साधने में कामयाबी हासिल की। फलस्वरूप वित्तीय संसाधनों की कमी के बावजूद, सेवा का विस्तार हुआ, और साथ ही इसकी पहुंच भारत और विदेशों के कई हिस्सों में हो गई। स्थान संचालक बनने वाले शिष्यों ने अपने घरों में एक समर्पित कमरे को स्थान बनाया और अपनी कमाई से सेवा का कार्य प्रारंभ किया।

केसर, लौंग, इलायची, काली मिर्च, सरसों और सुपारी खरीदने के लिए धन की आवश्यकता थी, क्योंकि यह वस्तुएं गुरुदेव की चिकित्सा शक्तियों की वाहक थीं। यह उन लोगों को दी जाती थीं जो बड़ा गुरुवार पर गुरुदेव के पास मदद और उपचार के लिए आते थे। जो संचालक इन वस्तुओं को खरीद नहीं सकते थे, वे श्रद्धालुओं से कहते थे कि वे उन्हें कहीं और से खरीद लें, लेकिन स्थान पर उसे अभिमंत्रित जरूर करवा लें।

यदि स्थान संचालक की आर्थिक स्थिति अच्छी होती थी, तो वह बड़ा गुरुवार पर श्रद्धालुओं को चाय और खिचड़ी दे सकता था। अगर वह केवल चाय का खर्च उठा सकता, तो बस उन्हें चाय दे सकता था। यदि स्थान संचालक अपने घर से स्थान संचालित करने में सक्षम था, परंतु आर्थिक बोझ उठाने में असक्षम था, तो गुरुदेव दो या तीन शिष्यों का एक गठबंधन बनाते जिनके आपसी सहयोग से स्थान का संचालन किया जाता। स्थान खोलकर, उन्होंने अपनी शक्तियां कई शिष्यों में बांटी, अपनी सेवा को कई गुना बढ़ाया और सेवा के लिए लोगों को बुलाने के बजाय, सेवा को उनके पास लेकर गए। कम वित्तीय निवेशों पर उच्च आध्यात्मिक रिटर्न वाले इस मास्टर-मॉडल से उन्होंने अध्यात्म का उच्चतम स्तर पाया। सद्भावना और लोगों के आशीर्वाद के रूप में निवेश पर मिलने वाला ऐसा लाभ किसी भी बैंकर को चौंका सकता है!

महागुरु ने अपने अल्प मासिक वेतन से गुड़गांव स्थान पर सेवा की। उन्होंने अपने शिष्यों को श्रद्धालुओं की भोजन व्यवस्था में योगदान करने की अनुमति दी और उन्हें सेवा और उससे मिलने वाले लाभ को अर्जित करने का एक और अवसर प्रदान किया। हालांकि, उन्होंने ऋण और आभार से मुक्त बने रहने के लिए अपना भी कुछ प्रतिशत व्यक्तिगत योगदान देने का नियम बनाया।

समय प्रबंधन

अपने कर्ज़न रोड कार्यालय में काम करते समय गुरुदेव की समय की अवधारणा विभाजित थी। दोपहर के भोजनावकाश में, ऑफिस से थोड़ी दूर स्थित उनकी बहन के घर पर, वह आस-पास के क्षेत्रों से आए मरीजों से मिलते। नियमित काम के घंटों के दौरान, वह छोटे-छोटे अंतराल लेकर गुप्ता जी के जूस और चाय के स्टाल पर इंतजार करते

लोगों के ध्यान से बचकर, अपने बजाज चेतक स्कूटर पर रवाना होते गुरुदेव

अपने भक्तों और शिष्यों से मिलते। लेकिन ऑफ़िस छूटते ही वो रफ़ू चक्कर हो जाते थे। अपने कर्ज़न रोड स्थित ऑफिस के कई गेट्स पर इकट्ठा भीड़ से बचकर, वो अपने बजाज चेतक स्कूटर पर सवार होकर सबकी नज़रों से दूर निकल जाते थे। लूका-छुपी के खेल में माहिर होने के अलावा, ऑफिस में जब काम कम होता था, तब महागुरु अपने सहयोगियों के साथ ताश और शतरंज भी खेलते थे।

गुरुदेव काम के बाद भी समय के प्रति जागरुक थे। वे घंटे के पहले 15 या 30 मिनट में नए काम की शुरुआत करते थे और कोई काम पौन पर करना पसंद नहीं करते थे। उन्होंने मंत्र पाठ के लिए विशेष समय की अवधारणा को आगे बढ़ाया। कुछ शिष्यों को विशेष समय पर मंत्र पाठ करने के लिए कहा गया, क्योंकि उन्होंने उन्हें बताया था कि वह उस समय उनसे आत्मिक रूप से जुड़ेंगे। आध्यात्मिक उन्नति के लिए वह 'गुरु-पहर' या सुबह के 1.15 - 3.15 बजे के बीच के समय को बहुत महत्व देते थे। उनका मानना था कि इस समय में की गई आध्यात्मिक क्रियाएं अत्यंत लाभप्रद होती है।

गुरुदेव सुबह 1.30 बजे अपने बिस्तर पर लेट जाते थे, संभवतः एक या दो घंटे अपना पाठ करते, और फिर कुछ देर झपकियां लेते। वह सुबह 5 से 6 बजे के बीच उठते और अपने दिन की शुरुआत एक कप चाय के साथ करते। कुछ दिनों, वे घंटों तक पाठ में डूबे रहते। पाठ के दौरान, वह सूक्ष्म शारीरिक यात्रा करते थे। माताजी ने एक बार मुझे बताया, "मुझे लगता था कि उन्होंने नींद को जीत लिया है क्योंकि वे शायद ही सोते थे। वह तभी सोते थे जब वह सोना चाहते थे न कि इसलिए कि नींद उन पर हावी थी। वह मुझसे कहते थे कि 'जब दुनिया सोती है तब मैं अपना काम करता हूं । किसी को भी कभी पता नहीं चलेगा कि मैं कहां जाता हूं। लेकिन मैं लोगों को देखता हूं और उनका मार्गदर्शन करता हूं।'"

वे अक्सर कहते थे, "विधि के विधान को कोई बदल नहीं सकता, पर मैं समय का पाबंद नहीं, समय मेरा पाबंद है"। शायद उनका मतलब यह था कि वह अतीत और भविष्य की यात्रा कर सकते थे। वह वर्तमान में भविष्य का फल भी दे सकते थे। कुछ मामलों में, वह किसी व्यक्ति के अगले जीवन के कुछ वर्षों को उसके वर्तमान में स्थानांतरित कर सकते थे। जब चंद्रमणि वशिष्ठ जी को लगा कि उनकी मृत्यु निकट है तो उन्होंने गुरुदेव से अपनी कलाई पर बंधी घड़ी देने का अनुरोध किया। जब महागुरु ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर उन्हें उपहार के रूप में अपनी घड़ी भेजी, तो वशिष्ठ जी को पता था कि उनका जीवन बढ़ा दिया गया है।

गुरुदेव समय का मूल्य समझते थे। उनके लिए गुड़गांव में उनका घर, दिल्ली में उनका कार्यालय, भारत के सुदूर इलाकों में उनके शिविर अथवा उनकी सूक्ष्म शारीरिक यात्राएं, महज़ उनकी सेवा के संचालन क्षेत्र थे। और कुछ अधिक भाग्यशाली लोगों के लिए ये वे स्थान भी थे जहां महागुरु उनका मार्गदर्शन करते थे।

नियुक्तियां

गति गुरुदेव की पहचान थी, चाहे वह उनकी तेज चाल हो या फिर वो स्फूर्ति जिससे वह अपने शिष्यों के साथ अपनी शक्तियां साझा करते थे। कथोग के एक स्कूल में, जहां सेवा चल रही थी, वहां बड़ी-बड़ी कतारें देखकर, महागुरु ने एक स्कूल के तीन शिक्षकों को अपना पिया हुआ जल पीने के लिए कहा। उन शिक्षकों की गुरुदेव के साथ यह पहली या दूसरी मुलाकात थी और वे उनके बारे में बहुत कम जानते थे। उनमें शामिल एक बॉडीबिल्डर और पीटी शिक्षक संतोष जी उस समय आश्चर्यचकित रह गए, जब जल ने चमत्कारिक ढंग से उन्हें एक ऐसा

उपचारक बना दिया जो सिर्फ लोगों के शरीर के प्रभावित हिस्से को छूकर उन्हें एकदम ठीक कर सकता था। गुरुदेव ने इस प्रकार कई लोगों को सेवा करने के लिए नियुक्त कर लिया।

जहां उन्होंने कुछ भावी उम्मीदवारों को मिलने से पहले कई दिनों तक कतारों में खड़ा करके उनकी धैर्य और निष्ठा का आकलन किया, वहीं कई अन्य होने वाले शिष्यों का उन्होंने अपने चौंका देने वाले अंदाज़ में, "आ गया पुत" के साथ अभिवादन किया। स्वागत करने वाले ये शब्द हममें से कई लोगों को अजीब लगे क्योंकि हम खुद को पहली बार आए आगंतुकों के रूप में देख रहे थे, जबकि उन्होंने हमें ऐसे संबोधित किया मानो वह पहले से हमें जानते थे।

हमारे समूह में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों, कौशल और आय वर्ग के युवा थे जो पहली बार गुरुदेव से मिलने आए थे। कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक अभिमानी थे, जबकि कुछ बहुत ही विनम्र। भले ही हम में आत्म-विश्वास की कमी थी, लेकिन महागुरु ने हमें खारिज नहीं किया। इसके बजाय, लगातार प्रयास करके उन्होंने हमें तेजस्वी अध्यात्मवादियों में शामिल किया, जिनका लक्ष्य प्राणी मात्र की सेवा करना था, चाहे वह पौधा हो, पशु हो, मानव हो या आत्मा।

सेवा के साथ-साथ मल्होत्रा जी, जैन साहब, एफ सी शर्मा जी और अन्य पूर्व जन्मों के शिष्यों के आने से आध्यात्मिक आंदोलन में तेजी आई। कई अन्य शिष्य भी किसी न किसी बहाने से वहां पहुंचे और उनका प्रशिक्षण शुरू हुआ। गुरुदेव इन उन्नत अध्यात्मवादियों के पथप्रदर्शक बनकर, गुरुओं के गुरु के रूप में स्वीकार किए गए।

जन प्रबंधन

गुरुदेव रोल-प्ले में निपुण थे। जब उन्हें कठोर अभिनय करना पड़ा, तो उन्होंने एक पिता की तरह व्यवहार किया। जब उन्होंने हमारा पालन-पोषण किया, तो वे एक मां की तरह हमारी देखभाल करते थे। बड़े भाई के रूप में, वह दोहरी जिम्मेदारी निभाते हुए हमें विकसित करते और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करते। एक गुरु के रूप में वह बाहर से सख्त लेकिन भीतर से नरम थे। उन्होंने हम में से प्रत्येक को यह महसूस कराया कि हम उनके सबसे पसंदीदा हैं। उन्हें खुश करने की अपनी चाहत में, हम यह भूल गए कि वह आध्यात्मिक प्रतिभा रोल-प्ले में माहिर थे।

उनका प्रसिद्ध एक वाक्य था, 'मैं सबका हूं और सब मेरे हैं। मैं किसी का नही हूं और मेरा कोई नही'।

उनके कई विचार अपने विरोधाभास के लिए जाने जाते हैं।

अपने शुरुआती वर्षों में एक माना हुआ सार्वजनिक वक्ता होने के बावजूद, मैं आमतौर पर गुरुदेव की उपस्थिति में स्तब्ध रह जाता था। इसके विपरीत, उद्धव जी गुरुदेव से बहुत सवाल किया करते थे, और उन्हें लगातार उकसाते थे कि वे अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करें। गुरुदेव भी अपने चिर-परिचित अंदाज में मुस्कुराते हुए उन सवालों को टाल जाते जिनका जवाब वो नहीं देना चाहते थे। गुरुदेव हमें बस वही बताते थे जो वे बताना चाहते थे। उन्होंने अपनी शक्तियों को प्रदर्शन के लिए नहीं बल्कि असली सेवा के लिए बचाकर रखा था।

जब उनके शिष्य मल्होत्रा जी ने अपनी सुविधा के लिए ट्रेन को लेट

कराया, तो महागुरु ने उन्हें चेतावनी दी कि इस तरह करने पर वह उनसे अपनी शक्तियां वापस ले लेंगे। बाद में, वही शिष्य महागुरु के सबसे सिद्ध शिष्यों में से एक बने। गुरुदेव का रवैया बड़ा उन्नत था, पर निगरानी सख्त थी।

उनकी आंकने की दृष्टि में दंड और पुरस्कार समान थे। प्रत्येक बड़ा गुरुवार को मैं सेवा के लिए हवाई जहाज से यात्रा करके मुंबई से गुड़गांव पहुंचता था, पर मुझे सेवा का मौका नहीं मिलता था। मुझसे पहले से सेवा करने वाला अनुरोध करता था कि उसे सेवा जारी रखने दी जाए और मैं मान जाता था। जब गुरुदेव को ये पता चला तो उन्होंने मुझे महामृत्युंजय मंत्र की सिद्धि प्रदान की। यह एक यॉर्कर था! मैं इस मंत्र का एक शब्द भी नहीं जानता था, फिर भी उन्होंने मुझे मंत्र की ऊर्जाओं से संपन्न कर दिया।

उनके उपहार उनके कठोर अनुशासन के समान बेमिसाल थे। जब मेरी पत्नी ने शिकायत की कि मैं अपने गुरु भाइयों के साथ लगातार रात-रात भर आध्यात्मिक गपशप में व्यस्त रहता हूं, तो गुरुदेव ने सुनिश्चित किया कि उस दिन से लेकर तीन साल तक जब भी मैं बड़ा गुरुवार के लिए अपने परिवार के साथ गुड़गांव आऊं, तो मैं सेवा करने की बजाय अपनी पत्नी और बच्चों को दोसा खिलाने ले जाऊं। मैंने स्थान पर सेवा करने की जगह पत्नी की सेवा की! उन्होंने अपनी गुगली से पहली ही बॉल में मुझे क्लीन बोल्ड कर दिया।

अस्थायी रूप से सेवा से निलंबित करने से लेकर स्थायी रूप से उसे वापस देने और पूरी तरह से गलतियों को अनदेखा करने तक, हमें आंकने का उनका तरीका बहुत अलग था। अनिश्चितता के माहौल में हमें नहीं पता था कि हमें गेंद खेलनी चाहिए या उसे जाने देना चाहिए!

हमारे पास अपनी नाकामियों को खुशी-खुशी स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। उनके इम्तेहानों को पास करने के लिए विश्वास और मानसिक तत्परता से कहीं अधिक योग्यता की जरूरत होती थी। और जैसे ही हम अपनी योग्यता बढ़ाते, वह अपने मूल्यांकन के मापदंडों को और ऊंचा कर देते। ऐसा नहीं था कि वह हमें असफल होते देखना चाहते थे; वह केवल यह चाहते थे कि हम उनसे भी ज्यादा उत्कृष्ट बनें। अपने शिष्यों की बात करते हुए वह अक्सर अपनी पत्नी से कहते थे, "मैं उन्हें अपने कंधों पर बिठाता हूं ताकि जितना मैं देख सकता हूं वे उससे कहीं अधिक देख सकें।" इस सरल वाक्य में, उन्होंने एक गुरु की भूमिका को परिभाषित किया और अपने शिष्यों को आगे आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहित किया।

वे न सिर्फ मीलों दूर से हमारे विचारों को पढ़ सकते थे, बल्कि वह अक्सर वेश बदलकर हमें परखते भी थे। जब उद्धव जी ने देखा कि उनके कमरे में पीली आंखों वाले दो काले त्रिभुज तैर रहे हैं, तो उन्होंने अपने ननचाकू से उन पर प्रहार किया। बाद में गुरुदेव ने उद्धव जी से कहा कि उनकी प्रतिक्रिया के कारण शायद उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती, अगर गुरुदेव ने उस कमरे में आई दूसरी शक्ति को शांत न किया होता। जब बग्गा साहब ने अपनी दुकान में एक संभ्रांत महिला से बात करते वक्त, एक फटे पुराने कपड़ों वाले व्यक्ति पर ध्यान नहीं दिया, तो वह नहीं जानते थे कि वह वृद्ध व्यक्ति कोई और नहीं, गुरुदेव के सहायक औघड़ ही छद्मवेश में थे। हम अक्सर उनके अचानक लिए गए परीक्षणों में असफल रहे क्योंकि हम बहुत सतर्क नहीं थे।

महागुरु की निरंतर चौकसी ने हममें से कई लोगों को अनुशासित कर दिया। भले ही उन्होंने कक्षाएं नहीं चलाईं, लेकिन उन्होंने अनुकूल पाठ पढ़ाए। उनके प्रशंसकों, अनुयायियों और भक्तों के लिए उनका

मार्गदर्शन व्यक्तिगत था और किसी विशेष पाठ्यक्रम पर आधारित नहीं था। अपनी शिक्षा में उन्होंने किसी दर्शन विशेष को महत्व नहीं दिया बल्कि हर दर्शन को यथोचित सम्मान दिया।

उनकी आध्यात्मिकता की किताब में, न तो सभी के लिए एक अवधारणा थी और न ही सभी अवधारणाएं किसी एक के लिए थीं, बल्कि भिन्न लोगों के लिए भिन्न अवधारणाएं थीं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि हमारे जवाब हमारे भीतर से आने चाहिए।

गुरुदेव ने हमें सभी धर्मों का सम्मान करना सिखाया। जब वह मुझसे कहते थे, "बेटा ये सब हमारा ही तो है", तो इसका अर्थ था कि सभी धर्म हमारे हैं। उन्होंने मूर्ति पूजा के बारे में किसी भी छद्म बौद्धिक विचार को नहीं स्वीकारा। भले ही हम मूर्तियों को महज़ पत्थर का बुत समझते थे, पर वह जानते थे कि जब ये मूर्तियां मंदिरों, गुरुद्वारों और चर्चों में स्थापित होती हैं, तो वहां एकत्रित ऊर्जाओं का भंडार बन जाती हैं। गुरुदेव कभी किसी मंदिर या स्मारक का दौरा नहीं करते थे क्योंकि वे उनके ऊर्जा समीकरण में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे। हालांकि, उन्होंने अपने शिष्यों को सलाह दी थी कि सूक्ष्म शारीरिक यात्रा के दौरान, उन्हें सिद्ध स्थानों के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करने के लिए कुछ क्षणों के लिए रुकना चाहिए। इन स्मारकों को तेज रोशनी से पहचाना जा सकता है।

गुरुदेव मुंबई की अपनी सूक्ष्म शारीरिक यात्राओं के दौरान शिर्डी में कुछ सेकंड के लिए रुकते थे। यह शिर्डी के साईं के साथ उनके आध्यात्मिक गठबंधन के कारण था। मुझे पता है कि साईं ने कुछ मौकों पर गुरुदेव के अनुयायियों की सहायता की थी। कई साल पहले, मैंने एक महिला को साईं के दर्शन कराने का वादा किया और साईं ने मेरे वादे को निभाया।

सॉइल सर्वे में अपने सहयोगियों के साथ चर्चा करते गुरुदेव

कार्य क्षेत्र

हर साल, गुरुदेव मृदा सर्वेक्षण और अनुसंधान के लिए कम से कम दो शिविर लगाते थे। वर्ष 1973 में, महागुरु के रूप में उन्होंने पहली सेवा मध्य प्रदेश के कुरवाई में की। वर्ष 1976 में, हिमाचल प्रदेश के कथोग शिविर में सेवा और सहायता के लिए लोग हज़ारों की तादाद में आए। वर्ष 1980 में, हिमाचल प्रदेश के रेणुका में जन-चिकित्सा के लिए सबसे ज्यादा लोग एकत्रित हुए, जिसे उनके सबसे बड़े सार्वजनिक सेवा शिविर के रूप में जाना जाता है।

वे मुंगावली में खुली जेल के करीब या अशोक नगर में श्मशान घाट के पास, यहां तक कि जंगलों में शिविर लगाने से भी नहीं हिचकते थे। उन्होंने हमेशा उन स्थानों को चुनने की कोशिश की जहां मनुष्य और आत्मा दोनों की सेवा के अवसर मौजूद थे। मानव रूप में जन्म देने के लिए, उन्होंने निचले आयामों में फंसी आत्माओं को मुक्त कराया। महागुरु ने उन सभी की मदद की जिन्होंने उनसे अनुरोध किया था।

उनके शिविर प्रशिक्षण केन्द्रों का भी काम करते थे। मुंगावली में उन्होंने मुझे कंपा देने वाली ठंड का एहसास कराया क्योंकि मैंने उनके आने पर स्वेटर पहना था। दरअसल मैं नहीं चाहता था कि वे यह सोचें कि मैं ठंड ना होने की शेखी बघार रहा हूं जबकि वहां मौजूद लगभग हर शख्स अपने गरम कपड़ों में लिपटा हुआ था। लेकिन मेरे इस दिखावे को हकीकत में बदलकर, उन्होंने न सिर्फ मेरे मन और शरीर पर बल्कि प्रकृति पर भी अपना नियंत्रण प्रदर्शित किया। मैंने जल्द ही ये महसूस किया कि महागुरु के प्रति समर्पण में झूठे अहंकार और दिखावे का त्याग भी शामिल है।

इन शिविरों में जीवन आरामदायक नहीं था। कई बार उपयुक्त स्थान खोजने में असमर्थ, गुरुदेव की टीम ने खुले मैदानों में टेंट लगाए। चाहे वह उनके कुंवारेपन के दिनों का 120 वर्ग फुट का कमरा हो या पुराना ज़िला अतिथि गृह या उनके शिविर का अस्थायी निवास, महागुरु के रहन-सहन में कोई बदलाव नहीं होता था।

आखिरकार, मुझे एहसास हुआ कि जीवन के सांसारिक पहलुओं ने न तो उन्हें परेशान किया और न ही विचलित। इसके अलावा, लंबे समय तक परिवार से दूर रहने के कारण, महागुरु गृहस्थ होने के बावजूद एक संन्यासी का जीवन जीते थे। उनके शब्द "गृहस्थ में भी वैराग्य है", इस भावना को बखूबी बयां करते हैं।

कार्यकारी प्रशिक्षण

समय के साथ, उन्होंने अपनी सादगी और विनम्रता से हमें निःशब्द कर दिया। कई बार, हमने उनसे शारीरिक स्तर पर निपटने की गलती की। उद्धव जी को इस बात का आभास नहीं था कि अगर वह शख्स अपना आत्म-महत्व नहीं दिखाता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह महत्वपूर्ण नहीं है। जैन साहब को यह समझ में नहीं आया कि यदि गुरु ने आपको अपने मित्र के रूप में उनसे बात करने की अनुमति दी है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह आपके मित्र हैं। महाराष्ट्र के वीपी शर्मा जी को इस बात का एहसास नहीं था कि अगर गुरु ने आपको स्वतंत्रता लेने की अनुमति दी थी, तो इसका मतलब यह नहीं था कि आप उसका फायदा उठा सकते थे। लोग गुरुदेव को उनके तौर-तरीकों के कारण समझ नहीं पाए। गुरुदेव की विशिष्टता के बारे में सीमित धारणा रखने के कारण वे आध्यात्मिक बल्लेबाजी के क्रम में पिछड़ गए, लेकिन गुरुदेव ने सदैव यह देखा कि वे लोग कौन थे बजाय इसके

कि वे अपने बारे में क्या सोचते थे। यह जानते हुए कि हम भविष्य में बदलेंगे, उन्होंने हमारी आध्यात्मिक शक्तियों को ज्यादा अहमियत देते हुए हमारी शारीरिक कमियों को नज़रअंदाज़ किया। हमारे प्रशिक्षक के रूप में, उन्होंने हमें नॉन-स्ट्राइकरों से आध्यात्मिक बल्लेबाजों में बदलने के लिए हर तरकीब अपनाई।

गुरुदेव ने अपने आध्यात्मिक गुरु से प्राप्त निर्देशों के साथ कोई स्वतंत्रता नहीं ली। जब उन्हें गृहस्थ जीवन में लौटने के लिए कहा गया, तो उन्होंने उस आदेश का पालन किया। जब उन्हें अपनी सिद्धियों को त्यागने के लिए कहा गया, तो उन्होंने अपनी सिद्धियां त्याग दीं। बुड्ढे बाबा के समक्ष निर्विवाद समर्पण ने उनकी आध्यात्मिक यात्रा का मार्ग बदल दिया और उनको अध्यात्म की राह पर तेजी से आगे बढ़ाया। धीरे-धीरे ओम, त्रिशूल, ज्योत, शिवलिंग, गिलेरी, नंदी, गणपति की शक्तियां उनमें समाहित हो गईं और उनके हाथों और शरीर के अन्य हिस्सों पर प्रतीक के रूप में दिखाई देने लगीं। शिव-परिवार की इन शक्तियों ने उन्हें कई ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं पर नियंत्रण दिया। वह अपने शक्ति प्रतीकों और ऊर्जा को अत्यन्त सहजता से दूसरों को दे देते थे। जब वह परवानू के गुप्ता जी से दूसरी बार मिले, तो उन्होंने उनके परिवार के सदस्यों को ओम स्थानांतरित कर दिया और उनके घर पर स्थान खोल दिया।

एक गुरु के रूप में, वे पारंपरिक नहीं थे। उनके उपचार के तरीके ज़्यादातर अनौपचारिक थे। उनकी शिक्षाओं में धर्मग्रंथों के सिद्धांत नहीं थे, जिन पर विचार किया जाए। उन्होंने अपने छोटे 120 वर्ग फुट के बेडरूम में बैठकर लोगों के साथ अपने अनुभवों को सीख के रूप में साझा किया।

उन्होंने हमें अपनी ऊर्जा को संतुलित करना और बढ़ाना सिखाया।

उन्होंने निर्देश दिया कि हम मंत्र विद्या, तपस्या और पाठ की साधनाओं में निपुण होने के लिए समय व्यतीत करें। हमारी आध्यात्मिक यात्राओं में विशिष्ट समय पर उन्होंने हमारे मन की शक्ति का उपयोग करके हमें दूरस्थ उपचार करने के लिए प्रशिक्षित किया। हमें प्रशिक्षण देने, संदेश साझा करने, भविष्य की घटनाओं के बारे में चेतावनी देने और छिपे हुए आयामों को जानने में हमारी मदद करने के लिए उन्होंने हमारे सपनों और दृश्यों के ज़रिए हमसे संवाद स्थापित किया। उन्होंने हममें से कुछ को अपने पिछले जीवन की झलक देखने में सक्षम बनाया।

महागुरु ने हमें एहसास कराया कि मृत्यु के बाद का जीवन एक भिन्न कंपन और एक अत्यधिक सूक्ष्म रूप की निरंतरता थी। उन्होंने हममें से कुछ को शरीर से बाहर की यात्रा के लिए प्रशिक्षित किया और हमारे सांसारिक निकास पर ध्वनि की बाधा को तोड़ने के लिए आवश्यक गति प्राप्त करने की तकनीक सिखाई। उन्होंने समझाया था कि मृत्यु के बाद विकसित आत्माओं का यह मकसद होना चाहिए कि वे ध्रुव तारा पार करके उच्च आयाम या लोकों तक पहुंच सकें। उन्होंने हमें ये एहसास कराया कि सूक्ष्म आत्मा के लिए मानव शरीर उसका कार्यक्षेत्र है। इस एहसास ने हमें हमारे भौतिक जीवन का उद्देश्य समझाया। आत्मा को गुण, अनुभूति और शक्ति में विकसित होने के लिए मानव शरीर की आवश्यकता होती है।

***महागुरु की साधनाओं और सिफारिशों
का पालन करके कोई भी
इस जीवन में और उसके बाद भी
अपने अस्तित्व की गुणवत्ता में
सुधार कर सकता है।***

संगठन प्रबंधन

गुरुदेव ने अपनी व्यवस्थित योजना के साथ अपने संगठन कौशल को बढ़ाया। बड़ा गुरुवार सुबह लगभग 5.30 बजे शुरू होता था, इसलिए सभी व्यवस्थाओं को एक रात पहले पूरा करना जरूरी था। मल्होत्रा जी की देखरेख और चार मसखरों – निक्कू जी, पप्पू जी, बिट्टू जी और गग्गू जी के निरीक्षण में करीब 20 से 30 सेवादार दिन में लगने वाली कतारों को संभालते और उस दिन के खाने की व्यवस्था करते जिसमें दर्शनार्थियों के लिए प्रसाद और सेवादारों का भोजन शामिल होता था। सारे काम शिष्यों में बांट दिए जाते थे। जूता-स्टैंड सेवा, जल सेवा और गद्दी सेवा के लिए समय तय कर दिया जाता था। महागुरु स्वयं पर्यवेक्षकों की निगरानी करते थे। आगे बढ़कर नेतृत्व करना उनके व्यक्तित्व की पहचान थी।

ऐसी ही विधिवत योजना गणेश चौथ, महाशिवरात्रि और गुरु पूर्णिमा के आयोजन में भी बनाई जाती थी। केवल इस अवसर पर, मुख्य अवसर से कुछ दिन पहले तैयारी शुरू हो जाती थी। वर्ष 1984 में, गुरुदेव ने हिमगिरी चैरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की और मल्होत्रा जी को उसका मुख्य ट्रस्टी नियुक्त किया। आज भी यह ट्रस्ट जन कल्याण के लिए काम कर रहा है।

गुड़गांव के खांडसा में उनके खेत की देखभाल पहलवान जी और उनकी टीम करती थी। पहलवान जी सिर्फ नाम के पहलवान नहीं थे, वे पहले पहलवानी किया करते थे और उन्होंने अपनी संपूर्ण ऊर्जा खेत को संवारने में लगा दी। गुरुदेव जब अपने शिविरों में व्यस्त नहीं होते थे, तो उनके साथ खेती-किसानी के काम में हाथ बंटाते थे। महागुरु गायों का दूध दुहते, ट्रैक्टर से जमीन की जुताई करते, बीज बोते, सब्जियां

खांडसा फार्म पर काम करते गुरुदेव

उगाते और भी ऐसे कई काम करते थे। अपने खेत पर शारीरिक श्रम और उस प्राकृतिक वातावरण में रहने वालों का पोषण करना, प्रकृति के प्रति अपना ऋण चुकाने का उनका अपना तरीका था। खेत की उपज से गुड़गांव स्थान की जरूरतों को पूरा किया जाता था। एक बार महाशिवरात्रि के दौरान, खेत के कुछ आलुओं में ओम पाया गया। एक अन्य अवसर पर, आलू की फसल में त्रिशूल की आकृति देखी गई! या तो ये 'आध्यात्मिक आलू' थे, या महागुरु यह बता रहे थे कि वे अपनी शक्तियों को सब्जियों पर भी उभार सकते हैं!

गुरुदेव ने जहां भी स्थान खोलने का फैसला किया, उन्होंने उस क्षेत्र के मुख्य देवता के साथ गठबंधन का निर्णय किया। अपने वर्तमान अवतार में आध्यात्मिक रूप से प्रभावी होने के कारण, उनके लिए अपने संपर्कों को खोजना आसान था क्योंकि उन्होंने अपने पिछले जन्मों में भी ऐसे गठबंधन बनाए थे। उनके कुछ आध्यात्मिक सहयोगी थे गुरु नानक देव, साईं बाबा, गुरु गोबिंद सिंह, परशुराम, कृष्ण, गणपति, हनुमान और देवियों में रेणुका, लक्ष्मी, सरस्वती, महाकाली एवं कई अन्य देवी-देवता। वैश्विक मामलों पर चर्चा करने के लिए इनमें से कुछ के साथ गुरुदेव की सूक्ष्म बैठकें होती थीं। मुझे नहीं पता कि इसका क्या अर्थ है, लेकिन अपने आखिरी दिनों में गुरुदेव ने कथित तौर पर अपनी भाभी को बताया था कि चूंकि उस समय गुरु शुक्राचार्य और गुरु बृहस्पति पृथ्वी पर सेवा कर रहे थे, इसलिए बुरी शक्तियों से दुनिया की रक्षा करने की अब उनकी बारी थी। यह कथित बयान मार्वल स्टूडियोज़ के एवेंजर्स की तरह, महागुरु की छवि बनाता है!

महागुरु ने इस संसार को अलविदा कहने से पहले ही अपना विश्राम स्थल तैयार करवा लिया था। उन्होंने दिल्ली में नजफगढ़ को अपना अंतिम निवास स्थान चुना। अपनी मृत्यु के कुछ महीने पहले उन्होंने

नजफगढ़ में एक निश्चित बिंदु पर एक पत्थर रखा और बलजीत जी को अपनी समाधि बनाने के लिए कहा। उनके देहावसान के बाद, उनका अंतिम संस्कार भी वहीं किया गया।

भृगु संहिता ने उनका उल्लेख एक सर्वव्यापी दिव्यात्मा के रूप में किया जो अपने देहांत के पश्चात शिव लोक में कैलाश पर्वत पर रहेगी, लेकिन हर दोपहर नजफगढ़ में अपनी समाधि पर वापस आ जाएगी। उनकी मौजूदगी अभी भी उनकी समाधि और गुड़गांव समेत भारत और विदेशों के अन्य हिस्सों में उनके स्थानों पर महसूस की जाती है।

मुश्किलों में निकली राह

अपने शिखर पर वह हर महीने लगभग एक लाख या इससे भी अधिक लोगों से मिलते थे। वे सबसे मुस्कुराते हुए मिलते और किसी के साथ भी जल्दबाजी में पेश नहीं आते थे। होटल, अस्पताल और अन्य संस्थान आगंतुकों की गणना प्रति वर्ग फुट लोगों की संख्या से करते हैं। कभी-कभी गुरुदेव को 600 वर्ग फुट में 50,000 लोगों को देखना पड़ता, जिसका सीधा हिसाब होता था हर दिन लगभग 80 से 90 लोग प्रति वर्ग फुट। फिर भी गुरुदेव के चेहरे पर हमेशा मुस्कान खिली रहती थी।

गुरुदेव से मिलने आने वाले या उनकी तस्वीर के सामने प्रार्थना करने वाले लोगों की मदद के लिए उन्हें अक्सर आत्माओं, काले जादू के हमलों, नाराज़ गुरुओं और हर तरह की नकारात्मक ऊर्जाओं से निपटना पड़ता था। रोगग्रस्त की ओर से जीतने के लिए, उन्होंने बचाव पक्ष के वकील के रूप में जीवात्मा, ग्रहों और उनकी किरणों के सामने अपनी दलील पेश की। वह अक्सर अपने पास उपचार के लिए आने वाले लोगों को लाइन में खड़ा कराते और कई बार स्थान पर बुलवाते। गुरुदेव

इन कार्यों को उन लोगों की तपस्या के रूप में आंकते और फिर इसका इस्तेमाल उनके भाग्य को बदलने के लिए करते थे।

ये शब्द बड़ी सहजता से लिखे गए हैं लेकिन घटनाक्रम उतनी सहजता से नहीं हुए हैं! लेकिन जिसने गुरुदेव को दिल से स्वीकारा, उसने उन्हें पा लिया और उसने अपने जीवन के हर छोटे-बड़े पहलू में चमत्कार देखे। गुरुदेव उनके दिल की धड़कन बन गए और उनकी अंतरात्मा को अपनी दिव्यता से सराबोर कर दिया। ▪

'गुरुदेव की ज़िंदगी की कठिनाइयां' शीर्षक वाला पॉडकास्ट महागुरु की उन मुश्किलों की बात करता है, जिनका सामना उन्होंने अपने आध्यात्मिक मिशन के दौरान किया।
इसे सुनिए www.gurudevonline.com पर।

04

दर्शन एवं अभ्यास

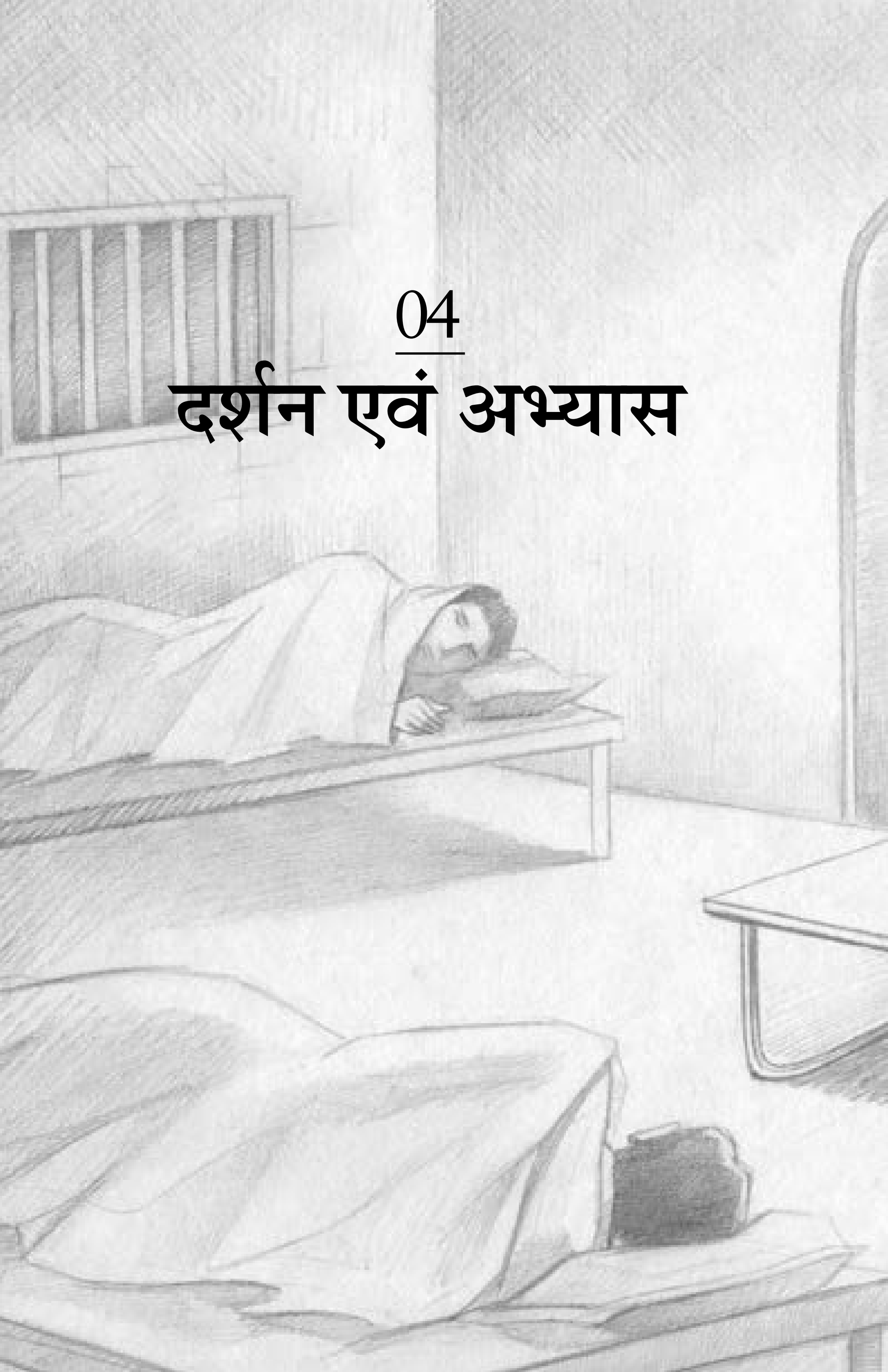

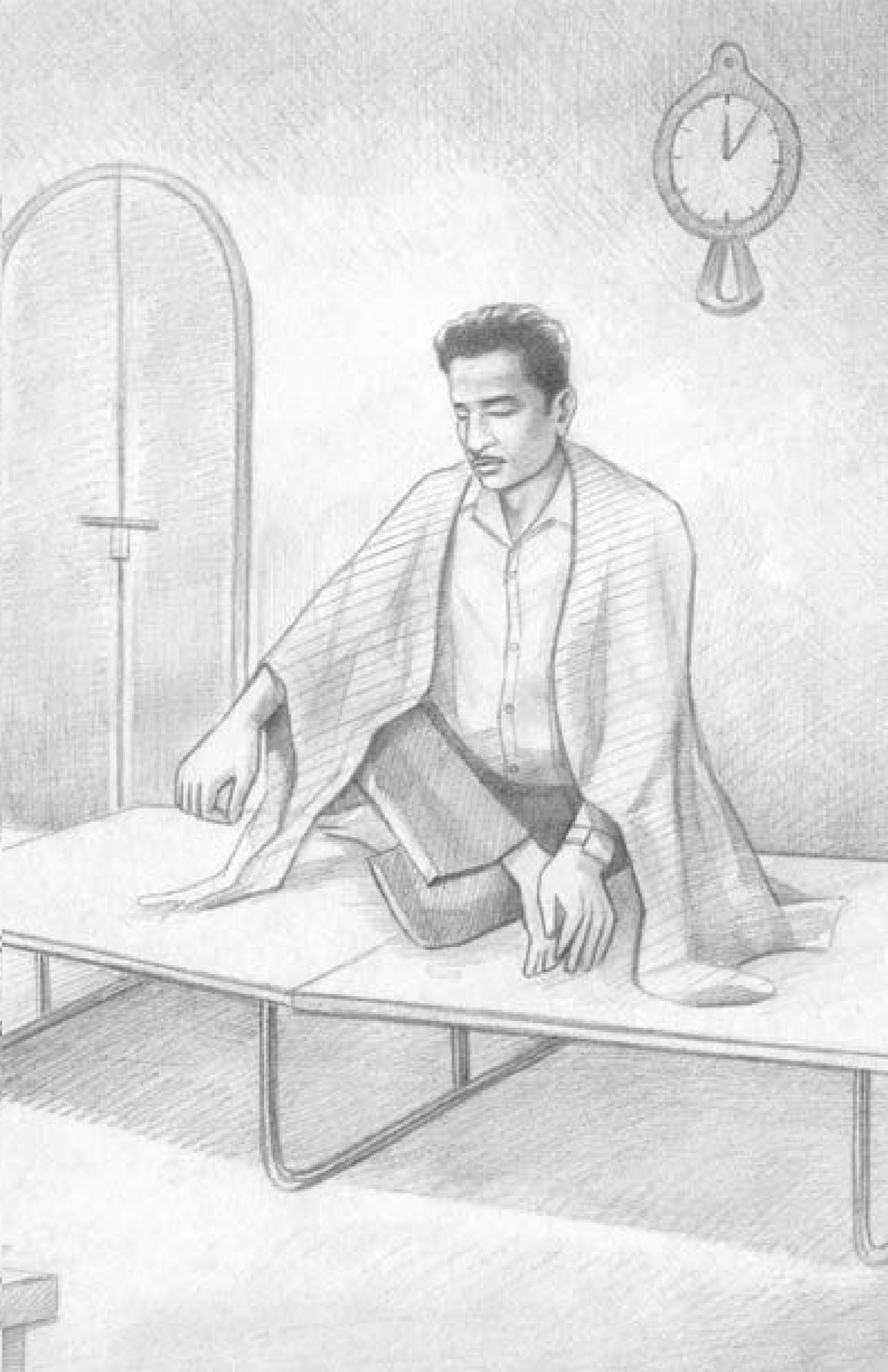

दर्शन एवं अभ्यास

एक से अनेक, अनेक से एक

महागुरु अपनी बातचीत में एक वाक्य अक्सर दोहराते थे, "एक से अनेक, अनेक से एक।"

वे आम तौर पर पंजाबी में बात करते थे, लेकिन उन्होंने एक लाइन में चेतना का सार समझाने के लिए शुद्ध हिन्दी का इस्तेमाल करते हुए ये शब्द कहे।

चेतना का अध्ययन करने के प्रयासों में न्यूरल डेटा, मनोवैज्ञानिक मॉडल और दार्शनिक विश्लेषण(फिलोसोफिकल एनालिसिस) का अध्ययन शामिल है। यदि विज्ञान चेतना की व्यक्तिगत धारणाओं का पता लगाने का एक साधन है, तो आध्यात्मिकता इसमें प्रवेश करने की विधि है। आम धारणा के विपरीत, आध्यात्मिकता का लक्ष्य स्वयं का विकास नहीं है, यह तो अपने अहम् का निस्वार्थ में विघटन है, और ये एहसास है कि जगत वास्तविक नहीं बल्कि सिर्फ एक स्रोत का अक्स है।

स्रोत = सर्वोच्च चेतना

सर्वोच्च चेतना एकमात्र मूल ब्रह्मांडीय पहचान है। बाकी सभी पहचानें उससे अलग हुई हैं। स्रोत कई परमाणु और उप-परमाणु अंशों में विघटित हो सकता है, जितने वह चुनना चाहता है। प्रत्येक अंश एक स्रोत होता है, लेकिन इसकी क्षमता और परिवर्तित पहचान कम होती है।

भले ही अंश एक ही स्रोत से विभाजित होता है, पर प्रत्येक विघटित अंश एक अलग इकाई के रूप में व्यवहार करता है और अपनी उत्पत्ति और शक्ति से अनजान हो जाता है। विघटित होने पर, प्रत्येक अंश अपनी मानसिक शक्तियों का उपयोग अपना संसार रचने के लिए करता है, और अपने अहम्, बुद्धि और मन के भीतर सीमित हो जाता है।

विघटित अंश = जीवात्मा

एक बार जब जीवात्मा अपने आप को अपने मूल से अलग समझने लगती है, तो वह अपनी आत्मिक-शक्ति से अनजान, द्वंद्व का शिकार हो जाती है। धीरे-धीरे, खुद से परे देखने में असमर्थ, वह माया और उसके रचित जाल में फंस जाती है। समय के साथ, जैसे-जैसे जीवात्मा अपनी बनाई दुनिया में गुम होती जाती है, वह अपनी वास्तविकता को भूल जाती है। विघटित अंश के रूप में न तो वह खुद को पहचानती है, और न ही ब्रह्मांडीय विघटन के परिणामस्वरूप विघटित हुए अपने भाई-बंधुओं को। पहचान की प्रक्रिया में जन्म और मृत्यु के कई चक्र हो सकते हैं। आखिरकार जब जीवात्मा जागृत हो कर स्वयं को पहचानती है, तो वह सर्वोच्च चेतना या परम-आत्मा में विलीन होने की इच्छा करती है, और एक बार फिर पूर्णता हासिल करना चाहती है।

अपनी वास्तविकता का ज्ञान और इसकी पूर्णता, उसके अहम् की सच्चाई और अस्तित्व पर सवाल खड़ा करती है। सत्य का ज्ञान हमें आत्म-पहचान से जुड़ी अज्ञानताओं को जानने की ओर ले जाता है। मानव शरीर एक मिट्टी के बर्तन की तरह है जो मिट्टी से बर्तन बनने तक की अपनी यात्रा को देखता है, और अहम् की झूठी पहचान की अनुभूति होने पर वह स्रोत में लौटने की आवश्यकता महसूस करता है। अहम् से एक झटके में अलग नहीं हुआ जा सकता, बल्कि यह कई स्तरों पर

चढ़ने का मार्ग है। इस प्रक्रिया में सामान्य मान्यताओं को तोड़ना, सीखा हुआ भुलाना, दोषपूर्ण आत्म-प्रतिबिंब से अलग होना, और संग्रहित किए गए संस्कारों से स्वयं का शुद्धिकरण शामिल है।

'एक से अनेक, अनेक से एक' परम-आत्मा से अनेक जीवात्माओं में बदलने और अंत में वापस परम-आत्मा में तब्दील होने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

संक्षेप में, यह द्वंद्व, माया, जीवात्मा, परम-आत्मा और मोक्ष के तकनीकी पहलुओं की कहानी है। सरल व्याख्या के बावजूद, किसी भी प्राणी के लिए सभी शंकाओं को किनारे कर, इस अवधारणा की वास्तविकता को समझना सबसे चुनौतीपूर्ण उपलब्धि है क्योंकि यह उपलब्धि स्थायी महत्ता के बारे में है।

परम्परागत रूप से एक सिद्ध गुरु अंधकार को समाप्त करता है। अंधकार अज्ञानता का प्रतीक है। गुरु की कृपा जीवात्मा और परम-आत्मा के बीच सेतु का काम करती है, और दिव्यता से इसकी दूरी कम करती है।

महागुरु के रूप में परम-आत्मा से मिलन के लिए तैयार जीवात्मा स्वेच्छा से इस मायावी संसार में रहने का चुनाव कर सकती है। ऐसी जीवात्मा संसार की स्थिति को सुधारने के लिए स्वेच्छा से मानव रूप में जन्म लेने का विकल्प चुन सकती है।

गुरुदेव की शिक्षाएं और प्रथाएं, उनके दर्शन की व्याख्या करती हैं। उनका उपयोग अपने आध्यात्मिक कम्पस की तरह करें। यदि आप ईमानदारी से प्रयास करेंगे, तो उनकी कृपा भी होगी। ▪

अपने शिष्यों के साथ बात करते गुरुदेव

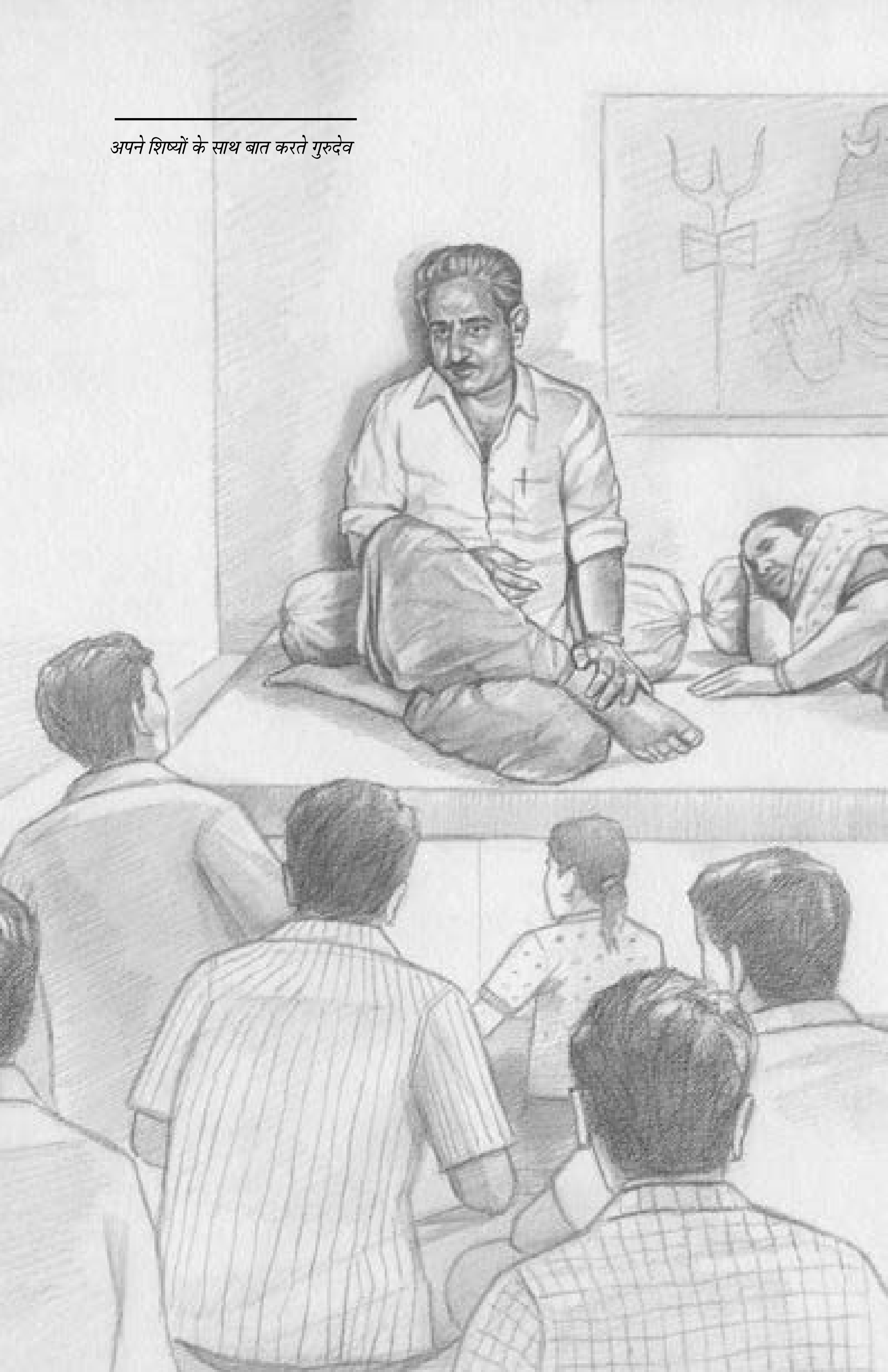

दर्शन एवं अभ्यास

आध्यात्मिक परिवर्तन के चरण

एक सिद्ध गुरु के मार्गदर्शन से 'आदमी से आत्मा' में परिवर्तन आसान हो जाता है। शिक्षक की दो प्राथमिक जिम्मेदारियां होती हैं। सबसे पहले, वह अपने छात्रों के साथ अपना अनुभव और ज्ञान साझा करता है। दूसरा, वह जीवात्मा की बाहरी अभिव्यक्ति बन जाता है, जिसे समय के साथ प्रत्येक छात्र को अपने भीतर स्वीकारना पड़ता है, ताकि वह परम-आत्मा का एहसास कर सके।

जहां भारतीय दर्शन के कुछ विद्यालय आध्यात्मिक विकास के पांच चरण बताते हैं, महागुरु के उपदेश आध्यात्मिक परिवर्तन के छह चरणों की बात करते हैं।

श्रद्धा - आध्यात्मिक अस्तित्व में विश्वास।
विश्वास - जीवात्मा के अस्तित्व में विश्वास।
सेवा - एक जीवात्मा का अन्य जीवात्माओं की बेहतरी की दिशा में प्रयास।
ज्ञान - इस बात की जागरुकता कि जीवात्मा परम-आत्मा का अंश है।
भक्ति - स्वयं और दूसरों में सर्वोच्च की पूजा करने की क्षमता। परम-आत्मा में विलीन होने और अपनी पहचान खोने की प्रबल इच्छा।
दिव्य ज्ञान – ज्ञानोदय; परम-आत्मा का बोध।

जागरूकता और आत्मज्ञान के बीच की दूरी भक्ति द्वारा कम की जाती है। जब कोई अपनी जीवात्मा की पूजा करता है, तो वह अपने भीतर परम-आत्मा के प्रतिरूप की पूजा कर रहा होता है।

यदि आप छह चरणों से परिचित हैं, तो आप अपनी परिवर्तन यात्रा की व्याख्या कर सकते हैं।

श्रद्धा

जब गुरुदेव शिविरों में होते थे, तो दूरदराज के लोग उनसे मिलने आते थे। उन्होंने एक भक्त सुशीला जी को बताया कि भले ही उन्होंने अपना प्रचार नहीं किया, फिर भी दूर-दूर से लोग अपनी परेशानियों को दूर करने के लिए उनसे मदद मांगने शिविर में आते थे। उनकी श्रद्धा उन्हें उनके पास लेकर आती थी क्योंकि वे आश्वस्त थे कि वे जिस गुरु से मिलने आए हैं, वह उनकी मदद करेंगे। गुरुदेव को पता था कि वे लोग गरीब होने के बावजूद, अपना कामकाज छोड़कर, लंबी यात्राएं करके आते थे और शारीरिक परेशानियों के बावजूद कतारों में लगकर अपनी बारी का इंतजार करते थे। महागुरु को लोगों की परिस्थिति का ज्ञान होता था, जो उन्हें पहली मुलाकात में ही लोगों को गंभीर तकलीफों से राहत देने के लिए प्रेरित करता था। श्रद्धा को पुरस्कृत करके महागुरु विश्वास की नींव तैयार कर रहे थे।

जब सुशीला जी ने उनसे सवाल किया कि दिल्ली में उनसे मिलने आए कई लोगों को तत्काल राहत क्यों नहीं मिली, जबकि शिविरों में आए लोगों को तुरन्त लाभ मिला, तो जवाब में गुरुदेव ने उन्हें बताया, "दिल्ली में मुझसे मिलने आने वालों में से कई लोग मेरी शक्तियों को परखने में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं।"

विश्वास

विश्वास की अवधारणा को समझाने के लिए कई रूपक हैं। अगर मैं इसे सरल शब्दों में कहूं तो विश्वास सबसे महत्वपूर्ण निवेशों में से एक है जो कोई भी व्यक्ति कर सकता है, क्योंकि यह निवेश सबसे ज्यादा रिटर्न देता है।

अगर गहरे अर्थों में देखा जाए तो एक गुरु के प्रति विश्वास उन्हें आध्यात्मिक जिम्मेदारी से जोड़ता है, और उनके और विश्वास में निवेश करने वाले के बीच एक प्रभाव क्षेत्र पैदा करता है। चेतना के उच्च स्तर पर होने के नाते, गुरु अपने गुणों, अनुभवों और ज्ञान को निवेशक के साथ साझा करते हैं, चाहे वह उनके अनुयायी, भक्त या शिष्य हों। इस आदान-प्रदान से लाभान्वित होने पर, निवेशक गुरु के प्रभाव और ऊर्जा के प्रति अधिक ग्रहणशील हो जाता है। निवेशक द्वारा इस तरह की ग्रहणशीलता, गुरु के प्रयासों को आधा लेकिन परिणामों को कई गुणा कर देती है। धीरे-धीरे उनके बीच संपर्क बढ़ता है। इस तरीके से, निवेशक स्वयं की दिव्यता महसूस करना शुरू कर देता है।

विश्वास के बारे में समझाते हुए गुरुदेव ने एक बार टिप्पणी की थी, "एक डॉक्टर दवा लिख सकता है, लेकिन जब तक रोगी को डॉक्टर पर विश्वास नहीं होगा, तब तक दवाएं उतनी प्रभावी नहीं होंगी"। महागुरु के रूप में अपने शुरुआती वर्षों में, गुरुदेव लोगों से अपनी दवाइयां छोड़ने, और पूरी तरह से ठीक होने तक आध्यात्मिक उपचार पर भरोसा करने के लिए कहते थे। जिन्होंने यह किया, उन्हें बहुत फायदा हुआ।

जब कानपुर स्थित गुड्डन जी ने बिना दवाइयों के ठीक कर देने वाले गुड़गांव के एक गुरु की चिकित्सा शक्तियों के बारे में सुना, तो उन्होंने

पिछले चौदह वर्षों से ले रही सभी जीवनरक्षक दवाओं को छोड़ने का फैसला किया, इस बात की परवाह किए बिना कि इससे वह अपने जीवन को जोखिम में डाल सकती हैं। उन्होंने इस अज्ञात गुरु के प्रति विश्वास विकसित किया था। गुड्डन जी गुरुदेव से मिलने गुड़गांव आईं। वह न केवल पूरी तरह स्वस्थ हो गईं, बल्कि वर्ष 1976 से वह अपने भाई की कानपुर में स्थान को चलाने में मदद कर रही हैं। संयोग से यह स्थान गुड़गांव के बाहर गुरुदेव का पहला स्थान था।

गुरु के प्रति आस्था बढ़ने से
स्वयं में विश्वास गहरा होता है।

गुरुदेव के प्रति विश्वास विकसित करने में मुझे कुछ समय लगा। वर्ष 1977 में, जब मैं पहली बार उनसे मिलने गया, तो उन्होंने मुझे संधिवात गठिया(रूमेटाइड आर्थराइटिस) से आंशिक रूप से ठीक किया, और गुरुवार के नियमों का पालन करने के लिए कहा। मैंने उन्हें गंभीरता से नहीं लिया क्योंकि मैं नियमों के पालन और दर्द से राहत के बीच का संबंध नहीं समझ पा रहा था। एक साल बाद, गठिया का प्रकोप इतने भयानक रूप में आया कि इसने मुझे दिन में दो बार एक्यूपंक्चर कराने के लिए मजबूर कर दिया। पांच साल बाद, मैंने गुरुदेव से फिर मदद मांगी और इस बार उन्होंने मुझे गुड़गांव स्थान पर सेवा करने के लिए कहा, जो बाद में महीनों और वर्षों के लिए मेरे घर जैसा बन गया।

जब मुझे पहली बार इस बात का एहसास हुआ कि मुझे गुरुदेव के प्रति विश्वास है, तो मैं अपनी पत्नी को उनसे मिलवाने ले गया। मैं उनके सामने बैठा था और मेरी आंखों से आंसू झर-झर बह रहे थे। उन्होंने मेरी तरफ देखा और मुझे शांत करने के लिए अपना रूमाल देते हुए स्नेह भरे स्वर में कहा, "अपनी मां से लंबे समय बाद मिलने पर ऐसा होना स्वाभाविक है"। उन दुलार भरे क्षणों में उन्होंने खुद को मां की भूमिका

में रखा था। वर्षों बाद, अपने खेत में अपनी पसंदीदा खाट पर आराम करते हुए उन्होंने मुझे एहसास कराया कि मैंने आध्यात्मिक जीवन में वर्ष 1982 में प्रवेश किया था, हालांकि मैं उनसे पहली बार वर्ष 1977 में मिला था। यह स्पष्ट था कि मैंने आध्यात्मिक विकास के पांच साल बर्बाद कर दिए शायद इसलिए कि उन खोए हुए वर्षों में मेरी बुद्धि ने मेरे विश्वास की अभिव्यक्ति को रोक दिया था जो संभवतः मेरी गुरुदेव के साथ पहली मुलाक़ात में विकसित हुई थी। उस मुलाकात के दौरान, उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया था, "तुम जो कल्पना कर सकते हो, तुम्हें उससे कहीं ज्यादा मिलेगा", और मैं इस बात को मानता हूं कि मेरे गुरु की कही गई हर बात हमेशा सच हुई है!

वे भाग्यशाली हैं जो तुरंत विश्वास विकसित करते हैं। वे श्रद्धा के पड़ाव को पार किए बिना अपने आध्यात्मिक परिवर्तन के पथ पर तेजी से आगे बढ़ते हैं। आखिरकार विश्वास परिवर्तन के अगले पड़ाव के लिए गति प्रदान करता है और अन्य पड़ावों को सहारा देने वाले बल के रूप में कार्य करता है।

सेवा

आध्यात्मिकता के शब्दकोश में सेवा अत्यंत महत्व वाला सबसे छोटा शब्द है। स्वयं की यात्रा में सेवा प्रधान है क्योंकि दूसरों की सेवा करते हुए आप वास्तव में अपने सर्वोत्तम हितों की सेवा करते हैं।

महागुरु ने अपना समय लोगों से मिलने, उन्हें ठीक करने और उनका आध्यात्मिक रूप बदलने में बिताया। वह अपने शिष्यों से अपनी सहायता करवाते, उन्हें शक्तिशाली मंत्र सिखाते, और उन्हें आध्यात्मिक और मानसिक रूप से विकसित करते। जब उन्हें लगता कि वे पर्याप्त

प्रज्ञा को आशीर्वाद देकर उसके स्वस्थ होने की प्रक्रिया को गति देते गुरुदेव

रूप से विकसित हो गए हैं, तो वह उनमें से कुछ शिष्यों को लोगों को स्वस्थ करने की शक्तियों से अभिमंत्रित करते और साथ ही अन्य असंख्य छोटे-बड़े तरीकों से लोगों की सेवा करने के लिए कहते।

उन्होंने भारत और विदेशों के विभिन्न हिस्सों में 100 से अधिक आध्यात्मिक उपचारक बनाए। उनके शरीर त्यागने के दशकों बाद भी हज़ारों लोग उनकी कृपा पाने के लिए उनकी समाधि पर जाते हैं। इसी वजह से, देश भर में हज़ारों लोग गुरुदेव द्वारा स्थापित स्थानों पर भी उपचार के लिए जाते हैं। हमेशा सेवा और सहायता के लिए उपलब्ध, गुरुदेव के शिष्य न तो आर्थिक लाभ लेते हैं और न ही सेवा प्रदान करने के बदले एहसान जताते हैं।

सेवा बहुत त्याग मांगती है क्योंकि इसमें अपनी आवश्यकताओं की अपेक्षा दूसरों की जरूरतों को प्राथमिकता देनी होती है। जब प्रदीप जी की बेटी प्रज्ञा सीढ़ियों से गिर गई और सिर पर लगी चोट के कारण बेहोश हो गई, तो डॉक्टरों ने मामले के गंभीर होने के संकेत दिए। इसलिए प्रदीप जी ने उसे गुरुदेव के पास गुड़गांव ले जाने का फैसला किया। हालांकि ऐसा करने से पहले उन्होंने एक युवा कैंसर रोगी के साथ समय बिताया, जिसके पिता ने स्वप्न में प्रदीप जी को अपने बेटे का इलाज करते हुए देखा था। अंत में, जब कुछ घंटों के बाद, प्रदीप जी और उनके परिवार ने अपने गुरु से मुलाकात की, तो गुरुदेव ने मुस्करा कर प्रज्ञा को आशीर्वाद दिया। उनके स्पर्श ने उसके स्वस्थ होने की प्रक्रिया को तेज कर दिया।

'दूसरों की सेवा करने में आप खुद की सेवा करते हैं' का सरल फॉर्मूला कई स्तरों पर काम करता है। आप जिनकी सेवा करते हैं उनकी शुभकामनाएं या आशीर्वाद आपके ऊर्जा बैंक में जुड़कर आपकी आभा

बढ़ाने का काम करते हैं। इसके अलावा किसी प्रकार की सेवा में लगाए गए समय, विचार और प्रयासों की भरपाई कर्म के नियमों द्वारा की जाती है। सेवा करने से आपका कोई नुकसान नहीं होता, बल्कि आपके अच्छे कर्मों में कई गुना वृद्धि का लाभ होता है। सेवा आपको अच्छा महसूस कराती है और आपका आत्म प्रतिबिंब बढ़ाती है। बेहतर आत्म प्रतिबिंब, मृत्यु के बाद आत्म-निर्णय को पुरस्कृत बनाता है क्योंकि परिवर्तनकारी प्रक्रिया के दौरान आपकी आत्मा स्वयं को उच्च स्तर पर देखती है। मृत्यु के बाद भी कई शक्तिशाली आत्माएं लोगों की सहायता और उपचार करना जारी रखती हैं।

गुरुदेव अक्सर कहते थे कि वे लोगों की सेवा करने के लिए कुत्ते को भी उपचार की शक्ति प्रदान कर सकते हैं। वफादार कालू, जो गुड़गांव स्थान पर रहता था, वहां ठहरने वाले लोगों के घावों को चाटकर ठीक कर सकता था। इसी तरह उपचारात्मक गुणों वाले पौधों का उपयोग कई औषधियों में होता है। सेवा व्यावहारिक अध्यात्म का एक रूप है, जिसे समस्त प्राणियों ने अपनाया है।

***जब आप दूसरी जीवात्मा की सेवा करते हैं,
तो आप अपनी जीवात्मा की सेवा कर रहे होते हैं।
इसलिए आप जिसे बदलने के लिए चुनते हैं,
वह आपको बदल देता है।***

ज्ञान

आध्यात्मिक परिवर्तन का चौथा पड़ाव है ज्ञान जो बाहरी और आंतरिक स्रोतों से आता है। देखने, पढ़ने, सुनने, बोलने, चखने और स्पर्श आदि रूपों में ज्ञान को आत्मसात करने में आपकी इंद्रियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कभी किसी चीज़ से और कभी-कभी कहीं से भी अचानक

आपके दिमाग में विचार उभर आते हैं। अभिभावकों, शिक्षकों और गुरुओं के साथ बातचीत से भी विचार पैदा हो सकते हैं। कभी-कभी जागृत अवस्था की तुलना में, स्वप्न और दृश्य कहीं ज्यादा वास्तविक लगते हैं। वे उन पहलुओं का खुलासा करते हैं जो सचेत मन नहीं कर सकता। जब अंतर्ज्ञान विकसित होता है, तो आपकी वाणी सच होने लगती है। यह सभी बातें आपको यह विश्वास दिलाती हैं कि आपके भीतर देवत्व है। आपकी अलौकिकता प्रकाश में आने लगती है, रंग भले ही धुंधले हों।

अधिकांश लोग इस चरण में खुद से बहुत प्रभावित होते हैं। वह यह नहीं जानते कि वे जो कुछ देख या समझ रहे हैं, वह महज़ दिव्य ज्ञान की झलकियां हैं। ज्ञान संभाल पाना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि इसे खोजना। ज्ञान से आत्मज्ञान तक के सफर में अहम्, अभिमान, कर्ता का भाव और घमंड भारी रुकावटें बन सकते हैं।

वास्तव में ज्ञान न केवल जागरुकता है, बल्कि अनुभूतियों की एक श्रृंखला है। यह आपको हठधर्मिता के दबाव से मुक्त करता है, लेकिन आत्म-परिवर्तन की आतुरता को बढ़ाता है और भक्ति की ओर आकर्षित करता है।

भक्ति

श्रेष्ठ हिंदू धर्मग्रंथ भक्ति को श्रद्धा और इष्ट देवता के प्रति सच्ची लगन आसक्ति के रूप में संदर्भित करते हैं। भक्त अपने भगवान के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए सखा, अनुयायी या संतान भाव को अपना सकता है और भगवान को दोस्त, गुरु या माता-पिता का रूप दे सकता है। इस प्रकार की भक्ति भावनात्मक होती है।

गुरुदेव ने हमें भक्ति के दूसरे विकल्प के लिए प्रेरित किया। वह भक्ति को स्वयं की भावहीन पूजा मानते थे। उनके लिए केवल एक ही संबंध था जो 'भीतर वाले मैं' का 'सर्वोच्च मैं' के साथ था। जब तक यह दो 'मैं' एक दूसरे से नहीं जुड़ते हैं, तब तक आध्यात्मिक परिवर्तन अधूरा होता है। इसलिए भक्ति द्वंद्व पर विजय पाने और एकीकृत चेतना को साकार करने की एक प्रक्रिया है।

उनकी सलाह, "यदि आप दुःख को नियंत्रित करना चाहते हैं, तो आपको पहले सुख को नियंत्रित करना सीखना होगा" ने मेरी भक्ति की चार साल की यात्रा को दिशा प्रदान की। जल्द ही द्वंद्व पर विजय पाने की मेरी तलाश ने मेरे व्यक्तित्व को ध्वस्त कर दिया। मैं एक बातूनी, दिखावा करने वाले, अभिमानी और लोकप्रिय व्यक्ति से मितभाषी और गंभीर हो गया, और स्वयं को विलासिता से दूर रखने लगा। मैं कभी शोमैन हुआ करता था और इसके बाद मैं सामाजिक वैरागी की तरह व्यवहार करने लगा! जैसे-जैसे मैं अपनी छद्म पहचान से बाहर आने लगा, प्रशंसाओं ने आत्मविश्वास को रास्ता दिया। मैं हर दिन लगभग छह घंटे मंत्रों का जाप करता और कुछ में सिद्ध हो गया। शिव-परिवार की शक्तियां मेरे हाथों पर प्रतीक के रूप में उभर आईं। महागुरु से प्राप्त इन सिद्धियों ने उन चार वर्षों को पूर्णता के वर्ष बना दिए।

इस परिवर्तन से मन पर नियंत्रण और बुराइयों से मुक्त होने में सहायता मिली। इस अवधि के अंत में, गुरुदेव ने मुझे मुंबई में स्थान खोलने और चलाने की ज़िम्मेदारी देते हुए कहा, "अब तुम ज्ञान साझा करने और दूसरों की सेवा करने के लिए तैयार हो।"

जैसे ही भक्त का मन संवेदनाओं के अडिग रहने और भावनाओं की शुद्धता की स्थिति में प्रवेश करता है, वह बौद्धिक प्रश्नों से मुक्त हो जाता है और आत्मज्ञान खुद को अभिव्यक्त करना शुरू कर देता है।

दिव्य ज्ञान

गहन भक्ति से आज्ञा-चक्र या तीसरा नेत्र खुल सकता है। तीसरी आंख खुलने पर बहुत सी चीजें संभव हैं। जब मैंने गुरुदेव को अपनी तीसरी आंख खुलने के बारे में बताया, तो उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और उसे मेरी पीठ के निचले हिस्से तक ले गए। जब वह ऐसा कर रहे थे, तो मुझे पता था कि वह सहज रूप से मेरी तीसरी आंख को बंद करने के लिए मेरी कुंडलिनी नीचे कर रहे हैं। उन्होंने यह कहते हुए अपनी कार्रवाई की व्याख्या की, "तुम इसका आनंद लेना शुरू कर दोगे और इस स्तर पर ही अटक जाओगे, आगे नहीं बढ़ पाओगे"। कई साल बाद, जब मैं ध्यान में था, मुझे पारलौकिकता(ट्रांसेंडेंस)की प्राप्ति हुई। मेरे सिर के पीछे, मेरी नाक के स्तर पर, एक पतले कागज जैसा कुछ फटा और अचानक मैं देख सका कि मेरे पीछे क्या है। प्रतीकात्मक रूप से मुझे लगता है कि इसे चौथी आंख का खुलना कहा जा सकता है। चौथी आंख कुछ मिनट के लिए खुली, मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि यह कैसे खुली और कैसे बंद हो गई। यह शायद मुझे उच्च चेतना का आभास कराने का गुरुदेव का तरीका था।

हालांकि महागुरु ने चौथी आंख की निरंतरता की अनुमति नहीं दी, लेकिन मेरा यह इकलौता अनुभव उन लोगों को बताने के लिए काफी है जिन्हें अभी तक यह अनुभव नहीं हुआ है। दिव्य ज्ञान की अवस्था में प्राप्त होने वाली शक्तियों के आधार पर व्यक्ति लगातार सचेत रह

सकता है, अतीन्द्रिय हो सकता है, खुद के ऊर्जा निकायों का निर्माण कर सकता है और एक साथ दो जगहों पर उपस्थित रह सकता है। गुरुदेव की महाशक्तियों की सूची बहुत लंबी है जिनका वे इच्छा के अनुसार आह्वान कर सकते थे।

दिव्य ज्ञान की अवस्था में व्यक्ति की चेतना इच्छाशक्ति के इर्द-गिर्द घूमती है। जब महागुरु ने अपने शिव-स्वरूप को जागृत किया, तो उनकी आंखों का रंग हल्का हो गया और उनके चेहरे के भाव चंचल से गंभीर हो गए। उनकी आवाज भारी हो गई जैसे भीतर की गहराई से आ रही हो। हमें तुरंत एक शक्तिशाली आत्मा की उपस्थिति का एहसास हुआ, और हैरानी और श्रद्धा भाव से डर भी महसूस हुआ।

गुरुदेव जब भी स्वयं में सर्वोच्च का उल्लेख करते थे, तो उनके शब्द आमतौर पर स्पष्ट होते थे। "मैं इसकी देखभाल करूंगा" और "जब मैं यहां हूं, तो चिंता क्यों?" जैसे शब्दों में झलकती उनकी प्रतिबद्धता बहुत सुकूनदायक थी। गुरुदेव के साथ अपनी पहली मुलाकात के बाद सुरेश कोहली जी को हर रात उस अलमारी पर गुरुदेव की होलोग्राफिक छवि दिखाई देने लगी थी जो आंशिक रूप से घर के मंदिर में परिवर्तित की गई थी। सुरेश जी के ध्यान शुरू करते ही यह प्रकट होती और रुकते ही गायब हो जाती। ऐसा लगातार सात रातों तक हुआ, लेकिन आठवीं रात को नहीं हुआ। जब सुरेश जी ने गुरुदेव से पूछा कि उन्होंने प्रकट होना क्यों बंद कर दिया है, तो महागुरु के शब्द थे, "अब आप जब भी मेरी छवि देखेंगे, तो अपने आप को याद दिलाएं कि आपने ईश्वर से मुलाकात की है"। यह कहते समय उनकी वाणी में न तो दिखावा था और न ही अभिमान, बस उनके स्तर की चेतना थी।

महागुरु मंदिरों के अंदर बहुत कम जाते थे क्योंकि वह अपने ऊर्जा

समीकरणों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे, लेकिन वह कभी-कभी अपने शिष्यों को उनके बताए गए मंदिरों की यात्रा करने के लिए कहते थे। बद्रीनाथ मंदिर के बाहर खड़े होकर उन्होंने मुझे अंदर जाने और वहां स्थापित देव की मूर्ति को 'बड़े भाई' के रूप में संबोधित करते हुए गले लगाने के लिए कहा। जब मैं उन्हें यह बताने के लिए बाहर आया कि मैंने यह कर लिया है, तो उन्होंने मुझे फिर से वापस जाने के लिए कहा क्योंकि मैंने गलत देवता को गले लगा लिया था! मैं घबराया कि एक मूर्ति को गले लगाने के लिए मुझे फिर से कतार में लगना पड़ेगा जिसके लिए मैं तैयार नहीं था! इसलिए बहुत ही सहजता से, एक बच्चे की तरह, मैंने उनका हाथ पकड़ा और उन्हें अपने साथ अंदर ले गया। जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, वैसे-वैसे दोनों तरफ से लंबी कतारें छंटती चली गईं और हमारे लिए एक सीधा रास्ता खुल गया। कुछ ही मिनटों में हमने खुद को मंदिर के इष्टदेव के सामने पाया। महागुरु ने मेरी ओर देखा और कहा, "अब तुम वही करो जो तुमसे कहा गया है"।

ज्ञान पर बिट्टू जी की जिज्ञासा का जवाब देते हुए महागुरु ने उनसे कहा, "मेरे सभी शिष्यों के भीतर ज्ञान है, भले ही वे सचेत रूप से इसके बारे में नहीं जानते हैं। जरूरत पड़ने पर ज्ञान अपने आप प्रकट हो जाएगा"। मेरा व्यक्तिगत अनुभव गुरुदेव की बातों की पुष्टि करता है। मुंबई में स्थान खोलने के तुरंत बाद, रात में एक जिन्न ने मुझ पर हमला किया। जब मैंने देखा कि वो जिन्न बिस्तर पर पड़े मेरे शरीर का गला घोंट रहा है, तो मैं एक तरफ लुढ़क गया। जैसे ही उसने मुझे यह करते देखा, वह मुझ पर हमला करने के लिए दोबारा आया। मुझे सहज ही पता चल गया कि महागायत्री मंत्र का उपयोग कैसे करना है और अपने ऊपर हुए हमले से कैसे बचना है!

जीवात्मा की पहचान या अहम् का पूर्ण उन्मूलन, एक क्रमिक

परिवर्तनकारी प्रक्रिया है, और इस प्रक्रिया में वर्ष नहीं बल्कि कई जीवन काल लग सकते हैं! एक लोक से उच्चतर लोक तक पहुंचने के लिए आध्यात्मिक रूपांतरण आवश्यक है। उच्चतम लोक पर पहुंचने के बाद कुछ भी मायने नहीं रखता। उस स्थिति में नश्वरता का बोध होता है और व्यक्ति को पता चलता है कि 'कुछ भी नहीं है'। यही परम ज्ञान है।

इस अंतिम चरण की अंतिम अवस्था आपकी जीवात्मा का परम-आत्मा में विलय है। यह विलोपन मोक्ष प्राप्ति का आधार है। यह लगभग असंभव मालूम होता है लेकिन तकनीकी रूप से देखा जाए तो ये मुमकिन है!

जब आप अपनी परिवर्तन यात्रा में आगे बढ़ते हैं, तो यह आभास होना आवश्यक है कि यह छह चरण ना तो रैखिक(लीनियर) हैं और न ही समानांतर हैं। वे एक दूसरे से जुड़कर कार्य करते हैं। श्रद्धा और विश्वास के प्रथम दो चरण परिवर्तन की प्रक्रिया का आधार और बल हैं। सेवा, ज्ञान और भक्ति के चरण आपस में मिले होते हैं और एक दूसरे पर निर्भर हैं। भक्ति, शक्ति की ऊर्जा को हमारे भीतर संचारित करती है। सेवा इसे बढ़ाती और गति प्रदान करती है। ऊर्जा का विकास कुंडलिनी के उदय का ज़रिया बन जाता है। जब ये उदय आज्ञा चक्र तक पहुंचता है, तब ज्ञान साकार होता है। दिव्य ज्ञान का अंतिम चरण तभी सामने आता है जब पिछले सभी चरण पूरे हो जाते हैं। ▪

दर्शन एवं अभ्यास

आध्यात्मिक परिवर्तन के उपकरण

आध्यात्मिक परिवर्तन के सफर में कई पड़ाव आते हैं। इस सफर में कुछ खास उपकरणों या औज़ारों की जरूरत होती है। ये उपकरण नलसाजी (प्लम्बिंग) की तरह काम करते हुए पहचान की सभी परतों को पूरी तरह मिटाकर आपको चेतना के शिखर पर पहुंचा देते हैं।

गुरुदेव के आध्यात्मिक नुस्खे के तीन उपकरण हैं,

1. **ऊर्जा स्थिरीकरण के लिए गुण**
2. **ऊर्जा सक्रिय करने के लिए मंत्र**
3. **ऊर्जा को कई गुना बढ़ाने के लिए सेवा**

यदि आप इस प्रक्रिया का प्रयोग पूरी कुशलता से नहीं करते हैं, तो परिवर्तन की प्रक्रिया को पूरा करना मुश्किल है। उपयुक्त उपकरण केवल उतने ही उपयोगी होते हैं जितना कि उन्हें चलाने के लिए ज्ञान। गुरुदेव हमारे प्रति बहुत सहज थे। जब उन्होंने हमें उड़ना सिखाया, तो उन्होंने ऊंचाई और गति मापने के यंत्रों का नियंत्रण हमारे हाथों में दे दिया। हालांकि एक एयर ट्रैफिक कंट्रोलर की भांति उन्होंने उड़ान भरने से लेकर जमीन पर उतरने तक हमारा संपूर्ण मार्गदर्शन किया।

गुण

प्रकृति, सर्वोच्च चेतना की भौतिक अभिव्यक्ति है। कोई भी रचनात्मक पदार्थ, चाहे वो सजीव या निर्जीव हो, तीन प्रकार की सूक्ष्म ऊर्जा या गुण से बना होता है। यह गुण तमस, रजस और सत्व हैं। प्रत्येक गुण के विशिष्ट लक्षण होते हैं जो व्यक्ति को उसके अहम् से बांधते हैं और परम-आत्मा से उसकी पहचान को सीमित करते हैं। हर किसी में ये गुण लगातार एक दूसरे से रूबरू होते हैं, और किसी भी समय तीन में से एक अन्य दो पर हावी हो जाते हैं। जीवात्मा में गुण मिश्रण की परस्पर क्रिया, स्थूल(भौतिक) और सूक्ष्म स्तरों पर जीवात्मा के स्वभाव और व्यक्तित्व को निर्धारित करता है। जिस प्रकार एक चित्रकार तीन प्राथमिक रंगों (लाल, नीले और पीले) से लाखों संयोजन बना सकता है, उसी तरह गुण मिश्रण के एक से अधिक संयोजन हो सकते हैं।

गुण	विशिष्ट लक्षण	फलस्वरूप	परिणाम
तमस	जड़ता सुस्ती संदेह	नकारात्मक भावनाएं सुस्ती अवसाद जुनून नींद निष्क्रियता	स्वयं और दूसरों के प्रति उदासीनता
रजस	महत्वाकांक्षा इच्छा भावनाएं कार्य	व्यक्तिगत उपलब्धियों पर केन्द्रित होना क्रोध, लोभ, मोह, वासना और अहंकार अतिसक्रियता	स्वयं के लिए सहानुभूति और दूसरों के लिए उदासीनता दुख
सत्त्व	शांति सादगीपूर्ण जीवन उच्च विचार अतिसूक्ष्मवाद	इंद्रियों पर नियंत्रण मितव्ययिता कृतज्ञता निश्चिंत गतिविधियां	स्वयं और दूसरों के लिए सहानुभूति आनंद

आपको अपने शरीर-मन-आत्मा के गुणों के मिश्रण में उस स्तर तक संतुलन लाना चाहिए कि रजस और तमस धुंधले पड़ जाए और सत्त्व उभरकर सामने आ जाए। तमस को सत्त्व में परिवर्तित होने से पहले रजस में बदलना पड़ता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि रजस की गतिशील क्रिया तमस की जड़ता को तोड़ने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती है। इंद्रियों पर नियंत्रण और भावनाओं के मोहजाल से दूर रहने का अभ्यास करके रजस को सत्त्व में रूपांतरित किया जा सकता है। विडंबना यह है कि जब वैराग्य सत्त्व को बढ़ाता है, तो मोह-माया से दूर होने का आनंद अपने आप में एक बंधन बन जाता है।

जो लोग लंबे समय तक सात्विक अवस्था में रहते हैं वे बहुत अधिक सेवा करते हैं। हालांकि अपनी सेवा को अपने गुरु या अपनी जीवात्मा को समर्पित करने की बजाय, उनमें उसका श्रेय लेने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है और वे कर्ता भाव से बंध जाते हैं। इसलिए, सेवा करने वाला 'मैं' परम-आत्मा के 'मैं' से अलग हो जाता है। सत्त्व को पार करके ही अपने अस्तित्व के इस दोहरेपन को समाप्त किया जा सकता है।

मल्होत्रा जी को अपने पहले शिष्य के रूप में स्वीकार करने के बाद, गुरुदेव ने उस समय तक की अर्जित सिद्धियों को त्याग दिया। उन्होंने हरिद्वार में हर की पौड़ी पर गंगा नदी में डुबकी लगाकर उन्हें विसर्जित किया, और अपनी सिद्धियों का विसर्जन कर उन्होंने सांसारिक मोह के अंतिम अवशेषों को धो डाला। इस अंतिम त्याग ने गुरुदेव को सामान्य साधक से महागुरु में परिवर्तित कर दिया।

यहां मेरा प्रयास आपको केवल महागुरु के दर्शन से परिचित कराना है ना कि स्पून-फीड करना। मुझे सत्त्व से व्यावहारिक उत्थान की व्याख्या करने के लिए, कर्म के पहलुओं में से एक को स्पष्ट करना होगा, और

वह पहलू है स्वीकृति। संतुलित सोच न तो नकारात्मक कर्मों से बचना है और न ही सकारात्मक कर्मों से जुड़े रहना, बल्कि हर कार्य को अपने कर्तव्य के रूप में करना है। यदि ऐसा होता है, तो न तो तमस की उदासीनता होगी और न ही रजस की पीड़ा या सत्त्व का सुख। जब तक आपको सत्त्व की अनुभूति नहीं होती, तब तक आप ज्ञान और भक्ति के चरणों में फंसे रहते हैं। दिव्य ज्ञान के चरण में पहुंचने के लिए, गुणों को स्थिर और इच्छानुसार तैनात किया जाना चाहिए।

आइए इस अवधारणा को समझने के लिए एक बुनियादी उदाहरण लेते हैं। कई लोग जागते रहने के लिए कॉफी या चाय पीते हैं। हालांकि यदि आप अपने गुणों का प्रबंधन ईमानदारी से करना सीख लें, तो आपको उत्तेजक पदार्थों की जरूरत नहीं होगी, बल्कि जब आप सोना चाहेंगे तो तमस और जागृत रहने के लिए रजस को आमंत्रित कर सकेंगे।

महागुरु से ज्ञान प्राप्त करने में वर्षों बिताने वाले एक उत्साही भक्त, वीरेंद्र जी के शब्द महागुरु के गुणों पर प्रकाश डालते हैं, "गुरुदेव का आत्म-नियंत्रण अद्भुत था। उन्हें कुछ भी आकर्षित नहीं कर सकता था, न धन, न महिलाएं और न ही प्रशंसा। वह किसी भी चीज से प्रभावित नहीं होते थे। क्या आप 18 से 20 घंटे तक, बिना थकान या बेचैनी दिखाए, लोगों की कई किलोमीटर लंबी कतारों का सामना करने की कल्पना कर सकते हैं? गुरुदेव अंदर आते, एक गिलास पानी पीते, 5 मिनट बैठते और फिर लोगों को आशीर्वाद देने के लिए बाहर चले जाते। जिस तरह से उनके आशीर्वाद फलीभूत होते, वह चमत्कार था!"

आपकी मृत्यु के समय का गुण मिश्रण आपके बाद के जीवन का पाठ्यक्रम बन जाता है जिसके आधार पर आपको लोकों के कई आयामों में से एक में निवास या अधिवास दिया जाता है।

मंत्र

मायावी बुड्ढे बाबा ने गुरुदेव से अपनी पहली मुलाकात में ही उनके द्वारा जपे जा रहे मंत्र को पूरा किया। उनके द्वारा जोड़े गए आठ शब्दों ने गायत्री मंत्र को महागायत्री में बदल दिया। विस्तारित मंत्र ने गुरुदेव की आध्यात्मिक प्रगति को गति दी, और वह मंत्र उनकी कई उपलब्धियों का मार्गदर्शक बन गया।

गुरुदेव के मंत्र गुप्त थे और सिर्फ उनके शिष्यों और भक्तों के लिए ही होते थे। जब तक कोई व्यक्ति अधिकृत न हो जाए, उसे मंत्र नहीं दिया जा सकता था क्योंकि किसी को मंत्र देते समय व्यक्ति अपनी ऊर्जा का एक हिस्सा भी उसे देता है। मंत्र देने वाला, प्राप्त करने वाले से आध्यात्मिक रूप से जुड़ जाता है, और प्राप्तकर्ता के आध्यात्मिक विकास की जिम्मेदारी लेता है।

तकनीकी रूप से मंत्र ध्वनि ऊर्जा के सिवाय कुछ नहीं है। ध्वनि ब्रह्मांड की मौलिक ऊर्जा है और इसलिए हर चीज की एक आवृत्ति(फ्रीक्वेन्सी) होती है जिस पर वह स्वाभाविक रूप से कंपन करती है। प्रत्येक संरचना में एक अनूठा कंपन है, और प्रत्येक कंपन की एक अनूठी संरचना। मंत्र अभ्यास आपके भीतर की सूक्ष्म ऊर्जा को सक्रिय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ताकि आपका प्राकृतिक कंपन मंत्र की शक्ति के कंपन के साथ तालमेल स्थापित कर सके।

मंत्र या तो एक शब्द है या एक साथ कई शब्दों का संयोजन है जिसका पाठ वांछित इरादे के साथ बार-बार किया जाता है। चूंकि प्रत्येक शब्द एक अनूठी आवृत्ति वाली ध्वनि तरंग है, इसलिए जब किसी मंत्र के सभी शब्दों का पाठ किया जाता है, तो वह पूरा मंत्र एक शक्तिशाली कंपन

पैदा करता है। इसी कारण से, मंत्र का सही उच्चारण इसकी शक्ति को बढ़ाने में सहायक होता है।

लगातार मंत्र जाप करने से एक समय ऐसा आता है जब आपका शरीर मंत्र की आवृत्ति पर कंपन करने लगता है और उस समय आप मंत्र में सिद्ध माने जा सकते हैं। उस अवस्था में मंत्र की प्रकृति और उसकी शक्तियां आपके भीतर जागृत हो जाती हैं, और यह आपके लिए आत्म-सुरक्षा, उपचार और दूसरों की मदद करने सहित कई उद्देश्यों के लिए एक उपकरण के रूप में उपलब्ध हो जाती है।

गुरुदेव ने लगभग आठ मंत्रों पर काम किया, जिनमें से कुछ दो या तीन मंत्रों का संयोजन थे। महागुरु के मंत्र नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने, मृत्यु को रोकने, जीवन को लम्बा करने और चेतना के उच्च रूपों में प्रवेश करने के लिए सबसे शक्तिशाली ऊर्जाओं का आह्वान करते हैं।

गुरुदेव का सुझाव था कि किसी भी मंत्र का ज़ोर से पाठ न करें। मंत्रों का जाप मन में ही करना चाहिए क्योंकि शरीर के अंदर की ध्वनि बाहर की बजाय शरीर के अंदर ही गूंजती है। उनकी सलाह थी कि हमें अपनी दिनचर्या के दौरान भी मन में अजपा जप निरंतर करते रहना चाहिए। प्रतिदिन उठते, बैठते, लेटते, रसोई में काम करते समय, वाहन चलाते समय यथासंभव मंत्रों का जाप करना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि हम सोने से पहले मंत्र जाप करें। सुप्त अवस्था में ऐसा करने से अवचेतन मन में मंत्र तब तक चलता रहेगा जब तक हम जाग नहीं जाते। मंत्र की पुनरावृत्ति को बढ़ाने के लिए यह उनका एक सुझाव था।

मंत्र अभ्यास

महागुरु ने नियमित मंत्र अभ्यास के दौरान तीन स्थिरांक सुझाए। पहला, आसन या अभ्यास का स्थान, दूसरा अभ्यास का समय और तीसरा बिस्तर के पास एक गिलास में जल। ऐसी तकनीक का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि मानव शरीर मंत्र के ऊर्जा कंपन को बेहतर ढंग से खुद में समाहित करे और वातावरण में बहुत कम फैले।

आसन (सीट/स्थान)

मंत्र-आधारित ध्यान के दौरान, मंत्रों का उच्चारण किसी विशिष्ट आसन या सीट पर बैठकर किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, महामृत्युंजय मंत्र का जाप कुशा(हलफा) घास की चटाई पर बैठकर करना सर्वोत्तम है। जल स्रोत या शायद बाथटब में बैठकर महागायत्री मंत्र का जाप करने से सर्वोत्तम परिणाम मिलते हैं। चामुंडा मंत्र का जाप जंगल में किसी सुविधाजनक स्थान पर या हिरण की खाल की चटाई पर बैठकर करना चाहिए। मंत्रों के प्रकार के आधार पर, आसन के कई परिवर्तन और संयोजन सुझाए गए हैं। चूंकि आधुनिक दौर में घास या हिरण की खाल के आसन मिलना मुश्किल है, इसलिए आसानी से उपलब्ध उचित विकल्पों का उपयोग किया जाना चाहिए, जैसे सूती चटाइयां, चादरें, ब्लैंकेट इत्यादि।

हर आसन के अपने फायदे हैं। उदाहरण के लिए, कुशा घास का आसन आभा के नुकसान को कम करता है, जिससे यह मंत्र अभ्यास के लिए आदर्श साथी बन जाता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस आसन का उपयोग करते हैं, बस यह सुनिश्चित करें कि आप अपने दैनिक ध्यान के लिए हमेशा एक ही आसन का उपयोग करें। गुरुदेव

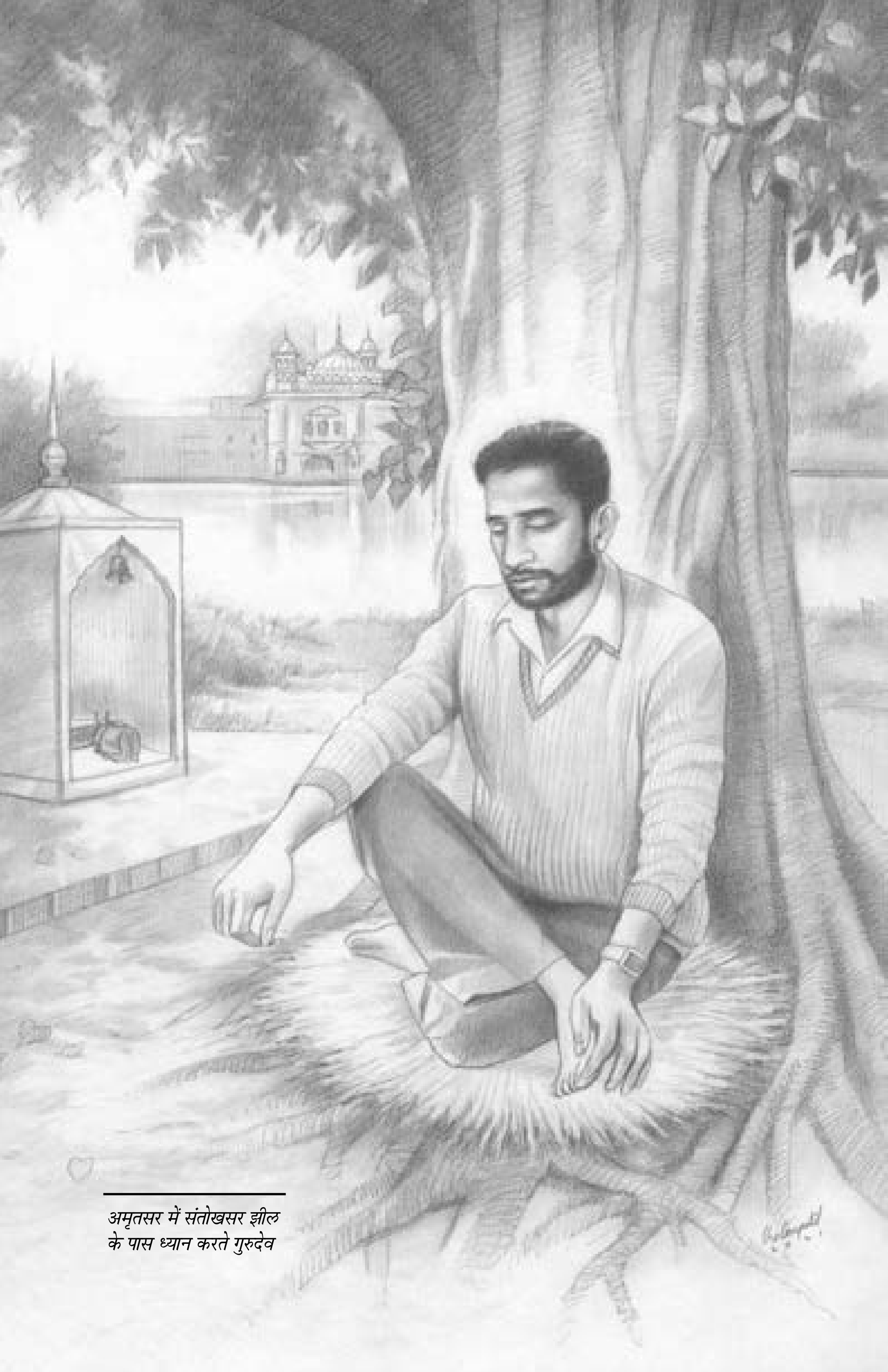

अमृतसर में संतोखसर झील
के पास ध्यान करते गुरुदेव

अपने मंत्रों का पाठ एक ही चादर या कंबल ओढ़कर करते थे ताकि उनके वस्त्र उनकी आभा को बनाए रखें और वायुमंडल में न फैलने दें।

महागुरु ने मंत्र-आधारित ध्यान और नींद के लिए गोल तकिये के उपयोग का भी सुझाव दिया। भौतिकी के नियमों के अनुसार, गोलाकार वस्तु पर कार्य करने वाली कोई भी ऊर्जा उस वस्तु के केंद्र में एकत्रित होती है। जब एक गोल तकिये का उपयोग किया जाता है, तो आपकी आभा की नष्ट हुई ऊर्जा तकिये के केंद्र में एकत्रित होती है। जब आपका सिर (सहस्रार चक्र के बिंदु पर) इस तकिए के साथ संपर्क बनाता है, तो आपकी इस संचित ऊर्जा तक पहुंच होती है और यह ऊर्जा आपके भीतर उत्पन्न ऊर्जा से जुड़ जाती है।

निश्चित समय

गुरुदेव ने हमें ध्यान के लिए एक निश्चित समय रखने की सलाह दी। इससे हमारे बॉडी क्लॉक को अवचेतन रूप से तैयार होने में मदद मिली। विज्ञान ने पुष्टि की है कि मस्तिष्क का बेसल गैंग्लिया क्षेत्र, जो भावनाओं और स्मृति से जुड़ा है, में नियमित आदतें बनती हैं। बार-बार किए गए व्यवहार का पैटर्न मस्तिष्क में अंकित हो जाता है, क्योंकि यह आदत से जुड़े नए न्यूरोनल कनेक्शन बनाता है। इसलिए मंत्र अभ्यास हर दिन एक निश्चित समय पर करना चाहिए क्योंकि उस समय मस्तिष्क ध्यान के लिए तैयार होता है।

जल

मंत्र-आधारित ध्यान के दौरान अपने आसन के एक या दोनों ओर सीधी कटोरी से ढककर गिलास में पानी रखना तीसरा प्रमुख बिन्दु है।

शरीर की कोशिकाओं की झिल्ली(मेम्ब्रेन) की ध्वनि तरंगें, मंत्र जाप के दौरान अपनी क्षमता के कारण विद्युत चुम्बकीय तरंगों में परिवर्तित हो जाती हैं। शरीर के चारों ओर बनाया गया विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र, आभा या सूक्ष्म ऊर्जा की ढाल है। चूंकि कोशिकाएं छिद्रयुक्त(छेददार) होती हैं, इसलिए कुछ विद्युत चुम्बकीय तरंगें अनजाने में आपके शरीर की आभा की परत से निकलकर पर्यावरण में विलीन हो जाती हैं। आपके आसन के किनारे रखे गए पानी का लक्ष्य, इन तरंगों को चुम्बकित करना है ताकि आभा की खोई हुई ऊर्जा आंशिक रूप से पानी में संग्रहीत होकर ऊर्जा के नुकसान को कम कर दे। आभा की शक्ति बढ़ाने में पूरा जीवन लग जाता है, इसलिए इसका संरक्षण आध्यात्मिक स्वच्छता का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

कुछ मंत्रों का पाठ करते समय शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है। इस गर्मी को संतुलित करने के लिए ढेर सारा पानी पीने की सलाह दी जाती है। पानी आपकी आभा से सूक्ष्म नकारात्मक ऊर्जाओं को भी समाप्त कर सकता है। इसलिए सेवा के दिनों में, शिष्य सेवा समाप्त करने के बाद स्नान करना पसंद करते हैं। गुरुदेव ने पानी का इस्तेमाल सफाई और उपचार, दोनों के लिए किया।

पानी में ध्वनि की गति, हवा में इसकी गति से पांच गुना ज्यादा होती है। पानी ध्वनियां सुन सकता है, और लगातार अपने वातावरण में ध्वनियों का पता लगाता है, विशेषकर उन ध्वनियों का जो पानी की ओर इंगित होती हैं। जमा हुआ बर्फ़ीला पानी अलग-अलग संरचनाएं उजागर करता है जिनमें चमचमाते हुए हिमकण जैसे क्रिस्टल से लेकर अव्यवस्थित मटमैले निशान शामिल होते हैं। दूसरे शब्दों में, पानी अपनी रासायनिक (केमिकल) संरचना को बदले बिना अपनी आणविक(मॉलिक्यूलर) संरचना को बदल सकता है, जिसका मतलब है कि पानी की अपनी चेतना है।

गुरुदेव ने भविष्यवाणी की थी कि एक समय आएगा जब लोग नीलकंठ धाम जाएंगे और उनकी समाधि पर एक गिलास पानी रखेंगे। जैसे-जैसे वह समाधि की परिक्रमा करेंगे, पानी ऊर्जा से युक्त होता जाएगा। यह अभिमंत्रित जल उनकी समस्याओं को हल करने के लिए पर्याप्त होगा।

महाशिवरात्रि जल

महाशिवरात्रि के दिन या एक दिन बाद सभी स्थानों के लोगों को एक विशेष जल वितरित किया जाता है। आमतौर पर महाशिवरात्रि जल के रूप में जाना जाने वाला यह आध्यात्मिक मिश्रण इतना शक्तिशाली है कि उपचारक इसका उपयोग चमत्कारी परिणाम प्राप्त करने के लिए कर सकतें हैं।

कई कारक मिलकर इस जल को बहुत शक्तिशाली बनाते हैं। इसे बनाने के लिए पांच नदियों का पानी इकट्ठा कर एक साथ मिलाया जाता है। इस मिश्रित जल की समाई ऊर्जा को लौंग, काली मिर्च, हरी इलायची और कई अन्य सामग्रियों को डालकर बढ़ाया जाता है। इन सामग्रियों का उपयोग इसलिए किया जाता है क्योंकि उनमें औषधीय या शुद्ध करने वाले गुण होते हैं। कई आध्यात्मिक रूप से उन्नत लोग मंत्रों का पाठ करते हुए जल में अपने हाथों को डुबोकर अपने आभामंडल से इस मिश्रित जल और उसकी सामग्रियों को अभिमंत्रित करते हैं।

महाशिवरात्रि जल वर्षों तक निर्मल रहता है। यह अपनी प्रारंभिक सान्द्रता(कॉन्सेंट्रेशन) के तीन गुना तक पतला होने के बाद भी अपनी क्षमता बनाए रखता है। गुरुदेव के समय में, लोग इस जल की एक बोतल प्राप्त करने के लिए लंबी कतारों में प्रतीक्षा करते थे।

जल से उपचार

शरीर में प्रत्येक अंग और ऊतक(टिशू) एक विशेष आवृत्ति पर कंपन करते हैं, भले ही इसे सुना न जा सकता हो। कंपन की दर में कोई भी बदलाव, रोग की शुरुआत का संकेत देता है।

सभी मंत्र संकल्प से संचालित होते हैं। कुछ मंत्रों का प्रयोग बीमारियों के इलाज और शारीरिक सुधार के लिए किया जाता है। हमारा मानना है कि जब अजप(मौन) स्थिति में एक उपचार मंत्र का पाठ किया जाता है, तो उसकी ध्वनि प्राण(सांस) के माध्यम से शरीर के रोगग्रस्त हिस्से तक जाती है। जब दो आवृत्तियां(फ्रीक्वेंसी) आपस में टकराती हैं, तो एक आवृत्ति दूसरी के साथ समान वेग से प्रतिध्वनित होने लगती है। इस प्रक्रिया को एंट्रेनमेंट कहा जाता है।

नियमित रूप से उपचार मंत्र का जाप, शरीर के बीमार हिस्से को एंट्रेन करके इलाज को प्रभावित करता है। नकारात्मक ऊर्जाओं से प्रभावित किसी व्यक्ति के बिस्तर के पास रखा गया जल, उस नकारात्मक ऊर्जा को चुंबकित करके दुर्गंध पैदा कर सकता है। ऐसा जल सेवन के योग्य नहीं होता है। हालांकि यह कोई सामान्य घटना नहीं है, लेकिन हम में से कुछ लोगों ने इसका अनुभव किया है।

मंत्रों का शारीरिक प्रभाव

शारीरिक रूप से मंत्र रक्तचाप(ब्लड प्रेशर) के साथ-साथ हृदय दर और श्वसन(रेसपिरेशन) दर को कम करने के लिए जाने जाते हैं। मंत्र का जाप मस्तिष्क में ऑक्सीजन का प्रवाह बढ़ाकर इसके उपयोग को कम कर सकता है, जिससे मस्तिष्क की गतिविधि धीमी होती है

और आराम की अनुभूति होती है। समय के साथ, निरंतर मंत्र जाप से एकाग्रता बढ़ सकती है और मस्तिष्क के बाएं और दाएं हिस्सों के बीच बेहतर तालमेल बन जाता है। दोनों हिस्सों के एंट्रेनमेंट से याददाश्त बढ़ती है और संज्ञानात्मक(कॉग्निटिव) क्षमता में सुधार होता है। इससे विचार ज्यादा सकारात्मक और पैने होते हैं, और मस्तिष्क को सक्रिय रखने की क्षमता बहुत बढ़ जाती है।

मन और मस्तिष्क का तालमेल
जितना अधिक होगा,
चेतना का स्तर भी उतना ही ऊंचा होगा।

सेवा

सेवा के माध्यम से एक जीवात्मा दूसरे से जुड़ती है और यह अनुभूति करती है कि हर जीवात्मा एक ही परम-आत्मा का प्रतिबिंब है। सेवा में भोजन, कपड़े और आश्रय देने से लेकर शिक्षा, चिकित्सा और विकासात्मक देखभाल प्रदान करना शामिल हो सकता है। यह लोगों की तारीफ करने, उन्हें हंसाने, उनका मूड बदलने, उनको सलाह देने और उनकी समस्याओं को सुलझाने जैसे सरल स्वरूप में भी हो सकती है। सेवा में अपने पर्यावरण को दूषित न होने देना, उसे हरा-भरा बनाना और प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग न करना भी शामिल है।

जब आप खुद की देखभाल करने में असमर्थ बच्चों, बुजुर्गों और विकलांगों की भलाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो जीवन एक नए आयाम में पहुंच जाता है। सेवा का उद्देश्य उन लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना भी है जिनकी आप सेवा करते हैं। इसलिए उनकी भौतिक आवश्यकताएं पूरी करने के अलावा, उनके मानसिक और आध्यात्मिक

विकास पर ध्यान देना भी जरूरी है। आध्यात्मिक ज्ञान साझा करना सेवा का सर्वोच्च स्वरूप है क्योंकि इस सेवा से आप दूसरे के आध्यात्मिक परिवर्तन के सूत्रधार बन जाते हैं।

महागुरु, जो एक अनुकरणीय मार्गदर्शक थे, ने अपने कुछ शिष्यों से कहा, "मैं तुम्हें अपने कंधों पर ले जाता हूं ताकि तुम मेरे मुकाबले बहुत दूर तक देख सको।" यह जानते हुए कि एक स्वस्थ शरीर और सचेत मन आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए ज़रूरी हैं, उन्होंने लोगों को स्वस्थ किया और उनकी इच्छाओं को पूरा किया। सादगी और कभी किसी का एहसान न लेने ने गुरुदेव के जीवन आदर्शों को बहुत ऊंचा कर दिया, और इसने उनके आध्यात्मिक आकांक्षियों का बहुत आत्मविश्वास बढ़ाया। उनके इस नज़रिए के कारण उनकी कृपा पाने के लिए खुद को समर्पित करना और मार्गदर्शन प्राप्त करना आसान हो गया।

गुरुदेव के लिए सेवा सिर्फ दार्शनिक नज़रिए का पालन नहीं था, बल्कि एक उद्देश्य भी था। उनका मिशन प्राणियों की सहायता, उपचार और उत्थान करना था ताकि वे उस दिव्यता का एहसास कर सकें जिसका उन्होंने प्रतिनिधित्व किया था। पौधों, पशुओं और मनुष्यों के भौतिक रूपों की सेवा करने में, उन्होंने उनकी आत्माओं की सेवा की। गुरुदेव की सेवा सांसारिक दायरे से आगे बढ़कर आध्यात्मिक थी जिससे ये तय हो गया कि उनका साथ हमेशा के लिए है।

सेवा के स्तर

सेवा के चार स्तर होते हैं। निश्चित मानसिकता और संकल्प हर स्तर को बढ़ाता है।

स्तर	मानसिकता	संकल्प
अपनी अनुकूलता के हिसाब से सेवा	अच्छा लगना	परोपकार
स्वयं के लिए सेवा	कर्ता भाव	कार्मिक ऋणों का पुनर्भुगतान
सेवा के लिए सेवा	अकर्ता भाव	कर्तव्य निर्वहन
हर सांस है सेवा	प्रेक्षक (दर्शक)	सेवा के लिए जीना

प्रथम स्तर पर, बहुत से लोग अपना समय, प्रयास या पैसा दूसरों की सेवा में लगाते हैं। जन्मदिन और परिवार के सदस्यों और अपने प्रियजनों की वर्षगांठ जैसे विशेष अवसरों पर सेवा को आमतौर पर परोपकार माना जाता है।

सेवा का दूसरा स्तर वो है जब लोगों की ज़िंदगी बदलने की चाहत आपको उनकी मदद करने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह की सेवा ऋण चुकता करने की ज्यादा सार्थक कोशिश है।

सेवा को विशेषाधिकार नहीं बल्कि कर्तव्य मानकर करना, सेवा का तीसरा स्तर है। मानसिकता में बदलाव आम तौर पर एक सिद्ध संत या सिद्ध गुरु की सलाह से शुरू होता है, जो आपको दूसरों की सेवा करने में सक्षम बनाने के लिए आपकी सहायता करता है। आप इसके लिए आभार महसूस करते हैं और जितना हो सके अपने कर्तव्य का पालन बेहतर तरीके से करने का प्रयास करते हैं। आपको एहसास होता है कि आप कर्ता नहीं बल्कि सेवा का ज़रिया हैं।

गुरुदेव आमतौर पर कहते थे, "सेवा में ही मेवा है", जिसका अर्थ है कि सेवा अपने आप में फल है। उन्होंने सेवा को सेवा करने और करवाने

वाले के बीच एक पूर्वनियोजित खेल माना। वे मानते थे कि सेवा दो लोगों के बीच की एक नियति है, जिसमें वह न तो कर्ता थे और न ही सूत्रधार, बल्कि महज़ एक दर्शक थे।

भले ही महागुरु की हर सांस सेवा के लिए समर्पित थी, लेकिन एक गृहस्थ होने के नाते वह सदैव गुरु, पारिवारिक व्यक्ति और नौकरीपेशा कर्मचारी के रूप में अपने दायित्व को पूरा करते रहे। वे अपना गुज़ारा करने के लिए कमाते थे और अपनी सेवा के बदले कुछ भी स्वीकार नहीं करते थे। इससे वे हमेशा आभार-मुक्त रहते थे।

'मंत्र विद्या' पॉडकास्ट में अनेक मंत्रों का रहस्य एवं उनके उपयोग की विधि उजागर की गई है। जानिए मंत्रों का रहस्य www.gurudevonline.com पर।

दर्शन एवं अभ्यास

इंद्रियों से परे

गुरुदेव ने हमें अपनी इंद्रियों का प्रबंधन करने का सुझाव दिया, ताकि हमारे स्वयं का बोध अपने परम-आत्मा के बोध से अलग न होकर, अधिक संरेखित हो।

स्वयं को समझने के लिए, आपको पहले यह समझना होगा कि क्या वास्तविक नहीं है, और जो वास्तविक प्रतीत होता है, वह माया है।

इंद्रियों के माध्यम से देखने, सुनने, महसूस करने या जागरूक होने की क्षमता को धारणा के रूप में समझा जाता है। इन संकायों(फैकल्टीज) के माध्यम से शरीर बाहरी उत्तेजनाओं को महसूस करता है। मनुष्यों में ये इंद्रियां स्पर्श, सूंघने की शक्ति, रसना, देखने और सुनने की शक्ति हैं। देखने में ये इंद्रियां स्वतंत्र रूप से काम करती प्रतीत होती हैं, लेकिन उनका आपस में एक दूसरे से करीबी संबंध होता है क्योंकि वे सब मिलकर मस्तिष्क को हमारे चारों ओर की दुनिया को समझने में सक्षम बनाती हैं।

प्रत्येक जीव में, मस्तिष्क खोपड़ी में शांति से बैठता है और बाहरी दुनिया के साथ सीधे संपर्क नहीं करता। यह केवल अपने में आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा द्वारा डाले गए डेटा की व्याख्या करता है, उसी तरह जैसा एक कम्प्यूटेशनल डिवाइस करता है। लगभग 100 बिलियन न्यूरॉन्स से बना मस्तिष्क का घना नेटवर्क, इन अंगों से जो भी अनुभव

करता है, उसका विद्युत रसायनिक (इलेक्ट्रो केमिकल) संकेतों में अनुवाद कर देता है। हर क्षण, प्रत्येक न्यूरॉन दसियों या सैकड़ों विद्युत तरंगों को अन्य न्यूरॉन्स को भेजता है। मस्तिष्क इलेक्ट्रो केमिकल पैटर्न की व्याख्या करता है जो न्यूरोनल सिग्नलिंग से निकलते हैं और दुनिया के बारे में हमारी समझ को निर्धारित करता है। इसी तरह यह एक साथ विभिन्न संवेदी अंगों से प्राप्त संकेतों को इलेक्ट्रो केमिकल पैटर्न के रूप में संसाधित(प्रोसेस) करता है, जिससे हम अपनी वास्तविकता को समझ पाते हैं।

तथ्य यह है कि आपके मस्तिष्क को न तो इसकी जानकारी होती है और न ही वह इस बात की परवाह करता है कि उसे जानकारी कहां से मिलती है। यह केवल मिलने वाले डेटा की व्याख्या करता है, जिससे हमें यह समझने में मदद मिलती है कि जो हम देखते हैं वह वास्तव में बाहरी न होकर, हमारी व्यक्तिगत दुनिया का एक आंतरिक मॉडल होता है।

अपने आसपास की दुनिया को समझने के लिए जानवरों की विभिन्न प्रजातियों में भी विभिन्न रिसेप्टर्स होते हैं। कुछ जानवरों में पारंपरिक पांच इंद्रियों में से एक या अधिक की कमी हो सकती है, जबकि कुछ जानवर दुनिया को उस तरह से समझ सकते हैं जिस तरह मनुष्य भी नहीं समझ सकते हैं। कुछ प्रजातियां विद्युत और चुंबकीय क्षेत्रों को महसूस कर सकती हैं और पानी के दबाव और धाराओं का पता लगा सकती हैं। उदाहरण के लिए, ड्रैगनफ्लाई में दूरबीन दृष्टि होती है, मधुमखी यूवी लाइट देख सकती है, और सांप रात के समय थर्मल रेडिएशन देख सकता है। परिणामस्वरूप हर एक के पास दुनिया को देखने का एक अलग नज़रिया होता है। प्रकृति के इसी तरह के उदाहरणों से पता चलता है कि हमारी शारीरिक एवं मानसिक संरचना ने हमारी संवेदी

इनपुट को कितना सीमित रखा है। इसलिए आपको दिखने वाला सत्य सार्वभौमिक(युनिवर्सल) सत्य नहीं है, बल्कि आपका अपना सत्य है। ब्रह्माण्डीय दृष्टिकोण से जुड़ने के लिए आपको अपने सीमित दृष्टिकोण से बाहर आना होगा।

इन्द्रियों का प्रबंधन

इतिहास अनेक शक्तिशाली अध्यात्मवादियों के क्रोध का गवाह है। संभवतः कठिन तपस्या के कारण उनके शरीर में जागृत होने वाला अग्नि तत्व उनके क्रोध का कारण है।

गुरुदेव ने क्रोध को भड़काकर अपनी प्रतिक्रियात्मक भाषा और स्वभाव को नियंत्रित करना सीखा। अपनी नौकरी के शुरुआती वर्षों में, वह अपने कार्यालय के बाहर बैठकर राहगीरों को अपशब्द कहते, और फिर उनकी नकारात्मक प्रतिक्रिया का इंतजार करते। जब उत्तेजित होकर वो गुरुदेव को कठोर शब्द कहते, तो गुरुदेव उकसावे पर प्रतिक्रिया करने की जगह, मुस्कुरा देते थे। गुस्से को उकसाकर अपने स्वभाव के लचीलेपन को जांचने का यह उनका अलग अंदाज़ था। (मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं इस दृष्टिकोण को एक सिफारिश के बजाय अवलोकन के रूप में साझा कर रहा हूं।)

अपने क्रोध को नियंत्रित करके, गुरुदेव ने अपने मानस से एक शक्तिशाली भाव को मिटा दिया। भावनाएं जितनी कम होंगी, मन उतना ज्यादा स्थिर होगा। युवावस्था में फिल्म स्टार बनने की चाहत रखने वाले से सुर्खियों से दूर रहने वाले महागुरु बनने तक, गुरुदेव का इंद्रियों से मुक्ति के अभ्यास का एक लंबा इतिहास था।

नेत्र इंद्रिय आकर्षण पैदा करती है, वहीं स्पर्श इन्द्रिय से वासना की भावना जन्म लेती है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण से निपटने का महागुरु का सूत्र बड़ा सरल था। उन्होंने सुझाव दिया कि हम हर आकर्षक महिला की कल्पना गुड़िया(बच्ची) और बुढ़िया के रूप में करें, ताकि हम इस बात का सही-सही आकलन कर सकें कि हम उनके प्रति कितने आकर्षित हैं। मैं इससे थोड़ा आगे बढ़ गया, और मैंने मुझसे मिलने वाली हर महिला की कंकाल के रूप में कल्पना की। जल्द ही, इस अभ्यास ने न केवल किसी अप्रिय इच्छा को कम कर दिया, बल्कि मुझे यह एहसास दिलाया कि सुंदरता सचमुच देखने वाले के ज़ेहन में होती है!

महागुरु ने एक बार बताया था कि जब एक विकसित अध्यात्मवादी की मृत्यु होती है, तो आगे की यात्रा के दौरान उनकी आत्मा एक दोराहे पर पहुंचती है जहां से एक सुंदर दिखाई देने वाला रास्ता निचले लोकों की ओर, जबकि दूसरा साधारण दिखने वाला मार्ग उच्च लोकों की ओर जाता है। चूंकि सुंदरता का आकर्षण आत्मा को निचले दायरे में ले जा सकता है, इसलिए सौंदर्य के जाल से दूर होना फायदेमंद है!

गंध की संवेदना पर काबू पाने के लिए, गुरुदेव ने अघोर विद्या की कुछ बातें उजागर कीं। उन्होंने हमें निर्देश दिया कि अगर हम दुर्गंध के प्रति उदासीन होना चाहते हैं, तो हमें सुगंध के प्रति उदासीनता विकसित करना सीखना होगा। काश अजमेर में पढ़ते समय मैंने यह तरकीब सीखी होती, क्योंकि मेरे स्कूल के शौचालय इस तकनीक का अभ्यास करने के लिए सही स्थान थे! आखिरकार, जैसे ही मैंने अप्रिय गंधों के प्रति सहिष्णुता और उदासीनता का अभ्यास किया, मैंने कोलोन और इत्र भी छोड़ दिया। इंद्रिय प्रबंधन 'अच्छा', 'बुरा', 'सही', 'गलत', और 'दोहरेपन' की अन्य धारणाओं को ध्वस्त कर देता है।

एक बार गुरुदेव कुछ शिष्यों के साथ अपने एक सहयोगी के घर गए। चूंकि सहयोगी और उनकी पत्नी घर पर नहीं थे, इसलिए उनकी आठ साल की बेटी ने उनके लिए चाय बनाने की पेशकश की। उसकी भावनाओं का सम्मान करते हुए, गुरुदेव सहमत हो गए। जब वह चाय लेकर आई, तो गुरुदेव ने चाय को अभिमंत्रित किया और अपने शिष्यों को चाय का कप दे दिया। जब चाय पीते हुए वह बच्ची के साथ बातचीत कर रहे थे, उनके साथ आए कुछ शिष्यों ने चाय के कुछ घूंट लेकर बाकी चाय को कपों में छोड़ दिया। चूंकि लड़की ने मिट्टी के तेल के स्टोव पर चाय बनाई थी, इसलिए उसमें मिट्टी के तेल की बू आ रही थी और वह पीने योग्य नहीं थी। सहयोगी के घर से निकलने पर, महागुरु ने अपने शिष्यों को डांटा! जरा सोचें कि वे कितने लापरवाह थे कि जिस चाय में उनके गुरु का आशीर्वाद मिला हुआ था, उसकी उन्होंने अवहेलना कर दी सिर्फ इसलिए कि उसमें मिट्टी के तेल की बू आ रही थी! क्या ये संभव है कि उन्होंने बहुत कुछ खो दिया क्योंकि वे थोड़ा-सा भी बर्दाश्त नहीं कर पाए?

गुरुदेव की जीवन यात्रा को समझने के दौरान मैंने यह पाया कि किस प्रकार शुरुआती वर्षों से लेकर महागुरु बनने तक उनकी आदतों और दृष्टिकोण में बदलाव हुआ। इस बिंदु को स्पष्ट करने के लिए मैं भोजन को लेकर उनके विचारों के बारे में बात करना चाहूंगा। कई बार, गुरुदेव रात का भोजन किए बिना सो जाते थे। इसके बारे में पूछे जाने पर उन्होंने स्वीकार किया कि यदि उनका कोई भी भक्त किसी रात बिना भोजन किए सो जाता था, तो वो भी उस रात अपना भोजन नहीं करते थे। यह शायद गुरुदेव का अपनी संकल्प शक्ति का प्रयोग करके दूसरों को अपना भोजन मानसिक रूप से देने का तरीका था। उन्होंने सप्ताह में एक बार उपवास करने की भी सिफारिश की ताकि शारीरिक व्यवस्था सही ढंग से चल सके।

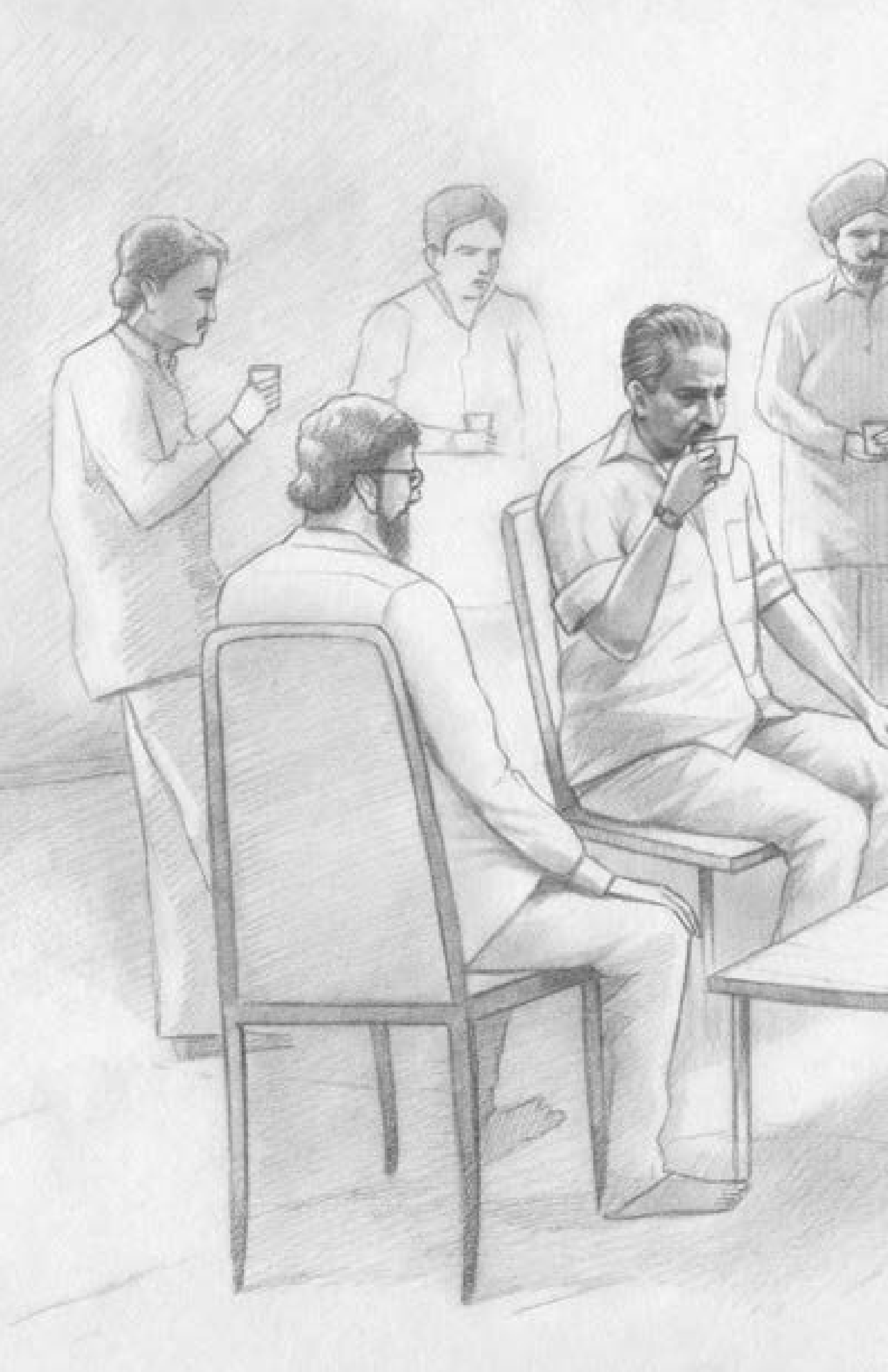

एक छोटी बच्ची के द्वारा बनाई गई चाय की चुस्की लेते गुरुदेव

महागुरु ने अन्न को हमेशा बहुत सम्मान दिया। सॉइल सर्वेयर के रूप में वे दाल, रोटी, दही और अक्सर पकौड़ों पर गुजारा करते थे। कभी-कभी वे अपने मित्रों, सहकर्मियों और शिष्यों के लिए भोजन बनाते थे। एकत्रित हुए सभी लोगों के भोजन कर लेने के बाद, वे अंत में भोजन करते थे और लंगर का आयोजन कर लोगों को मुफ्त भोजन भी वितरित करते थे।

गुरुदेव ने स्वादेन्द्रिय को इस तरीके से नियंत्रित किया था कि उन्हें न तो भोजन की इच्छा होती थी और न ही वे अधिक खाते थे। वे बड़ी सरलता से तरल पदार्थों पर गुजारा कर लेते थे, क्योंकि वे पूरी तरह से शाकाहारी और सात्विक थे। कुछ दोपहर, उनके भोजन में सिर्फ लस्सी का गिलास होता था, और ज्यादातर सुबह, उनका नाश्ता नींबू पानी का गिलास होता था। महाशिवरात्रि जैसे खास मौकों पर वे तब तक खाना नहीं खाते जब तक वे कतार में खड़े हुए अंतिम व्यक्ति से नहीं मिल लेते थे। इस प्रक्रिया में कुछ दिन लग जाते थे। उनकी बेटी याद करती हैं कि गुरुदेव उन्हें कहा करते थे कि जो खुद खाने से पहले दूसरों को खिलाना सीखता है, वो भोजन की इच्छा को पार कर जाता है। महागुरु अन्न दान को अमूल्य सेवा मानते थे।

श्रवणेन्द्रिय हमें लोगों से जोड़ती है, लोगों से संवाद बनाने में हमारी मदद करती है, जिसे कोई अन्य इन्द्रिय नहीं कर सकती। एक नेत्रहीन और मूकबधिर अंतर्राष्ट्रीय शिक्षाविद, हेलेन केलर ने सुनने के महत्व को कुछ इस तरह समझाया है, "अंधापन हमें चीजों से काट देता है, लेकिन बधिरता हमें लोगों से दूर कर देती है"। हम सुनी हुई बातों का जवाब हमेशा शब्दों के माध्यम से देते हैं। श्रवणेन्द्रिय पर नियंत्रण का अभ्यास करने का एक तरीका है, विवेक की शक्ति को विकसित करना, सहजता से सुनकर चुप रह जाना और सुनी हुई हर बात का जवाब न

देना। गुरुदेव ने हमें हमेशा कहा कि हम ऐसी किसी चीज़ पर विश्वास न करें जिसे हमने स्वयं देखा और सुना न हो। वे बेकार की बातों और गपशप को हतोत्साहित करते थे।

गुरुदेव की विवेक शक्ति की एक दिलचस्प कहानी है। एक बार उनकी उपस्थिति में एक शिष्य ने गर्व से अपनी सफलता की डींग मारनी शुरू कर दी, और महागुरु की सलाह को खारिज कर दिया क्योंकि वह गुरु की बताई हुई 'गलत' धारणाओं को ठीक करना चाहता था लेकिन उसे नहीं पता था कि वह एक अप्रिय स्थिति का सामना करने जा रहा था। गुरुदेव, जिन्होंने शायद ही कभी अपनी शक्तियां प्रदर्शित की हों, ने कुछ ऐसा किया कि कमरे में मौजूद अन्य लोग हैरान रह गए। उन्होंने बिट्टूजी को अपने पलंग से लगी अलमारी से चार खाली ऑडियो कैसेट के सेट को निकालकर उसकी प्लास्टिक सील हटाने का निर्देश दिया। कैसेट की पैकेजिंग को हटाने के बाद, गुरुदेव ने बिट्टूजी को तीसरे कैसेट को प्ले करने के लिए कहा। जब बिट्टूजी ने ऐसा किया, तो कमरे में मौजूद लोगों ने उस शिष्य को उसी 'गलती' के बारे में डींग मारते हुए सुना जिसे उसने अपने गुरु के सामने मानने से इनकार कर दिया था!

गुरुदेव के समय में संगीत प्रेमियों के आनंद का एक माध्यम कैसेट प्लेयर और रेडियो था। महागुरु को संगीत सुनने का भी शौक था, खासकर मोहम्मद रफी को। कार की सवारी के दौरान उन्हें रेडियो सुनना पसंद था, लेकिन समय के साथ, मैंने संगीत में उनकी रुचि कम होते देखी। एक समय ऐसा भी आया जहां वह अच्छे संगीत की सराहना तो करते थे लेकिन इसके माधुर्य में नहीं डूबते थे।

एक साथ काम करने वाली कई इंद्रियां, भावनाओं की एक श्रृंखला को जन्म देती हैं, जिससे बहुत सारी क्रियाएं होती हैं।

गुरुदेव ने अपनी इंद्रियों को दबाने के बजाय उनकी प्रतिक्रियाओं पर ध्यान करके उन्हें नियंत्रित करना सीखा। इस तरह इस संवेदी नाटक में डूब जाने वाले अभिनेता की बजाय, वह इसके पर्यवेक्षक(ऑब्ज़र्वर) बन गए। एक पर्यवेक्षक होने के नाते, महागुरु ने अपनी इंद्रियों को अपनी इच्छानुसार नियंत्रित करने और उनमें हेरफेर करने के लिए एक खाका तैयार किया। यह अभ्यास करके वे जीवन के उस मुकाम पर पहुंच गए जहां उन्होंने भावनाओं का महसूस करने के बजाय, उन्हें अनुभव करने की भूमिका निभाई।

मस्तिष्क का लचीलापन

मस्तिष्क के शोध से पता चला है कि हम शारीरिक रूप से मस्तिष्क संरचना को बदलकर इसकी कार्यक्षमता में सुधार कर सकते हैं। इस क्षमता को न्यूरोप्लास्टिसिटी कहा जाता है। नतीजतन जब मस्तिष्क को एक संवेदी पद्धति में इनपुट से वंचित कर दिया जाता है, तो यह अन्य इंद्रियों के समर्थन के लिए खुद को पुनर्गठित कर सकता है। किसी भी इंद्रिय बोध के अभाव या नुकसान की भरपाई के लिए, मस्तिष्क पुनर्गठित होकर यह सुनिश्चित करता है कि नष्ट हुई इन्द्रिय को संभालने के लिए समर्पित मस्तिष्क क्षेत्र अप्रयुक्त न रहें। इसके लिए वह दूसरी इंद्रियों को सक्रिय करने के लिए तैयार हो जाता है। इस तरह की रीमैपिंग में कभी-कभी मौजूदा तंत्रिका(न्यूरल) पथों के अलावा नए पैदा हुए न्यूरॉन्स भी शामिल हो सकते हैं। नतीजतन समय के साथ एक इन्द्रिय का नुकसान दूसरे को अधिक समृद्ध बना सकता है।

एक बार देहरादून से यात्रा करते समय गुरुदेव ने मुझसे उस शहर में बधिरों के लिए एक स्कूल खोलने के लिए कहा। लगभग एक दशक बाद, मैंने यह स्कूल खोला। बधिरों के साथ काम करने और उनकी

दुनिया का हिस्सा बनने के लिए मुझे उनकी संस्कृति से अवगत होना पड़ा। मैंने देखा है कि वे हस्त कौशल और अपने हाथों के इस्तेमाल में काफी पारंगत हैं। उनकी एकाग्रता का स्तर बहुत अधिक है क्योंकि वे ध्वनि से शायद ही कभी विचलित होते हैं। सुनने की क्षमता नष्ट होने से उनके स्पर्श का एहसास बहुत बढ़ जाता है।

महागुरु ने सुझाव दिया कि जब तक हम अपनी कमियों को नियंत्रित या संतुलित नहीं कर लेते, तब तक हमारा एक ऐब रहना चाहिए। अंत में सभी कमियों का त्याग कर देना चाहिए। महागुरु के सरल सुझाव में न्यूरोप्लास्टिसिटी के रहस्य छिपे हुए थे। इसे मैं अपने उदाहरण से समझाता हूं। इंद्रियों पर नियंत्रण रखने के अभ्यास के दौरान, जिस कमज़ोर कड़ी को मैं अंत में छोड़ने का इरादा रखता हूं, वह स्वाद की भावना है। वर्षों से आतिथ्य व्यवसाय(हॉस्पिटैलिटी बिज़नेस) में होने के बावजूद, मैंने इस पर नियंत्रण का लगातार प्रयास किया है। लेकिन किसी विशेष अवसर पर चॉकलेट और चीज़ खाना मुझे अभी भी अच्छा लगता है। गुरुदेव के लिए अपनी इंद्रियों को संतुलित करना बहुत आसान था, लेकिन मेरे लिए यह प्रक्रिया अब भी जारी है।

मस्तिष्क की अनूठी परिवर्तनकारी क्षमता ना सिर्फ बाहरी बल्कि आंतरिक उत्तेजनाओं के इनपुट के कारण होती है। उदाहरण के लिए लंबे समय तक मंत्र जाप से आपकी संकल्प शक्ति बढ़ती है और यह आपके मस्तिष्क की संरचना को भी बदलती है।

मस्तिष्क

मस्तिष्क एक बहुसंवेदी अंग है जो लगातार विभिन्न इंद्रियों से प्राप्त जानकारियों को मिश्रित करता है। हालांकि कुछ लोगों का दिमाग उन्हें

इंद्रियों को नियंत्रित करने का गुरुदेव का
नुस्खा उदाहरणों के माध्यम से समझाया
गया है। सुनिए **'इंद्रियों से परे'**
www.gurudevonline.com पर।

ऐसी जानकारियां भी प्रदान करता है जो इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त नहीं की गई हैं। यदि मस्तिष्क कुछ सूचनाओं को प्रोसेस कर रहा है जिसे इंद्रियों ने नहीं भेजा, तो यह अतिरिक्त जानकारी या डेटा कहां से आ रहा है? यह हमें 'छठी इंद्रिय' या 'अतिरिक्त-संवेदी धारणा'(एक्स्ट्रा सेंसरी परसेप्शन) की पड़ताल के लिए प्रेरित करता है।

इस रहस्य का जवाब मन में है। जहां मस्तिष्क भौतिक शरीर की वास्तविकता की व्याख्या करता है, मन सूक्षम शरीर और कारण शरीर की वास्तविकता की व्याख्या करता है। मन मस्तिष्क को अतिरिक्त संवेदी जानकारी देता है और अंतर्ज्ञान, टेलीपैथी, रिमोट सेंसिंग, सूक्ष्म दृष्टि, अन्तीन्द्रीय श्रवण, मनःप्रभाव जैसी अनेक क्षमताओं तक पहुंच बनाता है।

नोबेल पुरस्कार विजेता क्वांटम भौतिकविदों(फिजिसिस्ट) ने मानव शरीर की प्रकृति की खोजबीन की है। उनकी खोज बताती है कि मानव शरीर 7 ऑक्टिलियन(7 के बाद 27 बार शून्य) परमाणुओं(एटम) से बना है। ये परमाणु ऊर्जा के भंवरों से बने हैं जो लगातार घूम रहे हैं और कंपन कर रहे हैं, और हर एक परमाणु का अलग ऊर्जा प्रभाव है। इसलिए भौतिक शरीर में कुछ भी ठोस पदार्थ नहीं है और ये ब्रह्माण्ड ऊर्जा के कंपन तंत्र से ज्यादा कुछ नहीं है। भारतीय शास्त्रों में बताया गया ज्ञान योग भी यही कहता है।

ऊर्जा संरक्षण के नियम के अनुसार, जीवन में कुल ऊर्जा हमेशा समान रहती है। हालांकि ऊर्जा के रूप लगातार बदलते रहते हैं। मृत्यु होने पर,जब भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है तो आत्मा अपनी मुक्त हुई ऊर्जा के साथ यात्रा करती है। आत्मा का मन फिर अपनी ऊर्जा का संस्करण बनाता है और स्वयं के लिए एक नई वास्तविकता प्रकट करता है।

इसलिए, अपनी चेतना की स्थिति को बदलने के लिए आपको अपने मन के स्तर को बदलने की आवश्यकता है। आपके मन का स्तर जितना ऊंचा होता है, उसकी उत्तेजना उतनी ही कम होती है और आपकी जागरूकता उतनी ही अधिक होती है। जब मन स्थिर होता है तो यह किसी अन्य स्थिति की तुलना में अधिक मात्रा में परम-आत्मा के रूप को दर्शाता है।

संक्षेप में

दृष्टि में रूप मौजूद है।
श्रवण में ध्वनि मौजूद है।
स्पर्श में भाव बसा है।
चखने में स्वाद का अस्तित्व है।
घ्राण(सूंघने की शक्ति) में महक मौजूद है।

यदि कोई व्यक्ति देखने, सुनने, छूने, चखने और सूंघने के अनुभव को कम कर सकता है, तो अनुभव करने के लिए बहुत कुछ नहीं होता। इस अवस्था में, अनुभवकर्ता खुद को अनुभव करना शुरू कर देता है। स्वयं के उस अनुभव में उसे अपनी असीमता का एहसास होता है, और वह महसूस करता है कि वह जैसा है, वैसा ही उसका अनुभव है। ▪

दर्शन एवं अभ्यास

सतत चेतना

गुरुदेव ने सचेतन अवस्था में जीवन जिया। यह बात उनकी शारीरिक भाषा सें स्पष्ट होती थी - वह जिस तरह से चलते, बैठते और किसी को देखते थे। ऐसा लगता था जैसे कि उनका आंतरिक रडार चल रहा हो। उनका दृष्टि ज्ञान हमारे दृष्टि ज्ञान से कहीं ज्यादा विस्तृत था। उन्होंने अपनी गतिविधियों पर नज़र रखने वाले शिष्यों की जिज्ञासाओं को यह कहकर बड़ी सहजता के साथ शांत कर दिया कि, "आप लाख कोशिश कर लें, आप मुझे कभी नहीं जान पाएंगे।"

अक्सर महागुरु बातचीत के बीच कुछ सेकंड या मिनटों के लिए ध्यान मुद्रा में चले जाते और फिर ऐसे लौट आते जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। ऐसे अनेक अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि वह हमेशा अपने आसपास के प्रति सजग रहते थे।

दिल्ली से हैदराबाद की हवाई-यात्रा में गुरुदेव के बगल में बैठकर मैंने उन्हें ध्यानावस्था में जाते हुए देखा। उन्होंने मुझे अपनी तरफ देखता पाकर मुस्कुराते हुए कहा, "इंदु गुड़गांव के स्थान पर बाहर कपड़े सुखने के लिए डाल रही है"। जब हम हवा में उड़ रहे थे, महागुरु अपने भक्तों और शिष्यों के जीवन में समय का खेल देख रहे थे। ऐसे कई छोटे और बड़े उदाहरण महागुरु की दिव्य दृष्टि के प्रमाण हैं।

एक बुजुर्ग दंपति जिन्हें आत्महत्या करने से बचाया गया था सहित कुछ

अनुभवों ने मुझे आश्वस्त किया है कि वे दुनिया में किसी भी स्थान पर आने वाले सभी लोगों से तालमेल स्थापित कर लेते थे, चाहे वो व्यक्ति पहली बार ही क्यों ना आया हो। उनके शिष्यों को पता था कि किसी भी सेवा दिवस पर आने वाले पहले और आखिरी व्यक्ति का नाम और चेहरा उन्हें याद रखना होगा। जब सेवादार उस दिन आने वाले सभी लोगों के लिए स्थान से मिलने वाली सहायता पर विचार करने के लिए बैठते, तो पहले और आखिरी व्यक्ति के बीच की कड़ी खुद ब खुद जुड़ जाती थी। महागुरु ने कहा था कि सहायता की इच्छा से स्थान पर आने वाले लोगों का कहा गया कोई भी शब्द या अनकहा विचार उन तक पहुंच जाता है। इसलिए किसी भी बड़ा गुरुवार या सेवा के किसी अन्य दिन पर मदद की दरकार लिए आने वाले हज़ारों लोगों की लंबी कतारों को देखते हुए, आगंतुकों से अनुरोध किया जाता कि गुरुदेव के शारीरिक रूप से अनुपस्थित होने पर भी वे अपनी प्रार्थनाएं स्थान को अर्पित कर दें।

सतत चेतन होने के कारण,
महागुरु और उनके स्थान एक ही
आध्यात्मिक सिम्फनी के सुरों की तरह थे।

स्थान पर अपने शुरुआती वर्षों में, मैं अपने पिता को चंड़ीगढ़ से दिल्ली ले जाते समय गुड़गांव भी गया। यह हम दोनों के लिए एक मुश्किल सफर था न केवल इसलिए कि सड़कों पर बहुत गड्ढे थे, बल्कि इसलिए भी कि हम पूरे रास्ते बहस करते हुए आए थे। जब मैंने गुरुदेव से मिलने के लिए स्थान पर कार रोकी तो मेरे पिता, जो नास्तिक थे, ने कार में बैठकर मेरा इंतजार करने का फैसला किया। मेरे प्रवेश करते ही मेरे गुरु ने मुझे देखा, मेरा स्वागत किया और फिर कुछ सेकंड के लिए अंतर्ध्यान हो गए। आंखें खोलने पर उन्होंने मेरे और मेरे पिता के बीच हुई पूरी बातचीत मुझे बता दी।

उनकी सदा-सतर्क निगाहें तब भी हमारी ज़िंदगी की खास घटनाओं से वाकिफ थी जब हम उन घटनाओं से अनजान थे। उनकी सतत जागरुकता ने हम में से अधिकांश के लिए सुरक्षा कवच का काम किया। कई मौकों पर वह हमें शारीरिक रूप से उपस्थित होकर या सपने में आकर संभावित संकटों के प्रति आगाह कर देते थे।

मुझे एक और घटना याद आती है जहां भविष्य की घटनाओं के बारे में उनकी जागरुकता ने नियति के प्रभावों को कम करने का काम किया। इलाज के लिए गुड़गांव स्थान में रहने वाले एक परिवार ने अपने रिश्तेदारों के साथ नई दिल्ली में वीकेंड बिताने का फैसला किया। गुरुदेव इस बात से सहमत नहीं थे लेकिन अंत में मान गए। आधी रात के बाद जब यह परिवार अपनी गाड़ी से अपने रिश्तेदारों के यहां जाने के लिए स्थान से निकला, तो महागुरु ने बिट्टू जी को अपने वाहन की चाबी देकर उस गाड़ी के पीछे जाने को कहा। कुछ मिनटों बाद बिट्टू जी ने देखा कि उनकी गाड़ी एक ट्रक से टकराकर उसके नीचे घुस गई थी! गाड़ी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी, लेकिन बिट्टूजी परिवार के सदस्यों को बाहर निकालने में सफल रहे। परिवार के सदस्यों को चोटें तो आईं लेकिन मौत टल गई। परिवार के साथ होने वाली घटना के बारे में पता होने के कारण, महागुरु ने इसके प्रभाव को कम कर दिया था। बाद में उन्होंने बिट्टू जी से कहा, "मैं एक गुरु हूं और मैं किसी संभावित घटना के प्रभाव को कई प्रतिशत कम कर सकता हूं, फिर भी जो होना तय है वह होकर रहेगा।"

गुरुदेव न सिर्फ हमारे इस जीवन के अतीत को बल्कि पूर्व जन्मों को भी देख सकते थे। उन्होंने रवि जी की उनके साथ संबंध की जिज्ञासा को पिछले दो जन्मों का दर्शन कराकर शांत किया। जब उन्होंने मुझे बताया कि मेरे पिछले जीवन की विरासत अभी भी बरकरार है, तो मेरे लिए

इस तथ्य को पचा पाना मुश्किल था कि मैं अपने पिछले जीवनकाल में एक संत था। संतलाल जी को बताया गया था कि इस जीवनकाल में उन्हें अपनी मां की साधुता के कारण अपने तय समय से दो साल पहले महागुरु का संरक्षण मिला था। चूंकि वशिष्ठ जी ने उनसे मिलने से पहले लगभग दस वर्षों तक महागुरु को अपने दर्शन में देखा था, इसलिए गुरुदेव ने बताया कि उन्हें वर्ष 1970 में रेणुका में वशिष्ठ जी से मिलना था लेकिन वर्ष 1980 में ही वे उनसे प्रत्यक्ष रूप से मिल पाए। हम में से कुछ ने गुरुदेव को इस बारे में बात करते सुना है कि उन्होंने कैसे अपने शिष्यों को एक ही समयकाल में इकट्ठा करने के लिए 500 साल तक प्रतीक्षा की ताकि वह अपने सामूहिक आध्यात्मिक मिशन को पूरा कर सकें।

हालांकि इन घटनाओं पर काफी बातें की जा सकती हैं, लेकिन महागुरु का समय के साथ संबंध अभी भी मेरी समझ से परे है। उनका कहना था कि, "मैं समय का पाबंद नहीं, समय मेरा पाबंद है"। उनकी बॉडी क्लॉक कुछ इस तरह थी कि इसमें नींद के लिए बहुत कम जगह थी। वे अपनी पत्नी से कहते थे, "दुनिया सोचती है कि मैं सोता हूं लेकिन उन्हें कैसे पता चलेगा कि उस वक्त मैं उन पर नज़र रखता हूं, और उनका मार्गदर्शन कर रहा होता हूं।"

समय के बारे में उनकी जागरूकता आध्यात्मिक क्षेत्र तक फैली हुई थी। जब हमने बाथरी स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के गेस्ट हाउस में ठहरने की योजना बनाई, तो उन्होंने मुझे बताया कि एक उन्नत योगी की आत्मा उनके आगमन की प्रतीक्षा में लगभग सौ वर्षों से वहां रह रही है। वह आत्मा चाहती थी कि गुरुदेव उसे मनुष्य रूप में जन्म दें। महागुरु ने उस आत्मा को अपने शिष्य की पत्नी शोभा तनेजा जी के गर्भ को चुनने की अनुमति दी। बाथरी और अन्य ज़िलों में गुरुदेव के साथ दो महीनों के

दौरे के दौरान शोभा जी और उनके पति के बीच निष्काम संबंध थे, फिर भी उनके पुत्र अभय तनेजा का जन्म उसी पवित्र गर्भाधान के फलस्वरूप हुआ था।

एक बार जब मैं स्थान पर गुरुदेव के साथ अकेला था, उन्हें एक अंतर्देशीय पत्र मिला। उसे देखते ही उनके चेहरे के भाव कठोर हो गए। उन्होंने पत्र बिस्तर पर रख दिया और मुझे कमरे के बाहर जाकर इंतजार करने को कहा। जब पांच मिनट बाद उन्होंने मुझे बुलाया तो फटा हुआ पत्र बिस्तर पर पड़ा था, जिसे एक जिग्सॉ पज़ल की तरह पुनः जोड़ा गया था और वह एक यंत्र की तरह लग रहा था। ये यंत्र उनकी जान लेने के लिए भेजा गया था। वह जानते थे कि पत्र में क्या है, लेकिन वह नहीं चाहते थे कि उनके खोलने से पहले मैं उस पत्र को देखूं क्योंकि उन्हें लगा कि उससे मुझे नुकसान पहुंचेगा। दरअसल एक तांत्रिक ने अपने काले जादू से महागुरु को नुकसान पहुंचाने या मारने की कोशिश की थी, लेकिन इस बुरे काम में असफल होकर तांत्रिक ने हमारे सामने एक उदाहरण पेश किया और हम यह जान सके कि गुरुदेव की सतर्कता ने उन्हें घातक प्रयासों को विफल करने में मदद की।

गुरुदेव सदैव जागरूक रहते थे। जब लोग उनसे मिलने आते, तो उन्हें पता होता था कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है। अतः बातचीत महज़ औपचारिक होती थी जो आगंतुक की संतुष्टि के लिए की जाती थी। भौगोलिक रूप से दूर होने पर भी वह हमारे मन को पढ़ सकते थे और दूर बैठकर भी हमसे जुड़ सकते थे। वह किसी आध्यात्मिक सुपरमैन से कम नहीं थे!

अपनी किशोर अवस्था में गग्गू जी सात दिनों के लिए घर से भागे थे। उस घटना के पांच दशक बीत जाने के बाद भी वे यह समझ नहीं पाए

कि आखिर कैसे उनके मामा(गुरुदेव) सीधे उनके पास भीड़-भाड़ वाले शादीपुर बस डीपो(शिवपुरी में महागुरु के घर से 40 किलोमीटर दूर) तक पहुंच गए और उन्हें अपने साथ घर ले आए। गग्गू जी ने मुंबई से घर वापसी का सफर तीन बसें और कई रेलगाड़ियां बदलते हुए पूरा किया था। इसलिए दिल्ली में बस से उतरने के बाद जब उन्होंने गुरुदेव को देखा, तो उन्हें सदमा लगा और हैरानी भी हुई! आखिर महागुरु को उनके ठिकाने के बारे में कैसे पता लगा जबकि उनके परिवार में किसी को भी इस बात की जानकारी नहीं थी कि वो कहां हैं? उस समय सेल्यूलर फोन भी नहीं थे और जीपीएस केवल हवाई जहाजों में होते थे टेलीफोन में नहीं, तो एक साधारण इंसान को इस बात का पता कैसे चला?

गुरुदेव असाधारण शक्तियों वाले एक साधारण मानव थे। 22 साल के लंबे अंतराल के बाद अपने बचपन के मित्र, सुभाषजी से सपने में मिलने पर महागुरु ने कहा था, "मैं एक साधारण आदमी हूं, साधारण गुरु नहीं"। उनकी गुरु चेतना हमेशा इस दुनिया में और उससे परे भी जागरूक थी।

सचेत जागरुकता

सचेत जागरूकता का अर्थ विचारों के बारे में जागरूक होना नहीं है। जब तक हम इसका अनुभव नहीं कर लेते, तब तक इसके विपरीत सोचते हैं। सचेत जागरूकता का तात्पर्य है मन को अपनी इच्छा से कई आवृत्तियों से जोड़ लेना। मुझे पता है कि गुरुदेव के अलावा, राजा जनक, गुरु वशिष्ठ और यीशु मसीह भी जागरूकता की स्थिति में रहते थे। ऐसे और भी बहुत-से ज्ञात और अज्ञात लोग हैं जो जागरूक स्थिति में रहते हैं।

मैं सचेत जागरूकता बढ़ाने के दो तरीके बता सकता हूं। पहला, अपने

माथे से एक फुट की दूरी पर किसी भी बिंदु पर ध्यान केंद्रित करें, और दूसरा, ओम की कल्पना करें। मैं आपको सुझाव दूंगा कि आप दोनों का अभ्यास करें - एक आपको ध्यान करने में सहायक होगा, जबकि दूसरे से आप दृश्यों की कल्पना कर पाएंगे।

एक बिंदु पर ध्यान लगाना

मेरा मानना है कि अपने माथे से एक फुट की दूरी पर एक चुने हुए काल्पनिक बिंदु पर ध्यान केन्द्रित करके विचारों के शोर और आसपास की आवाजों को कम किया जा सकता है। इससे समय के साथ आपके मस्तिष्क की एकाग्रता और संज्ञानात्मक क्षमताओं में काफी सुधार होता है। इस अभ्यास से आप सटीक रूप से एकाग्रता विकसित कर लेते हैं। हर बार जब आप का मन भटकने लगता है, तो आप इस काल्पनिक बिंदु पर ध्यान केंद्रित करके मन को वापस फोकस में ला सकते हैं। सतत अभ्यास से आप अपनी स्वेच्छा से ध्यान केंद्रित करना एवं ध्यान हटाना सीख सकते हैं।

ओम का ध्यान

शिकागो में स्थान का संचालन करने वाले सुरिंदर कौशलजी ने बताया कि गुरुदेव ने कहा था, "ओम वह ध्वनि है जिसने ब्रह्मांड में सब कुछ बनाया है। ओम गुरु है। इसलिए जब आप ओम का जाप करते हैं, तो आप मेरा नाम जप रहे हैं, और जब आप ओम के बारे में सोचते हैं, तो आप मेरे बारे में सोच रहे हैं।"

महागुरु ने ओम को शुरुआत, अंत और सतत माना। उन्होंने हमें निर्देश दिया कि हम ओम के स्वरूप की कल्पना जितना ज्यादा हो सके करें।

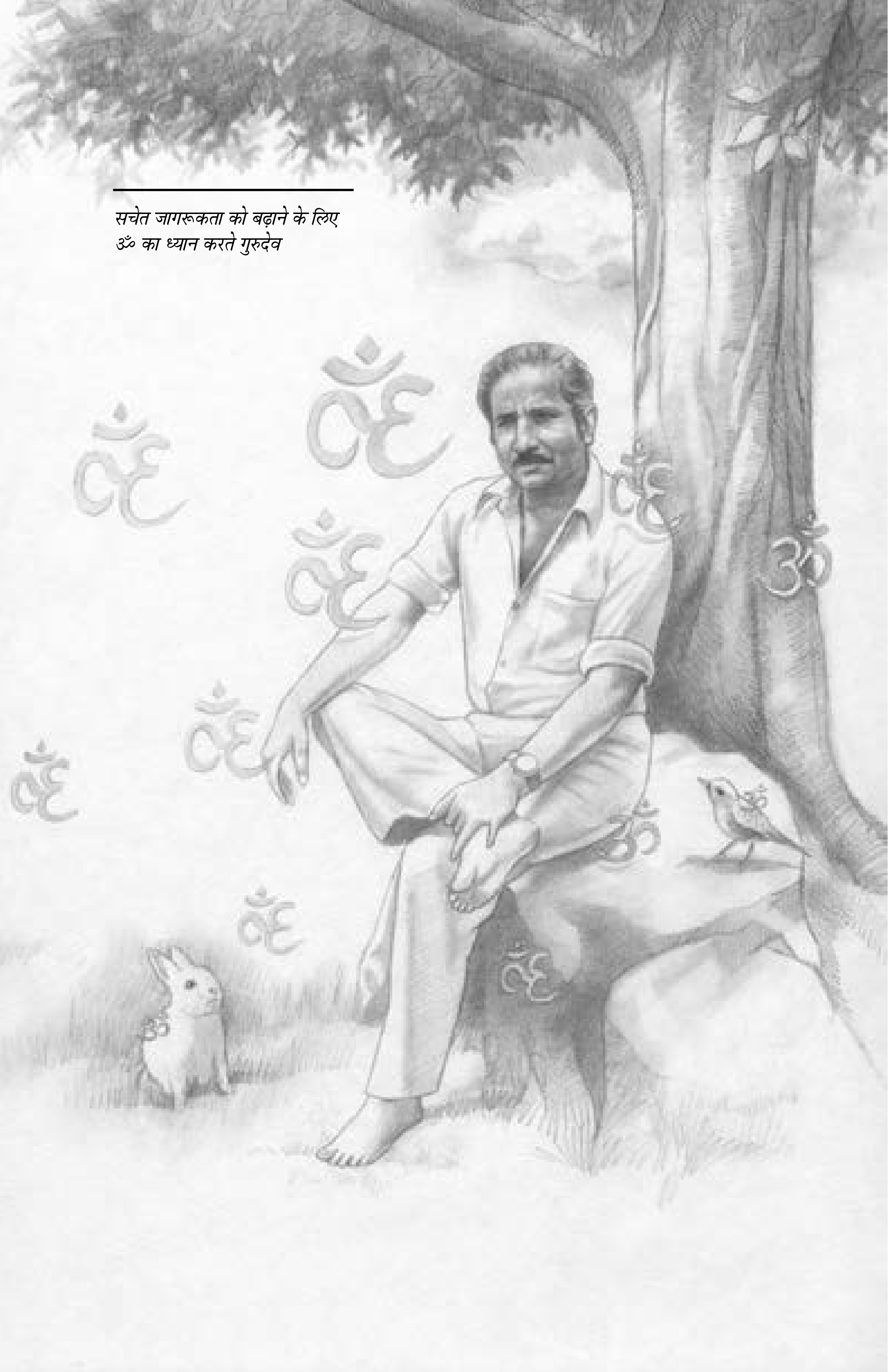

सचेत जागरूकता को बढ़ाने के लिए
ॐ का ध्यान करते गुरुदेव

मैंने ऐसा किया क्योंकि यह उनकी हिदायत थी, लेकिन वर्षों बाद जब मुझे गुरु चरण प्राप्ति हुई, तब मैं अभ्यास और परिणाम के बीच के बिंदुओं को जोड़ सका। (गुरुचरण प्राप्ति तब होती है जब कुंडलिनी तीसरे नेत्र चक्र तक पहुंच जाती है और उसे जागृत कर देती है।)

गुरु की चेतना, तीन चेतनाओं (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) का मिश्रण है और इससे आगे भी जाती है। जब मैं इस तरह का बयान देता हूं, तो यह बेतुका लग सकता है। तथ्य यह है कि हम बहुत ही विश्वसनीय जानकारी के आधार पर वास्तविकता की तार्किक(लॉजिकल) समझ बनाने की कोशिश करते हैं। यही कारण है कि शास्त्र अप्रासंगिक लगते हैं भले ही उनकी भाषा तर्क के बजाय अंतर्ज्ञान से उभरती है। यदि इसे सरल भाषा में कहा जाए तो गुरु चेतना में अस्तित्व से जुड़े तीन स्तर (भौतिक, सूक्ष्म और कारण) शामिल हैं। गुरु के पैर आज्ञा(तीसरी आंख) चक्र पर स्थित हैं, जबकि उनका सिर सहस्रार चक्र पर है। छठे चक्र से सातवें तक की यात्रा सीमित धारणा से उच्च जागरूकता तक की यात्रा है, यानि ज्ञान से दिव्य ज्ञान की यात्रा।

मैं यह दोहराता हूं कि गुरुदेव ने हमें बिना कोई कारण बताए ओम का ध्यान करने के लिए कहा। मेरे लिए उनकी सलाह थी "बुद्धू बन जा"। मुझे समझ में आ गया कि जहां तर्क समाप्त होता है, वहीं से अंतर्ज्ञान शुरू होता है। हालांकि मैं उन लोगों के लिए अतिरिक्त जानकारी साझा कर रहा हूं जो महागुरु की शिक्षाओं का तार्किक अर्थ निकालने की कोशिश कर रहे हैं।

ओम एवं आज्ञा चक्र

प्राण अथवा श्वास नाड़ी नामक ऊर्जा पथों के माध्यम से मानव शरीर में प्रवाहित होते हैं। नाड़ियां शरीर में विशिष्ट बिंदुओं पर एक जाल बनाती हैं। ये बिन्दु ऊर्जा के घूमते हुए भंवर होते हैं जिन्हें चक्र कहा जाता है। आपके शरीर में कई चक्र हैं लेकिन उनमें से सात प्रमुख हैं। प्रत्येक चक्र सूक्ष्म मार्ग के विभिन्न बिंदुओं पर स्थित है। यह चक्र शरीर की ऊर्जा को सक्रिय रखते हैं, लेकिन इस ऊर्जा का उपयोग बहुत कम होता है। चेतना बढ़ाने के लिए इन चक्रों को खोलना ज़रूरी है जिससे ऊर्जा रीढ़ के आधार या मूलाधार चक्र से सिर के शीर्ष या सहस्रार चक्र तक प्रवाहित हो सके।

यदि ऊर्जा किसी भी चक्र पर अटक जाती है, तो यह शारीरिक और मानसिक गड़बड़ी के रूप में सामने आती है, जो जीवात्मा की पूर्ण पहुंच को बाधित करती है। चूंकि हर चक्र एक विशेष आवृत्ति पर घूमता है, उसके अपने कंपन(ध्वनि), रूप(रंग और प्रतीक) और गुण होते हैं और कुछ अंग प्रणालियों को संचालित करते हैं। मूलाधार चक्र में सबसे कम कंपन होता है, जबकि सहस्रार चक्र में सबसे अधिक और सूक्ष्मतर कंपन होता है।

आज्ञा चक्र माथे के केंद्र में, भौंहों के बीच स्थित होता है और मस्तिष्क को नियंत्रित करता है। नतीजतन यह चक्र धारणा को डिकोड करने और छठी इंद्रिय(अंतर्ज्ञान) को बढ़ाने के लिए जिम्मेदार है। आज्ञा की सक्रियता मन को अपने में आने, और शारीरिक ऊर्जा के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए सशक्त बनाती है। चूंकि ध्यान उस ओर जाता है जहां ऊर्जा प्रवाहित होती है, तो ऐसे में ये चक्र सचेत जागरूकता का ज़रिया बन जाता है और छिपी हुई मानसिक क्षमताओं तक पहुंच बनाता

है, जैसे मन से मन का संवाद(टेलीपैथी), और इंद्रियों से परे सुनने, समझने और देखने की क्षमता।

जब मेरी तीसरी आंख खुली, तो कई विचित्र चीजें हुईं। इसकी शुरुआत मेरी आवाज़ सुनने और उन चीज़ों को देखने की क्षमता से हुई जो आंखों से नहीं देखी जा सकती थीं। मैंने जो सुना वो कोई बाहरी आवाज़ नहीं थी बल्कि मेरी आंतरिक आवाज़ थी। मैं बहुत कुछ महसूस कर रहा था। मैंने भविष्य की घटनाओं की झलक भी देखी, लेकिन हर कही और सुनी जा रही बात अर्थपूर्ण नहीं थी। एक बार मैंने महसूस किया कि मेरे बाएं कान में बीटल्स का गाना गूंज रहा है, लेकिन वह इतना धीमा था कि मेरा दाहिना कान उसे नहीं सुन सका और मेरी पत्नी भी उसे नहीं सुन सकीं! मेरे कमरे में कोई म्यूजिक सिस्टम नहीं था, तो यह संगीत कहां से आ रहा था? जब मैंने गुरुदेव से इस बारे में चर्चा की, तो उन्होंने मेरे सिर पर अपना हाथ फेरा और मेरी गर्दन से नीचे लाते हुए मेरी कुंडलिनी को नीचे कर दिया। मुझे पता था कि वह मेरी अतिसंवेदी क्षमताओं को कम कर रहे थे लेकिन मैंने अपनी निराशा को ज़ाहिर नहीं होने दिया। वे नहीं चाहते थे कि मैं सहस्रार और उससे आगे की अपनी यात्रा के दौरान आज्ञा चक्र में फंस जाऊं।

मुझे सातवें चक्र का पारगमन कई वर्षों बाद हुआ जब मैं ध्यान में बैठा था। ऐसा मानो कोई कागज मेरे सिर के पीछे, मेरी नाक के स्तर पर फट रहा हो। मैं अचानक देख सकता था कि मेरे पीछे क्या था! मुझे नहीं पता कि इस घटना को क्या कहा जाए। प्रतीकात्मक रूप से इसे चौथी आंख का खुलना कहा जा सकता है। चौथी आंख कुछ मिनट के लिए खुली रही और फिर बंद हो गई। मुझे नहीं पता कि यह अपने आप कैसे खुली और बंद हुई। जागृत अवस्था में ऐसा केवल एक बार हुआ और उसके बाद से ऐसा दोबारा कभी नहीं हुआ।

आजकल मैं मुश्किल से ही सजग जागरूकता की स्थिति में प्रवेश कर पाता हूं, हालांकि सेवा से जुड़ी खास परिस्थितियों में मेरा आभास सामान्य स्तरों से आगे बढ़ जाता है। इस तरह की जागरूकता की स्थिति में लगातार रहना एक बहुत बड़ा बोझ है। यह दूर से ग्लैमरस लगता है, पर ऐसा है नहीं। गुरुदेव की सदा जागरूक रहने की क्षमता ही उनके जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई थी। महागुरु के रूप में अपनी भूमिका में उन्हें हमेशा भौतिक और आध्यात्मिक लोकों के प्रति सजग रहना होता था, शायद अपनी पसंद की अपेक्षा दूसरों के प्रति एक जिम्मेदारी के रूप में।

शारीरिक रूप से, शरीर के दाएं हिस्से को बाएं मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जबकि दायां मस्तिष्क शरीर के बाएं हिस्से को नियंत्रित करता है। पिंगला नाड़ी शरीर के दाहिने हिस्से में ऊर्जा प्रसारित करती है, जबकि इड़ा नाड़ी बाईं ओर की ऊर्जाओं को निर्देशित करती है। पिंगला सौर किरणों के प्रभाव में है, जबकि चंद्र किरणें इड़ा को प्रभावित करती हैं। इसलिए शरीर का दाहिना भाग गर्म और उज्ज्वल है, जबकि बाईं ओर ठंडा है। इस प्रकार, शरीर के दाईं ओर पुरुषत्व ऊर्जा है, जबकि बाईं ओर नारीत्व ऊर्जा। इस तरह, यह कहा जा सकता है कि हर मनुष्य आधा पुरुष(शिव) और आधा स्त्री(शक्ति) है।

सुषुम्ना नाड़ी मानव प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा पथ है। इसका शारीरिक प्रतिरूप रीढ़ की हड्डी या मस्तिष्क का खोखला तना है। आज्ञा चक्र शरीर का एकमात्र बिंदु है जहां इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना मिलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक ऊर्जा त्रिकोण बनता है। जब सुषुम्ना आज्ञा में दृढ़ हो जाती है, तो यह बाएं और दाएं मस्तिष्क में तालमेल बनाती हुई आगे बढ़ती है। इससे मन और मस्तिष्क का तालमेल भी बेहतर होता है।

छठे के नीचे के पांच चक्र प्रकृति के पांच तत्वों या गणों (पृथ्वी, जल,

अग्नि, वायु और आकाश) में से किसी एक द्वारा सक्रिय होते हैं। प्रत्येक तत्व एक विशेष संवेदना (गंध, स्वाद, दृष्टि, स्पर्श और श्रवण) के साथ जुड़ा हुआ है। पांच चक्र, पांच तत्व, पांच इंद्रियां। इस तरीके से, पांच चक्रों के ऊपर स्थित आज्ञा चक्र को गणों का स्वामी माना जाता है।

आज्ञा चक्र ओम से उत्प्रेरित होता है, और ओम तत्वों और इंद्रियों से परे है। आइए देखें कि इस उत्प्रेरक को मानसिक कल्पना द्वारा कैसे जागृत कर सकते हैं।

कल्पना की अभिव्यक्ति

कल्पना दृश्य का आधार है। कोई भी इंसान चीजों की कल्पना कर सकता है, न केवल पहले देखी गई बल्कि उन अनंत वस्तुओं की भी जिन्हें पहले कभी नहीं देखा गया है। चित्र, संख्याएं, ध्वनियां, रूप, गंध और बहुत कुछ कल्पना द्वारा स्थिर और चलचित्र प्रारूप में संकलित किया जा सकता है। इस तरह कल्पना उन यादों का निर्माण कर सकती है जो वास्तव में कभी पारित नहीं हुईं। वैज्ञानिक इस बात की पुष्टि करते हैं कि विज़ुअलाइज़ेशन विशिष्ट इरादे से प्रेरित सचेत कल्पना है। मस्तिष्क अनुसंधान से पता चला है कि विचार भी क्रिया के समान ही प्रभाव उत्पन्न करता है। जब आप कुछ करने की सोचते हैं, तो मस्तिष्क में उसी तरह के परिवर्तन होते हैं जैसे उस क्रिया को करने के दौरान होते हैं। सीधे शब्दों में कहें तो मस्तिष्क किसी विचार और उस विचार से प्रेरित गतिविधि के बीच अंतर करने में असमर्थ होता है।

नियमित रूप से एवं बार-बार ओम का ध्यान करके आप विचारों की शक्ति और प्रवृत्ति से अपने भीतर के ओम को जागृत कर सकते हैं। इसी तरह यदि आप त्रिशूल का ध्यान करते हैं, तो आप स्वयं के भीतर

उसकी शक्ति प्रकट कर सकते हैं। यही बात हर वस्तु पर लागू होती है। निरंतर ध्यान आपकी क्षमता को उभारने और उसे प्रदर्शित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। अधिकांश ओलंपिक खिलाड़ी खेल शुरू होने से पहले ही अपनी गतिविधियों और विजय की कल्पना करते हैं। इतिहास ऐसे लोगों के उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने सचेत विचारों का सफल प्रत्यक्षीकरण किया।

गुरुदेव के शब्द थे, "जो आप शारीरिक रूप से कर सकते हैं, आप मानसिक रूप से भी कर सकते हैं।" तिब्बती भिक्षु अपने शरीर का तापमान बढ़ाने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल कर सकते हैं। शाओलिन भिक्षु अपने दिमाग को प्रशिक्षित करके तीव्र शारीरिक दर्द को सहन कर सकते हैं। महंत मानसिक शक्ति का उपयोग करके हवा में उठ सकते हैं। क्या ये महाशक्तियां हैं या केवल निष्क्रिय मानव क्षमताएं? स्वयं के भीतर गहरे उतरने पर ही आपको इस सवाल का जवाब मिलेगा। ▪

गुरुदेव अनेक स्तरों पर कुशल, जागरूक
और सचेत थे। ज्यादा जानने
के लिए सुनिए **'निरंतर जागरूकता'**
www.gurudevonline.com पर।

दर्शन एवं अभ्यास

महत्वपूर्ण दिन

गुरुदेव वर्ष के कुछ दिनों को विशिष्ट तरीकों से मनाते थे।

बड़ा गुरुवार

महीने के एक गुरुवार को बड़ा गुरुवार के रूप में मनाया जाता है। आम तौर पर यह अमावस्या के बाद का पहला गुरुवार होता है।

इस दिन, देश भर के स्थानों में सेवा होती है। स्थान पर आने वाले लोगों को चाय और यदि संभव हो तो खिचड़ी भी दी जाती है। बदले में उनसे कुछ भी लेने की अनुमति नहीं है क्योंकि दी गई सेवा के लिए कुछ भी स्वीकार नहीं किया जाता है। हालांकि गुड़गांव के सेक्टर 10 के मुख्य स्थान में आने वाले लोग चीनी में लिपटे जौ के दाने (फुलिया) और बताशे को प्रसाद के रूप में चढ़ाते हैं। स्थान पर अभिमंत्रित होने के बाद, चढ़ाए गए बताशे उन्हें वापस कर दिए जाते हैं।

लगभग 50,000 लोग, बड़ा गुरुवार को महागुरु की सहायता लेने के लिए आते थे। वह उन सभी से बहुत थोड़े समय के लिए मिलते थे। कुछ लोगों को इतना वक्त भी नहीं मिलता था कि वे उन्हें विस्तार से बता पाएं कि वह उनसे कैसी सहायता चाहते हैं, लेकिन सभी को किसी न किसी तरह वह उपचार मिल जाता था जिसकी उम्मीद में वह आते थे।

सोमवार का व्रत

गुरुदेव सोमवार का व्रत हर हफ्ते रखते थे। इस दिन, वह रात होने तक केवल तरल पदार्थ लेते थे। महागुरु के रूप में अपने प्रारंभिक वर्षों में, वह पानी, दही और गुड़ के साथ अपना उपवास तोड़ते थे, उसके बाद आलू की सब्जी और रोटी खाते थे। खाने से पहले गुरुदेव अपने हिस्से में से जल-दही-गुड़ का मिश्रण गाय, कौए, कुत्ते और घर के मेहमानों को खिलाते थे। धीरे-धीरे, समय के साथ, गुरुदेव ने इस परंपरा को छोड़ दिया। इन दिनों, सूर्यास्त पर पके हुए आलू और रोटियों के साथ सोमवार का उपवास तोड़ा जाता है। भक्त और शिष्य यदि चाहें तो दिन में फल खा सकते हैं।

गुरुदेव ने उपवास तपस्या के रूप में करने की सलाह दी। उपवास करके आप भाग्य से प्राप्त अपने भोजन का त्याग करके स्वेच्छा से इसे दूसरे को दे रहे हैं। इसके अलावा, सप्ताह में एक बार उपवास करने से पाचन तंत्र को आराम मिलता है, शरीर विषाक्त पदार्थों(टॉक्सिन) को छोड़ता है, कोशिकाओं की मरम्मत करता है, चयापचय(मेटाबोलिज्म) को तेज करता है और मस्तिष्क स्वास्थ्य में सुधार करता है। इसके अलावा, चूंकि उस दिन अनाज और नमक का अतिरिक्त निवेश नहीं होता है इसलिए शरीर में रिसाव कम होता है, और मन सक्रियता और तनाव से मुक्त होता है।

सोमवार के दिन चंद्रमा की किरणें बहुत प्रभावी होती हैं। चूंकि हमारे शरीर में लगभग 70% पानी है इसलिए चंद्रमा की किरणें हमारे शरीर एवं मन को प्रभावित करती हैं। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सोमवार का उपवास अच्छा है।

सोमवार के दिन के बारे में बताते हुए, रवि जी ने महागुरु के शब्दों को याद करते हुए कहा, "यह दिन आपके इष्ट को समर्पित है, इसलिए आपको इस दिन जितना हो सके उतना पाठ करना चाहिए"। महागुरु ने शिव के अव्यक्त स्वरूप का 'इष्ट' के रूप में उल्लेख किया है।

विशेष उपवास

गुरुदेव ने गणेश चौथ और महाशिवरात्रि पर उपवास रखने का भी सुझाव दिया।

रवि जी अपने गुरु को याद करते हुए बताते हैं कि उपवास आत्म-संयम का अभ्यास है, जिसका मकसद भोजन के सेवन, वाणी और इंद्रियों पर नियंत्रण रखना है। उपवास मनुष्य की चुंबकीय शक्तियों को बढ़ाता है और व्यक्ति पृथ्वी या वायुमंडल से ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा ग्रहण कर सकता है। ऊर्जा धारण करने की अधिक क्षमता वाले लोगों के लिए उपवास ऊर्जा की पुनः पूर्ति का एक प्रभावी तरीका है।

गणेश चौथ

आमतौर पर जनवरी के महीने में गणेश चौथ मनाई जाती है। इस दिन, भक्त और शिष्य सूर्योदय से चंद्रोदय तक निराहार और निर्जल उपवास करते हैं। गुड़-तिल के लड्डू और गुड़ की चाय से व्रत तोड़ा जाता है। स्थान पर गुड़ की चाय के साथ लड्डू परोसे जाते हैं या घर पर बनाए जाते हैं।

दिवाली से महाशिवरात्रि तक की अवधि 'शक्ति काल' के रूप में जानी जाती है। इस अवधि के दौरान, व्यक्ति की पुरुष ऊर्जा निष्क्रिय हो जाती

है, जबकि स्त्री ऊर्जा सक्रिय और प्रभावी रहती है। इस अवधि के दौरान, इस बारे में जागरूक अध्यात्मवादी पुरुष लो प्रोफाइल रखना पसंद करते हैं, और महिलाओं के साथ अपना सामाजिक मेलजोल भी न्यूनतम आवश्यकताओं तक सीमित रखते हैं।

गणेश चौथ पर शिव सिद्धांत का तीसरा हिस्सा पुनर्जागृत हो जाता है जो एक पुरुष को ऊर्जावान बनाकर पुनः आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। अंत में, महाशिवरात्रि पर हर व्यक्ति की ऊर्जा का शिव सिद्धांत पूरी तरह से जीवंत और प्रभावी हो जाता है।

महाशिवरात्रि

हर साल फरवरी या मार्च में यह दिन गणेश चौथ के 41 दिन बाद आता है। जो यह व्रत रखते हैं उन्हें सूर्योदय के पूर्व खाना होता है और फिर मध्यरात्रि तक वो अन्न या जल ग्रहण नहीं करते हैं। वे या तो स्थान पर या अपने घरों पर तले हुए नमकीन आलू और काली मिर्च-नींबू की चाय के साथ उपवास तोड़ते हैं।

यह व्रत गणेश चौथ की तुलना में ज्यादा कठिन है क्योंकि यह थोड़ा लंबा होता है। गुरुदेव के समय में, महाशिवरात्रि पर कई किलोमीटर लंबी लाइन लगती थी। भक्तों को महागुरु से मिलने और उनका आशीर्वाद लेने में तीन से चार दिन का समय लग जाता था।

वैसे तो महाशिवरात्रि हर स्थान पर आयोजित की जाती है, लेकिन गुड़गांव के स्थान पर अपना उपवास तोड़ने के लिए देश भर के अनेक श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। उनके रहने और खाने की व्यवस्था सेवादारों द्वारा की जाती है। बड़ी मात्रा में भोजन पकाया जाता है और सभी

आगंतुकों को महाशिवरात्रि के दो दिन पहले से लेकर दो दिन बाद तक लंगर परोसा जाता है।

गुरुदेव के जीवन का करीब से अध्ययन करने पर मैं यह पाता हूं कि लगभग हर अवसर उनके लिए अनगिनत लोगों को भोजन कराने का एक और मौका बन जाता था।

गुरु पूर्णिमा

हर साल, ज्यादातर जुलाई में, एक दिन औपचारिक रूप से गुरु को समर्पित होता है और इसे गुरु पूर्णिमा कहा जाता है। यह दिन आपके गुरु को आपके जीवन में उनकी उपस्थिति और आपकी आध्यात्मिक प्रगति में उनके योगदान के लिए सम्मान देने का दिन है।

गुरुदेव इस दिन को एक प्रथा के रूप में उत्सवपूर्वक मनाते थे। उनके भक्त उन्हें पीले कपड़े में लपेटे हुए नारियल भेंट करते थे, जिसे वह आशीर्वाद देकर वापस लौटा देते थे। नारियल आमतौर पर मानव सिर का प्रतीक माना जाता है और अपने गुरु को नारियल चढ़ाने का अर्थ है उनके प्रति समर्पण। गुरुदेव ने अपने शिष्यों को उन्हें नौ वस्त्र या सामान का सेट देने की अनुमति दी। वैकल्पिक रूप से, उन्होंने महसूस किया कि यदि हम एक पीले रूमाल पर 'नौ वस्त्र' लिख कर अर्पण कर दें, तो भी यह प्रथा पूरी हो जाएगी। उन्होंने कुछ शिष्यों को उनके पैर धोने और वो पानी पीने की अनुमति दी। ये पानी अत्यंत शक्तिशाली था क्योंकि उसमे उनकी ऊर्जा समाहित थी। कुछ शिष्यों के लिए ऊर्जित जल अमृत साबित हुआ क्योंकि इससे उनकी चेतना जागृत हुई।

हज़ारों की संख्या में भक्त उनका आशीर्वाद पाने और उनसे अपने

गुरु पूर्णिमा पर एक श्रद्धालु के दिए नारियल को आशीष प्रदान करते गुरुदेव

नारियल को अनुगृहित कराने के लिए एकत्र होते थे। कुछ लोग जब तक उनके दर्शन नहीं कर लेते थे, अपना उपवास नहीं तोड़ते थे। स्थान पर आने वाले श्रद्धालुओं को केसर और गुड़ के चावल तथा आम दिए जाते थे।

दशहरा, धनतेरस और दिवाली

चंद्र चक्र के अनुसार, दशहरे से लेकर दिवाली तक के बीस दिनों को वर्ष का सबसे अंधकारमय माना जाता है। गुरु बनने की प्रक्रिया में, महागुरु दशहरा के दौरान जमीन पर सोते, लगातार बिना बदले एक ही कपड़े पहनते, यदि संभव हो तो हल्का भोजन करते और जितना संभव हो उतना पाठ करते। बाद के वर्षों में उन्होंने स्वयं इन नियमों का पालन बंद कर दिया, लेकिन अपने कुछ शिष्यों को इसे जारी रखने का सुझाव दिया।

धनतेरस

दिवाली से एक या दो दिन पहले धनतेरस होता है। यह धन की देवी लक्ष्मी देवी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और बरकत का अनुरोध करने का दिन है।

इस दिन महागुरु के अनुयायी, भक्त और शिष्य लक्ष्मी देवी का एक चांदी का सिक्का लाते और उसे उनसे अनुगृहित करवाते थे। दिवाली की रात से 41 रातों तक इस सिक्के पर केसर या सिंदूर का तिलक लगाया जाता है, और गुरु के दिए गए विशिष्ट मंत्र का उच्चारण देवी की ऊर्जा को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है ताकि बरकत की शक्ति जो हम में से प्रत्येक के भीतर अन्तर्निहित है, को जागृत किया जा सके।

दिवाली

दिवाली की रात साल की सबसे अंधेरी रात होती है। महागुरु ने हमें इस रात को विशेष रूप से सात विशिष्ट स्थानों - जल निकाय, तुलसी का पौधा, पीपल का पेड़, चौराहा, मंदिर, कब्रिस्तान और अपने घरों में दीये या तेल का दीपक जलाने की सलाह दी। दीये आमतौर पर ऊर्जाओं को प्रसन्न करने के लिए जलाए जाते हैं। गुरुदेव ने हमें दिवाली की रात पाठ करते हुए गुजारने का भी सुझाव दिया। भले ही मंत्र-आधारित ध्यान हर दिन करना जरूरी है, लेकिन विशिष्ट दिनों में इसका लाभ काफी बढ़ जाता है।

अन्य महत्वपूर्ण दिन

गुरुदेव ने सुझाव दिया कि ग्रहण के दौरान हमें पाठ करना चाहिए तथा अन्न और जल ग्रहण नहीं करना चाहिए।

श्राद्ध के दिनों में, गुरुदेव ने अपने पूर्वजों के नाम पर लोगों और जानवरों को खाना खिलाने की वकालत की। इसके अलावा उनके नाम पर परोपकार के अन्य काम भी किए जा सकते हैं।

जन्मदिन को लेकर वह आम लोगों से विपरीत सोच रखते थे, क्योंकि महागुरु का मानना था कि जीवात्मा न तो पैदा होती है और न ही मरती है। हालांकि महागुरु के जाने के बाद उनके भक्तों ने बसंत पंचमी को उनके जन्मदिन के रूप में मनाना शुरू कर दिया। जबकि गुरुदेव के समय से ही बसंत पंचमी पर केसरिया चावल बांटने की परंपरा चली आ रही है, वह इसे केवल ज्ञान की देवी सरस्वती को समर्पित दिन के रूप में देखते थे। ▪

05

स्वच्छता

उनकी विधियां, जैसे आध्यात्मिक बचत,
हर निवेश पर देती हैं अद्भुत बढ़त,
जब हमने अपनाया उनका तरीका,
तब सीखा हमने अध्यात्म का सलीका।

आपके अस्तित्व की गुणवत्ता आपके भौतिक जीवन से ज्यादा प्रमुखता रखती है। यह सत्य महागुरु की सोच में भी प्रतिध्वनित होता है। आपके कर्म और सोच इस दुनिया में आपके अस्तित्व की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं और अन्य लोकों के लिए आपको योग्य बनाते हैं। यही कारण है कि महागुरु ने सुझाव दिया कि आपके उद्देश्य एवं आकांक्षाएं आपके वर्तमान अवतार से कई जन्म आगे होने चाहिए। इसलिए प्रत्येक जीवनकाल में आपका लक्ष्य उच्च लोकों तक पहुंचना, दीर्घ काल तक आनंदित रहना, जन्म-मृत्यु के चक्र से कुछ अंतराल के लिए मुक्ति प्राप्त करना और अंततः परम-आत्मा के साथ पुनर्मिलन होना चाहिए।

महागुरु के सिद्धांत को कॉर्पोरेट दुनिया के संदर्भों का उपयोग करके आसानी से समझा जा सकता है। मान लीजिए कि आप अपनी वर्तमान नौकरी में अच्छा करते हैं और आपको बेहतरीन रेटिंग मिलती है। उस स्थिति में, आपके पास उच्च पद और अच्छे वेतनमान के साथ बेहतरीन नौकरी पाने का अवसर होगा। इसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्र में भी आपकी जीवात्मा आपके बदले नज़रिये, प्राप्त गुणों और प्रत्येक जीवन-काल के अंत में प्राप्त ऊंचाई का निष्पक्ष मूल्यांकन करती है। यह "परिवर्तन

मूल्यांकन अंक" आपके अगले जीवन की गुणवत्ता निर्धारित करता है, और बदले में प्रत्येक जीवनकाल उच्च स्कोर करने और गोल पोस्ट के करीब जाने का अवसर बन जाता है।

मैंने भविष्य के लिए जीने की अवधारणा पर तभी ध्यान देना शुरू किया जब गुरुदेव ने मुझे मृत्यु से दिल्लगी करना सिखाया। मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में सोचते हुए मुझे एहसास हुआ कि शायद एक विश्राम काल के बाद मुझे फिर से एक मानव रूप मिले, और मेरा यह वर्तमान अवतार ही मुझे इस योग्य बनाएगा, जो निर्धारित करेगा कि मेरा अगला जन्म कठिन परिस्थितियों में होगा या सुखद परिस्थितियों में। यदि मैं अपने जीवन की गुणवत्ता को लेकर चिंतित रहूंगा, तभी मैं यह सुनिश्चित करना चाहूंगा कि मेरा वर्तमान जीवन, पिछले या उससे पहले के जीवन से बेहतर हो। यह जानते हुए कि मृत्यु सर्वोत्तम-निर्धारित योजनाओं को विराम दे सकती है, मुझे लगा कि मुझे इसके लिए तैयार रहना होगा। तैयार होने का मतलब है कि हर चीज़ के प्रति सचेत रहते हुए, अपने भौतिक और आध्यात्मिक परिवेश के बारे में लगातार जागरूक रहना।

किसी भी जीवनकाल में, जीव की गुणवत्ता को बढ़ाने का प्रयास, समय और संकल्प के ढांचे के भीतर रहकर करना पड़ता है, और इस संबंध में आपके प्रयासों को बढ़ाने वाले कार्यों को स्वच्छ माना जाना चाहिए और इसे नियमित रूप से तब तक किया जाना चाहिए जब तक कि वे आदत न बन जाएं।

गुरुदेव की आदतों का अध्ययन करते समय, उनके दर्शन के साथ उनके सहसंबंध को मैं अपने पहले प्रयास में नहीं समझ पाया। मैंने उसे फिर से समझा कि आत्म-स्वच्छता न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य के बारे में है, बल्कि दूसरों के कल्याण के बारे में भी है। ▪

स्वच्छता

सामाजिक स्वच्छता

आभार एवं उपकार

मृत्यु से कुछ महीने पहले, गुरुदेव ने अपनी सबसे बड़ी बेटी रेणु को बताया कि वह उसे और अपने अन्य बच्चों को स्थान की हर ज़िम्मेदारी से मुक्त कर उन्हें अपने खांडसा फार्म में गायों की देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंप रहे हैं जिनके नाम उन्होंने हिंदू देवियों के नाम पर रखे थे और वह उनसे लगातार बात करते थे। प्रतिक्रिया स्वरूप उनका रंभाना यह सुनिश्चित करता था कि संवाद परस्पर था।

खेत में रोजाना उनके साथ कई घंटे बिताने वाले पहलवान जी याद करते हैं कि कैसे गुरुदेव उस समय पाठ करने चले गए थे जब उन्होंने फार्म में नियमित रूप से उछल कूद मचाने वाले एक बंदर के नवजात बच्चे की मौत की खबर सुनी। महागुरु ने उसके मृत बच्चे को अगले जन्म में मानव रूप दिया क्योंकि उसकी मां नियमित रूप से अपनी उछल-कूद से गुरुदेव का मनोरंजन करती थी। एक अन्य अवसर पर, गुरुदेव एक सांप के अनुरोध पर उसे तांत्रिक की कैद से मुक्ति दिलाने के लिए सहमत हुए थे। गुरुदेव ने सांप को मारकर उसका विधिपूर्वक अंतिम संस्कार कर दिया और उसे मनुष्य रूप में जन्म लेने की अनुमति दी। जब रेणुका में एक बच्चे की आस लेकर गुरुदेव से मिलने आए एक दंपति, एक साल बाद अपने नवजात शिशु के साथ दोबारा आए, तब महागुरु ने अपने एक शिष्य बक्शी जी को उस बच्ची को देखने के

लिए बुलाया। बक्शी जी ने उस बच्ची की पीठ पर बने निशानों से उसके पिछले जन्म में वही सांप होने की पहचान की। इस बात को याद करते हुए बक्शी जी बताते हैं कि उन्होंने इतनी खूबसूरत बच्ची पहले कभी नहीं देखी थी। अपनी सेवा करने वालों या मदद मांगने वालों के प्रति महागुरु की दया बेमिसाल थी, चाहे वे जानवर ही क्यों ना हो।

कृतज्ञता गुरुदेव की सामाजिक स्वच्छता का अभिन्न अंग थी और ऐसा लगता है कि बचपन में ही उनमें इसके बीज अंकुरित हो गए थे। उनके मन में आध्यात्मिकता के प्रति आदर का भाव पनपने के पीछे शायद उस दरगाह के फकीर की कृतज्ञता थी, जहां से उन्होंने और उनके दोस्त सुभाष जी ने बचपन में बेर चुराए थे। भले ही गुरुदेव अपने गुरु के बारे में बहुत कम बात करते थे, लेकिन वो उनकी मौजूदगी को लेकर हमेशा सचेत रहते थे। असल में महाशिवरात्रि और गुरुपूर्णिमा के अवसर पर उन्होंने स्वयं माला पहनने की बजाय स्थान पर माला चढ़ाने को प्रमुखता दी क्योंकि वह इसे अपने गुरु के निवास के रूप में संबोधित करते थे। अपने गुरु से अधिक माला पहनना उनकी सोच के अनुरूप नहीं था।

गुरु होने के नाते, कृतज्ञता एक ऐसा ज़रिया था
जिससे वो लोगों के आभार से स्वयं को मुक्त रखते थे।
वह सेवा करते थे, लेकिन अपनी सेवा नहीं करवाते थे।

बिट्टू जी स्नेहपूर्वक याद करते हैं कि रेणुका की सर्द सुबह में तीन बजे उनके गुरु उनके लिए ताज़ा चाय बनाकर उन्हें पीने के लिए उठाते थे। राजी जी की आंखें नम हो जाती हैं जब वह याद करते हैं कि किस तरह महागुरु ने उनकी कार की डिक्की में से कपड़ों से भरे बोरे को उतारने में उनकी मदद की थी। शिविरों में महागुरु के हाथ का बना नाश्ता खाकर, गुरुदेव के बॉस प्रताप सिंह जी को अपना जीवन धन्य लगता

था। गुरुदेव रुद्र जी के बहनोई थे और रुद्र जी का मानना था कि इस दुनिया में उन्हें सबसे अधिक सम्मान देने वाले व्यक्ति उनकी बहन के पति थे। संतलाल जी उस समय को याद करते हैं जब गुरुदेव सोनीपत में अपनी बेटियों से मिलने आए थे, जो एक सड़क दुर्घटना के बाद वहां आराम कर रही थीं। अपने परिवार के साथ समय बिताने के बजाय, महागुरु ने अपने खेत की देखभाल करने वाले के गरीब और बूढ़े माता-पिता से मिलने का फैसला किया केवल इसलिए कि कुछ महीनों पहले उस मजदूर ने गुरुदेव की अगली सोनीपत यात्रा के दौरान उनसे मिलने का अनुरोध किया था। दबी जुबान में किए गए अनुरोधों को पूरे दिल से सम्मानित किया गया था!

महागुरु ने हमेशा हमें उन लोगों का आभारी होने के लिए कहा जिन्होंने हमें उनकी सेवा करने का अवसर दिया। इस सोच ने सेवा के बारे में मेरे विचारों को पूरी तरह से बदल दिया। मैं केवल इसलिए सेवा कर सका क्योंकि दूसरे ने मुझे यह अवसर दिया, इस विचार ने 'मैं' और 'आप' के बीच की मानसिक दूरी को खत्म कर दिया, जिससे एकता की भावना का जन्म हुआ।

दूसरों के साथ गुरुदेव का संबंध अलग-अलग तरीकों से ज़ाहिर होता था, क्योंकि वे उन लोगों की सोच के स्तर तक आने के लिए एक भूमिका में ढल जाते थे। मसलन वे बच्चों के प्रति शरारत से भरा स्नेह जताते थे, जबकि बड़ों से बहुत सम्मान से पेश आते थे। कुछ शामें ऐसी भी होती थीं जब वे लुंगी लपेटे हुए पड़ोस के बच्चों के साथ क्रिकेट खेलते थे और खेल में थोड़ी शरारत भी कर लेते थे, लेकिन वो बच्चों के लिए पहले ही मिठाई के पैकेट खरीद लाते थे ताकि बच्चों को कोई शिकायत ना रहे! डॉ शंकर नारायण ने उस वक्त को याद किया जब वे वर्ष 1990 में महागुरु के साथ लुधियाना में उनके ससुराल गए थे।

अपने ससुराल में अपनी सास से मिलने पर, उन्होंने सम्मान से उनके पैर छूने की हिंदू परंपरा का पालन किया। जिस महागुरु के चरण स्पर्श करने के लिए लाखों लोग प्रतीक्षारत रहते थे, वे एक साधारण महिला के पैर छू रहे थे! गुरुदेव की दुनिया में विनम्रता और मानवता एकजुट होकर सामने आती थीं।

समाज-केन्द्रित मान्यताएं

उनकी सामाजिक स्वच्छता का एक और पहलू समाज-केंद्रित मान्यताओं का सम्मान करना था। वे हम सबसे बेहतर जानते थे कि लोगों का दुनिया को देखने का नज़रिया उनकी कंडीशनिंग और परवरिश के आधार पर होता है।

गुरुदेव जानते थे कि सिख धार्मिक रूप से धूम्रपान के खिलाफ हैं, इसलिए अगर सिगरेट पीते वक्त कोई सिख उनकी तरफ आ जाता तो वो अपनी सिगरेट तुरंत बुझा देते थे। हालांकि वे अपने शिष्यों को शाकाहारी भोजन करने के लिए कहते थे, लेकिन उन्होंने पश्चिम बंगाल के लोगों को कभी-कभी मछली खाने की भी इजाज़त दी क्योंकि मछली उनका मुख्य भोजन है। वे शराब से परहेज करने की सलाह देते थे क्योंकि यह आपको मानसिक रूप से शिथिल कर देती है, लेकिन उन्होंने बिल्लू जी जैसे भक्तों का साथ भी नहीं छोड़ा जो बहुत बार कोशिश करने के बावजूद शराब छोड़ने में नाकाम रहे, हालांकि वे अपने भक्तों या शिष्यों को नशे की हालत में स्थान में प्रवेश करने की इजाज़त नहीं देते थे। जो लोग जानबूझकर ऐसा करते थे, उन्हें गुरु की अवहेलना का प्रकोप भुगतना पड़ता था।

महागुरु की कार्यपद्धति लचीली थी, लेकिन उनकी सोच सिद्धांतों पर आधारित थी।

समाज के पारंपरिक ढांचे के भीतर रहकर वह भीड़ से हटकर सोचते थे। वह दहेज के खिलाफ थे। उनका मानना था कि शादी या कन्यादान में बेटी देना, सेवा के उच्च रूपों में से एक है। दुल्हन के पिता को अपनी जीवन भर की कमाई से वंचित न होना पड़े इसलिए वह स्वयं और कभी-कभी अपने शिष्यों के साथ शादी के लिए जरूरी साजो-सामान में योगदान देते थे।

एक ऐसे युग में जहां भारतीय महिलाओं को केवल बेटियों, पत्नियों और माताओं के रूप में देखा जाता था, उन्होंने उन्हें स्वतंत्र और बराबरी का दर्जा दिया। उनकी पत्नी पेशे से एक योग्य स्कूल शिक्षिका थीं और गृहस्थी के खर्चों में बराबरी से योगदान देती थीं। हालांकि गृहस्थ आश्रम उनका निर्धारित मार्ग था पर उन्होंने कभी लड़कियों के जल्दी शादी करने पर ज़ोर नहीं दिया। ▪

सच्ची महानता कैसी होती है?
सुनिए **सादा जीवन. उच्च विचार**
www.gurudevonline.com पर।

अपना गुज़ारा चलाने के लिए
टॉफियां और पेन बेचते गुरुदेव

आर्थिक स्वच्छता

महागुरु ऋणमुक्त जीवन जीने के बहुत बड़े हिमायती थे। वे ऐसी कोई चीज़ स्वीकार नहीं करते जिसे खरीदने में वे समर्थ नहीं थे। वो उस अनाज और नमक को कभी नहीं खाते या स्वीकार करते जिसकी कीमत किसी और ने चुकाई हो। हालांकि कुछ घटनाओं ने मुझे इस बात का एहसास कराया कि महागुरु आभार से ज्यादा मंशा को महत्व देते थे।

बिट्टू जी ने गुरुदेव के साथ उनके शिविर से करनाल होते हुए गुड़गांव तक की यात्रा के अपने अनुभव साझा किए। रात में ड्राइविंग करने में असहज महसूस कर रहे महागुरु के ड्राइवर कस्तूरी ने रास्ते में पड़ने वाले गैस स्टेशन पर रात बिताने का अनुरोध किया। गैस स्टेशन कस्तूरी का रिश्तेदार चलाता था और उसे पता था कि उनके गुरु को वहां कोई तकलीफ नहीं होगी।

रात के 11 बजे गैस स्टेशन पहुंचने पर गुरुदेव ने उन सबको बता दिया कि वे अगली सुबह 6 बजे निकलेंगे। गुरुदेव के निकलने के निर्धारित समय से लगभग एक घंटे पहले, गैस स्टेशन के मालिक का परिवार गर्म पूरियां, चाय और ताज़ी सब्ज़ी के नाश्ते के साथ पहुंच गया। नाश्ता बहुत लुभावना था लेकिन गुरु के शिष्यों ने खाने से मना कर दिया क्योंकि वे एहसान नहीं लेना चाहते थे, जबकि महागुरु ने प्रसन्नतापूर्वक नाश्ते का आनंद लिया, जिससे गैस स्टेशन के मालिक को अच्छा लगा। गुरुदेव जानते थे कि इतने सारे लोगों का नाश्ता पकाने के लिए परिवार सुबह 3

बजे जागा होगा और लगभग 4 बजे तक काम किया होगा, फिर समय पर पहुंचने के लिए एक घंटे पहले घर से निकला होगा। उन्होंने नाश्ते के लिए कोई भुगतान नहीं किया लेकिन निश्चित रूप से अपने शिष्यों को श्रद्धा का सम्मान करने के बजाय एहसान को महत्व देने के लिए फटकार लगाई।

कई साल पहले, जब मैं टैक्सी से यहां-वहां घूमने के बाद मुंगावली स्थित शिविर पर पहुंचा, तो मैं रात का खाना खत्म कर रहे गुरुदेव और कुछ सह-शिष्यों से मिला। मैंने रेलवे स्टेशन से पकौड़ों का एक पैकेट लिया था। चूंकि टैक्सी ड्राइवर रास्ता भूल गया था, मैं शाम की बजाय रात को शिविर पर पहुंचा, इसलिए मैंने पकौड़ों को चुपचाप एक तरफ रख दिया। अगली सुबह जागने पर जब मैं उस टेंट की ओर गया जहां भोजन परोसा जाता था, मैंने गुरुदेव को पकौड़ों को उलट-पुलट करते और खाते देखा। उनका अभिवादन करने के बाद मैंने उनसे कहा कि चूंकि मैंने ये पकौड़े खरीदे हैं इसलिए उन्हें मुझे इसका भुगतान करना होगा। उन्होंने जवाब दिया, "क्या ऐसा है?" और जाते-जाते एक और खा लिया। सुबह-सुबह एक महागुरु की कही गई यह बात आप को सोच के भंवर में डाल सकती है। पकौड़े खरीदते समय मैंने सोचा था कि यह गुरुदेव खरीद रहे हैं, मैं नहीं। गुरुदेव द्वारा ठंडे पकौड़े खाने से मुझे ये एहसास हुआ कि यह उनके प्रति पूर्ण समर्पण रखने के एवज में उनके प्रतिदान का तरीका था।

चोरी भले ही छोटी-सी क्यों ना हो, उसकी सजा बस एक ही होती थी – फटकार! एक बार जब मैं गुरुदेव से बात कर रहा था और वह ऑफिस जाने के लिए तैयार थे, तो उन्होंने अपने बटुए को देखा। उसमें से कुछ पैसे गायब थे। उन्होंने बुदबुदाते हुए उस व्यक्ति का नाम लिया जिसने पैसे चुराए थे। मैंने उनसे पूछा कि वे दोषी को क्यों नहीं बुला रहे हैं।

उन्होंने कहा कि इसकी जरूरत नहीं है क्योंकि वह व्यक्ति इस हरकत के कारण अपनी सेवा के पुण्य का कुछ हिस्सा खो देगा। चुराई गई रकम बहुत छोटी थी, लेकिन सेवा के महीनों या वर्षों का नुकसान उसकी तुलना में कहीं ज्यादा था!

मुझे व्यक्तिगत रूप से 'गुड़गांव में खोने, मुंबई में पाने' का अनुभव हुआ है। यह इस तरह हुआ - गुरुदेव ने मुझे और मेरी पत्नी को हैदराबाद में होने वाली एक शादी में शामिल होने के लिए उनके साथ हवाई जहाज से चलने के लिए कहा। मेरे पास छह हज़ार रुपए नकद थे, और उस समय प्लास्टिक मनी चलन में नहीं था। चूंकि उस यात्रा में होने वाला खर्च मेरे सामर्थ्य से ज्यादा था, इसलिए मैंने गुरुदेव को एक संदेश भेजकर उनसे अनुरोध किया कि वे हमें ट्रेन से यात्रा करने की अनुमति दें। मुझे पूरे दिन उनका कोई जवाब नहीं मिला लेकिन मैंने देखा कि मेरा बटुआ गायब हो गया है। माफी मांगने के लिए गुरुदेव के पास जाने पर, मैंने उनकी आंखों में शरारत की एक झलक देखी। उन्होंने मुझसे कहा कि मुझे उनके निर्देशों का विश्लेषण करने की बजाय हमेशा उनका पालन करना चाहिए। कुछ दिनों बाद, मुझे मुंबई में घर पर अपने ब्लेज़र की जेब में छह हज़ार रुपए मिले। वाह! महागुरु किसी भी स्थिति को अपने अनुरूप ढाल सकते थे और वे एक कागज के नोट को भी ओरिगामी की तरह इस्तेमाल कर सकते थे।

गुरुदेव जब पहली बार हरिआना से दिल्ली आए, तो जीविका चलाने के लिए उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। अपना खर्चा पूरा करने के लिए, उन्होंने टॉफी, पेन और बस के टिकट बेचे। मुश्किलों के बावजूद उनके सिद्धान्त अटल थे कि पैसा कमाना है लेकिन गलत ढंग से नहीं।

बीस वर्ष की उम्र में उन्हें एक मृदा सर्वेक्षणकर्ता की नौकरी मिल गई

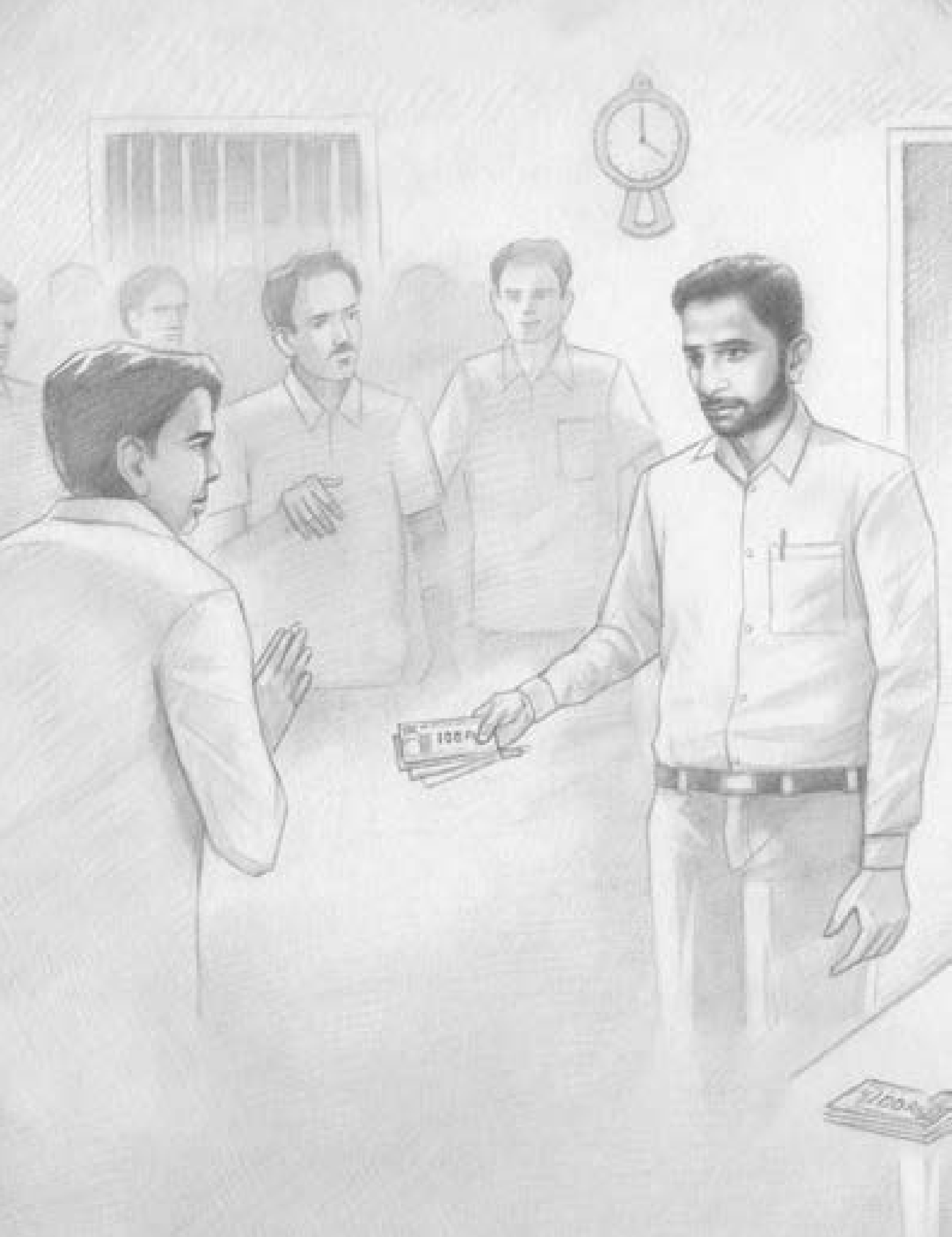

कार्यालय में अपना वेतन
वितरित करते हुए गुरुदेव

और वे उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों के शिविरों में कई महीने बिताने लगे। उनके सहयोगी-सह-भक्त नागपाल जी कहते थे कि वह मिट्टी के नमूनों की जांच करने के लिए जमीन के हर हिस्से में जाते थे। मुश्किल इलाकों में जाने में भी उन्हें परेशानी नहीं होती थी। जब तक वह स्वयं मिट्टी के नमूने की जांच नहीं कर लेते, उस पर रिपोर्ट नहीं लिखते थे। महागुरु ने अपने वेतन के साथ न्याय किया और कभी काम के साथ समझौता नहीं किया। जिसे भी लगता है कि महागुरुओं को आसानी से सब कुछ प्राप्त हो जाता है, उन्हें गुरुदेव के जीवन को जानना और समझना चाहिए।

कठोर परिश्रम के बाद, महीने के अंत में उन्हें मिलने वाला वेतन बहुत कम होता था। उनका शुरुआती वेतन महज़ 150 रुपए प्रति माह था, फिर भी महागुरु वेतन के दिन ही अपने वेतन का बड़ा हिस्सा जरूरतमंदों को दे देते। ऐसे लोगों के चयन की कोई प्रक्रिया नहीं थी, बस गुरुदेव उतना पैसा उनको दे देते जितना उनकी जरूरतों को पूरा कर देता था। गुरुदेव के अलावा मैंने किसी और के बारे में ऐसा नहीं सुना जो महीने भर कड़ी मेहनत करने के बाद, वेतन के दिन ही अपने वेतन को बांट देता हो! हालांकि जैसे-जैसे महागुरु का परिवार बढ़ा, उनके शिष्यों ने उनकी पत्नी को वेतन का कम से कम पचास प्रतिशत देने के तरीके खोज लिए।

गुरुदेव धन को आध्यात्मिकता का साधन मानते थे, न कि अहमियत का पैमाना। उन्होंने शायद ही कभी खुद पर पैसा खर्च किया हो और वह चाहते थे कि उनके शिष्य इसका मूल्य समझें। जब बिट्टू जी ने अपने गुरु को भोजन परोसने के लिए एक महंगी ट्रे खरीदी, तो गुरुदेव बहुत चिढ़ गए। महागुरु ने उन्हें डांटते हुए कहा, "यह दिखावा और शानो शौकत है, यह हमारे स्वभाव में नहीं है। हमें सादगी को महत्व देना चाहिए ना

कि दिखावे को।" यहां तक कि ट्रे जैसी साधारण चीज, जिसे घर की रसोई के लिए जरूरी माना जाता है, को भी गुरुदेव ने विलासिता के प्रतीक के रूप में लिया। उनके शब्दकोश में मितव्ययिता को एक नया अर्थ मिल गया था।

उन्होंने हमेशा हमें बताया कि उचित तरीकों से कमाए गए धन का सदुपयोग होगा, जबकि अनुचित साधनों से अर्जित धन बेकार के कामों में बर्बाद हो जाएगा। जब संतलाल जी ने लॉटरी के दो टिकट खरीदे, उन्होंने आशीर्वाद प्राप्त करने के स्वार्थी उद्देश्य के साथ वो टिकट गुरुदेव को प्रस्तुत किए। संतलाल जी जीत की रकम गुरुदेव द्वारा स्थापित हिमगिरि चैरिटेबल ट्रस्ट को देना चाहते थे। महागुरु ने टिकट के दो टुकड़े करते हुए कहा, "मैं अपने शिष्यों को ही अपनी लॉटरी मानता हूं। ट्रस्ट के माध्यम से जो भी सेवा होती है, वह उनकी मेहनत से कमाए धन से होगी क्योंकि मैंने उन्हें अपनी सेवा कमाने के काबिल बनाया है।"

उन्होंने केवल दूसरों की सेवा के लिए ही हमें स्थान पर पैसा खर्च करने की अनुमति दी। जब लोग उनसे मिलने आते थे, उन दिनों में खर्च बढ़ जाता था, तब कुछ शिष्यों को उसमें योगदान देने की अनुमति थी। उन्होंने अपने स्थान पर कई शादी समारोह आयोजित किए, हालांकि ये आयोजन साधारण होते थे लेकिन उसमें हम में से कुछ को न्यूनतम योगदान देने की अनुमति दी गई। बहुत-से संपन्न लोग जन कल्याण या गुरुदेव पर खर्च करके खुश होते, लेकिन उन्होंने उन्हें तवज्ज़ो नहीं दी और बैरंग वापस लौटा दिया। स्थान पर आने वाले लोगों की शुभकामनाओं का स्वागत किया गया लेकिन उनसे धन और उपहार स्वीकार नहीं किए गए।

गुरुदेव के शिष्य और भक्त जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों तथा भिन्न आय

वर्ग से आए थे, लेकिन महागुरु ने हमेशा सभी को उनके आध्यात्मिक इरादे से मापा और उनका आकलन उनके भविष्य की निरंतरता में किया, न कि उनकी वर्तमान स्थिति से। स्थान पर आने वाला चाहे बस चालक हो या व्यापारी, दोनों को ही समान माना जाता था। जब महागुरु गुड़गांव के सेक्टर 10 में स्थान का निर्माण कर रहे थे, तो उन्होंने अपने शिष्यों को उसमें योगदान देने की अनुमति दी। जिन्हें निर्माण में योगदान करने की अनुमति दी गई, उनमें आर्थिक रूप से कम सक्षम लोगों से 100 रुपए का योगदान देने के लिए कहा गया, जबकि सक्षम लोग ज्यादा योगदान दे सकते थे। भले ही योगदान सामर्थ्य के अनुसार था, लेकिन सेवा का लाभ बराबर था।

एक बार एक सिख सज्जन अपने पुराने सिरदर्द से निजात पाने की उम्मीद लेकर गुरुदेव से मिलने आए। महागुरु ने उनसे कहा, "बेटा, मैं तुम्हें तुरंत ठीक कर दूंगा, लेकिन तुम्हें अब से मांसाहार और शराब से दूर रहना होगा।" दो हफ्ते बाद, वही सिख सज्जन ब्रीफकेस में एक लाख रुपए लेकर वापस आए। उन्होंने गुरु को साष्टांग प्रणाम किया, ब्रीफकेस उनके चरणों में रख दिया और उसे आभार स्वरूप स्वीकार करने का अनुरोध किया। महागुरु इससे जरा भी प्रभावित नहीं हुए और उन्होंने उनकी आंखों में देखते हुआ कहा, "जैसे ही मैं अटैची को छूऊंगा, तुम्हारा सिरदर्द वापस आ जाएगा। सेवा करना मेरा कर्तव्य है, मेरा व्यवसाय नहीं।" सिख ने झेंपते हुए महागुरु का धन्यवाद किया और अपना बिना खुला ब्रीफकेस लेकर घर लौट गया।

महागुरु धन का लालच करने, धन के लिए लोगों को धोखा देने या उन्हें व्यापार या पैसों के लालच में फंसाने जैसी घृणित आदतों के सख्त खिलाफ़ थे। गुरुदेव के एक वरिष्ठ शिष्य को अपने ननिहाल से विरासत में कुछ संपत्ति मिली थी, लेकिन ज्यादा की लालच में वह घरेलू राजनीति

पर उतर आए थे। उनकी तुच्छता कुछ अन्य छोटी-छोटी बातों से भी स्पष्ट होती थी। यह अद्भुत महागुरु इस बात से पूरी तरह वाकिफ थे कि ऐसा अवगुणी व्यक्ति आने वाले समय में उनके सबसे निपुण शिष्यों में से एक बन जाएगा। उन्हें पता था कि शिष्य की आदत में सुधार की आवश्यकता है और इसलिए उन्होंने उसे पैसे की उपयोगिता और मूल्यहीनता के बीच के अंतर को बारीकी से समझाया। उन्होंने अपने शिष्य से कहा, "धन के पीछे मत भागो क्योंकि मैं तुम्हें इतना आध्यात्मिक धन दूंगा कि तुमको कभी भी इसकी कमी नहीं रहेगी।"

महागुरु की व्यावसायिक स्वच्छता की सूची में दौलत का दिखावा और जुआ भी प्रतिबंधित थे। दिवाली पर जब सबसे ज्यादा पैसों का दांव लगाया जाता है, तब उन्होंने हमें पैसे का सम्मान करना सिखाया। उन्होंने यह कहा कि यह लक्ष्मी(धन की देवी) से हमें बरकत का उपहार मिला है। धन का अनादर करना देवी का अपमान करने के समान है।

उनके विचार में हम जो धन स्वयं पर खर्च करते हैं या दूसरों को अपने ऊपर खर्च करने की अनुमति देते हैं, उससे कर्ज बनता है जबकि जो हम दूसरों की सेवा में खर्च करते हैं, उस कर्म से मिलने वाला लाभ हमारे खाते में जाता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि पैसा आध्यात्मिक मंशा में मदद कर सकता है लेकिन यह उसका विकल्प नहीं है। सेवा पर आपकी मासिक आय का 10% से 20% तक उपयोग करना महागुरु की सिफारिशों में से एक था। ▪

मानसिक स्वच्छता

मानसिक स्वास्थ्य के लिए मन का स्वच्छ होना जरूरी है क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य अस्तित्व की गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण कारक है। मानसिक अशांति के मुख्य स्रोत विचार और भावनाएं हैं।

मन की कल्पना गोदाम के रूप में करिए। इसके कचरे को साफ करने का अर्थ है अनचाही इनवेंटरी से छुटकारा। यदि अव्यवस्था को नियमित रूप से कम किया जाए, तो बहुत सारी उपयोगी मानसिक ऊर्जा संरक्षित की जा सकती है। इतना ही नहीं, आप खुद को शारीरिक एवं मानसिक विकारों से मुक्त रख सकते हैं। व्यवस्थित मन ही आत्म-अवलोकन और आत्म-चिंतन के लिए जगह बनाता है और सतत जागरुकता की राह दिखाता है। हालांकि अन्य लोग आपको स्वयं में सुधार के लिए प्रेरित कर सकते हैं लेकिन जब तक आप खुद का निरीक्षण करना नहीं सीखते, और अपने दिमाग को अपने विचारों को जांचने-परखने और स्पष्ट रूप से प्रकट करने की अनुमति नहीं देते, तब तक स्व-परामर्श (सेल्फ काउंसलिंग) उतना प्रभावी नहीं होगा जितना कि होना चाहिए।

महागुरु के पास कई विचारों को एक पंक्ति में व्यक्त करने की अलौकिक क्षमता थी। अपने एक वाक्य "विचार विषय से आता है" में उन्होंने विचार के उद्भव की पूरी कहानी कह दी। मुझे उनके छोटे वाक्य को फिर से समझाने के लिए कई वाक्यों का उपयोग करना होगा।

1. विचार हमारी इंद्रियों के संपर्क से उभर सकते हैं। यदि आप संवेदी

सूचनाओं पर अपनी प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित कर सकें, तो आप मन में उठने वाले उन विचारों को नियंत्रित कर सकते हैं।

2. आप किस तरह के विचारो से आकर्षित होते हैं, इसका निर्धारण भी आपका गुण मिश्रण करता है। अपने गुण मिश्रण को बदलने पर काम करके, आप अपने विचारों की प्रकृति को बदल सकते हैं।
3. आपका मन विचारों को चुम्बकित कर सकता है। मन की चुंबकीय प्रकृति बताती है कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में लगभग एक ही समय में समान खोजें क्यों होती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कई लोगों के मन एक साथ वातावरण से समान विचारों को आकर्षित करते हैं। ध्यान रखें कि वातावरण में प्रचलित विचार गतिशील हैं और समय के साथ बदलते रहते हैं।
4. विचार तब उत्पन्न होते हैं जब कारण शरीर में संग्रहीत संस्कार सतह पर आते हैं। मन आमतौर पर एक आत्म-प्रतिबिंबकारी (सेल्फ-रिफ्लेक्टर) की भूमिका निभाता है और संस्कारों को विचारों के माध्यम से समझता है।

मैं गुरुदेव की बातों को तब पूरी तरह समझ पाया जब एक 'विचार' मुझसे आ टकराया। बहुत साल पहले, गहन ध्यान के दौरान मैंने अपनी आंखें खोलीं और अपने कमरे के एक कोने से अपने माथे के मध्य बिन्दु के ऊपर आती हुई प्रकाश रेखा को देखा। मेरे सिर से टकराते ही यह किरण विलीन हो गई और इससे एक स्पष्ट विचार या यूं कहें कि एक गौरतलब बात सामने आई! इस अनुभव से पहले, मैं सकारात्मक विचारों का आनंद लेता और नकारात्मक विचारों को सहन करता था। हालांकि उस दिन विचार रूपी रेखा को 'देखने' पर, मैं समझ गया कि विचार न तो मेरी पसंद थे और न ही मेरी रचना। मेरा उन पर कोई दावा नहीं था। अपराध या खुशी की भावना से मुक्ति, इस एहसास का स्वाभाविक लाभ था! उसकी सजा मुझे नहीं मिल सकती जो मैंने नहीं

किया। इसके अलावा, चूंकि एक ही विचार कई लोगों के दिमाग में एक साथ आ सकता है, इसलिए विचार पर न तो आपका पूर्ण अधिकार है और न ही ये अनोखे हैं।

महागुरु के वरिष्ठ शिष्य एफसी शर्मा जी ने विचारों पर अपने गुरु के विचारों को याद करते हुए, अपनी शालीन आवाज में कहा, "जब आप भौतिक रूप में होते हैं तो आप विचारों के प्रवाह को नहीं रोक सकते। इसलिए आपको उन्हें अपनी इच्छानुसार आने देना चाहिए लेकिन उन पर जल्दबाजी में प्रतिक्रिया न दें। इसके बजाय, आपको उनका मूल्यांकन करके यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किन पर प्रतिक्रिया करनी है और किन्हें खारिज कर देना है।"

निष्पक्षता, विचार प्रबंधन का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए क्योंकि इससे आप बिना किसी ओर झुके उन विचारों का निरीक्षण कर सकते हैं। हालांकि पोषित विचारों पर ज्यादा सोच-विचार उन्हें एहसास में तब्दील कर देता है, जो फिर भावनाओं का रूप ले लेते हैं। भावनाएं आपकी क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को और अधिक तूल देती हैं, जिसके कारण आपका मानसिक प्रदर्शन संतुलन में नहीं रहता! इसके परिणामस्वरूप आप अपने दिमाग की पूरी क्षमता के बजाय अपने मस्तिष्क की सीमित क्षमता का ही उपयोग कर पाते हैं।

एफसी शर्मा जी ने भी भावनाओं पर गुरुदेव के विचारों को प्रतिध्वनित करते हुए कहा, "हर किसी में भावनाएं होती हैं और उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। लेकिन उन्हें न तो सहेजें और न ही उन्हें अपने आचरण का आधार बनाएं। इनसे किसी को कोई फायदा नहीं होता। इसके बजाय, वे भ्रमित और अक्सर गलत निर्णय का कारण बनती हैं।"

भावनाएं आपको जुड़ाव और संबंधों के माध्यम से भौतिक वस्तुओं से बांधती हैं और इसलिए आध्यात्मिक राह में बाधा बन जाती हैं। स्वयं के साथ आपके संबंध स्वाभाविक रूप से भावहीन होते हैं, भले ही दूसरों के साथ ये संबंध भावनात्मक हों। इसलिए आत्म-खोज की यात्रा करने वालों को अपनी भावनाओं का मोल जरूर आंकना चाहिए।

जब लोग गुरुदेव को अपने जीवन की समस्याओं के बारे में बताते थे, तो वह उनकी बात ध्यान से सुनते। वह उन्हें उनकी भावनाओं के बोझ को कम करने में मदद करते। कभी-कभी, वह लोगों के साथ सांत्वनापूर्ण ढंग से, उनकी भावनाओं से सहानुभूति दिखाते। हालांकि जब उनसे पूछा जाता कि कैसे वह रोज इतनी भावुक कहानियों से विचलित हुए बिना इन्हें सुन पाते हैं, तो उनका जवाब होता, "उस पल के बाद मैं सब कुछ मालिक को समर्पित कर देता हूं और उसकी याद भी नहीं रखता।" (मालिक गुरुदेव का परम-आत्मा को संबोधित करने का तरीका था।)

जब किसी अनुभव के साथ कोई भावना जुड़ती है, तो वह स्मृति बन जाती है। इन स्मृतियों को संस्कार के रूप में भविष्य के जीवनकाल में संग्रहीत किया जाता है। ये संस्कार विचारों और परिस्थितियों के रूप में इस जन्म या अगले जन्म में पुनः प्रकट होते हैं, और इस तरह भावनाओं, संस्कारों और विचारों के बीच का संबंध आपके वर्तमान जीवनकाल के बाद भी चक्रीय रूप से जारी रहता है।

महागुरु निरंतर सजग रहते थे और अपने हर मिलने या जानने वाले के अतीत, वर्तमान और भविष्य को जानने का भारी बोझ उठाते थे। उन लोगों के जीवन में पेश आने वाली कठिनाइयों को जानने के बाद, गुरुदेव के लिए ये जरूरी था कि वे अपनी भावनाओं को काबू में रखें और इसमें ना उलझें। यदि वह अपनी भावनाओं से अलग नहीं होते, तो लोगों के

भविष्य के ज्ञान से उत्पन्न होने वाली भावनाएं उनके मन में हलचल मचा देतीं। इसलिए भावनात्मक नियंत्रण में महारत हासिल करना ही एकमात्र तरीका था जिससे महागुरु ने अपने मन को शांत रखा और अपने अलौकिक अन्तर्ज्ञान को सहजता से लिया।

सेवा में अक्षमता ही एकमात्र ऐसी चीज थी जिससे उन्हें भावनात्मक रूप से चिढ़ थी। उन्होंने न सिर्फ अपने लिए सेवा को एक मिशन बनाया, बल्कि उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि उनके शिष्य भी उनके दर्शन को साझा करें। जब लोग सेवा में लापरवाह हो जाते या जब उनके अहंकार उन पर हावी हो जाते, तो महागुरु अपने अभिनय का जामा पहनकर सेवादारों को फटकारते और सार्वजनिक सेवा के उच्च मानकों को पूरा करने के लिए प्रेरित करते।

वास्तव में, मन की क्रियाशीलता के लिए मन का स्वच्छ होना जरूरी है। आपका मन आपका प्रतिबिंब है और इसलिए यह आपके दर्पण की तरह कार्य करता है। दर्पण आपकी भौतिक उपस्थिति के पीछे छिपे आपके वास्तविक स्वरूप को देखने में मदद करता है। अपने मन को व्यवस्थित करने के लिए आपको दर्पण को पुनः परिभाषित करना पड़ेगा। ▪

▾▾

दर्पण जितना साफ होगा,
उतना ही स्पष्ट आत्मबोध होगा,
और उतनी ही ऊंची आपकी
आध्यात्मिक जागरूकता होगी ।

जहां एक सामान्य मनुष्य का आभामंडल बाहर की ओर किरणें फैलाता है,
गुरुदेव का आभामंडल उनके चारों ओर व्यापक रूप से सक्रिय होता था।

आध्यात्मिक स्वच्छता

आत्मा वायु तत्व से बनी होती है और इसलिए इसमें सूक्ष्म कंपन होता है। भौतिक शरीर आत्मा की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी ढंग से सूक्ष्म कंपन को आकर्षित कर सकता है। इस प्रकार, भौतिक शरीर अपनी ऊर्जा को बढ़ाकर अपने आध्यात्मिक प्रतिरूप की मदद कर सकता है!

मानव अस्तित्व का उद्देश्य अपनी आत्मा के लिए आवश्यक ऊर्जा को बढ़ाना है, जो मृत्यु के बाद उसके गैर-भौतिक अवतार में शुद्ध रूप से मौजूद होनी चाहिए।

आत्मा की ऊर्जा भौतिक शरीर के आसपास विद्युत चुंबकीय(इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक) क्षेत्र या आभा के रूप में प्रकट होती है। आपकी आभा जितनी बड़ी होगी, आपकी आत्मा उतनी ही शक्तिशाली होगी। आभा शरीर की ढाल के रूप में कार्य करती है। इसके कमज़ोर होने पर, व्यक्ति पर संक्रमण/बीमारी और नकारात्मक आत्माओं के हमले का खतरा बढ़ जाता है। आध्यात्मिक स्वच्छता उन विशिष्ट क्रियाओं के बारे में है जो आपकी आभा के रखरखाव और वृद्धि में सहायक होती हैं।

मैं बहुत स्पष्टता से महागुरु के रिवाज बता रहा हूं, हालांकि यह सच है कि जब गुरुदेव ने हमें बताया कि क्या करने की आवश्यकता है, तो उन्होंने कोई कारण नहीं बताया था। उन्होंने सिर्फ हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा के संवर्धन के लिए सुझाव दिए थे।

तांबे का कड़ा

गुरुदेव के लगभग सभी भक्त तांबे का कड़ा पहनते हैं। कड़ा पहनने से पहले आमतौर पर उसे एक गुरु अभिमंत्रित करते हैं। कड़ा अभिमंत्रित करते समय, गुरु स्वेच्छा से अपनी कुछ ऊर्जा उसमें डाल देते हैं। जब इसे पहना जाता है तो गुरु की आभा, व्यक्ति की आभा के भीतर घूमती है जिससे व्यक्ति चेतना के उच्च स्रोत से जुड़ जाता है। तांबा, बिजली का एक अच्छा संवाहक(कंडक्टर) होने के नाते, शरीर से ऊर्जा के रिसाव को कम करता है और आभा की रक्षा करता है।

उत्तराखंड के श्रीनगर में एक शिविर के दौरान, गुरुदेव ने मुझे अपने बॉस प्रताप सिंह जी को देहरादून से लाने का निर्देश दिया। हम प्रताप सिंह जी की भाभी से मिलने गए जो गंभीर रूप से बीमार थीं। उनसे मिलने पर मैंने उन्हें कड़ा दिलाने का फैसला किया, लेकिन इसे बनाने के लिए जौहरी नहीं मिल सका। फिर मैंने गुरुदेव को दिखाने के लिए प्रताप सिंह जी की भाभी की एक तस्वीर ली ताकि उनका इलाज किया जा सके। मेरे गुड़गांव पहुंचने तक महागुरु श्रीनगर से वापस आ चुके थे, लेकिन पाठ पर बैठे थे। तीन दिनों तक उनसे मिलने के सभी प्रयास विफल रहे। अंत में, और इंतजार न करते हुए, मैंने उस महिला की तस्वीर उनके कमरे के दरवाजे के नीचे से सरका दी। उन्होंने देखा और दरवाजा खोलकर पूछा कि यह किसकी तस्वीर है। जब मैंने उन्हें बताया, तो उन्होंने जवाब दिया, "वह कल रात मर गई"। मैं हिल गया। वह परेशान लग रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि उन्होंने मुझे उसकी सहायता के मिशन पर भेजा था और जानना चाहा कि मैंने उन्हें अपना कड़ा देने के बारे में क्यों नहीं सोचा ताकि उनकी जान बचाई जा सकती। तब मुझे एहसास हुआ कि अगर मैंने उन्हें अपना कड़ा पहना दिया होता, तो मैं उन्हें गुरु की सुरक्षा और आशीर्वाद से जोड़ देता।

भोजन, पेय और कपड़े

गुरुदेव किसी के भी पकाए भोजन को खाने के प्रति सचेत रहते थे। भोजन, पकाने वाले के विचारों, मानसिक अवस्था और उसकी आंखों के माध्यम से प्रसारित आभा से प्रभावित हो सकता है। एक नकारात्मक आभा न केवल भोजन को संक्रमित करती है, बल्कि इसको खाने वाले को भी परेशान करती है। सफेद रंग वाले भोजन आसानी से संक्रमित हो जाते हैं। इसलिए उपयोग से पहले सफेद रंग के भोजन का रंग बदलना उचित होता है, मिसाल के तौर पर दूध में थोड़ी हल्दी और दही में दालचीनी आदि मिलाई जा सकती है। स्थान पर रसोई प्रबंधन की सेवा आमतौर पर उन्नत विचार वाले लोगों को दी जाती है।

जब गुरुदेव अपनी ऊर्जा अन्य लोगों के साथ साझा करना चाहते थे तो वह उन्हें अपना जूठा पानी पीने को देते या अपनी खाई हुई थाली से खाने के लिए कहते थे। जब एक गुरु आपको इस तरह की अनुमति देता है, तो वह अपनी कुछ आभा आपको स्थानांतरित करता है। थूक आभा का वाहक है। किसी व्यक्ति के इस्तेमाल किए हुए गिलास या प्लेट से पीना या खाना आपके अंदर उसकी आभा का संचार कर सकता है। जबकि एक शक्तिशाली व्यक्ति की आभा आपकी आभा का विस्तार कर सकती है, नकारात्मक ऊर्जा के प्रभाव में किसी की इस्तेमाल की हुई थाली से खाना आपको उस नकारात्मकता से संक्रमित कर सकता है।

आभा स्थानांतरण के अपने कुछ अन्य तरीकों में गुरुदेव अपने इस्तेमाल किए हुए कपड़े हमें पहनने के लिए देते थे। यहां तक कि वह हमें यह भी बता देते थे कि हमें उन्हें कितने दिन पहनना है।

हमारे आभामंडल पर ग्रहों के प्रभाव को अधिकतम करने के लिए महागुरु

ने सप्ताह के कुछ खास दिनों में विशिष्ट रंग पहनने का सुझाव दिया। वह ज्यादातर सोमवार को सफेद, गुरुवार को पीला और शनिवार को काले और सफेद रंग के कपड़े पहनते थे। मंगलवार को भूरा, बुधवार को नीला, शुक्रवार को हरा और रविवार को लाल रंग पहनने को कहते थे।

आमतौर पर महागुरु आधी बांह की शर्ट और खुले सैंडल पहनते थे। वह अपने हाथ और पैर खाली रखते थे क्योंकि इससे उन्हें आत्माओं सहित अन्य अलौकिक ऊर्जाओं को महसूस करने में मदद मिलती थी।

गुरुवार के नियम

सप्ताह के हर गुरुवार को बहुत सारी चीजें करने की मनाही है क्योंकि बृहस्पति ग्रह की किरणें इस दिन सबसे अधिक प्रभावी होती हैं। इस दिन आपको अपनी आभा को बाधित या दूषित करने वाले तरीकों से बचना चाहिए। गुरुवार के वर्जित कार्यों की सूची में शैंपू करना, मालिश करना, बालों को काटना, नाखूनों को काटना, कपड़े धोना, शराब पीना, मांसाहारी भोजन करना और संभोग करना शामिल हैं।

जब भी हम अपने शरीर के किसी भी अंग को काटते हैं, तो यह आभा मंडलीय नुकसान है। शारीरिक स्वच्छता के लिए नाखूनों और बालों को काटा जाता है। आध्यात्मिक स्वच्छता के लिए आभा के नुकसान को हर कीमत पर रोका जाना चाहिए। इसे ध्यान में रखते हुए, कटे हुए नाखूनों और बालों को कूड़ेदान में डालने की बजाय पानी की बहती धारा में डालना चाहिए। इस तरह, आपकी आभा पानी की ऊर्जा से जुड़ जाएगी और इसे प्रकृति को आपके ऋण का भुगतान माना जा सकता है।

जब हम दूसरों को अपने दायरे में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं, तो

हम खुद को शारीरिक या मानसिक रूप से उनकी ऊर्जा से प्रभावित होने के लिए छोड़ देते हैं। इस वजह से इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आप किससे यौन संबंध बनाते हैं। इसी तरह शाकाहार का विकल्प चुनें क्योंकि अपने आहार से मांसाहारी भोजन को हटाने से निचले क्रम के जानवरों की ऊर्जा से आपकी आभा को दूषित होने से रोका जा सकता है। इसके अलावा मांसाहार तामसिक प्रवृत्ति है जो बृहस्पति की किरणों के सात्विक गुणों से टकराती है।

शराब हमें शिथिल कर देती है क्योंकि यह मस्तिष्क के रसायनों को प्रभावित करती है, जिससे आपकी शारीरिक गतिविधियां सुस्त होती हैं और आपकी मानसिक प्रक्रिया मंद हो जाती है। रजस की प्रारंभिक उच्चता के बाद, सुस्ती, जड़ता, उनींदापन, चिड़चिड़ापन इत्यादि के तामसिक प्रभाव हावी होते हैं, जबकि सत्व घट जाता हैं।

आपकी आभा और आप

आभा आध्यात्मिक लोक का आभूषण है और इसकी चाहत कभी कम नहीं होती। यह बढ़ाई जा सकती है, घटाई जा सकती है, बाधित हो सकती है, दूषित हो सकती है और चुराई जा सकती है। ये सभी तथ्य इसे एक ऐसा खजाना बना देते हैं जिसे संभालना मुश्किल है, और इसे लगातार बनाए रखना तो और भी मुश्किल।

सावधानी रखने योग्य बात : काला जादू करने वाले आपके बालों, नाखूनों, कपड़ों, जूतों, हस्तलिखित टिप्पणियों इत्यादि को अपने साथ ले जा सकते हैं और इनका उपयोग आप पर मंत्र का प्रयोग करने के लिए कर सकते हैं। तो इस बात के प्रति बहुत सावधान रहें कि जाने-अनजाने में आप अपनी आभा को कैसे संभालते और फैलाते हैं।

महागुरु अपनी ऊर्जा के अंश लेकर उसे अपनी इच्छानुसार कहीं भी रोपित कर सकते थे। जब उन्होंने स्थान खोले, तो उन्होंने वहां अपनी कुछ ऊर्जा को संग्रहीत कर दिया। समय के साथ, वह ऊर्जा स्थान पर आने वाले लोगों और सेवादारों की सामूहिक ऊर्जा के साथ मिलकर कई गुना हो गई।

महत्वपूर्ण कार्य के लिए बाहर निकलते समय गुरुदेव हरदम अपनी तस्वीर अपनी जेब में रखते थे। अपनी तस्वीर साथ रखकर महागुरु मुश्किल कार्यों पर जाते समय अपनी निर्माण काया अपने साथ ले जाते थे।

गुरुदेव ने हमें बिना कोई दिखावा किए शांति से काम करना सिखाया। उन्होंने कभी कोई काम करने का श्रेय नहीं लिया। हम सार्वजनिक स्थानों पर घूमते और हमें कोई नहीं पहचानता था क्योंकि हमने न तो मीडिया एक्सपोज़र की अनुमति दी और न ही अपनी तस्वीरें प्रकाशित करवाईं।

गुरुदेव अपनी फोटो लेने की अनुमति नहीं देते थे।। अगर हम उनकी बात न मानकर अपनी चतुराई दिखाते, तो डेवलप करते समय हमारे कैमरे का रोल खाली होता। ऐसा हम में से अनेकों के साथ हुआ! महागुरु ने पहचान छिपाने के लिए बहुत परेशानियां उठाईं ताकि उन्हें प्रसिद्धि का बोझ न उठाना पड़े।

अंतिम स्थिति

तकनीकी रूप से, आपकी आभा आपकी सांसारिक मुद्रा है। यह इस जीवन में आपकी अंतिम स्थिति का पैमाना और उसके बाद के जीवन

की गुणवत्ता तय करती है। आत्मा को अपने अस्तित्व, यात्रा और सुरक्षा के लिए अपनी ऊर्जा की आवश्यकता होती है। वो यह ऊर्जा अपने नाम पर किए गए कार्यों के माध्यम से प्राप्त कर सकती है, या तो स्वयं (शारीरिक रूप में) या दूसरों के द्वारा। यही कारण है कि हम जीवित रहते हुए सेवा में लीन रहते हैं या अपने पूर्वजों के नाम पर दान करते हैं। गुरुदेव का सुझाव था कि हमें अपने पूर्वजों की आत्माओं की सेवा के लिए श्राद्ध की अवधि का पालन करना चाहिए। ▪

06

उपचार

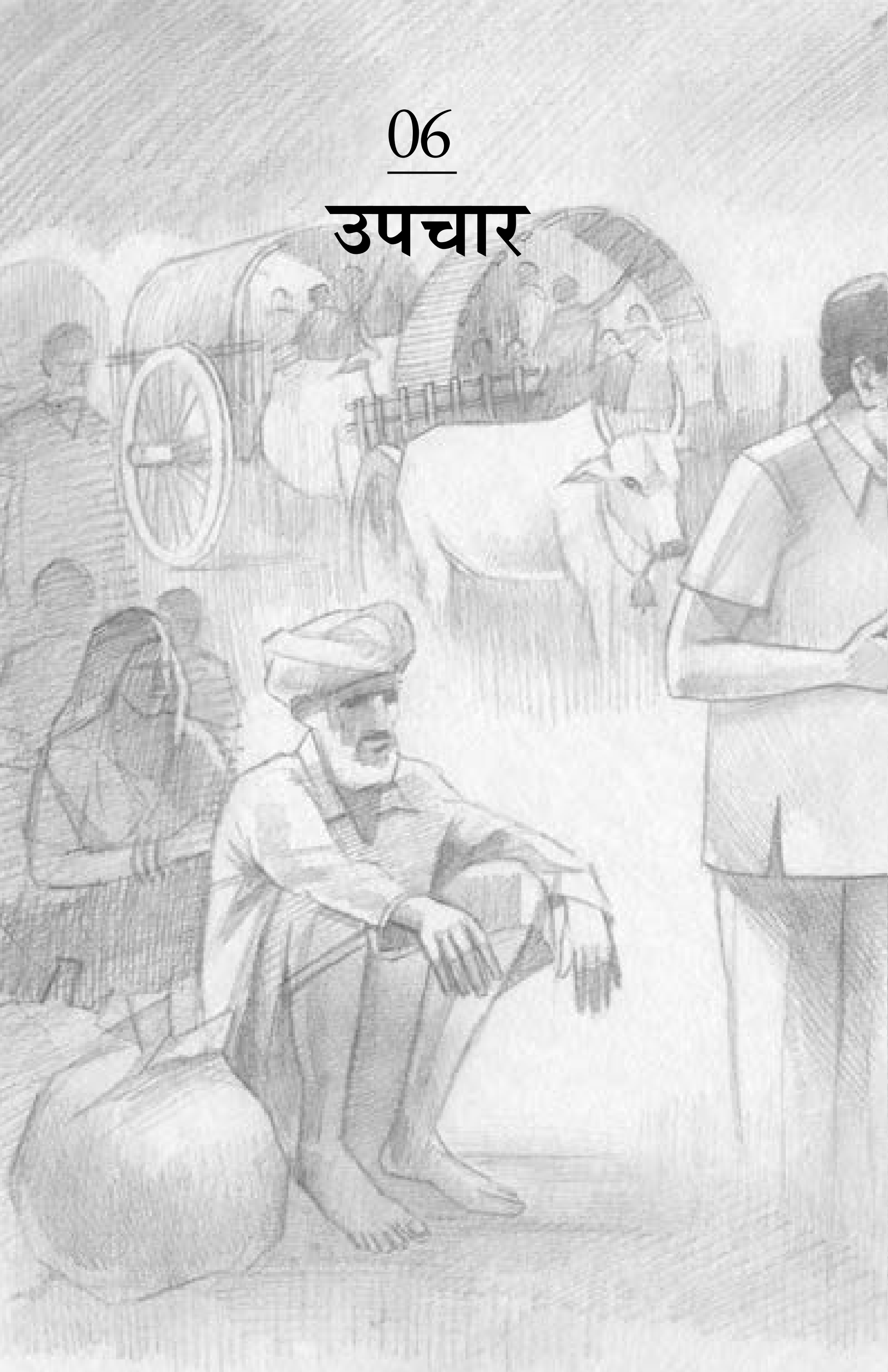

उपचार के लिए पहुंचे एक व्यक्ति से मिलते गुरुदेव

भगवान हर प्राणी के भीतर हैं। और यह भगवान ही हैं, जिन्होंने मुझे गुरु का पद और इसके साथ आगे बढ़ने का अधिकार दिया है। मैं इस अधिकार का इस्तेमाल करता हूं ताकि बीमार स्वस्थ हो सकें।

गुरुदेव

पृथ्वी का इतिहास, आध्यात्मिक रूप से उन्नत, चुंबकीय ऊर्जा से संपन्न और समृद्ध आभा मंडल वाले जीवों की मौजूदगी का गवाह है। ये श्रेष्ठ आध्यात्मिक उपचारक दूसरे में पैदा होने वाली नकारात्मक ऊर्जाओं को आकर्षित कर सकते हैं। इसमें ईसा मसीह, शिर्डी के साईं, गुरु नानक जैसे कुछ नाम शामिल हैं। पृथ्वी पर आने वाले इन उल्लेखनीय उपचारकों में से एक थे गुरुदेव।

नकारात्मक ऊर्जा का चुंबकीय आकर्षण

आम तौर पर नकारात्मकता निम्न कारणों से पैदा होती है,

1. आपके जीवन में नियति द्वारा उत्पन्न किए गए नकारात्मक संस्कार।
2. विशिष्ट ग्रहों के परिणामस्वरूप पैदा हुईं शारीरिक और मानसिक बीमारियां।
3. बुढ़ापे के कारण शारीरिक तकलीफें।
4. किसी अन्य तत्व द्वारा आप पर किया गया काला जादू।
5. आत्माओं के शरीर पर कब्जे के परिणामस्वरूप, शारीरिक नुकसान को पहचानने और उससे निपटने में मुश्किलें।
6. पूर्वजों या अन्य शक्तिशाली तत्वों के शाप (पितृ पीड़ा) के कारण अच्छे भाग्य का धूमिल होना।
7. कभी-कभी अंजाने में सड़क, चौराहों या अन्य जगहों पर किसी की छोड़ी गई बीमारियों की चपेट में आ जाना।

इसलिए कभी-कभी आप नकारात्मकता के साथ जन्म ले सकते हैं, कभी-कभी यह आप पर हावी हो सकती है और कभी-कभी आप इसे आकर्षित कर सकते हैं। नकारात्मकता का रूप जो भी हो, महागुरु ने इसे संतुलित करने का प्रयास किया। आध्यात्मिक उपचार महागुरु की

सेवा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और उन्होंने उसके बदले में कभी किसी से कुछ नहीं लिया।

मेरे एक रिश्तेदार ने मुझ पर काला जादू किया था। इससे मुझे गठिया (आर्थराइटिस) हो गया और दस साल तक मैं इससे पीड़ित रहा जब तक कि महागुरु ने मुझे एक मिनट के अंदर ठीक नहीं कर दिया! महागुरु गठिया के अलावा, आंशिक या पूर्ण रूप से अन्य तकलीफों को ठीक कर सकते थे जैसे की आर्थोपेडिक समस्याएं, शरीर में दर्द, पेट और पाचन संबंधी तकलीफें, मधुमेह(डायबिटीज), पीलिया(जॉनडिस), गुर्दे और पित्ताशय की पथरी(किडनी और गॉल ब्लैडर स्टोन), कैंसर, यौन रोग, बर्न्स और संक्रमण, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, मानसिक बिमारियां जैसे मल्टीपल पर्सनालिटी डिसऑर्डर, डिप्रेशन, न्यूरोसिस, साइकोसिस आदि। खोई हुई आंखों की रोशनी को दोबारा हासिल करने के ज्यादा ज्ञात मामले नहीं हैं, लेकिन बिट्टू जी इस बात के गवाह हैं कि कैसे गुरुदेव ने उनके आग से बुरी तरह झुलस जाने के बावजूद उनकी आंखों की रोशनी वापस लाई थी।

महागुरु के कई शिष्यों के लिए नकारात्मकता महागुरु से मिलने का एक बहाना बन गई। गिरि जी एक लाइलाज बीमारी से जूझ रहे थे, और जब डॉक्टर हर उम्मीद खो चुके थे तब जाकर वो अपने दोस्तों के एक समूह में शामिल हुए जो महागुरु से मिलना चाहते थे। संतोष जी की शुरूआत किडनी स्टोन के इलाज के लिए महागुरु से मदद लेने के लिए कथोग जाने से हुई, लेकिन अंत में वे खुद वहां लोगों का उपचार करने लगे। डॉ. शंकर नारायण जी महागुरु के कार्यालय में काम करते थे और उन्होंने अपनी बेटी के दौरों को ठीक करने के लिए उनसे मदद मांगी। वीरेन्द्र जी ने अपनी पत्नी के लिए मदद मांगी, जबकि सुरेन्दर जी ने अपनी बहन के लिए याचना की और हरीश जी ने अपने शराबी जीजा

के लिए गुहार लगाई। महागुरु ने न केवल हमारी मदद की, बल्कि हमें अपनी बिरादरी में शामिल कर लिया और अपनी कई चिकित्सा शक्तियां हमें दीं।

उपचार के प्रति दृष्टिकोण

आध्यात्मिक उपचार वैराग्य के साथ और भाई-भतीजावाद की भावना के बिना किया जाना चाहिए। महागुरु के रूप में, उन्होंने अपने परिजनों के इलाज के लिए अपनी उपचार शक्तियों का इस्तेमाल करने से मना कर दिया। अपने बीमार छोटे भाई की देखभाल उन्होंने गुरु के रूप में ना करके एक समर्पित बड़े भाई के रूप में की थी। हालांकि वह अपनी मां का बहुत सम्मान करते थे, पर अपनी मां को स्वस्थ करने के लिए वह अपने सिद्धांतों से ज़रा भी नहीं डिगे। जब भी उनके बच्चे दर्द और तकलीफ की शिकायत करते, तो वह उनसे कहते कि उन्हें खुद को ठीक करना सीखना चाहिए। कुछ मौकों पर, उनका परिवार उनके सेवा कार्यों का माध्यम बना। यह एक सत्यापित घटना है कि कैसे उन्होंने टाइफाइड से पीड़ित एक युवा लड़की को ठीक करने के लिए उसकी बीमारी को अपनी बेटी में स्थानांतरित कर दिया था।

उन्नत उपचारक होने के बावजूद, संतोष जी अभी भी अपने गुर्दे की पथरी, रवि जी अपनी त्वचा की एलर्जी और पूरन जी अपने ऑर्थोपेडिक रोगों से परेशान हैं। बहरहाल वे इसे बहुत ही शालीनता से स्वीकार करते हैं और उन्होंने शायद ही कभी इस बारे में कोई शिकायत की हो। जब रवि जी ने गुरुदेव से पहली बार अपनी स्किन एलर्जी की बात की तो उनके गुरु ने कहा, "तुम बहुत लोगों का दर्द दूर करते हो। कभी-कभी उस दर्द का एक अंश तुम्हें भी सहना पड़ता है।" उपचारक होने के नाते आपकी कुछ अपनी जिम्मेदारियां होती हैं।

कई साल पहले, लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे के लाउंज में, राजपाल जी ने गुरुदेव से पूछा कि क्या महागुरु की लोगों के भाग्य को लिखने, मिटाने और पुनः बदलने की क्षमता भगवान को परेशान करती है? महागुरु ने अपने शिष्य को समझाया कि लोगों का दुःख दूर करने से भगवान प्रसन्न होते हैं। राजपाल जी की उलझन को देखते हुए उन्होंने कहा, "भगवान हर प्राणी के भीतर हैं। और यह भगवान ही हैं, जिन्होंने मुझे गुरु का पद और इसके साथ आगे बढ़ने का अधिकार दिया है। मैं इस अधिकार का इस्तेमाल करता हूं ताकि बीमार स्वस्थ हो सकें।"

गुरुदेव चिकित्सा को लेकर सबसे अपरंपरागत(अनकंवेंशनल) बातें करते थे। एक बार उन्होंने कहा था, "मैं अपने पास मदद के लिए आने वाले किसी भी व्यक्ति को ठीक नहीं करता। वे स्वयं को ठीक करते हैं। मैं कर्ता नहीं हूं।" महागुरु ने अकर्ता के विचार की न सिर्फ सिफारिश की बल्कि उसका अपने जीवन में पालन भी किया। वो कहते थे कि लोग उनके पास मदद मांगने आते हैं क्योंकि उनकी किस्मत में ठीक होना लिखा है। गुरुदेव ने उनके ठीक होने का कोई श्रेय नहीं लिया क्योंकि वह केवल एक ज़रिया थे। संभवतः इतिहास में बहुत कम लोगों ने इस तरह की उपलब्धि हासिल की है।

एक वरिष्ठ शिष्य ने एक और दिलचस्प जानकारी साझा की, "गुरुदेव जब किसी बीमार व्यक्ति को स्पर्श करते, तो उसका दर्द कम हो जाता और अंततः गायब हो जाता। अधिकांश रोगियों को राहत मिल जाती थी। जब मैंने उनसे पूछा कि वह सभी को ठीक क्यों नहीं करते, तो उन्होंने मुझसे कहा कि कुछ लोग उनके पास केवल उनकी शक्तियों को जानने और उन्हें परखने आते हैं। उन्होंने आगे कहा कि अगर कभी वो लोग सच्ची जरूरत पर मदद मांगने उनके पास आएं तो वह उनकी भी सहायता करेंगे।"

हालांकि आध्यात्मिक उपचार से स्वस्थ हुए लोगों के जीवन में उनके प्रति विश्वास जरूर पैदा हुआ, लेकिन महागुरु लोगों को विश्वास के बंधन में नहीं बांधते थे। स्थान उन लोगों की सेवा करने के लिए बाध्य था जो मदद और उपचार के लिए आए थे। अगर लोग अपनी जरूरतें पूरी होने के बाद आना बंद कर देते, तो यह पूरी तरह से स्वीकार्य था। (तार्किक रूप से यदि स्वस्थ हुए सभी लोग नियमित रूप से बड़ा गुरुवार में शामिल होते, तो यह बड़ा दिन बहुत बड़ा सप्ताह बन जाता!)

हालांकि जिन लोगों ने ज़िंदगी के इस दस्तूर को स्वीकार कर लिया, और स्थान पर नियमित रूप से आते रहे, वे गुरुदेव की लंबे समय तक जिम्मेदारी बन गए और महागुरु ने उनकी भलाई और आध्यात्मिक विकास का भार खुद पर ले लिया।

कष्ट से मुक्ति

प्रेत बाधाओं से पीड़ित लोग अक्सर महागुरु की मदद लेते थे। पीड़ित या तो अपने पूर्वजों की आत्माओं या काले जादू से उनमें डाली गई अज्ञात आत्माओं से परेशान होते थे। कई बार, उनकी कमज़ोर आभा उन्हें आत्माओं के हमले का शिकार बना देती थी।

गुरुदेव जीवन के सभी रूपों को स्वयं का विस्तार मानते थे। इसीलिए वह आत्माओं के अन्य शरीरों में रहने और उन्हें तकलीफ देने को सही नहीं मानते थे, साथ ही वह यह भी नहीं चाहते थे कि आत्माओं को कष्ट दिया जाए। उन्होंने हमें बताया कि आत्माओं और मनुष्यों में उनकी रचना और क्षमता को छोड़कर कोई अंतर नहीं है। अतः शिव परिवार का हिस्सा होने के कारण हमें आत्माओं की सेवा करनी चाहिए। जहां प्रेतात्माओं से मुक्ति दिलाने में सक्षम अधिकांश उपचारक उन आत्माओं

पर हमला करते, अत्याचार करते या उन पर हावी हो जाते थे, वहीं महागुरु अपने पीड़ितों को मुक्त करने के लिए आत्माओं को पुरस्कृत करते थे। आत्माएं आमतौर पर चाहती थीं कि गुरुदेव उन्हें मानव रूप में जन्म दें या उन्हें उच्च आयामों तक ले जाने में मदद करें क्योंकि पर्याप्त ऊर्जा की कमी ने उन्हें निचले स्थानों और पृथ्वी पर कैद कर रखा था, या तो उनके घरों में या खाली इमारतों में या जिन्नों और काले जादूगरों की बंदी के रूप में।

मैंने अपने गुरु को प्रेत बाधाओं के मामलों को अत्यंत सहजता से संभालते हुए देखा है। मुझे अच्छे से याद है कि कैसे उन्होंने ओम सिंह नाम के एक आदमी का सामना किया था जो 13 जंजीरों में बांधकर उनके पास लाया गया था और हर जंजीर को एक बलवान आदमी ने पकड़ा हुआ था। ओम सिंह बेहद ताकतवर था क्योंकि उसे एक आत्मा ने अपने वश में कर लिया था। जब महागुरु ने उसे उस आत्मा से मुक्त कर दिया, तो उन्होंने मुझे इस व्यक्ति को टी-शर्ट और पतलून दिलाने का भार सौंपा ताकि गांव का यह युवक 'कूल' नज़र आए!

आत्माओं को पता होता है कि मानव रूप में आध्यात्मिक परिवर्तन आत्मा की तुलना में अधिक तेजी से होता है। इसलिए मानव रूप में जन्म लेने का अवसर उनमें से अधिकांश के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। गुरुदेव ने कुछ पशु आत्माओं को भी मनुष्य योनि में जन्म लेने की अनुमति दी।

गुरुदेव के पास आत्माओं को अपनी इच्छा से जन्म देने की शक्ति थी, वह किसी व्यक्ति के भविष्य के जीवनकाल से कुछ साल घटाकर उसे उसके वर्तमान में जोड़कर मानव जीवन का विस्तार कर सकते थे। वे दो या पांच के गुणाकार में जीवन के वर्षों का उपहार दे सकते थे। उनके

बेटे परवेश जी ने अपने मित्र की कैंसर पीड़ित मां के बारे में बताया जिन्हें महागुरु ने बीस साल का जीवनदान दिया था और जो इस कहानी को बताने के लिए जीवित रहीं।

भारत और दुनिया के अन्य कई हिस्सों में काले जादू या नकारात्मक आत्माओं से पीड़ित होना अनूठी विपदा है। जब एक युवा लड़की के रूप में, गुड्डन जी की तबीयत बिगड़ रही थी, तब उन्होंने अपने भाई से उन्हें गुड़गांव ले जाने का अनुरोध किया। वर्षों से अस्वस्थ होने के कारण उनके लिए खाना-पीना, खड़े होना, चलना-फिरना मुश्किल हो गया था। गुरुदेव के उपचार करने पर उन्होंने बर्फी के एक चौकोर टुकड़े की उल्टी की और लंबे समय से चली आ रही बीमारी से उबर गईं। महागुरु के इलाज के अंतर्गत, लोग अक्सर अपने शरीर में नकारात्मक ऊर्जा के वाहक को उल्टी करके निकाल देते थे। एक अन्य मामले में, एक महिला ने तावीज़ की उल्टी की थी। मुझे रंगीन कांच की चूड़ियों की उल्टी का वाकया बहुत अच्छे से याद है। जब कमलेश नाम की एक युवती स्थान से मदद की उम्मीद में आईं, तो गुरुदेव ने मोहन चीरा जी से कहा कि वह उनकी उल्टी में से कांच के टुकड़े इकट्ठा करें और इसे एक गोल चूड़ी का रूप देने के लिए साथ रखें। उन्होंने कहा कि जब कमलेश नौ चूड़ियों को बनाने जितनी सामग्री की उल्टी कर देगी, तो वह नकारात्मक प्रभाव से मुक्त हो जाएगी। इस प्रक्रिया के अंत में जब गुरुदेव ने उसकी पीठ थपथपाई तो उसने तावीज़ की उल्टी की। जब ये सब हो रहा था तो मैं गुरुदेव के ठीक बाजू में खड़ा था।

क्रोध के कारण जन्मे ईर्ष्या और शाप से काला जादू सक्रिय होता है। दीर्घकालीन कष्टों के लिए एक छोटा-सा शब्द है 'पितृ पीड़ा' जो पैतृक शाप के कारण होता है। परिवार या कुल पर ऐसा शाप किसी विशिष्ट व्यक्ति की ओर लक्षित नहीं होता। हालांकि उस शाप का खामियाज़ा

गुरुदेव द्वारा पीठ थपथपाए जाने के
बाद तावीज की उल्टी करती कमलेश

कुल में कुछ व्यक्तियों को भुगतना पड़ता है। पितृ पीड़ा के अनेक मामले गुरुदेव के पास आते थे। मैं भी इस सूची में एक था। उन्होंने कई वर्षों तक मुझसे खेती करवाई और इससे होने वाली आमदनी परोपकारी कार्यों के लिए दान करवाई। इससे मेरे और मेरे कुल की पितृ पीड़ा समाप्त हुई।

महागुरु प्रभावशाली संतों एवं मंदिरों के अभिशापों का असर भी कम कर सकते थे। मुकेरियां स्थित स्थान के विश्वामित्र जी ने एक ऐसे दंपति की कहानी साझा की जो रक्त कैंसर के चलते अपने नवजात शिशुओं को खो देते थे। चार प्रसव और चारों नवजात शिशुओं की मृत्यु के बाद, उन्होंने मदद के लिए गुरुदेव से संपर्क किया। जब उनके पांचवें बच्चे की भी रक्त कैंसर से मृत्यु हो गई, तब महागुरु ने उन्हें बताया कि उनका अगला बच्चा कैंसर-मुक्त होगा, और यह सिलसिला गुरुदेव के आशीर्वाद के बाद रुका।

इन सभी के अलावा, वह लोगों में ऊर्जा अवरोधों को भी ठीक कर सकते थे, जिनमें 'लक्ष्मी बंध' सबसे आम था। इसका मतलब भाग्यवश मिले तंगहाली के जीवन में बरकत लाना था। वह गरीब आदमी को अमीर नहीं बनाते थे, लेकिन गरीब आदमी कम पैसा खर्च करके अमीर आदमी की तुलना में कहीं अधिक मूल्य प्राप्त कर सकता था।

उपचार के साधन

उनकी उपचार करने की क्षमता भौतिकता से परे थी। यह रोगी से प्रत्यक्ष बातचीत तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि कोसों दूर बैठे लोगों तक फैली हुई थी। पीड़ित व्यक्ति से मीलों दूर होने के बावजूद, महागुरु टेलीफोन के ज़रिए या मानसिक रूप से उसका प्रभावी इलाज कर सकते थे। वह

किसी ऐसे व्यक्ति को भी ठीक कर सकते थे जिससे ना वह कभी मिले, ना बात की।

आमतौर पर वह उपचार ऊर्जा के वाहक के रूप में विशिष्ट मसालों का उपयोग करते थे। उनके पास मदद की तलाश में आए लोगों को वह लौंग, इलायची, काली मिर्च, सुपारी, पीली सरसों और मंत्रों से अभिमंत्रित जल देते थे। इन वस्तुओं को उनकी बीमारी के आधार पर अलग-अलग उपायों के रूप में दिया जाता था। गुरुदेव ने समय के साथ लगभग 100 प्राकृतिक नुस्खे साझा किए जो अधिकांश बीमारियों में काम करते थे।

एक उपचारक के रूप में वह समझ से परे थे। कभी-कभी वह तार्किक सोच के विपरीत जाकर व्यक्ति को हैरान करते हुए उसे स्वस्थ कर देते थे। उदाहरण के लिए, जब गले की खराश से पीड़ित एक महिला मदद के लिए उनके पास आईं, तो उन्होंने उसे चटपटे गोल-गप्पे खाने के लिए कहा। जब उसने बड़ी हिचकिचाहट के साथ उनकी सलाह पर अमल किया, उसका गला ठीक हो गया और उसकी मूल आवाज लौट आई। इस घटना ने उसे पूरी तरह से आस्तिक बना दिया। इस तरह उन्होंने लाखों लोगों के मन में हैरानी जगा दी थी।

लोगों को स्वस्थ करने के लिए महागुरु को जो उचित लगा, उन्होंने वही किया। जब राजपाल जी अपने गायन कौशल का दिखावा कर रहे थे, तो उन्हें सबक सिखाने के लिए गुरुदेव ने उनकी आवाज इतनी कर्कश कर दी कि उनके बोले गए शब्द समझने लायक ही नहीं रहे। कुछ महीने बाद, एक दौरे पर जब उन्होंने अपने गुरु से पुनः माफी मांगी, तो गुरुदेव ने उन्हें अपना स्वर पुनः प्राप्त करने के लिए बर्फ का गोला खाने के लिए कहा। राजपाल जी जहां खड़े थे, उन्होंने वहीं से कुछ बर्फ

उठाकर खा ली। फिर क्या था... झटपट इलाज हो गया और इलाज भी बड़ा अचूक निकला!

जब गिरी जी की बहन के हाथ में फंगल इन्फेक्शन हो गया, तो गुरुदेव ने उन्हें ग्यारह दिनों तक स्थान में बनने वाली रोटियों पर घी लगाने के लिए कहा। बारहवें दिन तक फंगल इन्फेक्शन गायब हो गया था!

एक बार गुरुवार की सेवा में, मैंने एक हर्निया के रोगी को बवासीर (पाइल्स) का इलाज दे दिया क्योंकि मैं उन दोनों उपचारों के बीच के अंतर को भूल गया था। हालांकि उसी दिन देर रात मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। अगले गुरुवार को जब मैं उस रोगी से दोबारा मिला, तो मुझे लग रहा था कि उसकी तकलीफ बढ़ गई होगी, लेकिन इसके बजाय उसने मुझे बताया कि वह पहले से बहुत बेहतर है। मैंने महसूस किया कि उपचार केवल इलायची, लौंग, जल या जो कुछ भी हमें सिखाया गया था उसके बारे में नहीं था। यह उपचार की प्रक्रिया से कहीं ज्यादा संकल्प का जादू था। इसके प्रमाण के रूप में मुझे महागुरु के शब्द याद आते हैं कि "स्थान की मिट्टी भी किसी अन्य आध्यात्मिक उपचार की तरह ही प्रभावी ढंग से काम करेगी।"

उन्होंने लोगों को ठीक करने के लिए अनोखे तरीके अपनाए। अपने जीवन और उसके बाद भी वह सपने और दृश्य के माध्यम से लोगों का उपचार कर रहे हैं। घर में लगी आग से जब बिट्टू जी बुरी तरह झुलस गए, तो महागुरु ने उनके स्वप्न में आकर उनसे बात की और उन्हें अपना पिया हुआ पानी पीने को दिया। रात भर में उनकी झुलसी त्वचा साफ हो गई और वे एक हफ्ते के अंदर चलने-फिरने लगे।

जिस समय चरण सिंह जी राधा स्वामी सत्संग ब्यास के प्रमुख थे, उनकी

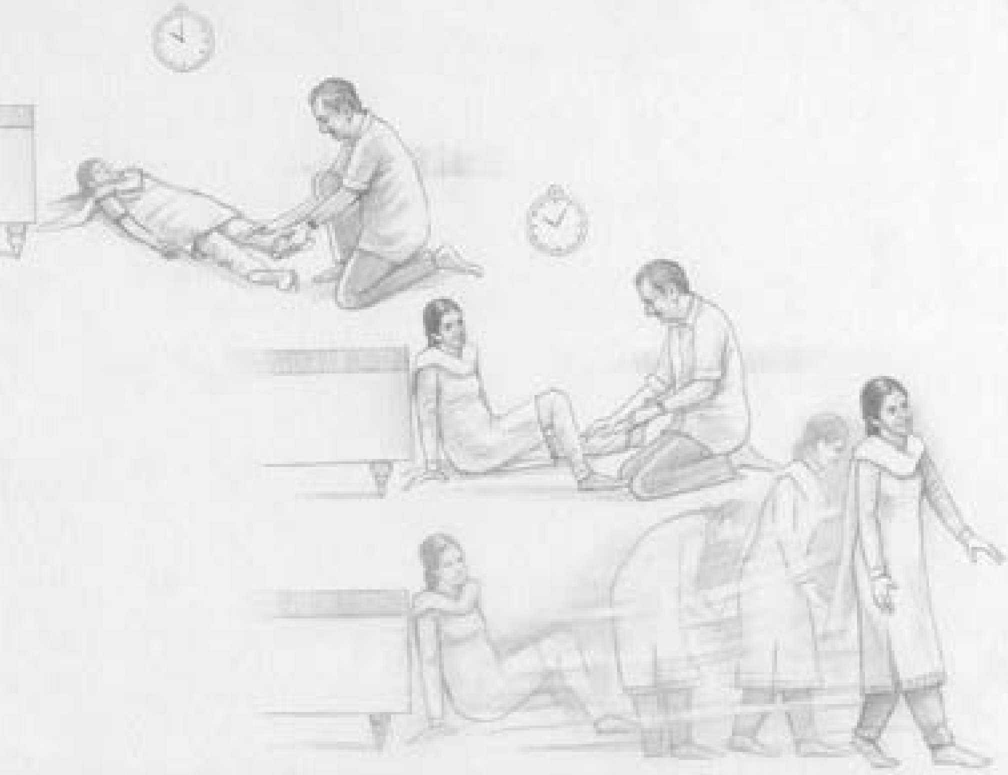

दुनिया गुरुदेव को एक ऐसे चमत्कारी उपचारक के रूप में जानती थी जो अपनी इच्छा से लोगों को ठीक कर सकते थे। उनकी इस असाधारण कुशलता की ऐसी और भी कहानियां सुनिए पॉडकास्ट **'एक असाधारण वैद्य'** www.gurudevonline.com पर।

बेटी को कैंसर हो गया था। उन्होंने अपनी पत्नी और बेटी को गुरुदेव से मिलने के लिए कहा। चरण सिंह जी ने अपने परिवार को बताया, "वह शिव हैं। मैं उन्हें एक भाई की तरह मानता हूं।" जब वे महागुरु से मिलीं, तो गुरुदेव ने उस लड़की को अपना पिया हुआ जल पिलाया और इस बात से असहमति व्यक्त की कि उसे कैंसर है। उन्होंने उनसे निश्चिंत होकर दोबारा मेडिकल टेस्ट कराने के लिए कहा। परिणामों ने ट्यूमर के कम होने के संकेत दिए।

चाहे वह गुरु द्वारा पिया हुआ जल हो या मंत्रों से अभिमंत्रित, यह जल अपनी निर्मलता बनाए रखता है और सालों तक खराब नहीं होता। यह सही मायने में जीवन का अमृत है।

महागुरु के सूक्ष्म अवतार से मदद पाने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

लोगों का उपचार करके उन्हें स्वस्थ करना गुरुदेव का अंतिम लक्ष्य नहीं था, हालांकि उनके दिन का ज्यादातर समय इसी कार्य में जाता था। जीवन में उनका लक्ष्य आध्यात्मिकता को बढ़ावा देना था ना कि सामाजिक अस्तित्व को, जिसे वे वक्त की बर्बादी मानते थे। जिन लोगों को उन्होंने उपचार की क्षमताओं से सशक्त बनाया था, उन लोगों के लिए उनकी विरासत तीन-आयामी हैः

1. सेवा के माध्यम से खुद को आध्यात्मिक रूप में बदलना।
2. दूसरों को राहत देना।
3. लोगों को आध्यात्मिक राह पर चलने के लिए प्रेरित करना। ▪

07

अलौकिक

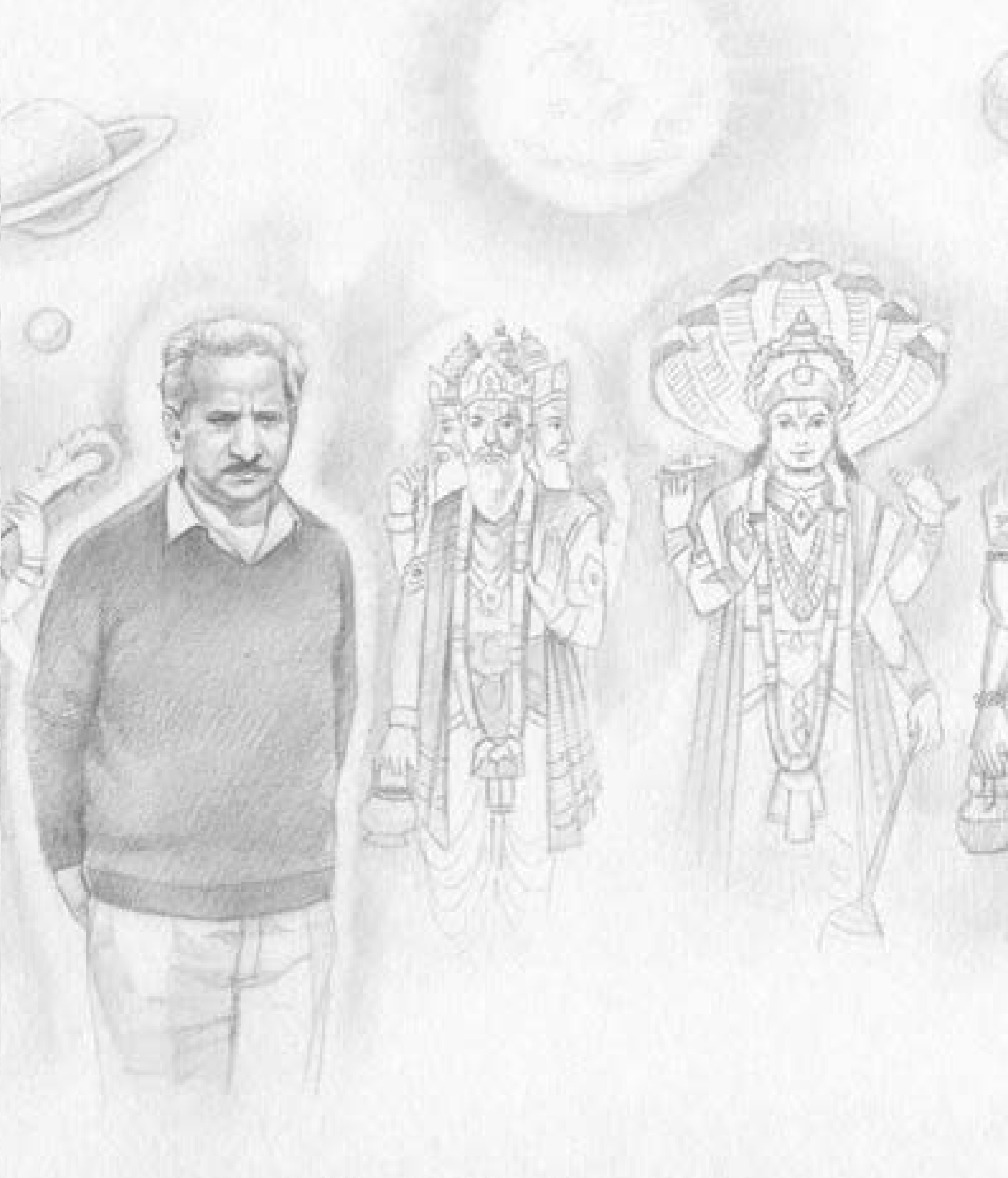

ख़ूब पर्दा है कि चिलमन से लगे बैठे हैं,
साफ़ छुपते भी नहीं, सामने आते भी नहीं।

दाग़ देहलवी

इस जीवनी को यहां तक पढ़ने के बाद, शायद आप ये सोच रहे होंगे कि इस आध्यात्मिक सुपरमैन ने अपने लिए एक सामान्य व्यक्ति का भाग्य क्यों चुना। शायद आप में से कई लोग इस सवाल का जवाब पाने को उत्सुक होंगे कि 'महागुरु ने एक सामान्य जीवन जीना क्यों पसंद किया, जब उनमें कुछ भी साधारण नहीं था?'

जवाब शायद भृगु संहिता में छिपा हुआ है। दिव्यदर्शी ऋषि भृगु ने गुरुदेव को दिव्यात्मा और शिव-स्वरूप के रूप में वर्णित किया है। वह आगे कहते हैं, "ध्यान अवस्था में वह शिव-स्वरूप और वाणी में विष्णु के समान हैं। सेवा और संरक्षण में वह ब्रह्मा की तरह और लोगों को दुःखों से मुक्ति दिलाने में वह जगदंबा की तरह हैं। उनकी आभा सूर्य की भांति बाहर से गर्म, अंदर से नरम और अन्तर्ज्ञान से भरी हुई है। लोग इस मानव रूप के पीछे की वास्तविकता को नहीं जान पाएंगे।"

विभिन्न स्वरूप

वर्ष 1974 में महाशिवरात्रि सप्ताह के दौरान, महागुरु ने अनिच्छा से शंभूजी को स्वयं के पंचमुखी स्वरूप के दर्शन दिए। यह घटना तब की है जब शंभू जी ने एक इंसान के पांच सिर होने की संभावना के बारे में ज़ोर देकर पूछा। यह सवाल इसलिए उठा क्योंकि उन्होंने स्थान में एक पेंटिंग देखी थी जिसमें पंचमुखी शंकर का चित्र था, जिसे महागुरु ने शिव का 'महामृत्युंजय' स्वरूप बताया था।

शुरुआती चर्चा के दौरान, गुरुदेव ने बताया कि किसी व्यक्ति की ऊर्जा या शक्तियों के आधार पर उसके पांच सिर हो सकते हैं। इस जवाब से असंतुष्ट, शंभू जी ने अपने गुरु से महाभारत के एक संदर्भ, जब कृष्ण ने अर्जुन के आग्रह पर अपना विराट रूप दिखाया था, का हवाला देते हुए

शंभू जी ने जब महागुरु का विराट
पंचमुखी रूप देखा तो वे बेहोश हो गए

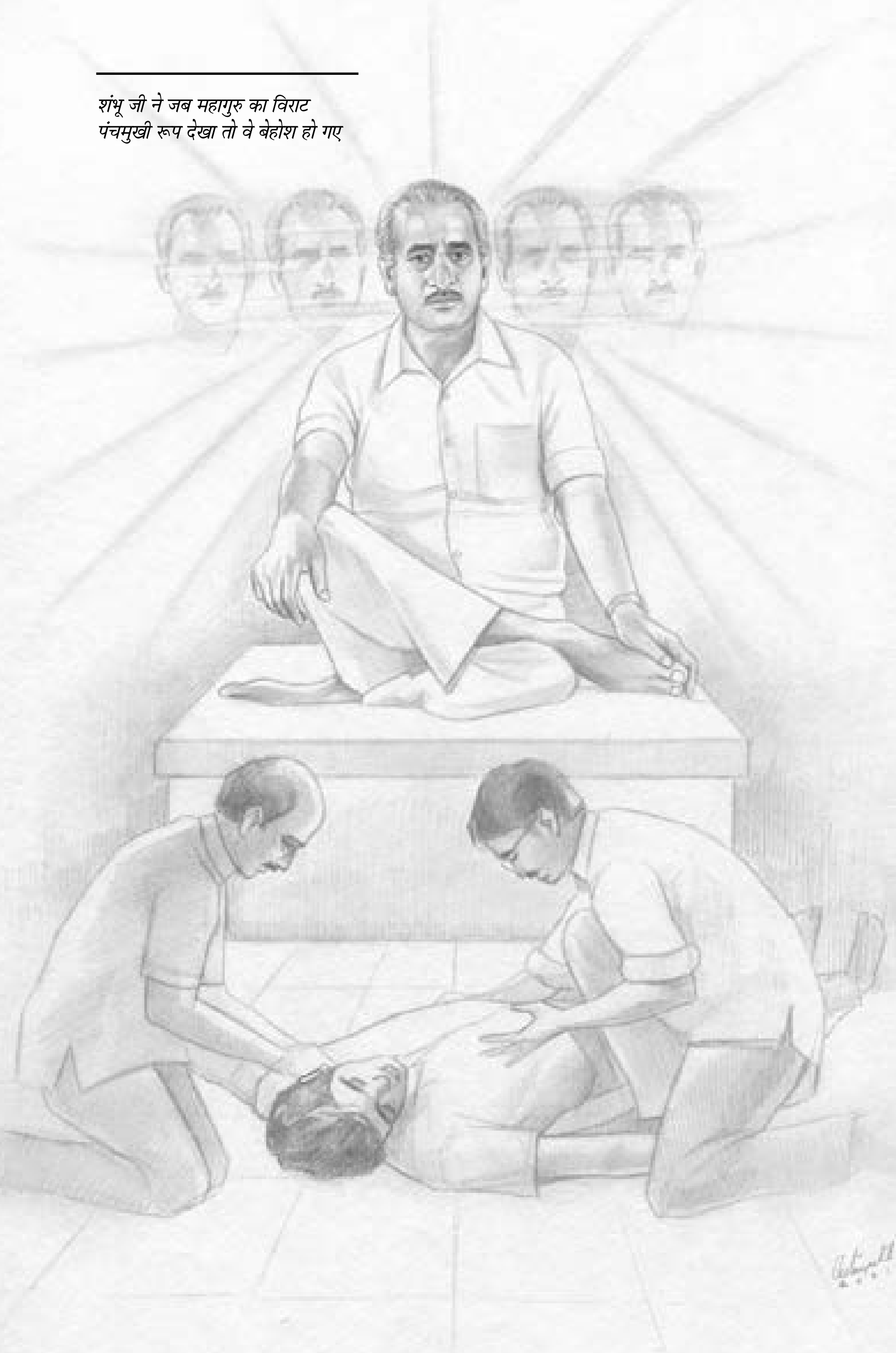

उन्हें अपना वास्तविक स्वरूप दिखाने के लिए कहा। इस पर महागुरु ने जवाब दिया, "न तो मैं कृष्ण हूं, न तुम अर्जुन हो, इसलिए तुम्हें अपना स्वरूप दिखाने का सवाल ही नहीं उठता।"

शंभू जी इतनी जल्दी कहां हार मानने वाले थे। वे अपनी बात पर अड़े रहे, जबकि दो अन्य भक्त रामनाथ जी और राज कपूर जी उनकी हां में हां मिला रहे थे। गुरुदेव ने शंभू जी को समझाने की बहुत कोशिश की। उन्होंने शंभू जी से कहा, "मैंने तुम्हारा जीवन पांच वर्ष बढ़ाया है। लेकिन अगर तुम मेरा स्वरूप देखते हो, तो तुम उन वर्षों को खो दोगे।" आग्रही शंभू जी गुरुदेव के पांच मुख वाले स्वरूप के दर्शन के लिए अपने जीवन-विस्तार को त्यागने के लिए तैयार थे। जब गुरुदेव के साथ उनकी बातचीत चल रही थी, शंभू जी अचानक बेहोश हो गए। जब गुरुदेव ने उन पर जल छिड़का तो उन्हें होश आया। तब गुरुदेव ने कहा, "मैंने तुम्हें अपने स्वरूप की छोटी-सी झलक दिखाई, पर तुम इसे देख नहीं पाए। यदि तुम मेरा वास्तविक स्वरूप देखना चाहते हो, तो तुम्हें उस रूप को सहन करने की आंतरिक क्षमता विकसित करनी होगी।"

बाद में शंभू जी ने कमरे में मौजूद अन्य दो लोगों से कहा कि बेहोश होने से ठीक पहले उन्होंने अपने गुरु को पांच सिर के साथ देखा था और उनका शरीर चमकदार, बेहद उजली रोशनी में नहाया हुआ था। गुरुदेव के पंचमुखी स्वरूप के दर्शन इन तीनों में से सिर्फ शंभू जी को ही हुए थे। हमसे इस घटना का उल्लेख करने वाले राज कपूर जी ने बताया, "महागुरु बहुत उदार थे। उन्होंने न केवल शंभू जी को अपना पंचमुखी रूप दिखाया बल्कि आशीर्वाद स्वरूप दिए गए उन पांच अतिरिक्त वर्षों को भी उनसे वापस नहीं लिया।"

गुरुदेव के रूप बदलने के अनेक उदाहरण हैं और उनके कुछ शिष्यों

को उन रूपों को देखने का सौभाग्य भी प्राप्त है। जब क्वात्रा जी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया, तो महागुरु ने पवित्र प्रकाश का रूप ले लिया। राजपाल जी ने महागुरु को उनके दोगुने आकार के सिर के साथ देखा। परवानू के गुप्ता जी ने महागुरु के बौने स्वरूप के दर्शन किए। शंभू जी के बेटे पप्पू जी उस समय चकित रह गए जब सफाचट दाढ़ी वाले गुरु के साथ घंटों बिताने के कुछ मिनटों के भीतर ही उन्होंने लंबी दाढ़ी वाले महागुरु के दर्शन किए।

जब उद्धव जी ने खिड़की से अपने कमरे में आए पीले रंग की आंखों वाले दो काले त्रिभुजों पर अपने नानचाकू का प्रयोग करने की कोशिश की, तो उनका हाथ जम गया और वह बेहोश हो गए। अगली सुबह जब वह सोकर उठे, उन्होंने महागुरु को इस घटना के बारे में सूचित करने का फैसला किया। गुरुदेव ने कहा, "पहले तुम मुझे मिलने के लिए आमंत्रित करते हो, और जब मैं आता हूं तो तुम मुझ पर आक्रमण करने की कोशिश करते हो"। महागुरु का तात्पर्य यह था कि वे उन दो त्रिकोणी शक्तियों में से एक थे। गुरुदेव ने उद्धव जी को ये भी बताया कि उन्हें अपने शिष्य के जीवन की खातिर उस दूसरी त्रिभुज शक्ति से समझौता करना पड़ा क्योंकि उस शक्ति को अपने ऊपर हुए इस तरह के आक्रमण की कोशिश बिल्कुल भी पसंद नहीं थी।

वास्तव में महागुरु जिस सर्वशक्तिमान ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते थे, उसे एक रूप या पहचान देना आसान नहीं था। उन्होंने अपने स्वरूप की पूरी तस्वीर कभी नहीं दिखाई, बस उसकी थोड़ी-सी झलक दिखाई।

बहुत कोशिशों के बाद भी हम उन्हें एक आध्यात्मिक मानव के रूप में देखते थे, ना कि एक उन्नत आध्यात्मिक आत्मा जिसने एक इंसान का रूप लिया था। वह अक्सर दावा करते थे कि हम कभी नहीं जान पाएंगे

कि वह असल में कौन हैं, और यह उतना ही सच है जितनी कि उनकी कही हुई हर बात सच है।

वास्तविकता के अदृश्य रूपों के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। पॉडकास्ट **'आकार और निराकार'** इसी विषय पर पड़ताल करती है। सुनिए www.gurudevonline.com पर।

शक्ति के प्रतीक चिह्न

गुरुदेव की कई शक्तियां उनके शरीर पर प्रतीकों के रूप में प्रकट हुईं जो यह दर्शाता है कि उनका आभामंडल इन उभरे हुए प्रतीकों की शक्तियों से घिरा था। इन शक्तियों की मौजूदगी का मतलब ये भी था कि गुरुदेव इन शक्तियों का उपयोग करने के योग्य थे।

सबसे पहले तो उनके हाथों में पूरा शिव-परिवार था। उनके दाएं हाथ में ओम, नन्दी, गिलेरी और सर्प से लिपटे हुए शिवलिंग जैसे प्रतीक थे। उनके बाएं हाथ पर ओम का चिह्न था जिसमें से एक त्रिशूल गुजरता प्रतीत होता था। इसके अलावा गणपति और ज्योत के चिह्न भी थे। इन प्रतीकों को कई लोगों ने देखा। कुछ शिष्यों ने उनके दाहिने हाथ पर तीन पिंडियों को देखा और उनका मानना था कि गुरुदेव ने उनको माता वैष्णो देवी के दरबार से प्राप्त किया था। संतलाल जी ने महागुरु के हर नाखून पर त्रिशूल होने की बात बताई, जबकि माताजी ने उनकी एक हथेली पर सुदर्शन चक्र देखा था।

ओम दिव्यता का प्रमाणित मानक है जो आपको दिव्य होने की श्रेणी

में स्थापित करता है। यह चेतना के एक निश्चित स्तर को दर्शाता है और जीवन के सभी रूपों को उन्नत रूप से जोड़ता है। यह तीन लोकों (देवलोक, भूलोक तथा पाताल लोक) से जुड़ाव और उन पर प्रभाव को भी दर्शाता है। गुरुदेव के हाथ, छाती, पीठ और माथे पर ओम था। कभी-कभी कुछ लोगों ने उनके हाथ पर ओम से इतनी रोशनी निकलते देखी कि लगता था जैसे वह चांदी के गोले में समाया हो।

त्रिशूल स्वयं और दूसरों की रक्षा का एक शस्त्र है। यह शक्ति (रचनात्मक ऊर्जा) और उपचार करने की योग्यता में वृद्धि का प्रतीक है। त्रिशूल की प्राप्ति से पहले, गुरुदेव और उनके शिष्य दूसरों का उपचार करते हुए नकारात्मकता को अपने भीतर समाविष्ट कर लेते थे। जब गुरुदेव ने त्रिशूल प्राप्त किया, तो उन्होंने इसे अन्य शिष्यों को भी दिया और उन्हें बताया, "अब तुम्हे बीमारी को अपने भीतर समाविष्ट करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब तुम्हारे पास इससे निपटने के लिए शक्ति है।"

गिलेरी के साथ शिवलिंग पुरुष और स्त्री ऊर्जा सिद्धांत को दर्शाता है। हाथ पर इन चिह्नों की आकृति का मतलब है न सिर्फ चेतना और अवचेतना के स्तरों पर, बल्कि अचेतना की अवस्था में भी द्वैत पर विजय। आम शब्दों में कहें तो यह अर्धनारीश्वर रूप की प्राप्ति का प्रतीक है। शिवलिंग पर लिपटा हुआ सर्प सहायता, सुरक्षा और बचाव करने की शक्ति को दर्शाता है।

गणपति वह सूक्ष्म शक्ति है जो तब सक्रिय होती है जब पुरुष और स्त्री ऊर्जा विलीन हो जाते हैं। गणपति मूलाधार चक्र पर शासन करते हैं जो भूलोक या पृथ्वी का घर है। गणपति की कृपा से वो बाधाएं दूर होती हैं जो कुंडलिनी को उच्च चक्रों तक बढ़ने से रोकती हैं। इससे सूक्ष्म जगत

और स्थूल जगत के स्तरों पर अज्ञानता कम होती है। इस पर विश्वास करना नामुमकिन होता यदि बहुतों ने गुरुदेव और हम में से कुछ लोगों के हाथों पर तराशी हुई कलाकृति जैसी एक-चौथाई इंच की गणपति की आकृति ना देखी होती। भूलोक में गणपति की शक्ति विशेष रूप से प्रबल होती है।

नंदी बैल को शिव का वाहन माना जाता है। शिव किसी भी व्यक्ति, जीव या किसी भी चीज में प्रकट हो सकते हैं और उन्हें परिवहन की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन नंदी का प्रतीक निम्नलिखित विशेषताओं के कारण शिव के आरोहण को दर्शाता है,

1. यह रक्षा करने या विनाश करने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यह निरंतर जागरूकता और सतर्कता को भी दर्शाता है, और शिव की शक्ति के प्रहरी के रूप में कार्य करता है।
2. अधिकतर मंदिरों में नंदी आमतौर पर शिवलिंग की ओर मुख करके विराजमान होते हैं। उस स्थिति में, यह धैर्य, निष्क्रियता और अटूट भक्ति का प्रतीक है। इसके अलावा, नंदी अपनी ताकत, वफादारी और समर्पण के कारण उत्तम गुणों वाला एक पशु रूप है। पूजे जाने के बाद, नंदी के भीतर की आत्मा किसी भी समय मानव रूप ले सकती है।

ज्योत दृश्य और अदृश्य अग्नि के प्रकाश को दर्शाती है। सूर्य की तरह, स्थूल अग्नि दिखाई देने वाला प्रकाश है, जबकि सूक्ष्म अग्नि ज्यादातर अदृश्य होती है। जीवात्मा भी एक ऐसा प्रकाश है जिसे खुली आंखें नहीं देख सकतीं, हालांकि कभी-कभी इसकी किरण को देखा या महसूस किया जा सकता है।

बाएं हाथ पर ज्योत, पारदर्शी लेकिन त्वचा के स्थायी छाले के रूप में

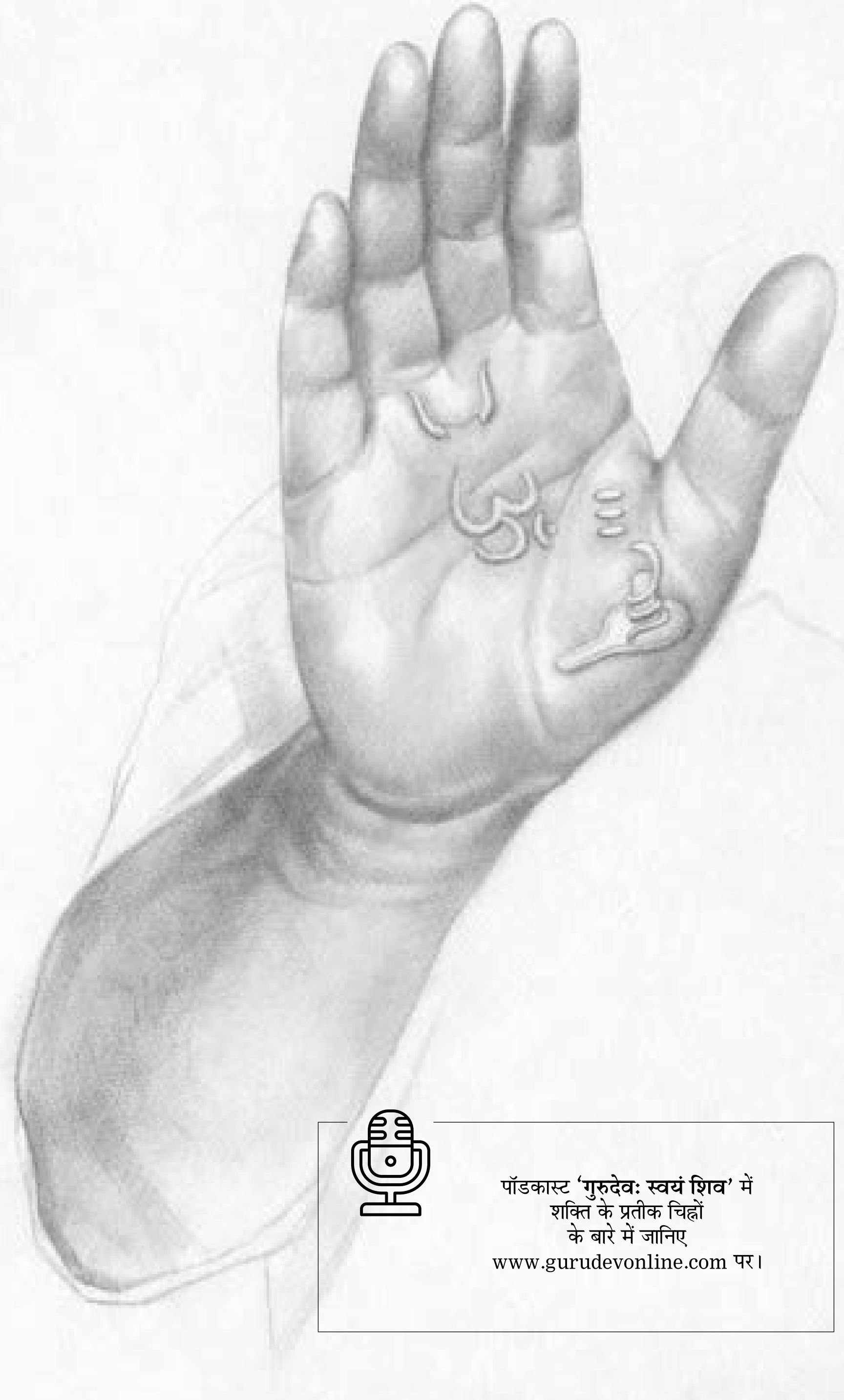

पॉडकास्ट **‘गुरुदेवः स्वयं शिव’** में
शक्ति के प्रतीक चिह्नों
के बारे में जानिए
www.gurudevonline.com पर।

गुरुदेव की हथेलियों पर
बने प्रतीक चिह्न

दिखाई देती है। ऐसा माना जाता है कि गुरुदेव ने ज्वालाजी से यह शक्ति प्राप्त की थी, जो ऐसी स्फूर्त अग्नि का मंदिर है जिसका कोई ज्ञात स्रोत नहीं है। महागुरु के शिष्य वीपी शर्मा जी ने खार के स्थान में सेवा के दौरान ज्योत प्राप्त की थी। एक ज्योत ने स्थान की एक खिड़की से प्रवेश किया, जहां शर्मा जी बैठे थे वहां गई, और सबके सामने उनके बाएं हाथ में स्वयं को स्थिर कर दिया।

कई अन्य लोगों ने भी ज्योत और अन्य प्रतीक प्राप्त किए, लेकिन जब तक महागुरु ने इसकी ओर इशारा नहीं किया या इसका जिक्र नहीं किया, तब तक वे अपने इस वरदान से अनजान रहे। ये सभी प्रतीक इन्हें पाने वाले को योग्य तो बनाते हैं लेकिन चेतना के स्तर पर नहीं, और गुरुदेव के विपरीत हम में से बहुत-से लोग यह नहीं जानते थे कि सचेत स्तर पर अपनी उपलब्धियों का आकलन कैसे किया जाए। गुरुदेव ने शक्ति प्रतीकों को कई तरह से स्थानांतरित किया, जिसमें लोगों के सिर पर हाथ रखना या उन्हें अपना पिया हुआ जल पीने के लिए देना शामिल था। महागुरु ने शक्ति हस्तांतरण की किसी भी मानक प्रक्रिया का उल्लेख नहीं किया। वे किसी व्यक्ति से हज़ारों मील दूर रहकर भी उसे अपनी शक्तियों का हस्तांतरण कर सकते थे। ज्यादातर मौकों पर तो उन्होंने अपनी इच्छाशक्ति से ही ऐसा कर दिया।

तात्विक तालमेल

तत्वों के साथ गुरुदेव की संबद्धता(कनेक्टिविटी) के कारण वे तत्वों को सहजता से प्रभावित कर लेते थे। मुझे याद है कि अपने खांडसा फार्म में उन्होंने मीठे पानी के स्रोत को सटीक रूप से चिह्नित कर दिया था। शुरू में हमने फार्म की पश्चिम दिशा में बोरवेल खुदवाया, लेकिन उससे एकदम खारा पानी निकला। गुरुदेव ने फार्म के बाईं ओर के स्थान को

चिह्नित करते हुए हमें उस स्थान पर बोरिंग करने के लिए कहा। नई जगह से मीठा और पीने योग्य पानी निकला। रेणुका में उन्होंने पानी बहने के लिए एक नाली खोदकर, बंजर भूमि को हरे-भरे स्थान में बदल दिया था।

वे न सिर्फ **पानी** की मौजूदगी का अनुमान लगाने वाले एक विशेषज्ञ थे, बल्कि वे पानी के लिए दिव्य भी थे। मैंने मुंबई के जुहू बीच पर जो देखा, उसने मेरे इस विचार को मजबूती प्रदान की। जब हम में से कुछ लोग और गुरुदेव समुद्र के अनंत छोर को एकटक निहार रहे थे, मैंने देखा कि कम से कम तीस फुट दूर से एक लहर ने आगे बढ़कर गुरुदेव के चरणों को स्पर्श किया। ऐसा करने के बाद, वह उथले पानी में विलीन हो गई। हम में से काफी लोग महागुरु के साथ खड़े थे, लेकिन लहर ने सिर्फ उन्हें चुना। एक अन्य अवसर पर, महाबलीपुरम के समुद्र तट पर खड़े गिरि जी ने महागुरु के चरणों की ओर बंगाल की खाड़ी से आती हुई ऐसी ही एक लहर देखी थी।

उनका बारिश के साथ एक अनोखा संबंध था। जिस दिन महागुरु का जन्म हुआ, उस दिन बारिश हुई थी। वे इसे अपनी इच्छानुसार बरसा और रोक सकते थे। बारिश पर महागुरु के नियंत्रण के अनेक प्रसंग हैं। एक गुरु पूर्णिमा पर, एक शिष्य ने उन्हें सूचित किया कि जुलाई की चिलचिलाती गर्मी के कारण उनसे मिलने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे लोग थक गए हैं। यह सुनकर, गुरुदेव ने बारिश की इच्छा व्यक्त की और लगभग तुरंत ही बारिश होने लगी, लेकिन जहां तक कतारें थीं, बस वहीं तक बारिश हुई!

गुरुदेव ने एक बार मुझे बताया था कि महागायत्री मंत्र की सिद्धि **अग्नि** को नियंत्रित करने की क्षमता देती है। महागुरु जब तक जीवित थे,

महाशिवरात्रि की अधिकांश रातों में उबलती हुई नींबू की चाय को अभिमंत्रित करने के लिए, कुछ क्षणों के लिए उसमें अपने हाथ डुबोते थे। इस प्रक्रिया के दौरान उनके हाथ में कभी कोई जलन, घाव या छाला नहीं पड़ा।

न केवल महागुरु, बल्कि उनके शिष्यों ने भी प्रकृति पर नियंत्रण साधना सीखा। ज्वालामुखी के पप्पू जी पर जब ईर्ष्यालु तांत्रिकों ने आग के गोले फेंके तो उन गोलों को दिशाहीन करके उन्हें मौत से बचाया गया था। उन्होंने अपने मृत पिता शंभू जी को आग के गोलों को रोकते हुए देखा था!

अंतरिक्ष गुरुदेव की अन्य लोकों की कई सुक्ष्म यात्राओं का गवाह है। महागुरु की **एक साथ दो स्थानों में उपस्थित** रहने की क्षमता की कम से कम तीन घटनाएं दर्ज की गई हैं। एक बार, जिस समय वह सुनील जी के साथ लंदन में उनकी दुकान पर थे, लगभग उसी समय वह बक्शी जी के साथ गुड़गांव के स्थान पर बैठक कर रहे थे। एक और बार, उन्हें अपने कार्यालय और खेत में लगभग एक ही समय में लोगों से बातचीत करते हुए देखा गया! नागपुर में महागुरु को एक बंद कमरे में फोन पर बात करते देखा गया, जबकि कुछ मिनट पहले उन्हें अपने शिष्यों के साथ कहीं और बैठे देखा गया था।

वे एक ही समय में **शारीरिक रूप से उपस्थित और अनुपस्थित** हो सकते थे। अगर यह एक पहेली की तरह लगता है, तो मैं इसे समझाता हूं। कई अन्य लोगों के साथ, मेरा अपना भी अनुभव है कि अगर उन्हें फोटो नहीं खिंचवानी होती थी तो चाहे हम कितनी भी होशियारी से कोशिश कर लें, या तो कैमरा का बटन ही काम नहीं करता था या फोटो डेवेलप करने पर रील खाली निकलती थी। महाशिवरात्रि से दो

दिन पहले, जब एक पेशेवर जर्मन फोटोग्राफर ने उन्हें अपने कैमरे में कैद करना चाहा, तो महागुरु ने उससे कहा, "अब से दो दिन बाद मेरी फोटो खींचना। आज मैं यहां मौजूद नहीं हूं"। अपने फोटोग्राफी कौशल के घमंड में चूर, उस जर्मन फोटोग्राफर ने एक साथ कई तस्वीरें खींच लीं, लेकिन बाद में उसे पता चला कि महाशिवरात्रि पर उसने जो तस्वीरें ली थीं वही आई थीं, शेष रीलें खाली थीं।

अदृश्य होना एक यौगिक क्रिया है जिस पर महागुरु को महारत हासिल थी। चाहे वे भीड़ के बीच से भी गुजर जाएं, लेकिन यदि उनकी इच्छा नहीं होती तो उन्हें कोई नहीं पहचान सकता था। एक बार श्रीनगर में, राजपाल जी और गुरुदेव अपनी जीप के लिए कुछ पुर्जों की खोज में निकले, जो टूट गए थे। उन्होंने एक दुकान में देखा कि दुकानदार महागुरु की तस्वीर के समक्ष धूप जलाकर अपनी श्रद्धा व्यक्त कर रहा है। यह देखकर राजपाल जी ने अपने गुरु से बड़ी धीमी आवाज में कहा, "चूंकि दुकान एक अनुयायी की मालूम पड़ती है, इसलिए उससे खरीदारी करना मुश्किल हो सकता है"। राजपाल जी को लगा कि दुकान का मालिक सामान की कीमत लेने से इंकार कर देगा और गुरुदेव मुफ्त में कुछ भी स्वीकार नहीं करेंगे। ये सुनकर गुरुदेव ने राजपाल जी की ओर देखा और कहा, "वह केवल तभी भुगतान स्वीकार करने से इंकार करेगा जब वह हमें पहचानेगा"। यकीनन वही हुआ जो महागुरु ने कहा था। उनकी पूजा करने वाले उस आदमी ने उनको बिल्कुल नहीं पहचाना और महागुरु ने बड़ी आसानी से उससे सामान खरीद लिया।

चूंकि उद्धव जी लगातार महागुरु से अपनी दिव्यता का प्रदर्शन करने के लिए आग्रह करते थे, महागुरु ने उन्हें महाशक्तियों के प्रति आकर्षित न होने की सलाह दी। यदि इन शक्तियों को अच्छी तरह से संभाला न जाए, तो ये परम-आत्मिक यात्रा में उपलब्धि की बजाय आध्यात्मिक

परिवर्तन में बाधा बन सकती हैं। हाल के वर्षों में, पहले की तुलना में ज्यादा अनुभवी उद्धव जी कहते हैं, "आप न तो सागर को बोतल में कैद कर सकते हैं और न ही एक तस्वीर में विहंगम दृश्यों की विविधता समेट सकते हैं। महागुरु के जटिल और विशाल व्यक्तित्व को समझना बहुत मुश्किल है, और शायद ही उनका कोई शिष्य उनकी हकीकत से पूरी तरह वाकिफ हो पाया है।"

मन और शरीर से परे

महागुरु की जीवनी में इंद्रियों, भावनाओं और विचारों पर उनके नियंत्रण के कई उदाहरण हैं। तो इस खंड में मैं इसका ज्यादा जिक्र नहीं करूंगा।

उनके **शरीर एवं मन का तालमेल** अत्यधिक विकसित था। वह भोजन के बिना कई दिनों तक रह सकते थे, जैसा कि महाशिवरात्रि के दौरान देखने को मिलता था। उनका आशीर्वाद लेने आने वाले लोगों की कतारें कुछ दिनों तक लगी रहती थीं। जब तक महागुरु उन सभी से नहीं मिल लेते थे, तब तक वे भोजन नहीं करते थे।

वे **सर्दी और गर्मी से अक्सर बेअसर** रहते थे। जब हम बहुत सारे ऊनी कपड़ों में भी कांप रहे होते थे, उस समय वे एक हल्के कार्डिगन से काम चला लेते थे।

वह अपनी **नींद में एक तरह से हेरफेर** कर सकते थे। जब उनका दाहिना शरीर सोता, तो उनका बायां शरीर, शरीर के पूर्ण कामकाज को संभालने के लिए जाग जाता या इसके विपरीत भी होता था। पहलवान जी बताते हैं, "कभी-कभी जब मैंने उनके साथ स्कूटर की सवारी की, तो मैंने उन्हें अपनी आंखें बंद करके स्कूटर चलाते हुए देखा! वे उस समय पाठ कर रहे होते थे।"

वे हमेशा मीठा नहीं बोलते थे, लेकिन उनकी वाणी कठोर भी नहीं थी। वह अल्पभाषी थे और उनमें अपने कहे गए शब्दों से ज्यादा बताने की क्षमता थी। उनका बेमिसाल मज़ाकिया अंदाज़ आध्यात्मिक शार्पनर की तरह था। हम शायद ही कभी उन बातों में अंतर कर पाए कि वे जो कुछ कह रहे थे, हमें सिखाने के लिए कह रहे थे या हमारी टांग खींच रहे थे। उनके पास अपनी बातों को सच करने की क्षमता थी और मैं इसे साबित कर सकता हूं। उनकी **वाक् शक्ति** में उनकी कभी 'ना' ना कहने की क्षमता भी जुड़ी हुई थी। अशोक भल्ला जी अपने गुरु को याद करते हुए कहते हैं, "वह कहते थे कि उनके शब्दकोश में 'ना' शब्द नहीं है"। शायद उनका कहने का मतलब यह था कि समस्याएं कितनी भी जटिल हों, महागुरु उनसे घबराते नहीं थे।

गुरुदेव लोगों के **भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में पूरी जानकारी** के साथ निरंतर जागरूकता में रहते थे। जैसा कि उन्होंने चंड़ीगढ़ के एक सेवादार दास साहब से कहा था, "जब लोग मुझसे मिलने आते हैं, मैं अपने दिमाग में एक स्क्रीन देखता हूं जहां उन सबके अतीत, वर्तमान और भविष्य तेजी से चल रहे होते हैं। मैं यह भी बता सकता हूं कि वे विश्वास के साथ आए हैं या सिर्फ मनोरंजन के लिए"। उनकी नियति और समय पर ऐसी पकड़ थी कि इसे समझाया नहीं जा सकता। वे लोगों के कर्मों को समाप्त कर सकते थे, उनके संस्कारों को बदल सकते थे, उनके भविष्य के जीवनकाल से कुछ साल निकालकर उनके वर्तमान जीवन में जोड़ सकते थे, आदि।

जब उन्होंने गंगा नदी में अपनी सिद्धियों का त्याग किया, तो उन्होंने महागुरु का दर्जा पा लिया और वो उन शक्तियों का स्वरूप बन गए जो उनके पास थीं।

आध्यात्मिक प्रभुत्व

महागुरु का आध्यात्मिक ज्ञान अद्वितीय था। उच्चतम लोकों के या उससे आगे के अध्यात्मवादी होने के नाते, उन्हें आत्माओं की दुनिया में महारत हासिल थी और वे कई तरह से उनकी मदद भी कर सकते थे। महागुरु के पास आत्माओं को निचले लोकों से हटाकर उच्च लोकों में पहुंचाने की शक्ति थी। यदि वे किसी आत्मा को चुनते थे, तो उसे पृथ्वी पर जन्म दे सकते थे ताकि आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होने के लिए वह आत्मा अपने मानवीय रूप का उपयोग कर सके। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि उन्होंने आत्माओं को उनके मानव रूपों में सच्चे परम-आत्मिक स्वरूप के करीब आने में मदद की।

गुरुदेव अपनी इच्छानुसार **सूक्ष्म शारीरिक यात्राएं** कर सकते थे। वे सप्ताह में चार से पांच दिन सूक्ष्म यात्राएं करते थे और हर बार उनकी यात्रा दो घंटे से लेकर सात घंटों की होती थी। वे हमें अपनी कुछ सूक्ष्म शारीरिक यात्राओं पर साथ भी ले गए। इस तरह के कई अनुभवों के बीच, उनके साथ पेरिस के पुल पर जाना और एक बेड़े में जल यात्रा करना जिसमें हमारे साथ उनके एक सम्मानित परिचित व्यक्ति भी थे, मेरी स्मृति में अभी तक ताज़ा हैं।

वे **विभिन्न ग्रहों की लंबी दूरी की यात्राएं** कर सकते थे। यही कारण है कि कुछ सूक्ष्म शारीरिक यात्राओं में कई घंटे लग जाते थे। एक रात पाठ के लिए जाने से पहले, उन्होंने मुझसे कहा, "चलो, मैं तुम्हें ब्रह्मांड की यात्रा पर ले जाता हूं"। ब्रह्मांड का मतलब चांद पर जाकर वापस आना नहीं था, उनका तात्पर्य पूरी आकाश गंगा से था। उन्होंने पेशकश की लेकिन मैंने गड़बड़ कर दी। उस रात जब मैं सो रहा था, पूरन जी मुझे बताने आए कि गुरुदेव मुझे बुला रहे हैं। यह एहसास करने की

बजाय कि मुझसे बात करने वाला शरीर पूरनजी का सूक्ष्म स्वरूप है, और मुझे उनके साथ सूक्ष्म शारीरिक यात्रा करनी है, मैं शारीरिक रूप से उठा और गुरुदेव के कमरे में गया। तब मुझे एहसास हुआ कि उनका शरीर वहां पड़ा था लेकिन वह सूक्ष्म यात्रा पर जा चुके थे। पूरन जी अपने शारीरिक रूप में गुरुदेव के पलंग के पास उनके पैर पकड़े हुए बैठे थे। ऐसे ही एक सूक्ष्म अभियान की बात सुरेंद्र कौशल जी को याद है जिसमें महागुरु ने उन्हें एक-एक करके सभी ग्रहों की यात्रा कराई थी।

संतलाल जी याद करते हैं कि कैसे उन्हें, अमीचंद जी और बक्शी जी को सूक्ष्म लोकों का भ्रमण करना सिखाया गया था। गुरुदेव उन्हें एक यात्रा पर ले गए और उनसे कहा कि वे अपने-अपने घरों को चले जाएं लेकिन अपने परिवार को इस बारे में न बताएं, और सुबह होने से पहले अपने शरीर में लौट आएं। संतलाल जी और बक्शी जी वापस लौट आए, परंतु अमीचंद जी अपना रास्ता भूल गए और गुरुदेव को सूक्ष्म यात्रा करके उन्हें वापस लाना पड़ा।

जब गुरुदेव अपनी सूक्ष्म यात्रा पर होते थे, और यदि किसी आपातस्थिति में गुरु के भौतिक हस्तक्षेप की जरूरत होती, तो ऐसी स्थिति में केवल माताजी ही उन्हें उनके भौतिक स्वरूप में वापस ला सकती थीं। गुरुदेव ने उन्हें सिखाया था कि कैसे उनके दोनों अंगूठों को एक साथ रखकर उनके पैरों को खींचना है। उन्होंने माताजी को बताया था,"मैं जहां की यात्रा पर हूं, उस आधार पर मुझे लौटने में कुछ समय लग सकता है।"

महागुरु अपने **सूक्ष्म शरीर से भी सेवा** करा सकते थे और उन्होंने कराई भी। सूक्ष्म शारीरिक यात्राओं के अनुभव के अलावा, उन्होंने हमें सपनों और दृश्यों में संदेश दिए, हमें स्वस्थ किया, हमें अपना भविष्य दिखाया, हमारे अतीत का पता लगाया और हमें पवित्र तीर्थों और संत

सभाओं में ले गए। वे स्वप्नदोष की स्थिति में भी शारीरिक रूप से हमारे साथ होने वाली प्रतिकूल घटनाओं को बदल सकते थे, जिससे शारीरिक रूप से इसके फिर कभी होने की संभावना समाप्त हो जाती थी। संक्षेप में कहें तो कई बार वे लोगों की शारीरिक अवस्था के बजाय, उनकी स्वप्न अवस्था में उनके कर्मों को समाप्त कर सकते थे।

गुरुदेव ने **उन्नत और शक्तिशाली आत्माओं के साथ गठबंधन** किया ताकि वे संयुक्त रूप से प्राणी जगत की सेवा कर सकें। भृगु संहिता देवताओं के चिकित्सक अश्विन कुमारों के साथ महागुरु के गठबंधन का इशारा करती है। उनके कुछ अन्य आध्यात्मिक सहयोगियों में शिर्डी के साईं, गुरु नानक, गुरु गोबिंद सिंह, परशुराम जी, कुछ मुस्लिम संत, भगवान कृष्ण, गुरु वशिष्ठ, दत्तात्रेय, गणपति, हनुमान, शिव के कई रूप और महाकाली, लक्ष्मी, सरस्वती, रेणुका जैसी देवियां शामिल हैं। गुरुदेव के महागुरु के रूप में बुड्ढे बाबा का योगदान बेहिसाब है।

गुरुदेव ने एक साथ कई लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए कई निर्माण काया या सूक्ष्म ऊर्जा विकसित की थीं। उनके कई शिष्यों की भी निर्माण काया हैं। अपनी निर्माण काया के बारे में मुझे सचेत रूप से जानकारी नहीं है, लेकिन यह लोगों के सपनों में दिखाई देती है, और इसने उन्हें स्वस्थ किया है, उनकी समस्याओं का हल दिया है और कभी-कभी उन्हें मंत्र भी दिए हैं जो मैंने पहले कभी नहीं सुने थे।

इस दुनिया को अलविदा कहने से पहले ही महागुरु ने नजफगढ़ में अपनी समाधि का निर्माण शुरू कर दिया था। उनके देहावसान के दशकों बाद भी, उन्हें वहां देखा गया है, लेकिन उतनी बार नहीं जितना कि उनके कुछ भक्त चाहते हैं।

अनावरण

महागुरु अपनी अलौकिक क्षमताओं को सार्वजनिक करने में विश्वास नहीं रखते थे। उन्होंने सादगी और विनम्रता के मानवीय गुणों को अपनाया और अपना जीवन अत्यन्त साधारण तरीके से जिया। उन्हीं की शैली को अपनाते हुए, मैंने उनके अद्‌भुत चमत्कारों को बहुत ही संयमित होकर बताया है ताकि आप उनके जीवन के मूल विषय, आपके आध्यात्मिक परिवर्तन की सक्रियता और सक्षमता से अभिभूत न हों। उन्होंने सेवा में अपनी हर शक्ति का उपयोग किया, लेकिन अपने नज़रिये के आधार पर लोगों ने उनमें या तो साधारण इंसान को देखा या असाधारण महागुरु को।

53 वर्ष की उम्र में जब लोग अपनी जीवन भर की कमाई का आनंद लेने के बारे में सोचते हैं, गुरुदेव ने इस नश्वर जीवन का त्याग कर अपने अलौकिक निवास पर वापस जाने का विकल्प चुना। तब तक महागुरु ने पिछले 500 वर्षों के अपने शिष्यों को इकट्ठा किया, उन्हें शिव-परिवार की प्रतिष्ठित शक्तियां दीं और उनको सिद्ध गुरुओं के रूप में विकसित किया। उनका आध्यात्मिक संयोजन गुरुदेव की पूर्व-निर्धारित योजना थी, मानो गुरुदेव ने नियति के 'प्रशिक्षित को प्रशिक्षण देने' के कार्यक्रम का चुनाव किया हो!

महागुरु की अलौकिकता उनकी नियति तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने अपनी अलौकिकता को व्यक्त करने के लिए अपनी नियति को सीमित किया। उनकी असीमता अभी भी दुनिया भर में उनके स्थानों और नजफगढ़ में उनकी समाधि पर महसूस की जाती है।

वे अदृश्य शख्स अब भी एक दृश्य शक्ति हैं। ▪

08

व्यक्ति विशेष

व्यक्ति विशेष में ऐसे लोगों का उल्लेख किया गया है जिन्होंने महान संत बनने के लिए महागुरु के मार्गदर्शन में फर्श से अर्श तक का सफर पूरा किया। वे उच्च लोकों से थे लेकिन गुरुदेव के मिशन का हिस्सा बनने के लिए धरती पर एक साथ आए थे।

इस किताब में जिन लोगों का उल्लेख किया गया है, उनका परिचय यहां अंग्रेजी वर्णमाला(अल्फाबेट) के अनुसार दिया जा रहा है। इसका उद्देश्य यह है कि आप उनकी कहानियों से परे भी उन्हें जानें।

ए (A)

अभय तनेजा एक योगी के अवतार हैं। उन्होंने मानव स्वरूप में जन्म लेने के लिए आत्मा के रूप में 100 वर्षों तक महागुरु की प्रतीक्षा की। वे पेशे से एक होटल संचालक हैं, शौक से एक सॉकर फैन हैं, और अब उनका आध्यात्मिक रूप धीरे-धीरे सामने आ रहा है।

अमीचंद जी ने कोटला में एक स्थान की देखरेख की थी। वे शालीनता के प्रतीक थे और बड़े उत्साह से लोगों की सेवा करते थे। उनकी एक खासियत यह भी थी कि वे एक बड़ी अजीब मुद्रा में सोते थे। वे उसी तरह सोते थे जिस तरह एक मुसलमान नमाज अदा करता है। जब मैंने उनसे इसके बारे में पूछा, तो वो हंस पड़े और जवाब दिया कि यह उनके बचपन की आदत है।

आनंद पाराशर जी ऑफिस में गुरुदेव के जूनियर थे। वो ऑफिस और कैंप में महागुरु से प्रेरित थे। अंत में वो एक बड़े श्रद्धालु बन गए। जब हमने उनका इंटरव्यू लिया तो वे गुरुदेव को याद कर भावुक हो गए।

अल्का जी गुरुदेव की सबसे छोटी बेटी हैं। वे बड़ी सीधी-सादी हैं लेकिन बड़ी बातूनी हैं। उनमें हास्य की जबर्दस्त कला है और उनका साथ हमेशा ही बड़ा मज़ेदार होता है।

अशोक भल्ला जी एक होशियार व्यवसायी हैं जो हर बात पर बारीकी से ध्यान देते हैं। अपने जवानी के दिनों में उन्हें बहुत गुस्सा आता था। हालांकि महागुरु के मार्गदर्शन में वे एक शांत-मिज़ाज और शांतिप्रिय आध्यात्मिक व्यक्ति में बदल गए।

बी (B)

बग्गा साहब अपनी पत्नी के सक्रिय समर्थन के साथ हमीरपुर में एक स्थान संभालते थे। गुरुदेव के शिष्यों में वो एक यादगार नाम थे क्योंकि वो गुरुदेव के एक इम्तेहान में नाकाम हुए थे जब उन्होंने एक बूढ़े आदमी के वेश में अपने सामने आए औघड़ को नहीं पहचाना था। उस घटना को छोड़कर, जिसने संयोग से महागुरु के चेहरे पर हंसी भी बिखेर दी थी, बग्गा साहब एक नेकदिल और निष्ठावान सेवादार थे।

बक्शी जी शिमला के स्थान की देखरेख करते हैं। वो हिमाचल प्रदेश मंत्रालय के पूर्व कर्मचारी हैं, जिन्होंने चार दशकों तक लोगों की सेवा की है। वो एक बुद्धिमान आदमी हैं जिनके बातचीत करने का अंदाज़ बड़ा दिलचस्प है। उनका प्रभाव शिमला और इसके आसपास के कई कस्बों में फैला है।

बलजीत जी ने आध्यात्मिकता की राह पर चलने के लिए अपना वक्त, मेहनत और अपनी संपत्ति कुर्बान कर दी। वे नीलकंठ धाम और गुड़गांव में सेक्टर 10 स्थित स्थान के निर्माण के लिए जिम्मेदार हैं। वे बड़े सिद्धांतवादी हैं और हर दिन सुबह 5:30 बजे स्थान पर दिया जलाने जाते हैं। आज की भागदौड़ भरी इस दुनिया में भक्ति का अनुशासन पालना आसान नहीं है, लेकिन नेकदिल बलजीत जी इसे बड़ी सहजता से करते हैं।

भगत राम जी गुरुदेव के पिता थे। वो दिल के बहुत अच्छे थे। वो पेशे से रसायनों के व्यापारी थे और उन्होंने आंशिक रूप से व्यावसायिक सफलता हासिल की थी।

बिल्लू जी जब गुरुदेव से मिले थे, तब उन्हें निश्चित रूप से शराब की लत थी। उन्होंने पूरी ईमानदारी से कई कोशिशें कीं लेकिन वो शराब नहीं छोड़ पा रहे थे। मगर अजब इत्तेफाक है कि गुरुदेव उन्हें चाहते थे और उन्होंने बिल्लू जी को सही राह पर लाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। बिल्लू जी जो चीज़ गुरुदेव के जीते जी नहीं कर पाए, वो उन्होंने महागुरु के शरीर छोड़ने के बाद कर दिखाई। आज वो पूरी तरह से शराब से दूर हैं, और अपने परिवर्तन का श्रेय अपने गुरु की कृपा को देते हैं। यदि शराब को बियर के पैमाने में देखें, तो शायद वो गुरुदेव के शरीर त्यागने के बाद से अब तक 18000 से ज्यादा बोतलों का त्याग कर चुके हैं।

बिमला जी गुरुदेव की सबसे बड़ी बहन थीं और बड़ी मिलनसार थीं। वे बचपन से ही गुरुदेव के साथ बड़ी सख्त थीं और उनकी शरारतों पर पूरी नज़र रखती थीं। अक्सर उन पर चुटकुले किए जाते थे, लेकिन उनका भी गुरुदेव की तरह बड़ा हंसी-मज़ाक वाला स्वभाव था।

बिट्टू जी 14 साल की उम्र में गुरुदेव से मिले थे और उन्होंने स्थान को

संभालने में गुरुदेव की मदद की। वो बड़ी कुशलता के साथ भीड़ को संभालते थे और गुड़गांव में रहने के दौरान, गुरुदेव के आराम का ख्याल रखते थे।

सी (C)

चाचा जी, जिन्हें सतीश जी के नाम से भी जाना जाता है, गुरुदेव के छोटे भाई थे। वो दिखने में बहुत आकर्षक थे और बड़े अच्छे स्वभाव के थे। उनमें हास्य का गुण भी था। वे अपने बड़े भाई के आध्यात्मिक स्तर से बड़े प्रभावित थे। कई प्रभावशाली तांत्रिकों और काला जादू करने वाले लोगों ने कई बार उन पर हमले किए, चूंकि वे एक शक्तिशाली अध्यात्मवादी थे जो बड़ा सामान्य नज़रिया रखते थे, इसलिए शायद वे इस तरह के हमलों से ऐसे बच निकलते थे जैसे कुछ हुआ ही ना हो, और उनके हमलावर अक्सर उनके सामने मुंह की खाते थे!

चाची जी या स्नेहलता जी सतीश जी की पत्नी हैं। वे हरिआना में एक मंदिर और एक स्थान की देखभाल करती हैं जिसका निर्माण गुरुदेव ने किया था।

चंद्रमणि वशिष्ट जी ने रेणुका में एक स्थान की जिम्मेदारी संभाली थी। वो एक स्थानीय राजनेता थे जो गुरुदेव और परशुराम जी के शिष्य थे। एक प्रभावशाली हस्ती होने के नाते, उन्होंने रेणुका के मंदिरों में बहुत-से सुधार कार्य किए और उन्होंने बहुत-से लोगों को आध्यात्मिकता से जोड़ा।

चरण सिंह जी गुरुदेव के समय पर राधा स्वामी सत्संग ब्यास के प्रमुख थे। वो एक कामयाब आध्यात्मिक थे। कुछ मौकों पर उनकी पत्नी निजी मामलों में महागुरु की सलाह लेती थीं।

डी (D)

दास साहब एक पूर्व वकील हैं जो जनता की सेवा में समर्पित हैं। वे चंडीगढ़ और अंबाला में सेवा करते हैं।

डॉ. शंकर नारायण गुरुदेव के सहकर्मियों में से एक थे और दोनों ने साथ मिलकर बढ़िया वक्त गुजारा। एक शिष्य के रूप में वे स्थान की सामुदायिक रसोई की देखरेख करते थे, जिसे उन्होंने बड़े सराहनीय रूप से संभाला। उन्होंने दशकों तक बेंगलुरु में एक स्थान का संचालन किया।

द्वारकानाथ जी गुरुदेव के मकान मालिक और दोस्त थे। वो करीब 5 वर्षों तक गुरुदेव और नागपाल जी के साथ 120 वर्ग फुट के एक कमरे में रहे। गुरुदेव को लेकर उनका नज़रिया इस तरह बदला कि वे उन्हें एक किराएदार के रूप में देखने से लेकर उन्हें एक गुरु मानकर उनकी पूजा करने लगे। इस तरह का बदलाव आसान नहीं है लेकिन वे बहुत अच्छे से इस पड़ाव से गुजरे।

एफ (F)

एफसी शर्मा जी गुरुदेव के ऑफिस में एक सामान्य सहयोगी थे जो जल्द ही उनके वरिष्ठ शिष्यों के समूह में शामिल हो गए। वे सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखते थे। वे अपनी अंतिम सांस तक सेवा करने में जुटे रहे, लेकिन ना तो उन्होंने कभी इसका दिखावा किया ना कभी इसका श्रेय लिया। इस तरह उन्होंने मुझे भी इंसानियत का मतलब सिखाया।

जी (G)

गग्गू जी गुरुदेव के भांजे हैं। वो बड़े नेकदिल इंसान हैं लेकिन इससे उनकी शरारतों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। वे महागुरु को तंग करने का पूरा अधिकार रखते थे, जिन्हें वे प्यार से अंकल जी बुलाते थे। उनकी मां बिमला जी गुरुदेव की बड़ी बहन थीं।

गिरि जी ने कई साल महागुरु के साथ बिताए इसलिए उनकी जिंदगी और उनकी बातें गुरुदेव पर ही केंद्रित रहती हैं। वे मूलतः मुंबई से हैं और उनका सेक्टर 7, गुड़गांव, के पास स्थित मोहम्मदपुर में एक खेत भी है जहां वे पशु पालन करते हैं। गुरुदेव के जीवनकाल में उनके खेत से निकली फसल, लंगर में उपयोग की जाती थी।

गुड्डन जी मरीज के रूप में आईं और धीरे-धीरे एक शिष्य बन गईं। उन्होंने वर्ष 1974 से कानपुर में अपने भाई सुरेंदर जी के साथ स्थान की जिम्मेदारी संभाली है। उन्होंने ना तो कभी दिखावा किया ना ही घमंड। भाई-बहन की इस जोड़ी के बारे में इतना कहना काफी होगा कि 'वे धन्य हैं जो इस धरती पर अपनी एक विरासत छोड़ जाएंगे'।

गुप्ता जी हिमाचल प्रदेश के परवानू में स्थान का संचालन करते हैं और उन्होंने अपने लिए 'कड़े वाले महात्मा' की उपाधि अर्जित की है। हर बड़ा गुरुवार को वे बिना रुके, सुबह से रात तक, लंबी-लंबी कतारों में आने वाले लोगों की सेवा करते हैं। हालांकि वे लगभग 40 वर्षों से सेवा कार्यों में शामिल हैं, लेकिन वक्त के साथ उनका उत्साह जरा भी कम नहीं हुआ है।

एच (H)

हरिबाबू गुप्ता, जिन्हें गुप्ता जी के नाम से भी जाना जाता है, अपने चाय और जूस के स्टाल के लिए मशहूर हैं। जब गुरुदेव काम पर होते थे, तो उनकी दुकान पर श्रद्धालुओं और शिष्यों की भीड़ जमी रहती थी जो वहां इकट्ठा होकर गुरुदेव से मिलने का इंतजार करते थे। वे महागुरु को भीड़ से बचकर निकलने में भी मदद करते थे और हेलमेट पहनकर, तेजी से स्कूटर भगाते थे। गुरुदेव ने ऑफिस में अपने काम के अंतिम दिन, गुप्ता जी को अपना आईडी कार्ड दे दिया था जो उनके पास आज भी स्मृति चिन्ह के रूप में मौजूद है।

हरीश जी, महागुरु के जन्म स्थान, हरिआना (होशियारपुर से 16-17 किलोमीटर दूर), के रहने वाले एक शिष्य हैं जो तीन दशकों से ज्यादा समय तक पूरी मेहनत और लगन के साथ इस कस्बे में श्रद्धालुओं की सेवा कर रहे हैं।

आई (I)

ईला जी गुरुदेव की दूसरी बेटी हैं। उन्हें भी अपने पिता से हास्य का गुण विरासत में मिला है। उनकी आंखों में शरारत की चमक रहती है और उनका हर अंदाज मज़ेदार होता है।

इंदु जी कोई आम महिला नहीं थीं। वे अपनी अंतिम सांस तक सेवा में समर्पित रही थीं। हम सभी में से जो भी उन्हें जानता था, वो यह मानता है कि इंदु जी एक संत थीं। वो सबका ख्याल रखती थीं, उन्हें चीजें बांटने में खुशी मिलती थी और वो चेहरे पर मुस्कान लिए सबकी सेवा करती थीं। मेरे दिल में उनके लिए बहुत सम्मान है।

जे (J)

जैन साहब, जिन्हें बड़े जैन साहब के नाम से भी जाना जाता था, बड़े विशेष आदमी थे, जिनकी किस्मत भी उतनी ही अनोखी थी। सबसे पहले तो वे गुरुदेव के ऑफिस के दोस्त थे जो उनके साथ काफी वक्त बिताते थे। वे साथ मिलकर फिल्में देखने जाते थे और साथ खाते थे। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि गुरुदेव एक आध्यात्मिक आदमी हैं और फिर वे उनके शिष्य बन गए। खास तौर पर वे ऐसे शिष्य बने जिसमें अध्यात्म की बेइंतेहा लगन थी और वे जल्द ही महागुरु के सबसे प्रभावशाली शिष्यों में से एक बन गए। हालांकि उनकी किस्मत उनसे बड़ी लापरवाही से पेश आई और वे कुछ अलग रास्ते पर चल पड़े। जब उन्होंने अपनी और अपने गुरु की वास्तविकता को स्वीकार करने से इंकार कर दिया, तो उनका आध्यात्मिक सफर अचानक बीच में ही खत्म हो गया। मुझे लगता है कि महागुरु की कृपा से उन्होंने जो शक्तियां हासिल की थीं, उसकी एवज में महागुरु के प्रति समर्पित होने के बजाय उनके मन में अहंकार का भाव आ गया था। बेशक गुरुदेव ने अंततः उन्हें क्षमा कर दिया, लेकिन क्या जैन साहब खुद को माफ कर पाए? हालांकि वे भले इंसान थे और मेरे लिए तो वे एक ऐसे दोस्त थे जो उम्र में मुझसे बड़े थे। उनके जीवन का सबसे बड़ा पल वो था जब उन्हें अपने घर में रखी शंकर भगवान की सिरामिक की मूर्ति से प्रकट हुए शिव के साक्षात स्वरूप के दर्शन हुए थे।

के (K)

कुलबीर सेठी जी, उर्फ पापा जी, मुंबई में गुरुदेव के पहले शिष्य थे और उन्हें शहर के पहले स्थान का प्रमुख बनाया गया था। गुरुदेव ने चमत्कारिक रूप से उनके छोटे भाई यश का उपचार किया था। हालांकि दुनिया भर के जाने-माने चिकित्सा संस्थानों ने यश को लेकर जवाब दे दिया था, लेकिन

महागुरु ने हार नहीं मानी। गुरुदेव की कृपा से यश 80% तक ठीक हो गए और उपचार के इस सफर में उन्होंने स्ट्रेचर से उठकर सीढ़ियां चढ़ने तक का फासला तय किया।

कुंदनलाल साहनी जी द्वारकानाथ जी के पड़ोस में रहते थे और उन्हें गुरुदेव के साथ वक्त बिताना बहुत अच्छा लगता था। बाद में वे एक श्रद्धालु बन गए।

क्वात्रा जी गुड़गांव में महागुरु के पड़ोसी थे और आसानी से किसी भी चीज को नहीं मानते थे। हालांकि जब उन्हें एक बार गुरुदेव की महानता का एहसास हो गया, तो वे रोज स्थान पर जाने लगे। गुड़गांव में मेरे 3 वर्षों के दौरान ऐसा कोई दिन नहीं गया जब मैंने क्वात्रा जी को उनकी फैक्टरी जाने से पहले सुबह स्थान पर ना देखा हो। वे एक आदर्श श्रद्धालु थे।

एम (M)

मल्होत्रा जी उर्फ आर सी मल्होत्रा जी गुरुदेव के पहले शिष्य थे। उनका रिश्ता ऑफिस सहयोगियों के रूप में शुरू हुआ। वे आगे चलकर दोस्त बने और फिर मल्होत्रा जी ऐसे व्यक्ति में बदल गए जो आध्यात्मिकता पर गहन चर्चा करते थे। वे गुरुदेव से ज्यादा अपने गुरु भाइयों के प्रति समर्पित थे और गुरुदेव से अपने गुरु भाइयों के साथ अधिक समय बिताने का अनुरोध करते थे। यदि हंसी-मज़ाक में बताएं तो वे गुरुदेव के शिष्यों और श्रद्धालुओं के लिए एक यूनियन लीडर की तरह थे, जिन्हें सभी प्यार से छोटे गुरुजी भी कहा करते थे।

माताजी गुरुदेव की पत्नी थीं। उनके पति न सिर्फ उनकी प्रसन्नता के स्रोत थे बल्कि उनकी छोटी-छोटी शिकायतों का सबब भी! माताजी को

अक्सर शोर भरे कमरे में सोना पड़ता था, क्योंकि उनके पति अपने शिष्यों से बात करते हुए देर रात तक जागते थे। इतना ही नहीं, महागुरु अक्सर उन्हें आधी रात में नींद से जगाकर उन सब के लिए चाय बनाने का निवेदन करते थे। गुरुदेव के साथ इस साझेदारी में उन्हें शिष्यों का ख्याल रखने में मदद करनी होती थी। इससे उन्हें अपने लिए वक्त ही नहीं मिल पाता था। दिन के समय वे गुड़गांव के एक सरकारी स्कूल में पढ़ाती थीं। वे घर के काम और सेवा करते हुए दिन के 18 घंटों तक दौड़ धूप करती थीं। उनका संपूर्ण जीवन त्याग में बीता और वो जीवन बेमिसाल था। ऐसी पत्नी तो सिर्फ कल्पनाओं में होती है लेकिन माताजी तो वास्तविक थीं और ऐसा यकीनन हुआ है।

मोहन सिंह चीरा जी हालांकि वास्तविक थे, लेकिन वे असल में काल्पनिक लुका ब्रासी की तरह थे। गुरुदेव खतरनाक किस्म के आध्यात्मिक कार्यों में उनका इस्तेमाल करते थे। जब किसी पर ऐसी बुरी आत्मा का साया होता था जो उस परिवार को नुकसान पहुंचाना या मारना चाहती थी, तो उन्हें ऐसी आत्मा को दूर भगाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। यह आसान काम नहीं था। वे गुड़गांव में मेरे दोस्त थे। मैंने उनके साथ बहुत वक्त बिताया, और उन्होंने मुझे इस विधि के कई गुर सिखाए। वो गुरुदेव के शिष्यों के लिए सच्ची परीक्षा थे क्योंकि वो विनम्रता के बजाय थोड़े कठोर शब्दों का इस्तेमाल करते थे।

एन (N)

नागपाल जी का पूरा नाम था कुंदन लाल नागपाल। वे गुरुदेव के कमरे के साथी, सॉइल सर्वे विभाग में उनके सहयोगी, और उनके कैंप में उनके सहकर्मी थे। हालांकि वे शिकायतों के विभाग के सेनापति थे और दूसरों का काम करने में उस्ताद थे, लेकिन हर चीज को लेकर उनका अपना नज़रिया

जरूर होता था। गुरुदेव उनसे बड़े औपचारिक ढंग से पेश आते थे, लेकिन वे उनके प्रयासों की सराहना भी करते थे।

नरेंदर जी एक बड़े शासकीय कर्मचारी थे जो अपने भाई वीरेंदर जी के साथ अक्सर स्थान पर आते थे। उन्हें गुरुदेव बहुत पसंद करते थे और वो अब भी सेवा कार्यों में समर्पित रहते हैं। वो हर साल ऋषिकेश में अपने गुरु के सम्मान में रूद्र अभिषेक यज्ञ करते हैं।

निक्कू जी माताजी के भतीजे हैं। गुरुदेव ने लुधियाना में उनके परिवार से उन्हें एक तरह से अगवा कर लिया था। निक्कू जी एक दशक से ज्यादा समय तक स्थान पर रहे, जहां उन्होंने पूरी निष्ठा से सेवा की और अपनी हंसी-मज़ाक और शरारतों का सिलसिला भी जारी रखा।

पी (P)

पप्पू जी स्थायी रूप से गुड़गांव में ही रहे हैं। वर्षों तक, वे गुरुदेव और उनके शिष्यों की सहायता, और महत्वपूर्ण दिनों में निक्कू जी और गग्गू जी के साथ स्थान के प्रशासन की देखभाल करते रहे। पप्पू जी दिल के बड़े साफ और स्पष्टवादी इंसान हैं जो आसानी से प्रभावित नहीं होते और इसलिए उन्होंने बड़ी कर्मठता से अपना कर्तव्य निभाया है।

पप्पू पहाड़िया, उर्फ पप्पू जी, शंभू जी के बेटे हैं। हालांकि वे ज्वालामुखी में रहते हैं लेकिन उन्हें गुरुदेव के घर में ही रहना अच्छा लगता था। वे वहां काफी वक्त बिताते थे और गुरुदेव भी उन्हें बहुत चाहते थे। पप्पू पहाड़िया गुरु संस्कृति के एक समर्पित पक्षकार हैं।

परवेश जी गुरुदेव के बड़े बेटे हैं जो बब्बा के नाम से भी जाने जाते हैं। वे

बचपन से सेवा कर रहे हैं। वे गुड़गांव के सेक्टर 7 स्थित स्थान के प्रमुख हैं और दूसरी जगहों पर भी सेवा करते हैं। उन्हें गुरुदेव के दादाजी का पुनर्जन्म माना जाता है।

पहलवान जी उन सभी लोगों में सबसे समर्पित सेवादार थे जिनसे मैं अब तक मिला हूं। उन्होंने तीन दशकों से ज्यादा समय तक खांडसा फार्म में काम किया ताकि वे यह सुनिश्चित कर सकें कि स्थान के उपयोग के लिए पर्याप्त मात्रा में सब्जियां, दूध और दूध से बने उत्पाद प्राप्त हो सकें। इस तरह का समर्पण लगभग अविश्वसनीय है।

प्रदीप सेठी जी मुंबई और लोनावला में सेवा करते हैं। उनकी पत्नी पुंचू जी, राजपाल जी की बेटी हैं। प्रदीप जी की बेटी प्रज्ञा हैं।

प्रताप सिंह जी जो गुरुदेव के बॉस थे, असल में एक नास्तिक थे। उनकी किसी भी चीज या किसी भी व्यक्ति में कोई आस्था नहीं थी। वे गुरुदेव को उनकी आध्यात्मिक शक्तियों के लिए नहीं, बल्कि उनकी विनम्रता और सब के प्रति सेवा भाव रखने के लिए पसंद करते थे।

पुनीत जी महागुरु के छोटे बेटे हैं और उन्हें प्यार से नीटू बुलाया जाता है। गुरुदेव उन्हें पंडित जी कहकर बुलाते थे। वे गुरुदेव के पिता का पुनर्जन्म माने जाते हैं। उनकी सबसे बड़ी खासियत, जो तब भी थी और अब भी बरकरार है, वह है उनकी आंखों में शरारत की चमक। वे बड़े प्यारे और नेकदिल इंसान हैं।

पूरन जी एक शक्तिशाली संत हैं। वे गुड़गांव के स्थान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे, जहां उन्होंने रोज़ाना लोगों की सेवा करते हुए एक दशक से ज्यादा समय बिताया। गुरुदेव उन्हें अपने बेटे की तरह मानते थे।

आर (R)

गुरुदेव की मां **राम प्यारी जी** उनके प्रति समर्पित थीं और गुरुदेव भी उनके प्रति बहुत सम्मान रखते थे।

रामनाथ जी कथोग के एक स्थानीय स्कूल में टीचर थे। हालांकि वे पूरी तरह गुरुदेव में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन वे उनके प्रति आकर्षित थे और अक्सर गुड़गांव में उनसे मिलने जाते थे। कुल मिलाकर वो एक बेहतरीन इंसान थे।

राजी कपूर जी परमभक्त तो नहीं थे, लेकिन वो बड़े विनम्र थे और उनका व्यवहार बड़ा शालीन और सादगी भरा था। मैंने अक्सर उन्हें गुड़गांव में देखा था। वे खुशनसीब थे कि उन्हें गुरुदेव के साथ कुछ कमाल के अनुभव हुए।

राजी शर्मा जी लंबे समय से गुरुदेव के पसंदीदा रहे। लेकिन वे बहुत समर्पित शिष्य नहीं थे, क्योंकि वे उस वक्त दुनिया भर में भ्रमण पर थे, जब हम खांडसा फार्म की मिट्टी उपजाऊ बना रहे थे। वे जब भी गुड़गांव आते, गुरुदेव की आंखों में चमक आ जाती थी। वाकई हम में से ज्यादातर लोगों को उनसे ईर्ष्या होती थी। वे बड़े नेकदिल इंसान हैं और धर्म ग्रंथों का गहरा ज्ञान रखते हैं।

राजपाल जी बड़े आकर्षक व्यक्ति हैं, जिनका अंदाज़ अपने आप में निराला है। उनका पहनावा बड़े सलीके का होता है। वे काल्पनिक डॉन जुआन के सांचे में ढले एक शिष्य हैं, जिनकी बातचीत, हाव-भाव और व्यक्तित्व में बड़ा आकर्षण है। वे गुरुदेव के बड़े प्रिय थे और लगभग चार दशकों से पंजाबी बाग में सेवा कर रहे हैं।

रवि त्रेहन जी, या रवि जी, गुरुदेव को कई जन्मों से जानते हैं। महागुरु ने उन्हें उन दोनों की पिछली जिंदगियों की झलक भी दिखाई थी। वे अपने पिछले जन्म में मल्होत्रा जी के छोटे भाई थे। उन्होंने चार दशकों तक लोगों की सेवा की और इस समय दिल्ली के कीर्ति नगर में एक स्थान संभालते हैं।

रेणु जी गुरुदेव की सबसे बड़ी बेटी हैं और उन्होंने लगभग अपने सभी छोटे भाई-बहनों को संभाला है। चूंकि उनके माता-पिता सुबह से शाम तक व्यस्त रहते थे, तो उन्हें ही घर की जिम्मेदारी संभालनी होती थी और अपने छोटे भाई-बहनों का स्कूल, उनका होमवर्क और बाकी चीजों का ख्याल रखना पड़ता था। यह उनके लिए एक बड़ी जिम्मेदारी बन गई और इसका नतीजा यह हुआ कि उनके स्वभाव में गंभीरता आ गई। वे अब पिता और गुरु के बीच का अंतर बता सकती हैं और इसलिए उनका गुरुदेव के साथ जुड़ाव और भी मजबूत हुआ है।

रूद्र जी निक्कू जी के पिता थे। गुरुदेव रुद्र जी के बहनोई थे। उन्होंने ही गुरुदेव को अपनी बहन(माताजी) के पति के रूप में चुना था। रूद्र जी और गुरुदेव के रिश्ते की अनोखी बात यह थी कि उनके बीच गहरा संबंध होने के बावजूद, रूद्र जी को कभी ये एहसास ही नहीं था कि उनके बहनोई एक गुरु हैं, महागुरु होने की तो बात ही जाने दीजिए। मुझे यह बात थोड़ी अजीब लगी लेकिन मुझे लगता है कि रूद्र जी गुरुदेव के सबसे प्यारे साले थे।

आर पी शर्मा जी गुरुदेव के सहकर्मी थे, जो महागुरु की पलटन का एक अभिन्न हिस्सा बन गए। वे बड़े सख्त और मजबूत इंसान थे जो लोगों की किसी भी आध्यात्मिक समस्या का सामना करके उसका समाधान कर सकते थे।

एस (S)

संतलाल जी सोनीपत में एक स्थान के प्रमुख थे। मैं दूर से ही उनकी सराहना करता था क्योंकि वो एक विशेष व्यक्ति थे। वो एक निडर अध्यात्मवादी इंसान थे जिन्होंने अतुलनीय उत्साह के साथ अपने आध्यात्मिक कर्तव्य निभाए। गुरुदेव ने उन्हें गुड़गांव में स्थान संचालन और प्रबंधन समेत सभी योजनाओं की काफी जिम्मेदारी सौंप रखी थी। संतलाल जी ने सोनीपत और आसपास के इलाकों के लोगों की सेवा में चार दशकों से ज्यादा समय बिताया।

शोभा तनेजा जी एक महान शख्सियत हैं। उन्होंने एक ऐसे योगी को जन्म दिया जिसने जन्म लेने के लिए 100 साल तक इंतजार किया था। इस तरह एक निष्काम गर्भाधान के ज़रिए अभय तनेजा का जन्म हुआ था। शोभा जी में हमेशा गुरुदेव के सामने जाकर चीजों की मांग करने की हिम्मत होती थी, भले ही वो चीजें उतनी महत्वपूर्ण ना हों, लेकिन गुरुदेव उनके प्रति हमेशा उदारता रखते थे। उनके पति सुरेंदर जी महागुरु के अनंत अंतरिक्ष के एक सितारे थे।

शंभू जी पप्पू पहाड़िया के पिता और ज्वालामुखी मंदिर के ट्रस्टी थे। उन्हें कथोग में गुरु के रूप में सेवा कार्य में लगाया गया था। वो अक्सर गुरुदेव से आग्रह किया करते थे कि वे उन्हें अनूठे और अलौकिक अनुभव कराएं। शंभू जी के निधन के बाद, पप्पू जी के बेटे के रूप में उनका पुनर्जन्म हुआ और अब वे ऑस्ट्रेलिया में हॉस्पिटैलिटी उद्योग में काम करते हैं।

सीताराम ताकी जी एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, और एक समर्पित शिष्य जो बैंक ऑफ अमेरिका के लिए काम करते थे, लेकिन उन्होंने अपनी जिंदगी का बहीखाता तो गुरुदेव को सौंप दिया था। वे हमेशा लोगों की सेवा करने

और अपने आध्यात्मिक बचत खाते में योगदान देने के लिए तैयार रहते थे।

सुभाष सभरवाल जी, जिन्हें सुभाष जी के नाम से भी जाना जाता है, हरिआना में गुरुदेव के सहपाठी थे। उन्होंने कई वर्षों तक गुड़गांव के स्थान का संचालन करने में सहायता की और इस तरह से महागुरु की सेवा की थी। उनका रुझान अध्यात्म की तरफ नहीं था, लेकिन वे गुरुदेव के प्रति काफी समर्पित थे और यही बात उन्हें सबसे अलग बनाती थी।

लंदन के **सुनील जी** स्थान पर आने वाले लोगों में शामिल थे। उन्होंने गुरुदेव के शिष्य विंग कमांडर वर्मा की बेटी से शादी की थी।

सूरज शर्मा जी गुरुदेव के दफ्तर में कर्मचारी थे। उन्हें गुरुदेव ने खोजा और उनका आध्यात्मिक परिवर्तन किया था।

कानपुर शहर के **सुरेंदर जी** एक ऐसे इंसान थे जो मुझे बहुत अच्छे लगते थे। मैं यह देखकर हैरान रह जाता था कि वे इतने सीधे, विनम्र और आध्यात्मिक कार्यों में सफल कैसे हो सकते थे। गुड़गांव के बाद, सबसे पहले उन्हीं का स्थान स्थापित किया गया था।

गुरुदेव के सभी शिष्यों में से **सुरेंदर तनेजा जी** ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया। वे हमेशा सच बोलते थे, औपचारिकता से दूर रहते थे और किसी की भी मदद करने को हमेशा तैयार रहते थे। वे लगभग हर दिन गुरुदेव को दफ्तर से लेते थे और गाड़ी से गुड़गांव तक छोड़ने जाते थे। वे इस बात की एक बेहतरीन मिसाल थे कि एक शिष्य होने के क्या मायने हैं। वे व्यक्तिगत तौर पर मेरे लिए एक प्रेरणा थे।

सुरेश कोहली जी एक मंझे हुए सेवादार हैं जिन्हें कथोग में सेवा का कार्य

सौंपा गया था। उन्हें कैंप में आने वाले हज़ारों लोगों की सेवा करनी होती थी। वे कथोग के पास सुनेत नाम के एक गांव में रहते हैं, और गुरुदेव के साथ गुज़रे उनके समय के किस्से वाकई सुनने लायक हैं।

सुरेश प्रभु जी एक साधारण चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में गुड़गांव आए थे। गुरुदेव ने उन्हें कुछ ऐसी बातें बताईं जो उन्हें और मुझे अविश्वसनीय लगीं। महागुरु ने भविष्य का एक ऐसा दिन देखा जब सुरेश जी दुनियाभर में एक जाने-माने राजनेता बन गए हैं। ये भविष्यवाणी मैंने इस घटना के होने से दशकों पहले सुनी थी।

सुरिंदर कौशल जी शिकागो में एक स्थान चलाते हैं। अपनी स्वप्न अवस्था में गुरु गोबिंद सिंह से प्राप्त प्रेरणा से वे स्थान तक पहुंचे थे।

सुशीला चौधरी जी गुरुदेव के दफ्तर में काम करती थीं। उनके पति एक नास्तिक थे, लेकिन गुरुदेव के उपचार के कुछ चमत्कार देखने के बाद वे आस्तिक बन गए। अंततः वे गुरुदेव के प्रेम और स्नेह के सागर में बह गए। गुरुदेव ने उन्हें सेवा में लगाया, और अपनी शुरुआती झिझक के बावजूद उन्होंने पटेल नगर में एक स्थान स्थापित किया जो उनकी मृत्यु के बाद अब भी जारी है।

यू (U)

उद्धव जी एक पुलिस अधिकारी थे, जो अपनी जवानी के दिनों में गुरुदेव के पास आए थे। उन्होंने मुंबई में कुलबीर जी के स्थान में पूरी निष्ठा से सेवा की थी। उनकी आध्यात्मिक जिज्ञासा कभी खत्म नहीं होती थी। महागुरु उनके सवालों का जवाब देते-देते थक जाते थे। उद्धव जी अब न्यूजीलैंड में रहते हैं और उन्होंने आध्यात्मिकता से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली है।

वी (V)

वीरेंदर जी हरियाणा में एक जज थे। गुरुदेव द्वारा उनकी पत्नी का इलाज किए जाने के बाद से वे गुरुदेव के प्रति समर्पित हो गए। वे कड़ी मेहनत करने से बिल्कुल नहीं घबराते थे और अक्सर जज के सफेद कपड़ों में खांडसा फॉर्म आते थे और मिट्टी से सने कपड़ों समेत वापस लौटते थे। उनका उल्लेख भृगु संहिता में भी किया गया है, जिसे हज़ारों वर्ष पहले लिखा गया था।

विश्वामित्र जी एक विनम्र, शर्मीले और अप्रत्याशित व्यक्ति हैं जिन्हें आमतौर पर गुड़गांव में रसोई सेवा का कार्य सौंपा जाता था। वे पंजाब के मुकेरियां में एक स्थान चलाते हैं।

कैप्टन शर्मा के रूप में संबोधित किए जाने वाले **वी पी शर्मा जी** को मुंबई के खार स्थित स्थान पर 30 लोगों की मौजूदगी में ज्योत प्राप्त हुई थी। किसी भी आध्यात्मिक बहस में उन्हें हराना बड़ा मुश्किल था। हालांकि वे अक्सर कुछ रूखी बात कर देते थे और फिर उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ता था। ▪

लेखक का झरोखा

हिंगोरी ने महागुरु की छत्रछाया में उनके प्रशिक्षणार्थी के रूप में अपना आध्यात्मिक सफर शुरू किया, और तब से ही वे बहुतों के लिए एक शिक्षक एवं एक गुरु बन गए हैं। उनका मिशन दूसरों के साथ अपना अच्छा भाग्य बांटना और उन्हें बहुत-से लोगों की सेवा करने के लिए तैयार करना है। उनका मानना है कि करने वाले वे नहीं हैं बल्कि वे तो लोगों के परिवर्तन का सिर्फ एक ज़रिया हैं। इसको मद्देनज़र रखते हुए, वे हमें यह शिक्षा देते हैं कि हमें अपनी योग्यताओं और क्षमताओं के लिए उन सभी का आभारी होना चाहिए जिनके कारण हमें ये प्राप्त हुई हैं। वो स्वयं के महिमामंडन और प्रचार को आध्यात्मिक विकास में रुकावट मानते हैं। इसी वजह से उन्होंने गुमनाम रहने का विकल्प चुना। यह उनकी विनम्रता नहीं बल्कि सोच-समझकर उठाया गया कदम है। लोगों के साथ ज्ञान बांटकर वो यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि एक तरंग लहर बन जाए, जो आगे बढ़कर पूरे समंदर में तब्दील हो जाए।

उनकी ज़िंदगी, उनकी दिलचस्प कहानियां,
उनका दर्शन, उनके गौरव की रवानियां,
उनके उपचार, उनके किरदार,
उनका हर आकर्षक अवतार।

इन पन्नों में बसी है उनकी विरासत,
उनकी महानता, उनकी फ़िरासत,
जो बयां करती है उनके मन का मिज़ाज,
और सुलझाती है अध्यात्म के कई राज़।

गुरुदेव।
गुरुओं के गुरु।
एक महागुरु।

www.gurudevonline.com
answers@gurudevonline.com